

## लेखक की अन्य रचनाएँ

### लोच-साहित्य

- हिन्दी १ धरती गाथी है २ धीर बहो गंगा । ३ बेला फूले  
घाथी रात ४ याजत आवे डोल ५ चित्रों में छोरियाँ ।  
पंजाबी १ गिडा २ दीया बल सारी रात ।  
उर्दू १ मैं हूँ पाना घोग २ गाये जा हिन्दुस्तान ।  
अंग्रेजी Meet My People

### कविता

- हिन्दी बदनवार ।  
पंजाबी १ धरती दीयाँ बाजाँ २ मुद्रका त कणक ३ कुड़ी  
नही धरती ४ गडियाँ बाले ।

### फहानियाँ

- हिन्दी १ चट्टान से पूछ रा २ चाय का रग ३ नये धान से  
पहले ४ सडक नही यद्दक ।  
पंजाबी १ कृ ग वोग २ माना गाथी ३ देवता डिग पया ।  
उर्दू १ नय दवना २ धीर बाँसुरी बजनी रही ।

### उप-घास

- हिन्दी १ रग ब पन्थि २ कठपुतली ३ ग्रहपुत्र ।

### निबन्ध

- हिन्दी १ एग युग एक प्रतीक २ रेखाएँ बीन उठीं  
३ पया गारी क्या गाँवरो ।

### रेखाचित्र

- हिन्दी क्या ब इम्नागर ।

### आत्मकथा

- हिन्दी पानि गरज के बारन ।

# दुष्-गाढ

देवेन्द्र सत्याथी



**राजकमल प्रकाशन**

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास



अपने उस महान् गीत के नाम  
जा भारतीय सगीत के 'रगोले रसिया' को चाखट पर  
सर पटक कर रह गया ।

धरमर मिला । हर बार शास्त्रीय संगीत के माध्यम से परम शान्ति का ध्यान साम हुआ । कभी धारा की ज्यादा दुष्टिगाचर होता तो कभी बदना के साथ धानान में उतर जाना जहाँ धाध्यान्मिक सत्त्वकी अनभूति हान दर न लगती ।

मुह मुहपर मन म चाह उठती कि संगीत मन्गिनी के प्रवाह के साथ-साथ बन पड़, धीरे धीरे चित्रपट पर एक मया बहदा गया जाई । हमम सकोच रहा ता यही कि शास्त्रीय संगीत म मात्र निष्ठा रखकर ही इसे क्या गिलर का निर्वाह कर पाऊँगा जिनका धाधार तत्व शास्त्रीय संगीत है ।

ऐसे लोगो की बातें भी सुनने को मिलतीं जिनकी शास्त्रीय संगीत में तक भी निष्ठा नहीं थी । ऐम लोग भा देम का रेडिया की सुई घुमाकर भर दूररा स्टेशन हूँते लगने से जहाँ स हल्का पुलका संगीत था रहा हा ।

०

मन् १९८० में जब मैं साहीर म था सबप्रथम रेडियो कारीदकर साया ता लगा कि मीत्र ही गई । पर बठ दग-गन का संगीत सुनने का हमसे धाछा उपाय दूररा न था ।

एक रात जब मैं दस्तबिस्त होकर बिन्व के मन्गु मगानवार बियाविन की नाच्य सिम्फानी सुन रहा था सहसा मैंने दसा कि रेडियो बन्द हो गया ।

यह पना धरन दर न लगी कि मरी पन्ना न हाप धदानर रेडिया का सिन्व बन्द कर दिया था ।

धीमठात्री का यह तब था जा धीरे समझ म नहा धापी उम सुनने न क्या लाभ ? यह गिद करना मात्र न था कि मैं हम समभन की समता रगना हूँ ।

मुझ याद है बियाविन के सम्बन्ध में मैंने श्रीमताजी से बहुत-कुछ कह डाला और फिर बनपूवन कहा यह थी 'नाइय सिम्पनी'— बियाविन की भ्रमर रागिनी ।

मैंने बताया कि बियोविन ने अपनी प्रतिम बसीपत में ये पाद लिखे थे

जो कोई भी मुसीबत का मारा नाग्यहीन ध्वनित हो उसे यह माखन धय रखना चाहिए कि मैं उस जसा ही भ्रमागा और विपत्ति में सहायता करने वाला उसका प्रिय बंधु और सखा हूँ ।

मैंने यह भी बताया बियोविन सत्तावन वर्ष की आयु में ही चल बसा था जब रोग उमड़े रोम राम में घर कर गया था । फिर के स्खे घने बाल सफे हो गए थे । माथ पर गहरी झुरिया ने जाल बुन डाला था । चेहरे का यह हाल था कि ऊपर का मोटा हीठ नीचे के हाठ का ढपे रखना था । वेढगी सी ठोडी और गालों की उमरी हुईं हड्डियों ने नाक-नबाना घुरी तरह विगाह डाला था । तन्त्रि इसका यह मतलब नहीं कि बियोविन की आँखों की अद्भुत चमक भी दब गई हो ।

मैं देख रहा था श्रीमताजी की को मेरी बातों में तन्त्रि भी रस नहीं था रहा । मैंने कथा को भागे बढ़ाया बियोविन जीवन भर विवाह न कर सका । निधन एकाकी बानों से बहरा ।

श्रीमताजी ने ध्यग का बाण छाड़ा पन्नी होती भी तो वह कौन सा उसे प्रम कर मजता था ? कलाकारों का तो क्या ही प्रिय होती है न !

यह बात नहीं ! मैं कथा को बढ़ा ले चला २६ माघ १८२७ के दिन बियाविन की मृत्यु हुई । पर २४ माघ का उसने अपने दो साथियों से कहा था— तांत्रियों बजाओ । शीघ्र हा इस दुखान्ना नाटक का पटापट होने जा रहा है ।'

श्रीमताजी ने कहा 'मृत्यु तो खता नहीं । कथाकार का लिहाज भी कने कर मानी है मृत्यु ।

घनगर मिला। हर बार शास्त्रीय संगीत व माध्यम से परम दान्ति का ध्यान साम हुआ। कभी धागा की ज्याति दुष्टिगोचर होता तो कभी बदना के सात पानान में उतर जाता जहाँ धाघ्याग्मिक तत्त्वकी अनुभूति होने दर न सगनी।

मुट मुटवर मन म चाह उठती कि संगीत म-दाविनी के प्रवाह के साथ-साथ धन पडू और इम विनपट पर एक कथा कहवा चलता जाऊँ। इममें मनोव रहा तो यही कि शास्त्रीय संगीत म मात्र निष्ठा रखकर ही कसे कथा गिल्य का निर्वाह कर पाऊगा जिसका आधार तत्त्व शास्त्रीय संगीत ही।

ऐसे लोगों की बातें भी सुनन का भिगतों जिनकी शास्त्रीय संगीत म ठनिक भी निष्ठा नहीं थी। ऐस लोग भी देख जो रेडिया का मुई घुमाकर म-दूमरा स्पेकन दू बन सगने थे जहाँ स हल्का घुमका संगीत था रहा हा।

०

मन १९४२ में जब मैं साहीर म था सबप्रथम रेडिया खरीदकर लाना ता लगा कि मोत्र ही गई। पर बठ दश-लेग का संगीत सुनने का इमसे अच्छा उपाय दूमरा न था।

एक रात जब मैं दलचित्त होकर थिन्व व महान् संगानकार बिघोविन का नाच्य सिम्फोनी सुन रहा था सहसा मैंन दगा कि रेडिया ब-हा गया।

यह पता चलत दर न सगो कि मरो पत्नी न हाथ बडाकर रेडियो का निदध ब-कर लिया था।

श्रीमतीजी का यह कथ था जा बाज समय में नहीं धाता उग सुनने ग कथा साथ ? यह गिड करना म-त्र न था कि मैं इसे ममभने की क्षमता रखता हूँ।

मुझ याद है बियाविन के सम्बन्ध में मैं थीमतीजी से बहुत-बुद्ध कह डाला और फिर बलपूर्वक कहा 'यह थी नाइय सिम्फोनी'— बियाविन की अमर रागिना ।

मैंने बताया कि बियोविन ने अपनी अंतिम बसीयत में ये शर्त लिखे थे

जा कोई भी मुसीबत का मारा भाग्यहीन व्यक्ति हो उसे यह सावधान धय रखना चाहिए कि मैं उस जैसा ही अभाग्य और विपत्ति में सहायता करने वाला उसका प्रिय बंधु और सखा हूँ ।

मैंने यह भी बताया बियोविन मत्तारण वर्ष की आयु में ही चल बसा था जब रोग उसका रोम रोम में धर कर गया था । सिर के अन्तर्गत घन घाल गफ्त हो गए थे । माथ पर गहरा क्रिया ने जाल बुन डाला था । चेहरे का यह हाल था कि ऊपर का मोटा होठ नीचे के होंठ का ढाँप रखता था । बगो-भी ठोड़ी और गालों का उमरो हुई हड्डियों ने नाक-नका बुरी तरह बिगाड़ डाला था । अर्धिन इसका यह मतलब नहीं कि बियोविन की आँखों की अद्भुत चमक भी दब गई हो ।

मैं दण्ड रहा था थीमती जी को मरी बातों में तनिक भी रस नहीं था रहा । मैंने क्या की भाग बताया बियोविन जीवन भर विवाह न कर सना । निधन एकही बाना से बहरा ।

थामतीजी ने अ्यग का बाण छोटा पत्नी होती भा तो वह कौन मा उसे प्रेम कर सकता था ? कलाकारों का ता बना ही प्रिय होती है न ।

यह बात नहीं । मैं क्या को बड़ा से बला २६ मार्च १८२७ के दिन बियाविन की मृत्यु हुई । पर २४ मार्च का उमन अणन दो सायिया से पटा था—'तालिया बजाओ । गीध हा इस दुखान्त नाटक का पटाक्षप लेन जा रहा है ।

थीमतीजी न कहा, मृत्यु तो रखता नहीं । अनाकार का लिहाज भी कने कर नहीं है मृत्यु ।



मैंने कहा बिषोविन की माँ उगने बाल्यकाल में ही चल बसी थी। पिता का घर की सज्जिक भी चिन्ता नहीं रहती थी। माइया ने सदा बिषोविन से घृणा ही की। अब यह तो बिषोविन का दोष न था कि वह देखने में असुन्दर था। छोटा घोर स्फुल्ल शरीर तो प्रकृति की देन था। जिस रात ने बेचारे बिषोविन को श्वशुर शक्ति छीन ली उसन २६ वर्ष की आयु में ही पावा बोन लिया था। उसका व्यवहार कृता घोर घण्टा था। इसका बना कारण यही था कि घपनी प्रतिभा घोर रचना शक्ति का पूरा ज्ञान था और आलोचकों के मारे उसका सदा नाम में दम रहता था जो उमक संगीत का नीरस और निरर्थक बताना ही घम मान बैठे थे। आज कूगरी बान है। समार क महान संगीतकारों में बिषोविन का नाम दिया जाता है। विमना में जहाँ बिषोविन की मृत्यु हुई थी उसे समाधि देने के लिए बीस हजार सागा का जमघट हो गया था। उसकी जीवनी में यह प्रसंग भी आता है कि मृत्यु के पचास उगकी सुनी हुई धार्मिक एक घपरिविन शक्ति ने बन्द कर दी थी।

यह कहानी श्रीमतीजी को उनकी नीरस नहीं लग रही है मैं दब रहा था। मैंने बताया आज से पन्द्रह वर्ष पहले का बात कहता हूँ। २६ मार्च १९२७ का यहाँ लाहौर में भी यूरोप और एशिया के घनक नगरों के समान ही बिषोविन की मृत्यु घनाती मनाई गई थी और उस समय बिषोविन की यह नाइय गिफ्तानी भी बजाई गई थी जिसे सुमन आर उन्नीको का शिखर दबाकर बन कर लिया।”

श्रीमतीजी बोनी मपरारिणी का क्षमा किया जाय। मैं यन् कथा ता नहीं जानती था।

मैंने बसपूर्वक कहा 'संगत का लता ही जादू है। देनी संगीत हो पाहे जिन्ना उगन का घोर जानि के भद्र नहीं रहत।

उग निन क घा मुझे कई बार सगा अस बिषोविन से मरा मान मिक शिखर घोर भी घनिष्ठा हा गया।

दूध-गाछ की रचना करन समय जब करल क घमनन कर

ना क नयनानिष्ठम मन्त्र तट पर गुण म्दपम् का कल्पना चित्र बनाया ता उसमें विद्योविन की रूप रेखा का कितना हाप रहा यह म्त्र कहें ?

३

दूध-गाछ नाम का भी एक इतिहास है। सयाली भाषा में 'तामा' दूध को कहते हैं और गाछ के लिए 'गार' शब्द चलता है। तोमा दार' का सन्धानी प्रयोग ही दूध-गाछ की मूल प्रेरणा है। सन्धानी भाषा में तोमा-गार मां का प्रतीक है। इस सयाली प्रतीक को केरल की कनामची धरता पर स्थापित करने की जिम्मदारी मेरी है। माता देवा की प्रति पुरातन प्रतिमा मोहेनजोदडो से प्राप्त सिन्धु सभ्यता के मन्त्रोपों में विगिष्ट स्थान रखती है। उसके बाद की पुरातत्व सामग्री में मातादेवी कभी पद्माश्री बनकर सामने आती हैं कभी किसी अन्य रूप ही रूप में। दूध-गाछ में मातादेवी अथवा पद्माश्री की मूल प्रेरणा की भाँति बने हुए कलाकार की सृजन शक्ति को प्रतीक बनाया गया है।

केरल के साथ मेरा परिचय झठारह वर्ष पुराना है। दो वर्ष पूर्व दावारा केरल जान की भावश्यकता हुई, क्योंकि प्रथम परिचय बहुत झपूरा लगा।

'दूध-गाछ की कहानी केरल और बम्बई के बीच झूतती है। इस में प्रश्न उठाया गया है कि शास्त्राय सगीत या दहजन हिताय उपयोग में ज्ञान की जिज्ञा में हम क्या कर रहे हैं ?

मैंने इन मन्त्राध्य मानकर लिखा है मन्त्र ही मेरा माध्यम पद नहीं गया है। कथा के पीछे मन्त्र पठता जन्ता है भावार्थ चित्र जो कला का धन है। कल्याण तथा उच्छ्रिता के स्वर विविध व्यापक और तीव्र हुए बिना नहीं मानते। ज्ञान की मान्दरिक परम्परा तथा मन्त्र-विशेषों में कही कितना समन्वैता कम रहा है। परम्परा का ज्ञान नौनिक्ता

की भाँति संगीत में गुरु-गौरव की प्रतिष्ठा बहुजन हिताय की पुकार मगीतकार बला और परम्परा पर दृष्टि रखे या सेठ का स्वामी मानकर बला की रमातस म जाने ॥ गद्य-एक अनेक प्रश्न जहाँ उभरते हैं ।

४

पद्य के बारे में मरी ऐसी धारणा है कि उमकी चरम सीमा वहाँ है जहाँ वह गद्य के समीप पहुँच जाता है । पद्य गद्य के समीप जाने पर साक्षर बनता है तो यह भी कह सकते हैं कि गद्य भी पद्य के समाप जाने पर ही साक्षर बनता है । उपमास गद्य में लिगा हुआ महाकाव्य है में इस स्वीकृति का उदाहरण है । गद्य को गद्य रखना तो अभीष्ट था ही । फिर भा इस पद्य के समीप ल जाने का माह बराबर बना रहा । गद्य एकदम पद्य से जा टकराना पापन कही-कही यह स्थिति सिगार्ई द । इस शेष में बचने का यत्न करता भी तो कसे जब मन में यह बात धठ गई हा कि में उपमास नहा महाकाव्य गिन रहा हूँ ।

निष्ठा में मन्वी बसा जम गठी है यह मानकर बना हूँ । पर गद्य का स्थान ही नहीं निता यह कसे कहें ?

‘द्रुप-गाद्य की शक्ती दुनिया है । मानवीय मूर्तों पर मेरी दृष्टि रही है फिर भी धारता कही तक सत्ताय विनेगा नहा जानता ।

✓

पापन घाप कहे द्रुप-गाद्य ता सपुरा है ।

पापन घाप कहे बात नहीं बनी ।

पापन घाप कहे यह वही का उपमास है ?

तब मैं विरम बार न दनी कहेगा म एव बार फिर पड़े घोर घव की बार में महाकाव्य मानकर पड़े परगिय ।

हो गवता है शोभा पड़ जान पर भी घापनी यह धारणा बनो ई रहे कि द्रुप-गाद्य ता सममास भा रखता है । तब मैं कहेगा—

थाइए हम मिनकर इस युग क महान् चित्रकार पाब्लो पिकासो की इन विचारधारा पर मनन करे

कला छासात् मनुष्य है—उभवी नी आत्मा है—

विश्व की कोई मशीन कलाकार को उत्पन्न नहीं कर सकती ।

एक चित्र समाप्त हो सकता है परन्तु एक महान् चित्र सदा अममाम्त होता है । एक चित्रकार अपने एक चित्र म अपने को समाप्त कर देता है परन्तु दस बेप के पचात् कोई अन्य कलाकार नई सम्भावनाएँ देखकर नया चित्र बना सकता है । एक महान् चित्र म सदा एक प्रकार की अपूर्णता रहती है ।

जहाँ कलाकार समाप्त करता है दशक वहाँ स प्रारम्भ करता है । १

चित्र दन्तकर जो काम दशक को करना होता है पुस्तक पढ़कर वही काम पाठक को करना होता है ।

काव्यात्मक सत्य का अचल धामे बिना उपयासकार ऐतिहासिक खतना की किसी मजिल पर नहा पहुँच पाता । कवि-कम अथवा क्या गिल्प पर मारिएक (Maupiac) की बात ठीक उतरती है 'हम कभी वह पुस्तक नहीं मिल पात जिसकी हम इच्छा करते हैं कृति हम वहा प्राप्त हाती है जिसके हम योग्य होत हैं ।'

दूध-गाछ की भाप एक उपयास ही माने तो मुझे आपत्ति नहीं हागी । इसम यदि भापका जहाँ-उहाँ घघूर-से चित्र नजर भाए और भापकी कल्पना अथवा सूझ-बूझ उन्हें भाग ले घन ता मरा अहोभाग्य ।

प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार जब दोहद क अक्षर पर कोई सुन्दरी अदाक बक्ष के मून पर पगपात करती थी तो उसकी डाली डाली ताल-ताल फूलों से सज जाती थी । पाठक वा सौन्दर्य-बोध 'दूध

१ पाब्लो पिकासो 'कला का मूल्य, 'साहित्य परिषद [ सरस्वती प्रेम इसाहाबाद ] दिसम्बर १९२५ से उदपत ।

गाछ में नूतन सम्भावना और उपनमि के फूल खिलानेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

मुमुक्षु कविता वसुमती का योग-ज्ञान निरंतर उपनम्य रहा जिनके सहारे यह दूध-गाछ पनप सका।

सर्वंधी राजेन्द्रसिंह बन्ने बलराज साहनी रामधर शर्मा महारथी दोमधर गुप्त युगजीत नवतपुरी ठाकुर पुंछी और मत्तयासम तथा गिल्पी श्यामलालयम् का धामारी हैं जिनके मूल्यवान् सुभावा से 'दूध गाछ' में प्राण प्रतिष्ठित है।

'कल्पना'

१-मी/४६ रोहमव रोड नई दिल्ली

१५ मई १९५८

—देवद्व सत्यार्थी

୮୧-୩୭

माँ ही नहीं, कलाकार भी दूध  
गाछ ह । धनुभूति के लिए  
चिरन्तन सत्य को भी प्रसव  
वदना तो सहनी ही पढती ह ।  
पुरानो सूक्ति ह हर समय  
हर जगह उपस्थित नहीं रह  
सकते थ भगवान् इसीलिए  
उहोंन मानाएँ बनाई । माँ ही  
महान् ह । गिगु हा चाह  
कलावृत्ति, दोनो को ही प्यार  
दुलार चाहिए । कलाकार का  
माँ बनना ही पढता ह ।



दो परछाइयाँ







“भीतर जाकर रेल-भाड़ से पूछो गाड़ी भ्राने में कितनी दर है।

एक पचास-बर्षीय विगासवाय पुरुष ने घुंटे सिर पर मुट्ठी भर माती और दा बिता नम्बी गिप्पा का भटका दत्त हुए कहा। अमी पूछ कर भ्राता हैं गुरुत्व। कहत हुए एक युवक लम्ब घुंघराले बाला म राम स कधी करता त्रिकट घर की भार चल लिया।

वयावृद्ध पुरुष विचारधारा म खो गया

पट है बरकना—त्रिवन्द्रम् से तीस मीन उत्तर और काइलोन स चौन्ह मान दक्षिण। बीमवा क्षत्राग्नी के प्रारम्भ तक उत्तर भारत म भान बाल यात्रिया क लिए एणाकुलम् म काइलान तक जन-भाग ही सुगम था। अब तो रेल का सुव है। तिन्नावेली से काइलोन तक पाँच सुरगों म से हाबर गुजरती है रेलगाडी। एक सुरग दा हजार घाठ सौ फुट नम्बी है। पापाणु की बठार विराट दावार म रास्ता पा लना कम जोखिम था काम नहा था। पीछे कोइलान स त्रिवन्द्रम् तक भी रेल माग बन गया। मलयालन अथवा मलयगिरि के नयनाभिराम हृष्य दखने और मन्द-मुरभिन मलयानित्त का भ्रानन् सेन यात्री बरकना धाम पट्टैचेने हैं।

नानान स्वामी के मन्दिर के कारण बरकला का एन नाम जनान्न पुरम् है। बरकला धाम को उत्तर भारत क यात्री 'दक्षिण काणा भी बन्न हैं। त्रिवन्द्रम् म पचनान क मन्दिर का माहाम्य है। नाराखाइन

घोर विन्म्वरम् के मन्दिर भी दगनीय हैं। मटुरा के मोनाक्षी मन्दिर का महाम-स्तम्भ-अण्डप घोर बुम्भबोणम् के रामस्वामी मन्दिर की वसा प्रतितीय है। दण्डिण में बयाकुमारी की यात्रा ता घोर भा भावश्यक है। बयाकुमारी म घरती क अन्तिम छोर पर हम भारत माता के चरणों की कल्पना करते हैं। पूव सागर पचिम सागर घोर हिन्द सागर का पावन सगम ! सागर से मूय उदय होता है घोर इसी म तय हो जाता है।

मारग माता क चरण प्रान्त म शिखाभिमुख यात्री अपन गम्मुय दण्डिण घुव सव सागर क अन्त रिस्तार की कल्पना म लो जाता है पीछ की गिगा म उत्तर घुव तब त्रिपुना विजयन्ती यमुघरा का अण्ड राय उगवी कल्पना को छु-छु जाता है।

बरबसा घाय बिना गनि नगी। वसे भी हमारा बरबसा दगनीय है।

युवक पना लाया गाडी एव घण्टा लट है। पूग क पुगल म दूर का पहाडियाँ गा गई या। गाडी दूर पर लडे व्यक्ति नी छाया बित्र-मे मगन थे।

'बुछ तर हो गई गुम्ब ! बटून हुए गज गिर बाता एव अघेड घायु का व्यक्ति पाग आवर युवक क पु पगल बाता पर प्यार म हाथ धरन सगा बहा दाग ! मोत्र हा जायगी अब ता गाबिन्दन घा रहा है।

बात्म-बात क मित्र किस प्रिय नहीं होते ?" बयोवद्ध पुग्ग ने बहा 'गाडी एव घण्टा लट हा गनी। भगवान् म प्रायना पना गाबिन्दन दग गनी मे अवन्य उतरे। घोर फिर बुगग म मुत मूय की घोर हाथ उगारर बात मूय भगवान् ! निन निन दूर के यात्रा यहाँ देव-गन की घात है। घात्र तो गाबिन्दन हा देखने का मित्र आय। मैं उस फिर मे गिगा दू गा—मादू का भव त्रिपु-या भव घापाय लो अय।

घोर यी घात्र भी न घापा गाबिन्दन / गत्र गिर बाता व्यक्ति दग पहा।

‘ऐसा मत बोला ! मुबन खुप न रह सका ।

इतने म स्पेदान के बिश्राम घर की घोरसे भिलारी-बालकों का गोठ सुनाई देने लगा

घग्मापुम एनी बिकल्ता  
 घच्छनुम् एनी बिकल्ता  
 उग्मानुम उड्बकानुम बलिमुमिल्ला  
 [न माता है,  
 न पिता है,  
 न घन है, न वस्त्र ! ]  
 मडुन्नु जीवनालम  
 मोतमाय तोन्निडुन्नु  
 ममनो मुरसी तन मधुरगानम  
 [बुभ-बुभ जाती है जीवन बाती  
 मोन हो चला,  
 मन मुरसी का मधुर गान ! ]  
 ओबिता चाय कस्तिन  
 चिस्तुबल तबग्गता  
 क्षीरसिल कणिक कल किरप्पितेड्डम  
 [जीवन की यह टूटी मटकी  
 घोर दूध की धूँ बँ छिटकीं  
 इधर उधर धे बिखर गई । ]  
 एड्ड-ट क्षीर तरु ?  
 एड्ड-ट क्षीर तरु ?  
 घड्डोदु पोकुवान वारिण्चालुम  
 [कहाँ घरे वह दूध-गाछ ?  
 कहीं घरे वह दूध-गाछ ?  
 मुभ वहाँ जान शो, माग विसाओ ! ]

पास म बिमी की घावाड धाई, वह रहे सपीताचाय रत्नपदम् और उनका शिष्य गणधरन जो मूर्तिपार का पुत्र हाबर भी गुरुने स गमीन सोग रहा है।

कथोबुद्ध व्यक्ति न प्रसगा-भूचन दृष्टि से उधर देखा त्रिधरसे यह घावाड घा रही थी पर बात बनने घाने व्यक्ति दापद गाठी व एव घटा लट हान की गूचना पावर पाग के विसी रस्तरों म बाँकी पीन बन गय थ। मैं हूँ सपीताचाय रत्नपदम् ! सब मुझ जानत हैं। मरे साथ मरे शिष्य दाग को भी पहचानने लगे हैं। यह सोचकर रत्नपदम् की घाँसे बमक उठों।

गज गिर बाता व्यक्ति या बरजना का नया डाव-बाजू दसमुग। उगरी मातृभाषा की मगठी। यह बाता क्या यह बात ठीक है गुरुने बि गवापित मयमानम ही मसूत प्रधान है ?

ही म गिर हिनान समय रत्नपदम् की मौनी-भम्बी गिगा मौन मन्त घपनी जगत् जमी रही पर जब मन म घावेग घाया तो भूमत गिर पर गिगा भी नाच उगी।

मसूत ता देय भाषा है रत्नपदम् मुम्बराय और भूम भूमवर उच्च स्तर म गावन करने लगे

मटेग्री मलय मह्य शुभिनमान प्रदसपवत ।

बिष्पयश्च पारिवाशश्च सप्तते ब्रुसपवता ॥

मारे पान तो पुद्ग नग पदा रत्नमुग जैसे अभाव म मुम्बरा पदा ।

रत्नपदम् न गमनाया बि मारुडय पुराण म घाया है यह दाव त्रिग्न मलय पवत की गिनती गाव कुन-यवता म बन का उत्तर है। मले पवत-बाषा तमिन दाव है पर अच भाषा म वह एा विगय पवन का नाम है रत्न। नागधय म म्मामने तज मभी पवन मितवर मय पवत का रूप दा है। मगना गागवरी और यगुगता के बीच की दूरी पवन गन्ता का यदा घा तिमो मय मरुत्तनिरि क नाम से

प्रसिद्ध या और उसमें अब भी उस नाम का एक पर्वत है। महेन्द्रगिरि से मलय होते हुए हम सह्याद्रि-श्रेणी की ओर घूम जाते हैं। चौथे पर्वत सुक्तिमान् की भले ही पूरी पहचान नहा हो पाई पर इन्हे गोकुण्डा का पठार समझना चाहिए क्योंकि इन सात पर्वतों के नाम परिक्रमा के क्रम में घाम हैं। सह्याद्रि के उत्तरी छोर से पूव दिशा में मिलता हुआ ऋष्य पर्वत है। उसके पूर्वी छोर से उत्तर में हैं विन्ध्य और पारियात्र। रूपदम् मेघ-गम्भीर स्वर में बोले 'यि साता पर्वत हुए हमारे देश के भीतर के कुल-पर्वत। हिमालय और अन्य मर्यादा-पर्वतों से य भिन्न हैं। बुधगिरि और मर्यादागिरि के विवचन के लिए देखिए श्रीमद्भागवत'। यह सब दश भाषा का प्रसाद है।

संस्कृत देवताओं की भाषा है तो क्या प्राकृत चोरों की? देशमुख हंस पडा 'गुरु'व ये मेरे शत्रु नहीं। पद्महवा गता'नी में मराठी सन्त कवि एकनाथ ने ऐसा ही प्रश्न किया था।

रूपदम् ने देशमुख का स्वभाव समझ लिया था। दिन भर तो दश भुज की ढाँध घर के बाय से अक्का'न मिलता पर साँझ-संधरे भेंट हो जाता तो वह रूपदम् को छेड़न से न छूकता।

हाथ की घड़ी में समय देखते हुए देशमुख हंस पडा 'सात पर्वतों की परिक्रमा में हा आपन सात मिनट खो लिए और वे बचारे मिलारी यानक गला फाट फाड़कर गान रहे। आपका तो भना क्या रस आया हागा गुम्बे'।

दासधरन न अपनी जब स एक कामज निजानवर दिमाग हुए कहा वह गात मुझे अच्छा लगा मैंने उसे उतार लिया।

यह तो तुमने बहुत अच्छा किया, गन्ध ! देशमुख उत्सव सिर पर प्यार से हाथ फरता रहा।

रूपदम् बोले यह सदा या' रत्नो दास अह्मा से भरत मुनि ने सीखी सगात विद्या और उन्हांत भाग यह विद्या हमे दो।

गास्त्रीय सगात स्वतामा से आया ता क्या सीख-सगात चोरों

से ? दामुस्य बाण छोट हूँ दिया ।

रामपुत्र बोले 'यह मैंने बंध बहा ?

रामपुत्र ने दूध-गाछ बाणा गात गुनगुनाने लगा ।

'साक्षात् ! दामुस्य ने बाल की पीठ पर धपकी दसे हुए कहा "गीत की धुन तुमने ठीक पकड़ ली । शास्त्रीय संगीत में भारी निष्ठा रही । मैं तो कहता हूँ कि शास्त्रीय संगीत से हमारे डाक-धर की मुहर ही बच्यी है । हम ता प्रतिदिन इस पर नई तिथि डाल देते हैं ।

रामपुत्र ने मस्तक पर तयारी न घाने ली । मध-गम्भीर स्वर में बाल हमारा संगीत विद्या सामय" जितनी ही प्राचीन है । यह भी कहा गया है—भक्त ही संगीत का स्रष्टा ब्रह्मा हैं पर उमर पुण्य-सम्पत्त से ममार का परिचित करान का शय महान्व का है । एक स्थल पर यह उल्लेख भी आया है—संगीत का प्रादि-व्यष्टा स्वय महान्व ही य । उत्तर भारतीय परम्परा का धनुषार महादेव का सरक्षण में है छ राग—भक्त मासबाय हिण्डोल टापक भय घोर श्री । धारम्भ में यही छ राग य घोर तान रागिनियाँ थीं—टोटी भसावरी घोर रामनारी । फिर तो हमारे पुराणों का हाया में घनेक राग रागिनियाँ का रूप निखर । दण्डिण में संगीत-विद्या का प्रसार हुआ । बर्णाटक संगीत का उत्तम स्वय भक्त मुनि ने घपन नाट्य-शास्त्र' में किया है । घोर फिर उर्हीन रामपुत्र की धार दगवर कहा जा विद्या तुम सींग रह हा बाल उमका माहात्म्य नी तुम्हें गाप-साथ ममभना चाहिए । हमारे परिवार में बीम पाक्षियों से संगीत-गायना बनो घानी है । गाविन्त हूँ गायना का बीज का लौटकर भाग गया । वर जहाँ का धारम्भ करेगा तुम उससे बरत घाग हा । बम्बई में उमन पाँच बरत व्यय ही गँवा गिण होंगे । घाय हा गता मैं उम ममभा मूणा । घोर तुम भी ममभ ता यह बाग । पुरानी मूर्ति है—मनुष्य का यह मापकर बाय करना चाहिए कि मुमु ने उमन गिर का बाग पाट रग है ।

बाव या गिणा ? दामुस्य हँस पना । तुममुत्रु (बासी मित्र)

ता करल की ही उपज है । फिर इस खासे समय नी-सी बयो ?

तुम्हारा व्यग्य भ्रम में सह सकता है । रद्रपदम् मुत्कराय 'भ्रम में इसे दोषे म डाल गए मसाले से अधिक नहीं समझता ।

'छोटा-सा बरकला पाँच-छ मोल के घरे म फला पडा है गुरन्व ।

अच्छा तो यही से पान पाना । बरकला म जो भी एक बार भा गया यही का हो रहा । बीस पीढ़ियों से हमारा परिवार यहाँ भा बसा । वहाँ कुम्भकोणम् धीर कहाँ बरकला । घर म भ्रम भी हम तमिल ही बोलते है पर उस पर कही-नही मलमालम की छाप लग जाती है ।

गाबिन्दन के नाम का ही तो गुरन्व । यह भी तो नेरनीय परम्परा में है । तमिलनाडु की परम्परा पालत तो गोविन्दम् होता । धीर देखिए गाबिन्दन लौटकर भा रहा है । पिता का यह अधिकार नहीं कि पुत्र को भ्रम ही रास्ते पर चलाये । शम्भरन मूर्तिकार का पुत्र होकर मगीताघाय बन जा रहा है तो गाबिन्दन भा चाह तो मूर्तिकार बन सकता है ।

कुहासा धीर भी सपन हो गया था । रद्रपदम् कहना चाहते थे कि यह पूस तो बहुत भला है अपने साथ कुहासे की गठरियाँ बाँधकर लाता है जब चान्ता है गठरी ग्वालबर कुहासा बिखेर दना है ।

गाढी भ्रान म भ्रम अधिक दर न थी । बहुत स यात्री जमा हा गए थे जो त्रिवद्रम् की धीर जा रहे थ ।

रद्रपदम् बोल दना शम्भ । मैं ता एक दिन न बीज रहूँगा न पून । हाँ मैं खाद बन जाऊँगा । तब मैं कुछ उगा मरूँगा । यणी गुरु-शिष्य परम्परा है । धीरे धीर गुर पुत होकर खाद बन जाता है । धीर बड़ बात सना या रतो गंभ । वही कि मृत्यु ने तुम्हारे तिर के बास पक्क रन है धीर मरन से पहले तुम्हें अपनी साधना का अव्यय पूण कर सना है ।

भ्रमो म मृत्यु की बान इसक बान में क्या डालने हो गुरन्व !



नेत्रमुत्र धोल उठा। अभी तो मल बरबा है बौमल पूज है। वस बहुत समझार है। भित्तारो बातका का दूध-गाछ वाला गीत कागज पर उतारकर तो इसने मुहचि दिवाई।

‘इसका भविष्य उ-वस है रद्रपदम् मुस्कराय दला शय पहना गुरु है माता दूसरा गुरु पिता तीसरा गुरु आचाय !

यह सब तो गोविन्दन को समझाना ! देशमुख मुस्कराता हुआ बोना ‘जा पढ़न ही ममभदार है उसे क्या समझा रहे हैं ? पर एक बात है। गोविन्दन बम्बई में पाँच बरस बिताकर घर आ रहा है। बम्बई भी बहुत-बुद्ध सिखाती है। मेरी तो जन्म भूमि है बम्बई। मैं बम्बई छाप का धमत्कार जानता हूँ।

रद्रपदम् बोने ‘गोविन्दन को यह समझाने में तो तुम मेरी सहायता कर सकते हो रद्रमुख बाबू कि जब बीस पीढ़ियों से हमारे परिवार में संगीत-साधना चली आ रही है तो उसे इक्कीसवी पीढ़ी में भी अवश्य चरना चाहिए !

पहल वह घाये ता सही देशमुख ने छुटकी नी क्या खबर इस बार फिर वह चकमा दे जाय !

गाड़ी के पहियों की धरधराहट गूज रही थी।

गाड़ी ज्येटपाम पर रखी। कुहासे में गाड़ी से उतरत यात्रियों की पहचान सकना सहज न था।

रद्रपदम् बोला वह इस गाड़ी में न उतरा तो मुझसे कहा अधिक गोविन्दन की माँ को ही दुस होगा !

इसने में एक युवक भाकर रद्रपदम् के चरणा पर झुक गया।

तुम आ गए धटा ! रद्रपदम् ने गोविन्दन को छाती से लगा लिया।

फिर गोविन्दन ने शय का गन सगाया।

रद्रपदम् बोने ‘इतने भी चरण छुप्रा देटा ! यह हैं हमारे नय डारवायू श्री देशमुख !

गोबिन्दन ने भक्त देगमुख के चरण छू लिये ।  
तुम्हारी गिवा कहीं गई गोबिन्दन ?

वह बम्बड म रह गई गोबिन्दन हैस दिया मेरी गिवा  
वोना मैं बम्बई म रहूंगी ।

मुण्ड (बेटी) क स्थान पर गोबिन्दन ने पाठ पढ़न रखी थी । उसके  
सिर पर नई तराश क घुघराले बाल दिमाई द रहे थे । उसका  
यह रूप देखकर रूपदम् के मन पर चोट लगी पर व कुछ न बोल ।  
देगमुख बोला मैं तुम्हारे परिवार की याग-गाया सुन चुका हूँ  
गोबिन्दन ! तुम्हारे दादा थे कल्याण सुरम् जा बहुत बडे सगीता-  
चाय थे लका तब उनकी धान थी । तुम्हारे परदादा थे अनन्तगयनम्  
जिन्हन लिखिजय प्राप्त की थी और उत्तर भारत स उह वय म तान  
वार निमन्त्रण आता था । वीस पीलियो म तुम्हारे परिवार म सगीत  
गायना बली आती है ।

मैं तो इसे इसी की इच्छा पर छोटा हूँ । रूपम् मुस्कराय  
'यह चाहे तो भूतिवार बने चाहे कोई और काम सीम । पढ़ना चाहे  
पढ़ । बस अपनी माँ की आँखा से मोल्लन हो । और फिर वह  
तुलास म तुल मूय का और हाथ उठाकर बोले मर गोबिन्दन का  
सुमति दा भगवान् । यह परिवार के देग का भाग बडाए । मातृ देवा  
मव पितृ देवो नन आचाय देवा भव ।

देगमुख न गोबिन्दन की पीठ पर थपकी दन हुए कहा 'गोबिन्दन  
ता पहले स समभन्गर हावर आया हागा । बम्बई कित्ती का व्यय हा  
भपन पात नहीं रहती । बम्बड बहुत-बुद्ध सिगाकर वापस भजती  
है । और फिर उमने आत्मविभोर रूपम् की आँखा म नाँककर  
कहा हम अपनी फीस भवय लेगे गुरुम्ब । कहा तो गोबिन्दन के  
कान में वह मान पू क दें कि वह बम्बई जाने का नाम न ल और कहा  
ता दूसरा ही मान पू क दें कि वह बरकला म तीन दिन भी न बाट  
और फिर बम्बई का टिपट पटा ले । कहिय गुरुम्ब ! नवा इच्छा

है ? और फिर उसने गोविन्दन की और दलवर व्यग्यपूर्ण स्वर में कहा मातृ दवो भव पितृ देवा भव आचाय दवो भव । दवा गोविन्दन । तुम्हारी माँ हैं श्रीमती धन्नपूर्णा रूपम् जिनसे तुम शीघ्र ही मित्राण पिता हैं गुरुत्व रूपम् जो तुम्हारे गुरु न बन सके । और तुम्हारे आचाय है डाकबाबू दशमुष् जो तुम्हें सपन जसा ही दाव् बना सकता है ।

गल और गोविन्दन एक साथ हँस पड़े और गलबटियाँ डाल व कुहासे की सपन चादर में लुक्ते छिपने प्लेटफार्म से बाहर निकल गए ।



माँ ही नहीं बलाकार भी दूध-माछ है। मनुमूर्ति के लिए चिरन्तन समय का भी प्रभव-बन्ना तो सहनी ही पड़ती है। पुरानी मूर्ति है हर समय हर जगह उपस्थित नहा रह सकते थे भगवान्, इसीलिए उन्होंने माताएँ बनाई। माँ ही महान् है। गिणु हो चाहे कला-कृति शोना को ही प्यार-दुलार चाहिए। बलाकार का माँ बनना ही पड़ता है। इसी भाव भूमि पर बरकला के संगीताचार्य रूपम् के पर टिके हैं।

बहुत दूर से उठी है सागर की बड़ा लहर, जो माँ है उससे छोटी लहर भाई और उससे भी छोटी लहर परम मुन्दरी बहन। ताना लहरें एक-दूसरे का निरन्तर पीछा कर रही हैं। रूपम् सब जानते हैं सब समझते हैं। सागर की लहरों का यह क्रम उन्हें पुरानी कथा का स्मरण करा जाता है।

परशुराम ने आवेश में घाबर सागर में अपना परशु फेंक दिया था। त्रिभुवनी दूर परशु गिरा वहाँ तक बैरल की धरती निकल आई। बरल का जन्म-कथा पर लोग मन ही विश्वास न करें यह तो सभा मानते हैं कि बरकला की धरती सागर की दन है। धन्नपूर्णा स्नहमयी स्वर्ण मंगला बरकला की गेष्मा धरती !

बरकला का एक-न-एक बालक सागर-तट पर रेत के धरोरे बनाते समय गान-भगीत का कुछ-न-कुछ धाट पाता थाया है और बड़ा हाकर संगीत-भाग पर खन पना है। इसी प्रक्रिया द्वारा रूपम् संगीताचार्य बन

इसी ने उनके गुरु बल्याण सुन्दरम् को सगीताचाय बनाया और इसी ने बल्याण सुन्दरम् के गुरु अनन्तगयनम् को सगीत की शिक्षा दी थी।

रत्नपदम् व घुटे सिर पर मुट्टी भर मोटी और दो वित्ता लम्बी गिखा बात करते समय हिलती-डोलती रहती है। ऊँची-लम्बी-नुकीली नाक एक बार दखकर मुलाई नहा जा सकती। ऊँचा भरा शरीर छ. फुट से कम होता हुआ। चलते हैं तो माना धरती उनके नीचे दबी जा रही हो। मेघ-गम्भीर स्वर माना धराधर की अनुभूति से अनुप्राणित। कमर में मुष्टु। कंधा पर बड़े अनौपचारिक ढंग में ढाला हुआ पटका। कुत्ता पहनने का ध्यान तो उसी समय आता है जब समा में जाना हो।

कला में कोई ऐसा प्रसंग नहीं जिसमें रत्नपदम् रस न ले सकत हों अथवा जिस पर वे एक मेघावी के समान कुछ बोल न सकते हों। निभयना उनकी अभिरचि है परम्परा और अनुभूति का सतुलन उनकी भाषा और कला में चिरन्तन सत्य का मूल्याङ्कन उनका महा-व्रत।

जनादन स्वामी के मन्दिर के दक्षिण में है ब्राह्मण-पाठा जहाँ रत्नपदम् का पुस्तनी घर है पर जब से त्रिवाकुर-नरेण ने रत्नपदम् के सगीत पर मुग्ध होकर मन्दिर के उत्तर में बरकला की पहाड़ी पर स्थित अपने प्रासाद को सगीत विद्यालय में परिणत कर लिया है और उन्हें वहाँ का प्राचार्य बनाकर वहाँ उनके रहने की भी व्यवस्था कर दी है रत्नपदम् ने अपना घर किराये पर उठा रखा है।

जनादन स्वामी के मन्दिर और चक्रतीर्थ-मरोवर के बीच हाता हुआ रास्ता सागर-तट तक गया है। यह है पाप-नाशा। यहाँ स्नान करने से पाप बट जाते हैं। मन्दिर से पाप-नाशा को जान वाले रास्ते पर दाएँ हाथ सागर-तट में सगा है धरती का धानी श्रीचण। इसे दखकर ही कवि ने धरती को सागर-मेखला कहा होगा।

मन्दिर के पूर्व-द्वार के दोनों ओर चला गया है मन्दिर-बाजार। यहाँ की दुकानें यात्रियों का मुँह देखती हैं।

मन्दिर-बाजार से एक रास्ता पूर्व में धरती के धानी श्रीचण के साथ

धूमता धामता बरकला रनव स्टेशन को जा छूता है ।

जहाँ मन्दिर बाजार उत्तर में समाप्त होता है चक्रवीय सरावर के उत्तर-पूर्वी कोन से बस खाता माग संगीत विद्यालय तक पहुँचना है जहाँ धारिका की चारणीवारी पर कुहनियाँ टके रम्यम् जब चाह सागर का दशन-नाम बन सकते हैं ।

मन्दिर के दक्षिण में जहाँ बाजार पाछ रह जाता है माग चक्कर काटता राजकीय विद्यालय के सामने में हाकर गगन चौक में पहुँचता है । वहाँ खड़े होकर पश्चिम का द्वार देखें ता मागर के साय-नाथ सदन वृक्षावली दीखती है । ध्यान में देखें ता सागर की मूम-मी रेखा भी भक्तक सिमा जानी है । गगन चौक में खड होकर, हर प्रकार के गाने के लिए अपने गान बन्द करके रडपदम् दूर से आते सागर का जय धाप सुनते गते हैं जैसे वह अपने शक्तिशाली संगीत के लिए एक सच्चे कला-कार के समान उस क्षण का आह्वान कर रहे हों जब स्वर-शक्ति अपने प्रभाव में एक नूतन इतिहास लिपिवद्ध कर सकेगा—उस युग का इतिहास जब धरती में सागर में न बाहर आता आरम्भ किया ।

गगन चौक में एक रास्ता रेलवे स्टेशन को जाता है । उन रास्त पर घोक न आगे तक बड़ी दुकानों और रेस्तराँ हैं । इनमें नव-युग की चमक दमक है, क्योंकि इन पर बाहर से आये यात्रियों के अतिरिक्त बरकला के दानी-भानी परिवारों का बरद-हस्त रहता है ।

जिन यात्रियों का वापस जाने की जल्दी होता है वे गगन चौक के किसी रेस्तराँ से काफी पीकर घोर इडली-दाला खाकर मट गाढा का ममम पूछते हैं और स्टेशन का घोर चल दन हैं पर जा बहुत जल्दी में नहीं होते वे गगन चौक से घोग दक्षिण में रेलवे गार्डन के उस पार निबगिरी मठ की यात्रा को बन पडते हैं जहाँ ईश्वर ताता के गुरु नारायण स्वामी की समाधि है ।

गगन चौक में एक रास्ता बरकला के पत्रवीय आचन के काङ्क-वन को जाता है । रडपदम् प्रथम यात्रा को यह समझ तन है कि बर

नारायण स्वामी की समाधि से लौटकर इस काजू-वन के सौंदर्य का आनंद भी भ्रम्य मे ।

बिसौ-बिसी यात्री को तो रण्यम् अपन साथ न जाकर बरकला का काजू-वन दिखाते हैं । यहीं से होकर बिलाककोर मागर-सट पर पहुँचने हैं । वहाँ बरकला का मछुमा-टोला है । बिलाककोर पहुँचकर लगता है जैसे नसार का सबसे बड़ा घघा मछली मारना हो । एक नाव मागर के भीतर जा रही है । एक नाव भमी भमी घाई है । बड़ी-बड़ी मछलियाँ उतारी जा रही हैं । दूर तक मछलियाँ सूखन के लिए फना रबी हैं । यूनतम वेग भूपा भ्रयाव् एक सगोटी प्रत्येक सघप से जूम सवने वाली बनिष्ठ काया और विाप रूप से उनकी बातघीत से जिसम ज्वार का सा न त वेग होता है मचमुच ऐसा लगता है कि ये मछुए सच्चे सागर पुत्र हैं ।

बिलाककोर क मछुमा के लिए कनी सागर मयन नहा हुआ । उनके लिए सागर से न पभी भ्रमृत निकला न त्रिप । सागर म निकती हैं मछलियाँ जो बरकला के पाँच हजार प्राणियों म से इन दो हजार मछुमों का जीवन है ।

इन सागर-पुत्रा को सागर-सगीत प्रिय है ।

रण्यम् यात्रिया को यह बताने म नहीं सवुचाने कि बिलाककोर का घाटावरण इन सूख रही मछलियों की हीक से भरा रहता है तो क्या चीन्नी रत म इन सागर-पुत्रों की धुन मुनने के हघर घा निकाने है ।

सागर-पुत्रा क मुखिया है मुकतुवन मुत्तु जिह हर कोई मुत्तु बाबा कहता है ।

एतु बतमानम् मुत्तु भच्छण्च्छत्तु ? [क्या मभाचार मुत्तु बाबा ?] रण्यम् क मुख से यह अभिवान् सनते हो मुत्तु बाबा बिलबिलाकर हँस पड़ते हैं । मुत्तु बाबा न भी कई भाषाओं के बुद्ध वाक्य स्मरण कर रहे हैं । रण्यम् के साथ घाला यात्री भाभ्र दश का हा तो मुत्तु बाबा उसी की भाषा म पूछने हैं 'एमण्डा एमी समाचारम् ? [क्या जी क्या

समाचार ?] यात्री तमिन भापी होतो मुत्तु वावा पूछत हैं एन्नय्या एन्न ममाचारम् ? [क्या जो क्या समाचार ? ] यात्री कन्ठ भापी हा ता मा मुत्तु वावा का कुछ कठिनाई नहीं होती एनु समाचार ? [ क्या समाचार ? ] और उत्तर भारत के यात्रिया की भाँवा म माना सागर गम्भीर दृष्टि स भाँवन हुए क्या समाचार ? भयवा क्या खबर ? वापु म उद्घालत हैं ।

और रद्रपत्नम् यात्री की उपस्थिति का भूतन हुए-से बरकला के वणन म विभोर हो जाते हैं

‘माँ का ममतामयी गाँ-सी फली है बरकला की गेरुआ धरती ।

नारियल-गाछ माँ के घाँवल पर हरी पुँकियाँ बन हैं सागर का तहलें अपने क्षण-गगु घुम्वन म उस पर नीची गाट टाँक जाती हैं ।

मुझ बरकला प्रिय है क्योंकि तानिमा हगीतिमा और नीलिमा क वाच स भौन रहा है मगव अपनी युग-युग की परम्परा म गीत मुनहरा मन्त्रि कनक ।

य चारा रग धरती पर विखरकर एक नूतन रग को तम न्न हैं जिमके सम्मुख मानव अनायास नतमन्तक हो जाता है ।

मैं उस दिन का वात साचता हू जब यह गरिक-चरणा धरती माता अगाध-अपार सागर के भीतर म मद्य-स्नाना क समान निबल आई हाया । यह मागर यह धरती और यह जनान स्वामा का मन्त्रि युग-युग स अपनी गाथा सुनाते आ रहे हैं ।

सागर की भार म चन्ती है पछना जिमके मुझावने भूतारे बरकला का निहाल कर जाते हैं । प्र-पन्न ऋतु-उत्सव और व्रत-भगन म सम्मिलित होनी है पछवा लगता है पछवा क स्पष्ट-भात से बरकला की गहमा मिट्टी नाच उठी ।

सागर अपना घाँटि भाया म बन्ता है—य सब धरती कमी भरे अन्नराज म था । मेरा मन भा ऐसा ही कुछ बन्ता है ।

सागर क गाथ-साथ ऊँचे पयराज रत्नाम अगार माङ्ग तान मील



तक चले गए हैं। लगता है ऐरावनसहित अनेक हाथी निभय हो एक पौन म भ्रा लड़े हैं।

सागर के भीतर तक विनोप रूप से पाप-नागा पर खान नुकीली चट्टानें घुस आई हैं मानो हाथिया के बच्चे खेल-खेल म मूँड म खान समुद्री घास भरकर बिखर आए हैं। यह क्षमना मुझ बचपन म बनी प्रिय लगती थी यद्यपि आज मुझे इस पर हसी आती है।

वरकना के सागर-तट का यह दृश्य मेरे मन म बीते युगा की घण्टियाँ बजाता आया है। ऊँचे पथरील बगारा पर खड़े हैं गगन चुम्बी नारियल-नाछ। करल अथात् नारियल-नाछ का देश जिसकी मरयना को सिद्ध करते हैं वरकला के नारियल-नाछ।

धातु मिश्रित पथरीली गेरुआ मिट्टी सागर का खारा जल मिश्रने मे नाव नुकीली चट्टानों का रूप लेने लगती है। कभी सागर इन चट्टाना को नील लेता है, पर नई चट्टानें भी बनती-अभरती रहती है। नाचती इठलाती सहरे दिन रात इन चट्टाना का पूजन अर्चन करती हैं।

चिन्नाक्कोर के समीप से आरम्भ होती है वरकना की नहर जो सागर-जन को आगे एक सुविस्तृत भील से जा मिताही है।

इस नहर के निमित्त वरकना की पहाडिया को काट काटकर दो सुरगें बनानी पडी।

चिन्नाक्कोर के समीपवर्ती काजू-वन म पहले हम उस सुरग तक पहुँचन हैं जो मोल भर लम्बी है।

दूसरी सुरग का मुँह भी इसी काजू-वन म ही खुलता है। यह कोर रुढ़ मोल लम्बी होगी।

दूसरी सुरग का दूसरा मुँह तिवगिरि मठ क रास्ते म खुलना है। उस पर त्रिवाङ्गुर राज्य का राज्य चिह्न सल लुगा है। गन्ध क नीध बड़े-बड़े अषा में निता है—१८८ । उमी वष यह सुरग बनी होगा।

१८८ क बाद म यह सम्भव हो सवा कि त्रिवेन्द्रम् स मान ठाने फानी नाव मागर के साथ-साथ तीस्र मोन चनकर वरकला पहुँच गी:

फिर पक्की इटा से बने किनारा वाली दस फुट चौड़ी नहर के रास्ता आगे वाली भील से होकर बाइचान जा सके। उससे आगे तो अनाकुनम तक सुविम्बूत जल-भाग पर बड़े-बड़े स्टीमर चलते हैं।

‘घन्य पे व हाय जिन्हाने बरकला की यह नहर तयार की। घन्य था वह परिश्रम जिसके फलस्वरूप ये सम्बी सुरगें खोदी गई।

यात्री देखता है कि यह प्रगस्त मस्तक वाला सगीताचाय बरकला की मसूची विशेषताधा का प्रतीक है।

“न मुझे अपनी उच्च सगीत विद्या पर इतना धमण्ड है कि मैं सागर-मुद्रा की धुन को हीन समझने की नूल करूं। न मैंने अपने ध्यस्त्रित्व को छोले-स घेरे में ही बन्द रखने का प्रयत्न किया है। रद्रपदम् मुम्बयकर यात्री की ओर देखते हैं जैसे व कह रह हों हम बाहर स आन वाल यात्रिया के आभारी हैं।

जस पछवा के मकोरे हम निहाल बरत हैं वस हा आप लोग बाहर से आकर दर्शन देन हैं ता पाँच मीन के घेरे में वसा हुमा बरकला मानो पाँच सौ माल व घेरे में फल जाता है। फल का दिन ठहरें ता हमारे सगात विद्यालय में भी पधारें।

‘यह आपकी विगान हृदयता और उदारता है गुम्ब ! यात्रा श्रमता जसाता है हमें ता आज ही चलना है।

और रद्रपम् मुत्तु बाबा का भार देखकर पूछने है

एन्तु वर्तमानम् ? [एक यात्र पूछें ?] मुत्तु बाबा की धोखा में माना कोई जवाना मभव उठती है, उस समय तो हम अछूत न थे जब जनान स्वामा व मन्दिर को सागर तील गया था और हम इन्हीं हाथा स श्रवमूर्ति को बूढ़ लाय थे। फिर बाबारा मन्दिर बना तो हमारे लिए मन्दिर बन कर दिया गया।

‘यस ही प्रच्छा है मुत्तु बाबा ! रद्रपम् माना समस्त शिव नमात्र की ओर से कहत है वह श्रिन दूर नहीं जब मनुष्य जानि भेद की मिथ्या यात्र को माँप की कँडुला व समान उतार फेंकेगा।



मूर्तिकार दामोदरन की दुकान मंदिर बाजार में थी जहाँ रत्नपद्म का  
 भ्रष्टा था। अब तो देशमुख भी यहाँ की गोष्ठी में रस लेने लगा था।  
 देशमुख का विचार था कि दामोदरन ऊपरी मन से ही सबकी हाँ  
 नहीं मिलाये जाना है अपनी बात नहीं कहता। यहाँ बैठकर वह दामो  
 दरन की भाँसों में झँकता तो उसे लगता कि यहाँ तो युग-युग की  
 लम्बी दृष्टि की छाप है पर सकोच भी कम नहीं। उसे इस भक्ति  
 भावना से चिढ़-सी या जिसमें उपासक देव-मूर्ति के सम्मुख दृष्टि-क्षि  
 की टेर लगाता नहीं घघाता। प्रश्न-मुत्तर दृष्टि से वह दामोदरन की भाँसों  
 में झँकता माना वह उसके व्यक्तित्व को क्षीये में नूतन वाती सजा  
 रहा हो।

दापहर का समय था। आज दामोदरन घबेला था। मूर्ति की  
 घिसाई करत-करते बोना 'वहो देशमुख बाबू कन्याकुमारी की यात्रा  
 कर आए ?

मुझे तो कन्याकुमारी के मंदिर में कोई विघ्नपता लिखाई नहीं  
 दी। देशमुख ने नाक-भौं सिकोड़कर कहा नाम बड़े घोर ज्ञान थोड़े !  
 इतने में रत्नपद्म भी आ गए। बोले 'ज्ञान कहाँ गया ?  
 गोविन्दन के साथ घूम रहा हागा दादा ! दामोदरन ने हसकर  
 कहा 'तुम जानो तुम्हारा शल तुम्हारा गोविन्दन।  
 और हमारी पीम गुरुत्व ! देशमुख पाम से मुस्कराया।

कीस भी मिल जायगी रूद्रपदम् मुक्तराय पर योग्यता भी तो मिट्ट वीजिय । अभी तो तुम्हारे गोविन्दन के प्राण बम्बई की सडका पर ही घुमठ रहे हैं । जाने कब रास्त पर घायेगा मरा गोविन्दन !

स्नान को गय होंगे दामोदरन सोचकर बोला 'मैं भी दुबान बढ़ता हूँ । देगमुख बाबू का भा ले चलते हैं । धरे दूर-दूर ने यात्री घाते हैं पाप-नासा पर सागर-स्नान का फिर हम वरकला मे रहकर भी क्या इससे बचित रह जायें ?

वे स्नान ने लिए ही गय होंगे देगमुख हंस पडा । मन्दिर में जाकर भूति के सामने हाथ बांधे खडे रहन स सागर-स्नान करना फिर भी अच्छा है ।

पाप-नागा भी बुरा नहा दामोदरन मुक्तराया पर कया कुमारी की दूसरी ही बात है ।

सागर-स्नान हमारी सस्कृति का अंग है रूद्रपदम् मुक्तराये, 'अब दुबान बढ़ामो । धधा तो कभी समाप्त नहा होता । आज सागर न घातें की जायें सस्कृति का मनन भी ।

यह सस्कृति क्या बना है गुरन्व ? देगमुख अपनी बात पर स्वय हंस पडा ।

'ओम् तत्सत् ! रूद्रपदम् भाँवें बढ़ाकर बोन 'पराधीनता जो न कराये वही ठीक ।

देगमुख बाबू का कयाकुमारी का मन्दिर अच्छा नहा लगा दादा ! दामोदरन भी छुप न रह सका ।

केवल कयाकुमारी ही गय या रास्त न कुछ और भी दखा ? रूद्रपदम् की मानी-लम्बी गिवा नाच उठी ।

'त्रिवेद्रम् से आगे वह सरोवर भा दखा जिसक साथ गौनम और महत्या के प्राथम की बात जोडकर दगिण वालों ने अपनी बुद्धि का परिषय दिया है ।

'ठीक तो है, दादा ! दामोदरन ने मानो रूद्रपदम् की धार न बहा

यहीं तो गौतम का प्राथम था। तुमने देखा होगा वहाँ मेढक नाम का भी नहा। दादा समझा सकते हैं कि यह सब इंद्र के शाप के कारण हुआ।

रुद्रपदम् वाले दक्षिण की यही मायता है कि इधर ही था गौतम प्राथम। यही इंद्र ने महत्या को छुना था। मेढक कोलाहन कर रहे थे। हमसे पूछ कि उसे गौतम का शाप लगे उसने मेढको को ही शाप दे डाला कि वहाँ उनका बग-नाश हो जाय।

'सचाईं ता कुछ और ही है गुरुदेव ! दशमुख ने गम्भीर होकर कहा 'उम सरोवर के जल में गंधक है। इस कारण मेढक नहीं जीते। यह नास्तिकता यहाँ नहीं चलेगी दशमुख बाबू ! रुद्रपदम् ने त्योरी चढ़ाई।

पर भौगोलिक पचढे को भी तो सुननाइए ! दशमुख चुप न रहा 'भगवान् राम ने जनकपुर जाते समय मार्ग में महत्या-उद्धार किया था एसी ही जनश्रुति है। श्री राम के चरण छूते ही शिला महत्या होकर जो उठी थी। यही तो गौतम प्राथम रहा होगा फिर वह इतनी दूर दक्षिण में किस सरक प्राया ?

रुद्रपदम् न प्रसंग टालकर कहा चिदम्बरम् का मन्दिर भी देखा ? चिदम्बरम् का मन्दिर तो दक्षणीय है। दामोदरन बीच में ही बोन पढा वही तो इंद्र शाप-मुक्त हा पाय थे। दादा विस्तार से बता सकते हैं कि किस प्रकार गौतम के शाप से इंद्र सहस्राक्ष या सहस्र-योनि हुए। चिदम्बरम् में प्रायश्चित्त करके वह दवताप्रा को मुह दिखाने याय्य हुए।

रुद्रपदम् योने चिदम्बरम् का मन्दिर तो प्रति मध्य है।

दवयोग से उस दिन इस मन्दिर का वापिकोत्सव था। दशमुख भी चुप न रह सका लकड़ी के तीस पहियों वान डेढ़ सौ फुट ऊँचे रथ पर इंद्र की मूर्ति विराजमान थी। इंद्र के शाप-मुक्त होने के उपलक्ष्य में उनकी शाना-यात्रा निकल रही थी। सहस्रा यात्री इंद्र के रथ को हाथों

से खींच रहे थे । मैं शकस्त हाता तो वही रम जाता । मैं एक मित्र की कार में था जो उसी दिन कन्याकुमारी पहुँचकर सूर्यास्त का दृश्य देखना चाहता था ।

'चिदम्बरम् का मन्दिर में वे सम्भे नहीं देखे ? पत्थर के टुकड़े जोड़ बाँधकर एक बनाये गए हैं कि उन पर चोट करने से सगीत का साता स्वर गूँज उठता है । रुद्रपदम् बोले कभी फिर जाओ तो वे सम्भे शक्य दखना ।

कभी साथ ल चलिए । घृष्टता क्षमा हो ! वास्तव में चिदम्बरम् का मन्दिर देखने के बाद कन्याकुमारी का मन्दिर तो बीना-सा लगता है ।

श्रीम् तत्सद् ! मन्दिर समी पवित्र हैं महानु हैं—ऊँचे हों तो मने नीचे हा तो ! मन्दिर के सम्भय में ऐसा कहना शशुभ है । रुद्रपदम् मुखराय गुमने रेल के टीला पर बठकर सूर्यास्त का दृश्य देखा होगा । चिदम्बरम् के मन्दिर से शिव न डेर चावल कन्याकुमारी से विवाह करने के उपलक्ष्य में भिजवाय थे । विवाह न हो सका । कोई विघ्न पड गया । शिव के प्राय से चावल के डेर रेल के टीला में परिणत हो गए ।

'य सब तो कपोत-कल्पित क्याए हैं गुरुव ! दशमुख हूँस पडा मारा दनिए मन्दिरा और देव-क्यामा के नीचे कराह रहा है । गोविन्दन से भा मेरी वार्त हुई हैं ।

दुकान बन्दकर थ पाप-नाशा पहुँचे । शत्रु और गोविन्दन न उनका शनिवादन किया और फिर से लहरों के साथ लूमने गये ।

रुद्रपदम् ने सागर-जल से श्राचमन किया और सूर्य की धार हाथ उठाकर प्राचना की "मरे गोविन्दन को विवक दो नगवान् ! उसकी तुष्टि में यह बात आ जाय कि सगीत से ही देग का उद्धार होगा ।'

शामान्तरन बोला "श्रुतिपौ बनाते समय श्रुतिकार के स्वास चुक जात्र हैं ।

सगीताशाय का भी क्या ठीक है ? रुद्रपदम् मुस्कराये 'कौन जाने किम राग रागिनी का गली में प्राण साप छाड़ दें ।

फिर तो नाम शेष रह जाता है। और दादा नाम का भी क्या मरोसा है ?

‘यह तो ठीक है। जो कलाकार है वह भी विदा नेता है। जो कलाकार नहीं है वह भी धन देता है। फिर कला का भी क्या गव किया जाय ?’

देशमुख जानकर गोविन्दन और शखधरन के साथ हँसने-खेलन और भाग के छीटे उड़ाने लगा।

‘अन्न-जल की बात है दादा ! दामोदरन ने सहानुभूति जताई, अब गोविन्दन यही रहेगा। वह पिता का अब और नहीं सतायेगा।

‘सबसे अधिक चिन्ता तो हमकी माँ को रहती थी। रत्नपदम् ने मूय की ओर हाथ उठाकर कहा ‘सबसहा नारी का दुख तुमसे छिपा तो नहा भगवान् ! यह हमारी कुलदेवी युग-युग से वेल्ना का भार ढोती आ रही है। उसके पुत्र उस छोड़-छाड़कर भागते रहे। और फिर सागर की ओर हाथ फाँकर बोले हे वरुणदेव हमारा गोविन्दन आजाकारी बने ! पहले माँ की बात सुने फिर पिता की। माँ ही प्रथम गुरु है। उसी से पान आरम्भ होता है।

भाषी हुई बुद्धि तीन दिन भी नहीं टिकती और भीतर की बुद्धि तीन युग तक काम आती है दादा ! मैं शख स कहूँगा यह बात गोविन्दन के कान में डाल दे। बात करते-करते दामोदरन हँस पड़ा देशमुख ठीक कहता है बम्बई नगर में रुपया कमाकर घर पहुँचते-पहुँचते जेब में सबत्री भी नहीं बचती। पर गोविन्दन कुछ सा नापा ही होगा कमाकर ?

‘कमाई की न पूछो। कभी नाव सागर पर तो कभी सागर नाव पर ! अपना बरकला ही भना है।

‘बम्बई भी थुरी नहा होगी दादा ! दामोदरन ने धावेध में कहा देशमुख कहता है मरते-मरते भी उसका मुँह बम्बई की ओर ही रहेगा ! परदग में न माँ होनी है न सहोदर भाई !

राजा माने तो रानी ! अपना बरकला ही भला। बम्बई की तो

वह बात होगी—मुहागिन ने विषवा के चरण छुए तो बोली, कि तू भी मुझ-भी हो जा । जो स्वयं घर से भागकर वहाँ पहुँचते हगि, व दूसरे का भी क्या अच्छी राय देगे ? जय जनादनस्वामी ! मेरा गोविन्दन लौट आया !

'घर-घर नारियल-गाछ छत्र मुनाता है ! बरकला की क्या बात है दाग ! काइ राह चलता यात्री भी क्यों न आ जाय कच्चे नारियल का रस ता उसे पिनाकर ही छोन्त है । कहा भी है छोल की भावाज एक कास तक जाता है ता आनिध्य की भावना सी कोस !

देनामुप ने पान आकर पूछा क्या शान-गोष्ठी चन रही है ? मैं सब मुन रहा था । वम्बई म दाप निकान बिना क्या बरकला का गुण गान सम्भव नहीं ?

गाविन्दन और दन्धघरन का मन अभी स्नान से भरा नहा था । वे देर तक लहरा स जूमन रहे । आज पून न कुहान की गठरियाँ नहीं खोली था । धूप म तितनिमाँ जन भरतनाट्यम् क पश्चात् कयकली नाचने लगी थीं ।

स्नान क पश्चात् व लौट पडे तो दूर से एक कन्या आती दिखाई दी । पास स गुजरत हुए वह बोला 'मूर्ति बनाना ता छोटा ही या शख क्या अत्र बीणा म भी मन नहीं रमता ?

यह कौन क्या है ? रूपदम् ने पूछ लिया ।

'यह नीलू है गुन्धेव ! गल मुक्कराया भाववन नम्मूतिरिप्पाड का कन्या !

अच्छा ता य रोग आ गए ? त्रिवन्द्रम ने कालेज में प्रिसिपल ये न नम्मूतिरिप्पाड ! पाँच बरस पहल ही पैगन करानर प्रिसिपल महो द्य घर आकर रहगे यह ता हम तीन महीने से सुन रह्ये । रद्रपम् गदगल स्वर म बोल 'भाववन ने बगाली कन्या स विवाह किया था—मनपारी और भाय रक्त का सगम । यह हुई नीलू ! क्या यह ठीक है कि नीलू न एम० ए० किया है ? यह चाहे तो सगीत विद्यालय म आ



सक्ती है।

शशमुल ने हँसकर कहा 'भापका वग चले गुरुन्वैव ता सारे वर कता को अपने सगीत विद्यालय म समेट लें ! इतना स्थान भी है ?

रुद्रपदम् प्रसंग बतलकर बोले प्रागतिहासिक युग में चिर-नाल तत्र केरल के नाग-वर्णियों के साथ धार्यों का सघप हुआ था। नाग-वशी तो कुनदेवी को ही कुल-माता मानते थे। माँ से ही उनका परिवार चलता था जैसा आज भी केरल की अनेक जातियों म चलता है। धार्यों ने यहाँ पिता की पत्न प्रविष्टा कराई। बहुत सी बात म केरल के नाग वर्णियों के सम्मुख धार्यों की पराजय हुई। गिव को नागवशी अपना महादेव मानत थे। धार्यों ने उसे अपना देवता मान लिया। केरल की प्रधान जाति है नायर। मन्मालम के नागर शब्द का अपभ्रंश है नायर। नागर का अर्थ है गल में नाग डालने वाला। केरल की कुछ जातियों की स्त्रियाँ आज भी नाग-फन जैसा जूटा बाँधती हैं। करल के मन्दिरों में नागस्वरम् बजते हैं। नागस्वरम् के नाम म भी नाग-भूजा का भाव निहित है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि धार्यों के वंशज हैं हमारे नम्पूतिरिब्राह्मण आ आज केरल म नाग-भूजा के महापुरोहित कह जा सकते हैं।

शशमुल ने हँसकर कहा यह सब अनुसंधान तो बहुत बड़ा पचका है गुरुन्वैव ! और देखिए भापकी सुनाई हुई यह कहानी तो मरे मन नहीं चगती। यह कैसे हो सकता है कि जब एक नम्पूतिरि त्रिवेन्द्रम् के लिए घर से चला तो वायू-कुण्डा का नगराज अगस्त्यक के रूप म उसके नाम हो लिया और फिर इस बात पर तो हँसी भाप बिना नहीं रहती कि रास्ते मे उस नम्पूतिरि न नागराज से कहा कि आप मही ठहरिए मैं महाराज म भिन धाऊँ फिर हम इकट्ठे पर चलेंगे। और इससे भी अधिच हसी धामी यह बात है कि वह नम्पूतिरि दूसरे ही रास्ते लौट गया और नागराज के उपलक्ष्य में वहीं एक वायू बन गया। बताइय इन कपोत-वर्णित कथाओं से जनता को कब तक बुढ़ू बनाया जायगा ?



## वार

“हे कृत-धी ! हे तुलसी ! कच्चे नारियन का भोग स्वीकार करो ।  
गाबिन्दन को मुमति दो । यह पिता की आज्ञा म रट । ददिपाल  
घोर नकिहाल म उसका मग बड़े । माताँ तिन स्मिर-वाक रहे । वारहा  
मान गुड मस्कार रहे । प्रति पल ब्रह्म-योग म लीन रहे । धन्यपूणा  
तुलसी बेगी पर धी का नीप मजोरक प्राधना कर रही थी ।

कोई वरदान छू न जाय माँ ! तुलसी-बदा के पीछे से गाबिन्दन  
हैम पडा ।

‘धरे तुम पीछे छिपे लडे थे ! यह तो गुम हुआ । धन्यपूणा  
गाबिन्दन के सिर पर प्यार से हाथ फरने लगी ‘पीछे न जाने हाथी बीड  
या हथिनी । सगीठ सीका भीर पिता को प्रसन्न करो । सगीठ तो तुम्हार  
रक्त म है । बम्बई भागकर तुमन पसेरी म पाँच सेर की भूल की या ।  
सिर पर पिता का हाम रह । अभी कुछ नहीं बिगडा ।

पर कुछ तो क्या बरती थी माँ जि मेरे पर म चक्कर है ।  
बलत-बनते में बम्बई पहुँच गया । इमम तो पर क चक्कर वा हा  
चमत्कार था ।’

‘पर का चक्कर ही कुछ लौटा लाया बेटा !

‘यात्रा से मनुष्य बनता है माँ !’

‘पाँच घरम यात्रा म बिता लिए । उन घात चरनों को तो हाथी  
भी मरी पहुँच सकते । पिता धी छाया में बठी अभी तो डाल झुकागी ।

जो सीखता है उसी की विद्या है। भावना स विद्या फरती है। और विद्या की तो वह बात है वग कि बात छोटी बचकली लम्बी। अब फिर बम्बई न भाग जाना। गलत पढ़न ही बहन भागे निकल गया।

बाप से मैं क्या इर्ष्या कर माँ ?

‘बिना ऋतु गाछ नहीं फलते बेटा ! विद्या सीखन की यही भाव्यु है। बम्बई न वीनम लडकू बटले हैं ? समय-समय की रागिनियाँ हैं। जो समय का नहीं देवता यही मूल है। मैं तो यही कहूंगी बेटा ! घर न रह और माँ का आशीर्वात्त ल—बड़-बड़ रे चन्दन-गाछ !

लय पर पर उठते है माँ ! बम्बई न भी मैंने अपनी समय व्यय नहीं गवाया। मैंने कुछ खाया नहीं। पहल ता पिताजी सामने न बात ही नहा करन दन थे माँ ! बस यही कहन—ब्रह्मा व प्राग वद बाँधता है !

मौन सर्वायसावनम् ! यह मानकर दखा बटा ! फिर तुम दयाग—दाग और पायसम् (खीर) से भरा ! बरकता न ही रहा यहाँ तो सात बार नौ त्योहार का योग रहता है।

बम्बई ने भी मेरा कुछ बिगाडा नहीं माँ ! सूखे शख तो अटपट बजन हैं। सारी बात तो चार पसे कमा सभने की है। बम्बई जो वह सो सबा बीस। और बम्बई भी यही कहती है—साती लगे समचम विद्या भाव धमधम ! सोन को जग नहीं सगता। परिश्रमी के लिए बम्बई न सोने का मूय उगता है।

सौ दरम पर गताल्पी होती है बेटा ! पिता की छाया तो सीमाय स मिसती है।

जहाँ सौ वहाँ सवासौ। मन तो यही कहता है फिर बम्बई चलो। मैं पिन्मा न धुन बना सक्ता हूँ। सगीन मेरे रक्त न है। सगीत निन्दक बद्रों यही मेरी इच्छा है।

सगाताबाय क्या नहा ?

‘दस काय न उतने पस नहीं पिताजी की दूमरी धान है माँ !

त्रिवाकुर-नरेश उनके सरलक हैं। पर मैं तो इन दान भयवा मित्रों से प्रविष्ट नहीं मानता। ऐसा युग आने वाला है जब ये राजे-महाराजे नहीं रहेंगे। और मैं पूछता हूँ शास्त्रीय संगीत का हमारे देश में कितना लोग समझ सकते हैं ?

‘हाथी व पर मैं सबका पर, बटा ! हमारे त्रिवाकुर-नरेश चिरजीव हों—गुणिया व मरलक। यह सच है कि उनके राज म हाथी हाथी से ही तुलत हैं। नकिन पासग में गध भी तुन जाते हैं। उनके राज म हाथी तुलत हैं और गध पासग म तुलत हैं।’

‘बम्बई में तो बम्बईकार को ही नमस्कार है।

छनन में रुद्रपत्नम् आ गए। बान, ‘सबसहा मातृमूर्ति को सग प्रणाम करो वेदा गाविन्दन ! स्वयस्मर्पिता। मन का समिधा-सी। सदा यदामया। मत्ता बरणावती।’

वाटिका की चारदीवारी से चौथी रात म मागर का ज्वार बहुत बना लग रहा था।

धनपूणा बोनी ‘ह जनान्न स्वामी, मेरे गाविन्दन का तुम्हीं बुलाकर लाए। ह महात्मनु श्री महाबलि, प्राप्त धपनी घरती वामन का द रानी थी। प्रतिश्रय एक त्तिन के लिए तुम धपनी प्रजा को देने आते हो जब हम धाणम् मनात हैं। मेरा गाविन्दन घर लौट आया। मेरे लिए हर त्तिन धोगम् बन गया। फिर वह धानारे व समीप नागमूर्ति व सम्भुग सबी हाकर धाना हे नागराज तुम्हारे बरदान से ही गाविन्दन का जम हुआ था ! तुम तो सान पातान के वानी हा नाग दवता ! पर घरती की सब सुध-बुध रखते हा। बम्बई तुमसे कौन दूर है ! तुम मेरे गाविन्दन का बुता नाय। तुम कितन इपानु हो नागराज !

रुद्रपत्नम् की कल्पना में इक्कीस बप पहल की धपना धूम गई। धनपूणा न जनान्नस्वामी व भन्दि के समीप छत्रनार पीपल के नाच निष्ठापूर्वक पापाणु की नागमूर्ति रखकर नाग प्रतिष्ठा का थी।

तुम केवल पाँच महीने थे थे गोविन्दन जब हमने मन्नरशाला काष्ठ की यात्रा की थी।

गाविन्दन जानता था, प्रत्येक नम्पूतिरि घर में पाताल-कोठरी रहनी है जहाँ नाग-मूर्ति को भोग खगाते हैं और घर के समीप रहता है काष्ठ भयवा नाग-कुष्ठा जिसे पुराने वन का भयनेप ही समझा जाता है। नम्पूचे केरल में हजारों काष्ठ थे। इन सभी काष्ठों में मन्नरशाला काष्ठ की महिमा सर्वाधिक थी।

स्वर्णकार को अपनी स्वर्ण-माला भेकर तुम्हारी माँ ने नाग-मूर्ति बनवाई थी बेटा।

नाग-पूजा तो सनातन रीति है! अन्नपूर्णा मुस्कराई, नाग-पूजा में केरल का मन रमता है। नम्पूतिरि ब्राह्मणों के इल्लम् (घर) की पाताल-कोठरी में नाग मूर्तियों के साथ-साथ जीवित सप भी रहते हैं। इल्लम् के उत्तर-पश्चिम में रहता है काष्ठ। केरल के पन्द्रह हजार काष्ठों में एक भी मन्नरशाला काष्ठ को नहीं पहुँचता। यही यापिक ननवम् उत्सव पर हम तुम्हें लेकर गये थे गोविन्दन!

मन की बहेंगी पर मनुष्य परम्परा का भार ढाँटा था रहा है गोविन्दन बेटा! मन्नरशाला काष्ठ की क्या तो तुम जानते ही होगे।

मन्नरशाला के नम्पूतिरि इल्लम् का एक ब्राह्मण वैदिकोदु इल्लम् की एक नम्पूतिरि क्या का बच्चा बनाकर लाया! अन्नपूर्णा कहती चली गई 'उसने माता पिता उस क्यादान में एक नाग-मूर्ति ही दे पाए। समुराल में आकर वह इस मूर्ति की पूजा करने लगी। समुराल का सौभाग्य बढ़ता गया। वह गमवती हुई। उसने एक साथ एक बालक और एक नाग को जन्म दिया। घर की पाताल-कोठरी में जहाँ जीवित सप भी रहते थे इस नाग शिशु का पालन-पोषण होना लगा। यही स मन्नरशाला काष्ठ का इतिहास बनता है। और इस नम्पूतिरि इल्लम् के धराधर आस तब अपने नाम के साथ उस नम्पूतिरि माँ और नाग का नाम जाटकर गव अनुभव करते हैं।

गाविन्दन एक बार सात बप की आयु में भी मन्नरगाला के नवकम् उत्सव में सम्मिलित हुआ था। चित्रकुडम् (गिला पीठिका) पर अनेक नाग-मूर्तियों के बीच नागराज और नाग-यक्षी की मूर्तियाँ स्थापित थीं। वे तब उसकी छाँवों में घूम गए। जैसे चौदह बप पहले का समय अभी फल की बात हो। जैसे गोरस में गुधे आटे का भोग लगाया जा रहा हो। इन भोग का श्रुति-मधुर नाम था दूधम् पलम् जिसे सत्ता इल्लम् की बूढ़ी माँ ही बनाती थी। जैसे बूढ़ी माँ काबू में नागराज और नाग यक्षी की पूजा से पूव उन्हें स्नान करा रहीं हा। शिवरात्रि के दिन सट्ट्या नक्षत्रों की भीड़। उसी तरह विधिवत् पाँच पूजाएँ की जा रही है। सबेरे की पूजा में फल और दूध का भोग दोपहर की बल्ला नवद्यम् (पकाया हुआ चावन) फिर 'मल्लार (मुना हुआ अन्न) तत्पश्चात् विनाप नवद्यम् रखा गया जिसमें बेसर कच्चे नारियन का दूध फला तथा भी सम्मिलित था। जैसे इल्लम् की बूढ़ी माँ बता रही हो—बचा हुआ नवद्यम् किसी नदी अथवा सरोवर में गिरा जान की प्रथा है। नव कम् के उपनयन में सभी नाग-मूर्तियों को उठाकर गोमा-यात्रा निकालन का दृश्य उसकी छाँवों में घूम गया जैसे पुरातन परम्परा के अनुसार बूढ़ी माँ न उठा रखी हो। फिर उसके चिन्तन में वह दृश्य घूम गया—वह अभी पाँच महीने का शिशु है और माँ की बाँहों से उचक उचक जाता है जैसे उमका माँ स्वर्ण निर्मित नाग-मूर्ति भेंट कर रही हा। सभी स्त्रियाँ अपनी अपनी भेंट लाई हैं—बेसर कालीमिच रोमन श्रामू पण केन तेम और भी। पुल्लुवन जाति के भोग—जिनका धया है गाँव-गाँव घूमकर घर घर मप-मोत गा-गाकर प्रमन्नता का प्रसार। उनके तन्त्र-याच पर तुम्ब की जगह मिट्टी का घट लगा है।

अन्नपूर्णा ने भोजन परोस दिया। पिता-पुत्र बड़े प्रेम से भोजन पाते रहे। मागर-ज्वार की द्रुम रागिनी उनकी कल्पना पर थाप लगा रही थी।

भोजन के पश्चात् वे चारणोचारी पर कुट्टनियाँ टक लड़े थ। इतन

मे देगमुख की आवाज सुनाई दी 'बहिए, गुफ्तव घर पर हैं न।

'भाइये भाइये।' रत्नपदम् और गोविन्दन एक साथ खोल उठ।  
और भगन ही क्षण देगमुख भी आकर खड़ा हो गया।

मैं तो यही कहने आया हूँ गुफ्तव ! कि गोविन्दन को बम्बई जाने से न राकें। दशमुख ने हेमकर कहा बम्बई में गोविन्दन ने पाँच बरस बिताए। मेरा मतलब है इसने वहाँ पाँच घरस से बीज बोय धीरे धीरे व बीज उगगे फल लायेंगे। फिल्मों के म्यूजिक डाइरेक्टर को स्वयं गाना नहीं पन्ता घस घुने बनानी पडती हैं। और संगीत तो गोविन्दन न रक्त में है।

रत्नपदम् न कहा 'देगमुख बाबू मैं तुम्हारी पीस नहीं दी इसलिए यह दूसरा मात्र इसके बान में डाल रहे हो।'



मन्दिर के सामने लडा गोविन्दन सोच रहा था—यहाँ तो बुद्ध भी नहीं बदना। य लाल ऐसे ही खडे रहेंगे शय्य देत रहेंगे पून खडात रहेंगे। जब से वे पापों का प्रापचित करत रहू हैं। जब यह जन-समूह एक ही ध्यनित हो—सहस्रबाहू सहस्रपाद। जब इसकी मुग्धावृत्ति ही बन्वती रही हो हाथ-पर बस-क-बस रह हो। निर पर परम्परा का भार धतुनिक दब-क-बाधों का घेरा। जैसे यह मन्दिर इस मन्थबाहू सहस्रपाद भक्त-समूह के सिर पर बना हो।

मैं इनका साथ दूँ, यह नहीं होगा। स्वनाम वर माँगन नहा घनते—  
 न्हि-न्हि ! शत मह्य मेहि ! सहस्र काटि देहि ! युग-युग की सम्बी  
 नटि म देख रहू हैं। सागर-धनो-ध्वन मुष्यान। द्रुत घोर विलम्बिता  
 धारणी। इस भक्ति का मूल्य कितना ! पाप-नाश दूर नहीं। एक लहर  
 धानी है फिर दूसरी फिर तीसरी तीनों लहरें फेंक छाड चली जाती  
 है। दिन में मूय—धकाग का धानि-प्रोत घोर श्नु-धम का प्रवतव, रात  
 को धानि—सह प्रणता। इहें इस बात का क्या चिन्ता कि महन्वा  
 नूमि इन्द्र व पाप से रास्त की गिना बनी धमी तब किसी राम की बाट  
 जाहू रही है। इन्धिमोगी इन्द्र सहस्र-योनि बनकर नी बनी का शाप-  
 मुचत हो चुका है। मद्र-जन का धप घरकर धाया कामन। बाता—  
 थामान महाबति निपाद नूमि दवर दानसी लडा लिंगाए। घोर तृतीय  
 पा म ल सी समस्त बेरत नूमि ! वामन का राज है। महावति पातान



में निर्वासित हैं। यह तो बच्चे की भाँखें पाछन धानी बात है कि आणम् के तिन बरस म एक बार महाबति का अपनी भूमि म भान की पूरा छूट है।

गाविन्दन की कल्पना म बम्बई घूम गई जहाँ यह पाँच बरस दिता भ्राया था। वहाँ जितनी भाग-दौड थी। छोटे पथ बड़े पथ धाने वालो के साक्षी जाने वाला वे सखा। दिन के पहिया की घरघराहट रात की स्वप्न रागिनी। सुमन-यौवन धारती। फिल्मों की बुलबुलिया रग-स्थनी। समाचार-पत्रों की चित्र विचित्र श्नु ऋष-सी सूचनाएँ और टिप्पणियाँ। सहस्रपाद छन्द सहस्राक्षु रूपक सहस्राक्षर उपमाएँ सहस्र-बुद्धि भाव सहस्र रश्मि झलकार सहस्र जिह्वा रस सहस्र-वाक यदण। फिरभी गीत, जिनका समाँ ही मृद्य निराला है। टननु-टननु ड्राम। फिल्म क चित्रपट पर रग बिरगे सरगम। स्वयसिद्ध नृत्य नयनतारा और अपराजिता के पूत। सपनो क दाने चुगते बबूतर। आइए श्री गोविन्दन सगीत निर्देशक। बम्बई आपका स्वागत करती है। हम आपका जुलूस निकालेंगे। आइए सगीताधाय रुद्रपम् के सपुत्र। आइए म्यूजिक डाइरेक्टर महोदय। परम्परा का भार उत्तारिण। नई प्रतिभा का साथ दीजिए। यह है भिम गौरी—बम्बई की सुविख्यात प्ले-बैच गायिका। यह हैं मिस साध्या। यह हैं मिस उषा। यह हैं नयनतारा। यह है अपराजिता। उसने चौककर इपर उधर देखा। मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़कर वह भीतर प्रांगण में आ गया था। यह है वरकला। वरकला ना जनादन स्वामी का मन्दिर। यह बम्बई नहीं। यह बम्बई का किन्म स्टुडियो नहीं।

शस और नीलू ने मन्दिर के प्रांगण म प्रवेश किया।

देवता पर दो पूष भी न चढ़ाओगे? नीलू हँस पड़ी हम साथ क्यों नहीं लाये दादा?

मन्दिर के भीतर गम-गृह म जाने के लिए वे मुख-मण्डप से होकर गुजरे। देव प्रतिमा क सम्मुख घी के दीप जल रहे थे। उन्होंने प्रतिमा

पर फूल चढ़ाये मॅट-मृजा की तीय-पुरोहित से प्रसाद लिया ।

प्रांगण म आकर उन्होंने मुँह मीठा किया ।

मुख मण्डप के छज्ज पर बाहर की ओर बाएँ हाथ सरस्वती की मूर्ति थी दाएँ हाथ लक्ष्मी की । गोविन्दन के लिए इसम कुछ भी नया न था । सरस्वती और लक्ष्मी को इन्हीं मुद्रामो म वह बचपन से ही देवता आया था ।

मुख-मण्डप से थोडा हटकर प्रांगण में एक ओर था ब्रह्मा-मण्डप । ब्रह्मा न यही खडे हाकर भगवानु जनादनस्वामी से भिक्षा माँगी थी । पढ़ने लक्ष्मी और सरस्वती ने ही बाहर दशन दकर ब्रह्मा को सन्तुष्ट किया था । मुख-मण्डप पर उनकी मुद्राएँ आज भी उसी युग की याद दिवाती हैं ।

नीलू बोली ब्रह्मा को यह गव था कि वही मखिल बिस्व के स्रष्टा हैं ।

‘इसी ग्रह से मुक्त होने के लिए तो ब्रह्मा को यहाँ खडे हाकर बहना पडा था— भिक्षा देहि ! इसीलिए गुरुदेव कहते हैं कि बसाकार को धमण्ड से बचना चाहिए ।

राखधरन न सगव गम्भीर स्वर म कहा ब्रह्मा को बरकला म यग भी रषाना पडा था । उसो स ला बरकला को मिटटी गरमा हा गई । पर डानबाबू दसमुग इन कथाओ पर हँसते हैं । गुरुदेव नहीं हँसते । उनकी मायता है कि बरकला के बाजूवन में भबरगिया जल के स्रोत भी ब्रह्मा के यग से ही फूट निकले थे ।’

नीलू न माँप लिया कि गोविन्दन का मन उखडा-उखडा-सा है । उसने कॉलेज की बातें छेड़ दा । ‘कॉलेज की सुगंध अभी बन्द रखा नीलू!’ यग न गम्भीर होकर कहा ‘इम समय हम मन्दिर म बठे हैं । हमारे सपन दब-बसाओ म ही बिचरन चाहिए । भविष्य की बल्यना गढ़ने म जनादनस्वामी के मन्दिर की बथा तो अव्यय सुनिए ।

‘सुनेगे’ नीलू मुस्कराई । उसने बेणी म नीला फूल खोस

रवा था ।

'कल्पना के प्रवेश-द्वार पर मैं इस कथा को बल्लनवार के सहज सजाऊँगा । शर्य ने भूमिका खीपी ।

सौ बार सुनी हुई कथा में तुम कुछ नया तो डाल नहीं सकोगे । गोविन्दन मुस्कराया । 'कथा छोड़ो नीलू से गीत सुना जाय—फोई नीलवण गीत !

नील वण गीत ! ' नीलू इस पद्य गीत का भी रग होता है ?

उसकी बेसी का नीला फूल भरर करोर गाविन्दन को छू गया ।

फूल नहीं गीत की लय पास आनी चाहिए ! माथ पर अजीब सा भाव लाकर गोविन्दन तना तना-सा रहा ।

यह तो ठीक ही है ! गल हँसकर बोला ब्रह्मा-मण्डप में कथा और गीत का ही मेल है । भाज जो मात्रा दशन करवे धाम हैं इनमें बम्बई के भी हैं एक-दो परिवार ! मैं तो बम्बई जान की बात नहीं सोचता । बम्बई स्वयं बरबला को दगन दन खनी आ रही है । अच्छा तो अब कथा सुनिए ।

'कथा मैं सुनाऊँगी । नीलू गम्भीर मुद्रा बनाकर बठ गई

'एक था राजा । उसे अपनी देह की दो परछाइयाँ दीखने लगी ।

कभी वह सोचता सेवा भाव से जीवन बिताना चाहिए । कभी वह त्याग और सेवा के आन्ध्र भूल वासना और विलास में डूब जाता । और यह बात छिपी न रहती कि एक माय विरक्ति की ओर जाता है तो दूसरा आसक्ति की ओर । देह की दो परछाइयाँ मन की दुविधा की प्रतीक हैं ।

राजा को सपने में भविष्यवाणी हुई । वह यात्रा पर चल पड़ा । पूव सागर के साथ-साथ चलता हुआ वह कन्याकुमारी पहुँचा । फिर पश्चिम सागर के साथ-साथ चलता हुआ बरकसा धाम पहुँच गया । यहाँ उस सागर-तट पर पत्नी भगवान् की मूर्ति के दगन हुए । एक ही परछाई रह गई । राजा ने मन्दिर बनवाया जिस सागर ल गया । फिर दोबारा मन्दिर बनाया गया थोड़ा हज़र । और अब इस मन्दिर में देव-दगन की

दूर-दूर के यात्री आते हैं।

गोविन्दन हस पड़ा और भी कोई क्या होगी तो नीलू स ही मुनेगे। शत्रु तो छक्के का बल है। आज का युग चाहता है कि सगेप म ही बात की जाय।

मैं समझ गई' नीलू ने गम्भीर-सा मुह बनाकर कहा 'गोविन्दन को पनके गाने वाला ढग भरचिकर है। और यह भी ठीक है कि हमारे मस्तिष्क पर परम्परा का इतना भार नहीं होना चाहिए।

कभी यह क्या कभी वह क्या! क्याओं का भी कहा अन्त! गोविन्दन बोला, बरबला को इन घिसी घिसाई क्याओं से बचामा— जनर युग की इन पढ़ी तानों स।

'मेरे लिए तो शास्त्रीय संगीत ही सबसे बड़ी प्रेरणा है। शत्रुघरन चुप न रह सका यहा मेरा रास्ता है—एक ही रास्ता। इसलिए मैं अपनी एक ही परछाई दखता हूँ।

मैं तो सपने मढ़ती हूँ! नीलू हस पड़ी इसलिए मैं तो एक नहा दो नहीं एक साथ हजार-हजार नित-नई परछाइयाँ दखती हूँ। दाग मुझ कोई उपाय बताओ। बचामा से नहा मरी तो इन परछाइया स ही रसा करा। मेरा एक मन ता कहता है कि बब काय क लिए बडा स्थान चाहिए। बरबला ता क्या मुझे तो त्रिवेद्रम् भी छाग समता है। नृप बना म मेरा मन रमता है। दखें मेरे सपन मुझ कहीं उडा ल जायें।

तब तो तुम भी बम्बई पहुँचकर रहोगी नीलू! शत्रुघरन न गम्भीर स्वर म कहा 'मुझ सपनों का रोग नहा। मुझे फिम क बसुरे घानाओं का भी रोना नहीं। मरा मन उगढा-उगढा नहीं। यह ठीक है कि हमारे यद्य म बीस पीढ़िया स संगीत नहीं चना घा रहा। सगाठ मेरे रक्त म नहीं। पर सगता है सृष्टि की रग रग स रागिनी उमड रही है।

वाह-वाह! नीलू हस पड़ी मैं तो समझी थी कि गज का घनि बनना ही होगा है!'

नीलू की आँगा की ली पछवा के बनाने खाने दापन क सहन कभा

युझती-सी लगती कभी फिर जल जाती। फिर वह कॉलेज की अघखिली कनिया-सी बातें ले बठी, जिनमें वित्तिलियाँ उठ रही थीं पूस का कुहासा पहाड़ियों और सागर प्रान्त को ढाँप रहा था कुन्तल लहर-लहर उठ उड़ जाते थे स्नेह और कुतूहल की गलब्रहिया अघरतिया का पूनम चन्दा धुगधुगों की झिलमिल पाँतों, विस्मय विस्मय जाती-सी नृत्य की पुकार स्नह की टर। और इन सब बातों पर फिर बरकला की गेरभा मिट्टी की छाप लग जाती। मिट्टी की मूर्तिया का फिर कोई देव-कथा छू जाती। इनमें कुछ भी सा गोपनीय नहीं था। आगे जाने अथवा पीछे हटने की सब माघ मुलाकर जैसे नीलू एक ही भवर में घुमठ रही हो। सबलवर बोली अतीत सूखे पत्तों के सदृश भडकर गिर भी तो नहीं सकता।

गोविन्दन ने एक ही उत्तर दिया बम्बई दूर नहीं।

नीलू बोली अभी कुछ दिन गुरुत्वे से संगीत का अभ्यास करूँगी। फिर अपन पत्र छुन छोड़ दूँगी। कहीं भी उडा ले जायेंगे मरे सपने। मुझे बई-बई परछाइयों की परवाह नहीं। मैं सपने चुनती हूँ।

'या सपने तुम्हें चुनते हैं। गोविन्दन हँसा और फिर उसने गम्भीर स्वर में कहा पिछले पाँच बरस मैंने बम्बई में बिनाये। बहुत दशा बहुत सीता। बहुत कष्ट सहे। सुख भी दूर नहीं। बम्बई दूर नहीं—मरे सपना की बम्बई जो मुझे स्पूजिव डाइरेक्टर मानेगी।

कसा है फिल्मों का ससार दादा? नीलू पूछे बिना न रह सकी 'क्या मुझ भी वहाँ काम मिल सकता है?'

क्या नहीं? पर इसके लिए बहुत साहसी और दीठ बनना पडता है।

वह मैं बन छूँगी।

तो काम भी मिल जायगा। जो ताग फिल्म-जगत् में आज महान् सपने जान है जिनके नाम की आज धाव है उन्हें शुरू-धुरू में फिल्म स्टूडियो में घुसने का रास्ता नहीं सूझता था। जीवन उन्हें धता बनाने पर तुना हुआ था। फिर वे घुम ही गए। सपन सना, जिसे बम्बई की

मापा म कहूँगे कड़की । मैंने भी सघष किया है । मेरा कड़की का युग चल रहा है ।

मेरे पिताजी कहते हैं हमारे भीतर जो बीज है जो सत्य है उस पहचाना उसी का विकास करो ।

और जो हमारे भीतर झूठ का बीज हो ? झूठ का भी बीज होता है । बम्बई में कच्ची के युग से गुजरते समय झूठ का बीज भी उगाना पड़ता था ।

यही ठो मरे पिताजी भी कहते हैं । नाटक म सभी पात्र होते हैं—मच्छ भी बुरे भी ।

कोई-कोई पात्र तो जीवन भर झूठ का भण्डा उठाये रहता है, और एक बार तो सत्यवान को भी कहना पड़ता है—मच्छा ता भ्रात्रा, झूठ क साँप मुझ डस लो ।

शखधरन धुप न रह सका सत्यवान को तो मरकर भी जीवन दान मिन गया था ।

नीलू की धार्मिक शक्त का और धूम गई वह सब तो सावित्री के कारण हुआ । यम-सावित्री क प्रश्नोत्तर तो प्रसिद्ध हैं । सावित्री को निष्ठा रग लाई सत्यवान वापस मिल गया ।

शखधरन बाना इससे हम क्या सिद्ध करना चाहते हैं ?

नीलू मुस्कराई हीरा तो स्वयं उठकर बाजार म नहीं जाता मनुष्य जाता है । हीरा और मनुष्य में बस यही अन्तर है ।'

तो क्या तुम्हारे लिए भी बम्बई दूर नहा रही ? शखधरन झुंझनाया 'तब तो तुम सपन नहीं बुन रही सपन तुम्हें बुन रहे हैं जस गोविन्दन क सपन उन फिर बम्बई खाच रहे हैं ।'

गोविन्दन ने ब्रह्मा-मण्डप की महाराज से गम-गृह क सामन बाने मुन मण्डप क छद्म पर दोनों और लक्ष्मी और सरस्वती की मूर्तियों पर फिर मञ्जर गढ़ाई । वह बाना बरकला में किसी का भी अपना रचना पर धमण्ड नहीं । किसी का भा ब्रह्मा क सदृश मिश्रां दहि' कहकर

प्रायश्चित्त नहीं करना पड़ता। सब परम्परा की कठपुतलियाँ हैं। किसी की भी अपनी कोई रचना नहीं। मैंने कठपुतली बनने से इन्कार किया। मैं बम्बई भाग गया। बरकसा मेरी जन्मभूमि है बम्बई कमभूमि। और दलिये बम्बई में सब भूठ का अपना दान है पाप-पुण्य के दवानुर सपना के लिए बम्बई का फिल्म-जगत् प्रसिद्ध है। वहाँ कई बार घमूत मन्थन हुआ। दीवाला निकलने पर भी सठ बनने का सपना देखते रहना— यह है बम्बई। गिरकर भी यही मानकर चलना कि अभी पीठ नहा लगी। बम्बई की भाषा में दो शब्द परम आवश्यक हैं— 'चात्रू' और 'खलाम'। वस यही कोशिश रहती है कि खेल चालू रहे मनास न हा जाय।

नीलू ने दाना हाथा से बेणी में नीले फूल का फिर से खोसते हुए कहा 'मेरे पिताजी कहते हैं जब रगमच पर भूठ का मडा उठाने वाला पात्र अपनी जीवन-सीला समाप्त करता है—इसी को बम्बई की भाषा में बहेग—जब उसकी जीवन-सीला खलाम होने लगती है तो वह जाने जाने सब की धुनोती दता जाता है—वटा तुम्हें भी कुछ बरक सिगाना होगा।

इसके लिए तो जन्मभूमि छोड़कर बम्बई जाना पड़ता है। गोविन्दन हस पना 'दूर बाजार में जाता पड़ता है। अपना मूल्य सिद्ध करना होता है। क्या का विवाह होता है तो वह नहर का घर छोड़ कर समुराल जातो है। यही हाल बनावार का है।

दासधरन ने गम्भीर होकर कहा 'इसी को गुरुदश की भाषा में यों कहेंगे—बलाकार को भी माँ बनना पड़ता है।

नीलू की बेणी पर नीला फूल मुस्करा रहा था। उसकी आँखा में दूर के सपने सहारा रहे थे। सँभलकर बोली दोपहर का मूय मिर पर आ गया। माँ राह देग रही होगी। और फिर हँस पड़ी बम्बई जाऊँगी तो वहाँ कौनसी माँ रास्ता भेजेगी ?

मैं तो यही साधना करूँगा ! दासधरन ने हृद घोष स्वर में कहा

यहीं अपने बरबला म जहाँ तपस्या करके दस प्रजापति शापमुक्त हुए थे ।'

हम तो किसीने शाप नहीं दिया ! गोविन्दन हँस पड़ा 'हमारे शापमुक्त होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता ।

नीलू बोली प्रजापतियों के शापमुक्त होने की कथा मेरे पिताजी की बहुत प्रिय है । जब वे कॉलेज में प्रिंसिपल थे तो विद्यार्थियों के सम्मुख बरबला की प्रशंसा के पुनर्वाचते समय यह कथा भी अवश्य ले बैठते थे ।

हम भी सुनेंगे वह कथा नीलू ! तुम सुनाओ सक्षप म ।' गोविन्दन मुस्कराया देव-कथा की बाँसुरी बजाओ, नीलू ! कथा कहने का भी एक ढंग होना है वह तुम्हें ही आता है ।

नीलू दोनों हाथों से बेणी को ठीक करने लगी । गोविन्दन ने नीले फूल को संभालते हुए कहा फूल न गिर जाय ।

नीलू मुस्कराई जैसे नीला फूल भी मुस्करा उठा ।

'भव भेर नहीं हाती ! शस्त्रधरन म उठना चाहा ।

भरे बठो अभी । नीलू की दब-कथा इस गोष्ठी की अन्तिम वस्तु होगी । और देखो नीलू ! पूरा अमत्वार लिखाओ । यह कथा कुछ-कुछ भूल चुका हूँ । पाँच बरस बरबला से बाहर जो रहा । तुम्हारे मुँह से मुन लूँगा एक बार तो फिर नहीं भूलूँगा । कथा की महकती आत्मा शब्दों में तिल उठ । शब्द म अमिय रमधार कहा दो । यह न हो—शब्द धाय शब्द गय । शब्द म अय की लय जगा दो । नीलू तुम्हारी क्या पात है !'

यह विम्बावली है अथवा मसका पानिग ? नीलू न हँसी दबाते हुए कहा बम्बई की सम्यता का असली रंग है मसका पानिग, जो चालू और अलास के धाद नहीं पहले आता है । अर छोडो । मेरे पिताजी कहा करते हैं यह देव-कथा गम्भीर है मनोहर है गरजती-भूँजती आत्मीयता सागर-नहर नहीं यह गम्भीर है साम-गान सी कथाकि इसम



साम-गान का उल्लेख धाता है। और वे कहते हैं

‘वे कुछ भी कहते हों शालधरन भुंभसाया तुम क्या सुनाओ  
और फिर उठने की बात करो।’

नीलू क्या कहने लगी—

‘एक बार धीणा पर साम-गान की धुन बजाते नारद विष्णु-लोक  
पहुँचे। भगवान् उनके धीणावादन पर मुग्ध हो गए।

नारद वहाँ से चले तो भगवान् भी पीछे-पीछे हो लिये। इसे कहने  
हैं सगीत का चमत्कार।

ब्रह्मलोक में पहुँचकर नारद साम-गान की वही धुन ब्रह्मा के सम्मुख  
खड़े होकर बजाने लगे। सहसा ब्रह्मा ने नारद के पीछे खड़े विष्णु को  
दस लिया। ब्रह्मा ने साष्टांग प्रणाम किया।

विष्णु भट लुप्त हो गए। प्रणाम के पश्चात् ब्रह्मा उठे तो प्रजा  
पति एक साथ अट्टहास कर उठे। उन्होंने यही समझा कि आज ब्रह्मा ने  
नारद को ही साष्टांग प्रणाम किया है।

ब्रह्मा ने प्रजापतियों को शाप दिया— मृत्युलोक में पहुँचकर जन्म  
मरण चक्र में फँसकर वृष्ट भोगे।

प्रजापतियों को दुखी देखकर नारद धाले— मैं एक स्थान बताता  
हूँ जहाँ जाकर तपस्या करने से तुम शापमुक्त हो सकोगे।

नारद ने अपनी बल्लल नीचे फेंक दिया जो एक नारियल-गाछ  
पर धा लटका। बरकला की गेरुमा धरती पर ही था वह नारियल  
गाछ। बल्लल का ही अणुभ्रम है बरकला।

अपना सो बरकला ही ठीक है! सब मुस्कुराया यही अपनी  
जन्मभूमि यही जन्मभूमि।

गोविन्दन हँसकर बोला, बरकला का एक अणु श्यामता के  
बोच से भाँकता दूज का चाँद भी तो है! बरं और कला। बरं  
हुआ ‘बार’ अर्थात् पूरा अथवा दयामल ‘बार’ ही घिसकर बरं बन गया।  
यला अर्थात् दूज का चाँद। इस प्रकार बरकला का यही अणु हुआ।

‘भरपूर दूज का चाँद भयवा श्यामलता के बीच से भाँकता दूज का चाँद । नीलू हँस पड़ी ‘मेरे पिताजी तो बरकला का यह भय कभी स्वीकार नहा करेंगे । मुझे अच्छा लगा दादा ।

गलघरन उठकर खड़ा हो गया ।

नीलू ने गोविन्दन को हाथ से पकड़कर उठाते हुए कहा ‘तुम्हारा भय मुझे अच्छा लगा । इस पर यम्बइया बुद्धि की छाप है । भव यह छाप मेरे सपनों पर लगेगी । मेरे सपनों की श्यामलता के बीच से भाँकता दूज का चाँद मुझे बरकला से बन्ना करके नहा रह सकता । क्यों दादा ठीक है न ? मेरी जन्मभूमि है बरकला नन्मभूमि ना भनी शुद्ध ठीक नहीं ।



दामोदर को सब स्मरण था उस यह क्या की बात है। वर्षा  
क दिन मेघ मृगग बजा रहे थे वह मेघल आकाश जैसे बराबर  
उसरी स्मृति में देग-काल की बजरारी-कटीली चितवन-ध्याप लगा रहा  
हो। एसी ही भीनी गंध उठ रही थी उस दिन भी। पछत्ता की बांसुरी  
बज रही थी आज ही के समान। भर भर करते जल का सम्मोहन  
कोर-कोर वर्षा रागिनी ! कई बार वर्षा-श्रुतु आई और चली गई। उस  
दिन की स्मृति मन में रखी रही भीनासी मन्दिर के सहस्र-स्तम्भ-मण्डप  
से। दास पीतल की मातृ-मूर्ति की घिसाई कर रहा था जब रत्नपदम्  
आज ही के समान बाहर से भीगकर दुकान में आ बटे थे आज ही के  
समान।

‘वस्त्र धून तो दादा !

मैं भीग गया चिन्ता नहीं। वर्षा अपना काप करे हम अपना।  
दो रागों के बीच का विराम समझो। चिन्ता नहीं।

वस्त्र तो बदल ही लो।

वर्षा में भीगना ही तो बरकला की महिमा है। आज मय जन्म  
निवम है। बाधनवाँ लग गया आज !

दामोदर ने मुण्डु (वेष्टि) निकालकर दिया और एक नया  
पट्टा भी वस्त्र धून का भातर जाकर। फिर बात करेंगे।

रत्नपदम् को कमर में सूखा मुण्डु पहनते दर न लगी। सूखा पट्टा

बर्षों पर झल गया ।

मूसलाघार पानी पड़ रहा था । बीच-आंच में बिजली घमक जाती । बरबला में दो बार वर्षा ऋतु आती थी—एक बार पश्चिमी मानसून की साइ हई दूसरी बार पूर्वी सागर की । घान की फ़मल भी इसी हिनाब में दो बार कटती थी । पश्चिमी मानसून आन पर ही वर्षा का ठाठ बेधता था । कुछ दिना व विराम के बाद दूसरी वर्षा तो मानो बसे ही मन रखन को आती हो । तब पानी कहां भरता ऐसा मूसला घार कहां ?

वर्षा के नव अपराध क्षमा ! रुद्रपद्म मुस्वराए, 'श्रीर सुनो । घान का ही तो दिन था । छः वष पहले । स्मरण करो भला ।

मुझ सब स्मरण है दाग । कैसे भूल सक्ता हूँ ? वर्षा की आँखा में मघन सपने तैर रहे थे । मेघा के मूदगवादन ने वर्षा राग में नय ताज जड़ लिए थे ।

पछवा वं भबोरे । भर भर भरता जल । बिजली की मिलखिलाती नैनी । पाप-नागा की आर में उमड़ता सागर का द्रुत-गजन । भर भर भरता जल जैसे कोई अन्तर्ध्या कह रहा हो । अनगिन मेघा का नराधोर करता जन जम कोई भेष-भल्हार छन-छन छलक रहा हो ।

दामोदरन हंसकर बोना आज ही के दिन छ वष पूर्व तुमने मुझ एक मूर्ति त्री थी नाग ! उमका मान क्या चुकाओगे ?

'वह पीतन की मूर्ति तो नहीं !" रुद्रपद्म मुस्वराए, वह तो हाइ मांस की मूर्ति है । वह मूर्ति सगात सीख रही है । उस मूर्ति से एक दिन मुझे गुरुदिएणा मिलना ।

जिन दिन वह मूर्ति मगीत में पारगत हो गई हम तुम्हें हाथी पर घडाओगे दाग !

मगत-विद्या तो बहुत लम्बी दौड़ है । जब दोनों बूल बोत्तन लगे तब ममभा सरस्वती का बरदान मिला ।

गुरु का कृपा हा तो सरस्वती का बरदान कौन दूर है ?

बपा के नये राग म दूर से उठता सागर-सगीत खो गया । बर्पा की जन चान्दर म भार-भार देखना सहज न था मानो बरकना बर्पा की इच्छा पर ही जी रहा हो । कीर-कीर पहुँच रहा था बर्पा-जल । वृष प्रसन थे, बालक युवक बृद्ध—सभी खिल उठे ।

उस गिन भी ठीक ऐसी ही बर्पा हो रही थी दादा ! छः बप पूव ।

ग्राँथ भपकते में धीत गए ये सब बरस । समय की गरिमा सागर-सी विधान है । समय भावृति दता चलता है माथे पर झुरियाँ पाता है गाछ के तन पर प्रायु के चिह्न छोड जाता है ।

‘बर्पा के समान ही समय भी तो दिन रात बरसता है दादा ! एक पीढी आ चुकी होती है एक पीढी आ रही होती है और एक पीढी—जैसे हमारी पीढी है—जाना नहीं चाहती तिकी रहना चाहती है जमकर । पर एक दिन जाना ही होगा दादा ! ऋतुकम के समान हम फिर लौट-लौटकर आते हैं—यह बात तो तुमने ही कही थी अभी उस दिन !

“तो तो ठीक है । ऋतु प्रायु है गाछ है जीवन ! जो पत्तियाँ भर जाती हैं खाद बन जाती हैं । नई पत्तियों में खाद की सानसा भाकाशा हरियाली-लहराही है मुँ मुँ ! यही जीवन है । हमारे पुराने हमम हरियाले-लहराते हैं ।

जल-थल एक था । बू दो की चितवन म कोई प्रश्न नहीं था । धरती की जिज्ञासा प्रतिपल भीनी गंध का भ्रंचल घाम रही थी । हर छण दूध की फेन-सरिस मुद्कान नूनन सौरम का अभिवादन कर रही थी । बरकना में बर्पा ऋतु का यही रग था । बर्पा है नवजात बसमान । बपा का बिर-मत्य प्रश्न नहीं पूछता । बरसती बू दो की परछाइयाँ गल मिल रही थीं । धरती की गरुमा मिट्टी बजरा चली थी । नये रग का ग्राँजन भक्ति बानी-बटोनी गंध चितवन । कँपती बरीनियों की बिरमता-मा अभिवादन भापा मुखर हो उठी थी ।

‘इसी तरह हुमा करेगी बपा जब हम नहा होंगे ।

दामोदरन मूर्ति की घिसाई करता रहा ।

हम तो सना होंगे । धरे भान वाली पीठिया म हम हा तो होंगे । इसी तरह कुहनी टके लेटे लटे माँ धरती गाछ-छीना को दूध पिलायगी । यह मपन भाकाग तो हम जम-जम देखने भाये हैं । इसी जम म दखा होता तो क्या इतना प्रिय सगता ?

‘ ऋतु म ऋतु बाहें डालता है पीढा म पीढी—यह भी तुम्हारी ही मूर्ति है दादा । हाथी की ईख स भारी । हड्डियाँ खाए बननी हैं—नये-नय राग रागिनिया की खाद । खाए बनना ही महिमा है । नई पीढी म पहली पीढी क सपन ही खिनन हैं । नई पीढी की साँस म पहा पाए की साँस चलती है ।

छपाछप नहा रही थी धरती । वर्षा धमने का नाम ही न लती थी । सोंधी गंध सावधान स्नेहमयी दृष्टि से बरकला का गगन रागिनी में हूव रही थी । मन क सात पाताल म कहीं भय न था । वर्षा नतकी क पर म नाचनी थी । ताल समीप भा गया था । वर्षा का अपना छन्द था जिनम भषा के बन्द ढील पठ रह थे । जन ही प्यार का सार था जन ही विस्तार । बीज-गिणु को धरती का दूध चाहिए । माँ धरती को वषा का बरदान ! हड्डिया की खाए वषा का आह्वान करती भाइ थीं—प्रमिय रसधार का आह्वान । वर्षा की भाँसा म हड्डियों की खाए मुम्कराता थी नय-नय राग जाहती थी ।

आज के दिन ही तुमने मर शख को सिप्य बनाया था दादा !

घष तो गोविन्दन भी भा गया । पाँच बरस मे शय्य उगाम था ।

पिता-पुत्र म मेन बठ गया तो बाल्यकाल के मित्र कस नहा चढ़कने ! गोविन्दन सगीत म मन सगा रहा है न ?

सगीत तो उसके रक्त म है । उसकी पकू भी टानी न। ।

फिर क्या किन बात की है ?

‘यही रट लगाये रहता है—गास्त्रीय सङ्गीत नहीं चलाता !

मनी बरषा ही ता है । उम समझ भा जायगी । जा गुग्जन है

गिप्यों की भाती आलोचना से क्यों सीकें ? जिज्ञासा का उत्तर क्रोध नहीं। जिज्ञासा तो मीमांसा चाहती है। सब ठीक हो जायगा दादा ! एक बात पूछू ? याद है कैसे शल को मुझसे माँगा था ? मैं तो समझ ही नहीं सका था जब तुमने आकर कहा—मैं एक मूर्ति माँगू तो दागे ? मैंने उत्तर दिया—उठा ला दादा ! पूछने की क्या बात है ? मैं आपन शय से मूर्ति का मोल तो नहीं लूँगा। मैंने साधा था तुम मात-मूर्ति ही माँग। तुम्हारे मन में तो दूसरी ही मूर्ति की चाह थी। तुम मुस्वराये। दादा तुम्हारी वह मुस्मान मुझ आज भी याद है।

हाँ याद आ गया मुझ भी। मैंने कहा था—मैं तो जनाशन स्वामी का आशीर्वाद में अभिसिक्त हाड मौस की मूर्ति लूँगा।

तब तो तुम्हें सब याद है दादा ! हमारा दादा बहुत अच्छा है। सब याद रखता है। हाँ तो तुम्हारी आँखों में जिज्ञासा देखकर मैंने कहा था—तुम शय को लेना चाहते हो ले लो !

मुझे तुम्हारे वे शब्द कभी नहीं भूल सकते। अपना शख मुझ देते हुए तुमने उसके मान में य शब्द डाले—शख ! आज स तुम मरे नहीं दादा क पुन हो ! यह तो तुमने ठीक ही कहा था। शस्त्र भी यही कहता है—मातृ देवो भव पितृ देवो भव आचार्य देवो भव।

मेरा शय तो भाग्यशाली है दादा ! उस तुम्हारे जसा गुरु मिना। और देवो दादा गोविन्दन से तो वह इस जन्म में होड नहीं ल सकता। बीस पीढियाँ स जिनके रक्त में संगीत हा उससे बना कोई क्या खाकर होड लेगा ?

तो तो ठीक है। सुना है बम्बई में फिल्मों का कुछ म्यूजिक डाइरेक्टर गाविन्दन की मूम-मूम की प्रशंसा करते नहा सकते।

फिल्मों गाइन का युवी नहीं दादा ! बहुत पस मिलत हैं। पीसे के बिना तो गाडी नहीं चलती। पसे ही गाडी के बँन हैं।

पर फिल्मों में संगीत की जो दुर्गति हो रही है, उस किस क्षमा किया जाय ? एक राग की टाँग तोड़कर दूसरे में लगा दी। एक रागिनी की

अन्तर्निर्मित इन्द्रियों में डाल दीं। इन्हीं तुम साधना कहोगे ? यह तो साधना का विरूप ही होगा। राग को तो उस रास्ते में कोई स्मृति ही नहीं मरना। गोविन्द को उमका चस्का लग गया। कभी कहता है कच्चा दूध की तरह कच्चा गाना भी तो हो सकता है। नभा कहता है माग सगान के साथ-साथ दंगी राग का हर युग में जाकित रखा है। कभी पूछता है गार्हस्थ्य माग सगीत में बरकरा क मछुओं का मागर-सङ्गीत किन तरह घास्त्र विरुद्ध होगा ? मैं तो उसने इन प्रश्नों के कारण बहित हुआ हूँ। उम यहाँ प्रायः पाँच मास से ऊपर हो रहे हैं पर उसका मन बम्बई में है।

वह किन्मा में सपन हो सक तो क्या बुरा है दाग ?

मैं तो आहूँ वह गम के साथ-साथ चन। राग उसमें बहुत घाग है। फिर भी गोविन्द परिश्रम करे तो एक ही बरस में शम्भु क नाय हो सकता है। शम्भु का एक बिगपना यह है कि पटज और पचम उसने कठ में समान लापव से उसका माप देने हैं। गोविन्द का कष्ट उनका अर्च्छा नहीं। राग पर मुझ गव है।

'दान तो तब है दाग कि जस त्रिवेन्द्रम् क मगीत-मम्मनन में प्रसिद्ध सगीताचार्य फयाज खाँ न हमारे गाना का कला पर रीननर उन् गन से लगा लिया था वस ही फयाज खाँ का पट्टिगण्य कल का हमारे राग की कला पर रीनन जाय। एक बात पूछू दाग ! क्या फयाज खाँ भी दीप-दान ? पत्ता की प्रायु एवं सह्य वप की मानन है ? क्या य भी मानन है कि दीप-दान का घोंच में मात छे होने हैं त्रिनसे शम्भु माग सगीत के सात स्वर निबन ? शम्भु दक्षमुन तो इन बातों पर हैमन हैं। कहते हैं य तो बहुत बड़ी गप है कि प्रायु पूरा हान पर दाप ग्वास जगत से प्राम-पूय ककठी करक दीपक राग गाना होगा उसमें अतुदिक नापता है और राग स चिना में घाग लगाकर जन मरता है और फिर राग के डेर स दोबारा जी उटता है।



‘देशमुख बाबू तो शका-मुत्र हैं। दीप-ज्वान की क्या में है एक प्रतीक। उसे समझने के लिए बुद्धि चाहिए। वही हृदियों की छाया वाली बात है। कला कभी मरती नहीं। नई पीढ़ी में पुरानी पीढ़ियों की कला फिर फिर जी उठती है।

‘देशमुख बाबू तो इस बात पर भी हँसते हैं दादा कि पद्मग मयूर के स्वर से निकलना और ऋषभ पपीहे के स्वर से। कहते हैं गंधार बहरी के स्वर से निकला है तो एक दिन संगीत तो बहरी घर जायगी। मध्यम पंचम, ध्रुवत और निषाद जगता कलंग कायल घाडे और हाथी के स्वरा से निकले इस स्थापना पर देशमुख बाबू हंस हँसकर सोट पाए हो जाते हैं। कहते हैं यही बात है तो इन पशु-पक्षियों को एक जगह बन्द करके इनमें क्यों नहीं कहते कि मिलकर राग रागिनिया का धारकेन्द्रा छेड़ें।

देशमुख तो नास्तिक हैं। उनकी बात छोड़ो।

शामोदरन ने प्रसंग बल्लकर कहा ‘जो भी माँ की माता है दयना की मूर्ति ही माँगता है। मातृ मूर्ति उठनी नष्ट बिफती।

पर तुम्हारी कला तो मातृ-मूर्ति में ही गिखर पर पहुँच रही है।

तो तो ठीक है दादा! गोविन्दन बता रहा था कि पाँच बरस पहले जब वह बम्बई गया तो मेरी एक मातृ-मूर्ति वह नाय लेता गया था और फिल्मों की किसी अभिनेत्री को उसने वह मूर्ति उसने जमशिन पर भेंट की थी और उसे वह मूर्ति आज तक पसन्द है। पर दास की माँ मुझ पर हसती है। देशमुख बाबू भी हँसते हैं। एक मन बहता है वही माल बनाओ जिसकी खपत है एक मन बहता है मातृ-मूर्ति में अपनी कला को घरम सीमा दो। यही भर मन की दुविधा है।

यह बड़ा कि तुम्हें भी दो परछाइयाँ दीखती हैं। रत्नपत्रम् हंस पड़े।

मातृ-मूर्ति में समय भी अधिक लगता है। देवताओं की मूर्तियाँ दासने के लिए तो ठप्प बना रखे हैं। मातृ-मूर्ति के लिए हर बार मोम

म नई ही मूर्ति बनाकर इसका ठप्पा बनाता हू । दो-चार मूर्तियाँ ढाल लीं और ठप्पा तोड़ दिया !

छद्रपत्म् मुस्कराय और दामोदरन के हाथ से मातृ-मूर्ति लेकर ध्यान न स्तन लग । मेघ-गम्भीर स्वर म वाले 'पुत्र का कपोल अपन कपोल स चिपकाय खड़ी है माँ । इस मुद्रा में आदि-शक्ति दूध-गाछ ही तो है ।'

बपा का जलतरंग पहल क समान ही बज रहा था जैसे मेघल आनाग की मेघ रागिनी भी इसी टक पर झूम उठी—इस मुद्रा म आदि शक्ति दूध-गाछ ही है ।



**कल है श्रावणम्**—श्रावण मास के श्रावण नक्षत्र का याग । इसी दिन महाबलि सात पाताल से अपनी प्रजा का सुख-दुःख पूछने आते हैं । श्रावण स हुआ थी श्रावणम् फिर फिर श्रावणम् । फिर भी सूखे पत्त की तरह भड़ गया । रह गया श्रावणम्—केरन का मुख्य त्योहार । श्रावणम्—मलयानम म सर्वाधिक श्रुतिमधुर श्रावणम् । महाबलि आते थे इसी दिन । घर घर महाबलि की मूर्ति बनती थी । महाबलि के राज्य म सब सुखी थे—न कोई खोर-उचकरा था न याचक । सभी तो उस सम्राट की दतना बट्ट हुआ जो महाबलि का प्रतिधि होकर रहा । यही उस वचार का वह नियम टूट गया । वह दान करके ही भोजन करना था पर वहाँ कौन था जो उसका दान स्वीकार करता ? सुख-समृद्धि का मपना देखते बरबसा म भी गम्भा मिट्टी की मूर्ति बनती थी घर घर । मनपूर्णा न भी बनाई महाबलि की मूर्ति । पर जब गाबिन्द ने माँ के सामने बठकर कहा मैं तो बल ही बम्बई जा रहा हूँ ! तो माँ को लगा कि श्रावणम् के दिन महाबलि की बरुची मिट्टी की मूर्ति उसके श्रासुओं से भोग जायगी ।

तो क्या इस वष का श्रावणम् मेरे लिए श्रावणम् ना रहा है ?

मैं तो बल ही जा रहा हूँ माँ !

बल तो महाबलि भरण डालेंगे घर घर । बला कोई श्रावणम् के दिन भी घर से जाता है ! महाबलि तो महात्तानी के बेटा ! उन्होंने बामन

को अपनी धरती लेकर दान की महिमा प्रतिष्ठित की थी ।

मुझ तो तन की इस महिमा पर हींसी आती है माँ ! गोविन्दन चुप न रह सका और यह भी कल्पना-मात्र है कि दानी को अपने दान का फल प्राप्त करने के लिए फिर से जन्म धारण करना पड़ता है । बम्बई में एक साज्जन कह रहे थे—सब तनगीलता बकवास है । वामन और महावलि का क्या का वह दूसरा ही अर्थ बना रह स ।

मैं भी सुन्नूँ ।

व कह रहे थे असल बात यह है कि आर्यों ने दक्षिण में जाकर अपनी धौंस जमाई और इसे दीक सिद्ध करने के लिए वामन और महावलि की कहानी गढ़ ली । न केवल यह क्या गढ़ ली बल्कि दक्षिण वाला को भी इस पर विश्वास जिला दिया । इससे तो दक्षिण वालों की मूर्खता ही सिद्ध होती है ।

यह तुम नहीं बोल रहे गाबिन्दन ! यह तो बम्बई बान रही है । छि छि ! यह अनमल प्रलाप तुम्हें अच्छा लगता है ! मैं बारी जाऊँ । एक समीताशाय के पत्र के मुख से ये बातें कैसे शाभा द सकती हूँ ?

वह महोदय तो कह रहे थे माँ कि यह क्या भी आर्यों की विजय गाथा का ही प्रचारात्मक रूप है कि परशुराम ने गोकुण के स्तन पर लड़ होकर सागर में अपना परशु फेंका और वह कन्याकुमारी के समीप जा गिरा और गोकुण से कन्याकुमारी तक सागर में से धरती की धरती निकल आई ।

हरि ओम् ! अन्तपूर्णा ने गाबिन्दन के मिर पर हाथ फेरते हुए कहा मेरे पुत्र होकर तुम इतने नास्तिक कैसे बन गए ? बम्बई में यही सब बातें सीमनी हों तो बम्बई जाने का विचार ही छाड़ लो ।

‘तुम ही तो कहा करती हो माँ कि गुनो सबकी और करो अपने मन की ।

माँ तो मैं सब भी कहती हूँ !

‘बम्बई में तो मैं असल्य का क्या पर विचार करत हुए इमी

निष्कप पर पहुँचा कि भाषों द्वारा दक्षिण विजय का यह एक घोर चमत्कारपूर्ण प्रचार है। तुम्हारा मन मानता है माँ कि भगस्त्य को विध्य पत्र ने दण्डवत् प्रणाम किया था और भगस्त्य ने उसे आज्ञा दी थी कि जब तक मैं लौटकर न आऊँ तुम इसा प्रकार सट रहना ?

क्या तो क्या है। इससे अच्छी शिक्षा ही नहीं चाहिए देना !

तुम्हारा मन मानता है माँ कि भगस्त्य ने सागर-जल से आचमन करके सम्पूर्ण सागर का सुखा डाला था और पीछे बरहण देव की विनीत प्रार्थना पर ही ऋषि ने फिर से सागर का जल लौटा दिया था ?

तक हर जगह तो नहीं चलता देना !

'यह कहना कि दक्षिण भारत में आकर भगस्त्य ने तमिऱ भाषा का सर्वप्रथम व्याकरण तयार किया मुझे तो इयम भी भाषों के पुरातन प्रचार-साधनों की ही गंध मिलती है। आचय तो यह है कि दक्षिण वाले मंत्र से इन वार्ताओं पर विश्वास किये बढे हैं।

माँ ने बटे क सामने त्योरी षढ़ाना तो उचित न समझा। मिसरो और इलायची दते हुए वाली 'हर दिन भोणम् ह्ये मैं चारी जाऊँ। क्या तुम तान दिन भी नहीं ख सकने ? अपन पिता और शख को त्रियेद्रम् स नोट भान दो फिर चल जाना। मैं तुम्हे रोकू भी नहीं। मैं ता त्वदी तुम्हारे पिता से भी तुम्हारे ही पक्ष की बात कहूँगी।

माँ सामने बठी थी मातृ मूर्ति के सहण। अनेक अनुभवों ने उसके मुख पर रेखाएँ डाल दी थीं। उसके माथ पर समय ने हस चसाया था और उसकी रेखाएँ बनपटियों तक चली गई थीं। गोविन्द को लगा माँ के दूध का मोल तो बडे-बडे ऋषिवर और युग-गुरुय भी नहीं चुका सके। माँ न ही य भ्राँखें दी जिनस मैं देख सकता हूँ। उसन मन ही मन कहा—स्नहमयी माँ प्रणाम ! पुण्यगम-शत्र ! मेरी आत्मा-जन्मभूमि ! तुम्हें तत-शत अभिवादन ! जसे उसन मूर्तिकार की दृष्टि से नहीं पुत्र की दृष्टि से ही माँ को देखा हो। मन में धाया तीन दिन हा की वो बात है क्या न एक जाऊ ? माँ की दुःख होगा। माँ ठीक साबती है। भोणम्

क त्तिन तो मुझ नहा जाना चाहिए । चलकर नीलू से कहता हूँ वह भी मान जायगी । तीन त्तिन बाद ही सही । माँ को रष्ट करना ठीक नहीं ।

फिर बम्बई का जीवन उमकी भाँवों में धूम गया । माँ के लिए बम्बई में उठना सम्मान भावना न थी । तमी तो भुँभलाकर काई-न-कोई मित्र पूछ बटता—तुम घरती पर उगे थे या भाकादा स गिरे थे ? कितनी विचित्र बात था कि किसी का सम्मान भी डपर-उघर हो जाय तो उसका क्या-कल भाई उसके कूचे से बाल साफ करने हुए यही कहता—'क्या वह तुम्हारी माँ का पाम चला गया ? यह बात तो बहुत बार सुनी गई—तुम्हारी माँ का गिर । यह उस समय कहा जाता था जब कोई किसी की धान समझ ही न रहा हो । मुँह चिढ़ान की बात माँ तक पहुँचकर ही मम लती थी । मसका लगाने में पसा भाता है सा ठीक है । बस पसा भाता चाहिए । सात रुपय मुफ्त हाय लगे तो भादमी भिखारी के हाय पर इकन्नी रखते मरता नहा ।

'बरकला म तो एष पसा भी क्यों भयेना लवर ही भिखारी प्रमन्न हो जाता है माँ । बम्बई में चार पसे स कम म भिखारी के मुख से भागीर्वादि नहीं निकलता ।

तुम तो दानगीभता पर हँस रह थे । माँ ने चुन्की ली 'क्या तुम भी कमी भिखारी का हाय पर चार पस रखत हो ?

बाहर समलताम और धीम के पत्तों में खेलती हवा के स्वर में सागर का जय-धोप मिसल रहा था । गोविन्द ने माँ की ओर दम्बर कहा 'नाँ तुम कितनी भ्रष्टी हो । तुम्हारी गाली नी मरे लिए पातोर्वा है ।

माँ मुम्कराड 'नीलू भी नहा जायगी । मैं नीलू की माँ का समझा लूगी । नीलू मान जायगी । तुम नीलू का साथ देने के लिए ही प्रोणम् क त्तिन बम्बड जाना चाहत थ ? और दमा गोविन्द एक बात सुन लो बात सोनबर । मनुष्य का आयु क अनुसार ही बुद्धिमान दामना चाहिए, उमस अधिक नहा । यह पुरानी सूक्ति है, सुनहरे दानों में नियम थाय ।"

माँ की आँखा में पुरानी स्मृतियाँ तर रही थीं। उसने चाककर गोविन्द की ओर देखा। बाँस और घमलतास के पत्त मानो मदगवादन में एक-दूसरे से होठ ले रहे थे। सागर का जय घोष उनक मस्तिष्क पर दस्तक दे रहा था। बीच-बीच में भीगुर घपना एकतारा छेत्त रहे। पछवा के झरोरा में दीवत पर दाये की लौ मानो बुझत-बुझते फिर बच जाती।

माँ स्रष्टा है पुत्र रचना ! गोविन्द ने मातृ श्रृण का अनुभव करते हुए कहा 'माँ इसीलिए मुझे गल क पिता की बनाई मातृ मूर्ति इतनी अच्छी लगती है। मैं पहली बार बम्बई गया तो ऐसी एक मूर्ति ने गया था। वह मैंने बम्बई में दूरा का भेट की थी उसके जन्मदिन पर।

दूरा कौन ?

'दूरा एक फिल्म अभिनेत्री है माँ ! गोविन्द ने खिन्की में पड़ी मातृ-मूर्ति की ओर सचेत करते हुए कहा यह भी उसी के लिए ल जा रहा हूँ।

ऐसी ही मूर्ति उसे पहन भी दे चुक हो। फिर इसम क्या बात है ?

'यह कला-दृष्टि से पहन घाती मूर्ति से कहीं अच्छी है।'

मुझे तो कोई अंतर नहीं दीखता। एक ही ठप्पे की मूर्तियाँ अलग अलग कैसे हो सकती हैं ?

एक ही ठप्पे वाली बात तो ठीक नहीं माँ ! दब मूर्तियाँ के लिए घल के पिता ने ठप्प बना रखे हैं। पर मातृ-मूर्ति के लिए वह पुराना ठप्पा तोड़कर नई मूर्ति ढाने हैं।

मुझे तो वसी हा लगती है। माँ खड़ी है घालक का कपोल घपने कपोल से बिपकाय।

जो स्वयं माँ है जीवित कला-मूर्ति है उसकी आँखों में पीतन की इस निर्जीव मातृ मूर्ति का क्या मूल्य हो सकता है ? गोविन्दन हग पना दूरा न फेरमाइत की थी कि नई मूर्ति नाना। वह माँ तो नहीं बनी

पर उसके भीतर माँ का हृदय मचन रहा है।

उसका विवाह तो हो गया होगा ?

नहीं माँ ! उसका विवाह नहीं हुआ। विवाह कराने की बात उसके सामने है। माँ का स्नेह उसके भीतर उमड़ रहा है। तुमने ही तो एक बार बताया था माँ कि मातृ भावना का सम्बन्ध विवाह से उतना ना है जितना क्या के हृदय से। इरा के भीतर जो मातृ भावना है उसी के कारण उस यह मूर्ति इतनी अच्छी लगती है। उसकी माँ ने उसे बचपन से ही यह शिक्षा दी थी कि बड़ी होकर उसे गृहस्थी रचानी चाहिए। पर उसकी माँ मर गई और इरा पर घर का भार आ पड़ा।

‘ओह किसी की माँ न मरे मसार म ! अन्नपूर्णा ने ठण्डी साँस लेकर गोविन्दन की ओर देखा। और थोड़ा संभलकर उसने मुकुटिका का त्रिशूल बनात हुए कहा तुम मत पढ़ना इरा के चक्कर म नयाकि यटा ! कहन-कहते वह रुक गई और सोचने लगा—इस बात म गाविन्दन कच्चा नहीं होगा। इस बात म वह अत्यन्त अपन पिता पर है। वह घटना उसकी कल्पना म घूम गई—गोविन्दन के जन्म से पहले इनकीस बप पहले जब उसका विवाह भी नहीं हुआ था। कुम्भ कोणम् के रामस्वामी के मन्दिर में संगीत-सम्मेलन हुआ जिसम गोविन्दन के पिता का भी गायन और वादन हुआ था। उस पर मुग्ध होकर अन्नपूर्णा ने स्वयंवर के सहज रत्नपदम् को पति चुन लिया। वहाँ म अनकर रत्नपदम् कायानुमारा पहुँचे। अन्नपूर्णा भी अगत तिन घर से भागकर कायानुमारी पहुँच गई। अन्ततः म उमन फिर रात्रे-रात्रे रत्नपदम् का वीणा-वादन सुना और साहसपूर्वक वह ही तो लिया मुझ अपनी जीवन-सगिनी बना लीजिए ! रत्नपदम् ने इन्कार म मिर दिया लिया। अन्नपूर्णा ने कायानुमारा की चट्टान म सागर म कूटकर प्राणा की प्राणुति दन का नियुक्त कर लिया। अपना निणय उसन रत्नपदम् को भी बता दिया। रत्नपदम् दर तक भ्रामहत्या को महापाप सिद्ध करन का यत्न करने रह। अन्नपूर्णा के मानन वाना थी। कम वह चट्टान म कूट गई, कसे रत्नपदम् ने ही



है कि वीणा-वादन द्वारा सहस्रबाहु भगवान् के बाहु उठाने का दृश्य स्वर्गों द्वारा प्रकृत कर डालू । ऐसा प्रतीत होना चाहिए कि भर भर जल धरम रहा है और हम वह भाववाचन व रहा है कि अपने सघष में मानव को भी सहस्रबाहु होना होगा एक-एक बाहु उठाकर अपने सिर पर सफ सना का मुकुट रखना होगा । माँ तुम्हें अच्छी नहीं लगती पिताजी की लखनी ?

अच्छी क्यों नहीं लगती बेटा ?

धीरे सुनो माँ ! यह शब्दचित्र भी बढिया है जिसमें हमारे धरम के उस नृत्य का उल्लेख आया है जो नया धान कट जान पर होता है । धान का ढेर एक विनोद आश्रित लिय रहता है । पहल नये धान की पूजा हाती है । फिर वयोवृद्ध स्त्रियाँ और पुरुष एक धीरे बठकर गात हैं और सौभाग्यवती कुसवधुए अपने भाँचसों की ओट में नये धान की बालियाँ और धी के दीप लिय धान के उस ढेर के चतुर्भुज नाचती हैं । लगता है यह नृत्य कभी दीप नहीं हागा । सुनो माँ ! बम्बई जात ही मैं नये धान के इस दीप-नृत्य की सजाजना पूर पाँचसौ रुपय में बचकर लिगाऊँगा ।

माथे रुपये मुझे भेजना ।

बहुत अच्छा माँ ! कहा तो पाँचसौ क पाँचसौ ही भज दू ।

पुरुषों का यश बढाओ गोविन्दन जैसे भी बढा सकते हो । मैं तुम्हारे बम्बई जाने के विरुद्ध नहीं हूँ पर चिट्ठी में देर न किया करो । कमाओ-खाओ आशावादी रहो । परियम स मुह न माडो । तुम्हारे लिए हर दिन ओणम् रह । और सुनो अब सो जाओ । कल ओणम् है महाबनि आयेंगे । एक दिन के लिए ही सही । अच्छा अब सो जाओ ।

गीया बुझाकर माँ-बेटा सान का यत्न करने लगे । पढ़वा के भकारे लज हो गए थ ।

सधरे उठकर माँ के मुह से पहला बोल यही निकला आज ओणम्

है । आज तो तुम बम्बई जाने का नाम न लेना ।'

नीलू ने आकर कहा, मैं तो छू भी नहीं । तुम भल ही रक जाओ, गोविन्द !

तुम जा सकती हो ओणम् के दिन तो मैं क्या नहीं जा सकती हूँ ? उसन मा की आवाज दी "माँ आओ हम फैमला करें ।

फमला यही है कि तुम आज बम्बई नहीं जा सकत ।' माँ ने अधिकार जताया ।

तुम बहोगी तो रकना ही होगा ।

पिता के आने स अगले दिन ही चन जाना ।

महाबलि की मूर्ति न सामन खड़ी होकर माँ प्रार्थना करती रही । यह लौटकर आई तो गोविन्द उच्च स्वर स नीलू को आत्मबया खोल कर सुनान लगा—

हर दिन ओणम् हो ! अमृत से मगल घट भरे ! सब प्रसन्न रहें ! हर मकट टन ! मगल-ही-मगल हो !

यही ता मैं भी कहती हूँ ! माँ बीच म बोल डठी मगन ही मगन हो ! हर दिन ओणम् हा !

'मुनो भी माँ ! गोविन्द फिर उच्च स्वर स पढ़कर सुनान लगा—

जय महाबलि ! स्वागतम् थीमान् ! आइए, पधारिए ! गरुभा मिट्टी से यनी अपनी मूर्ति देखिए ।

'बहों क बहन म रहें घर क सन्स्य । मधुर बचन बोलें । यही मूर्ति अपनापनी है मेरी बीणा !

गवका बाँहें तुम्हारे स्वागत में उठ ली हैं । बडे घरा की कुन बघुनें भाँवें बिछा रही हैं । नागस्वरम् बज-बज उठना है । हम-मुकुट पहन मुस्करात महाबलि भाय !

'जय विराट ! जय अमण्ड ! जय अणूय ! जय अणय ! बार-बार बज-बज उठनी है मेरी बीणा ।

‘हम निज मह की बनि दे रहे हैं । हम धीतराग तो नहीं भर हम तो रागी हैं ।

हम दूध-गाछ हैं । बहुत क्या कहें ? दुग्ध कच्चे दूध के स्रोत ! हम हाँक दे रहे चिर धतीत को !

हम प्रागत के बीज ! हम वमगीन ! हम महात्यागी ! हम पल्लव ! हम सदा सृजन में छुटे—सृजन के लीलाघर ।

हम नाल गगन की हाँक मारते हाथ उठाकर ! प्रणाम भरे हम स्वर के खबटिया !

हम धनागता शतिया को फिर फिर बुना रहे हैं ।

“हम स्वर के मधुए—

मध्वली-जाल उठाये चले जा रहे हम स्वर के रसिया !

हम भताव की घाद ! महाकल्याण !

आइए, पधारिए, महायज्ञ ! श्री महाबलि कीजिए सागर-स्नान !

स्वागतम् श्रीमान् ! पुण्य प्रागम् के दिन हम करत हैं स्वर शन !

सुनते-सुनते मां आत्मविभोर-सी बठी रही ।

नीलू और गोविन्दन धूमने चने गण । वे प्रसन थ । इसा गरुप्रा मिट्टी स उनका जन्म हुआ था । ओणम् उह प्रिय था । महायज्ञि क प्रागमन पर फूल-चन्दन धूप मध्य देने म थ भी सम्मिलित हुए । आज छो काम-नामी व्यक्ति भी विचर रहे थे । नीलू बानी नई-नई भगि माएँ सेनर घाता है ओणम् शब्-शब् मोठ मुठता सहस्य-पथ नाघता भाता है ओणम् ।’

तुम कविता भी कर सनती हो नीलू ! गोबिन्दन मुस्वराया ओणम् की नानाविध सीलाएँ मुझ भी कम प्रिय नहीं । मेरे मन में कोई शका नहीं कोई जितासा नहीं । बिना पवल ओणम् को मेरा धनि धान् ।

नीलू और गोविन्दन आधा दिन ओणम् का रमास्वादन करते रहें ।

हम तो आज ही जा रहे हैं, मां ! गोबिन्दन घर आकर याना ।

‘मह नहा होगा ।

सात मास तो रहूँ लिमा माँ ! तुम्हारे मन नहीं भरा ?

यह तो असम्भव था कि अन्नपूर्णा गोविन्दन को स्तेगन तक पहुँचाने न जानी । रास्ते में बलगाड़ी के घबके खाने पड़े जिनमे अन्नपूर्णा का घृणा थी । उसकी भाँसों में भाँसू थे ।

‘मुझे तो लगता है बल की बात है जब तुम दूध-पीने वालक थ ।

माँ की मुहमुहा पर पुरानी स्मृति सजग हा उठी, जस उम पूरा पूरा स्मरण हो । दूध पीत पीते गोविन्दन दाँत मारता था । जोर स दूध खींचता था जस काँई उसका पीछा कर रहा हो । स्तनो क नीच खींच ही दौड़ जाती थी ।

गाँव भाई तो नाचू का माँ बोली जाते ही पत्र लिखना ।’

‘अवश्य नीचू न भूमकर कहा मैं भूसू मा नहीं ।’

‘भोग्य तो भान क लिए भी धूम है और जान क लिए भा !  
नीचू के पिता ने व्यवस्था दी ।

अन्नपूर्णा की भाँसो से भर भर भाँसू भर रहूँ थ बावरी मत हो बहल । नाचू का माँ न भपन भाँचल स अन्नपूर्णा के भाँसू पाँछ डाल ।

माँ प्रणाम ! गोविन्दन ने द्विजे से मुँह निकालकर कहा ।  
घोर गाढो के घरघराते पहियों की लय पर भर भर माँ न भाँसू भग्न रहे !



सागर चक्रवाल पर घब सिन्दूर और गुनाल उड़ रहा था। घारी घारी ऊन-नीला और जाने क्या-क्या रंग उबक-उबककर भ्रमपूर्ण की सीख रहा था। मूरज गया तो ये रंग घाये। आज कोई नई बात नहीं। एसा हा हाता है एसा ही होता आया है। मूरज उगता है मूरज डूबता है। किरणा की दीदी-दीदी नित नित सागर म ही आकर हार मानती है। दिन भर तो किरणें सभी को यह कर। वह कर। की सीख देती नहीं आती इनकी टेर दिन म एक बार भी नहीं थमती। रात तो अभी हथिना है टोल-टोलकर चलती है। इसके लिए सब बराबर है। चौक पूगे चाहे पूजा का चन्दा चाप दो दीवार पर। दिन का अभिनय गया। अब यह सिन्दूर-गुनाल का खेन भी चुक जायगा। घर घर आधा हथिना आनेगी।

भ्रमपूर्ण देख रही थी। सागर-तट पर ज्वार भाटा मस्त-मगन अभिनय किय जा रहा था। लहरों के मुह म यही गीत है गीत का वही मुग्ध है। एक लहर आती है फिर दूसरी फिर तीसरी। एक दूसरी को पकड़ना चाहती है पकड़ नहीं पाता। बड़ी लहर है मैं उससे छोटी लहर भाई उससे भी छोटी लहर परम सुन्दरी बहन। बहन के रूप पर भाई मुग्ध हो उठा। छिः छिः। बहन ने चन्द्रा किया सागर म डूब गई। भाई भी अब मानन वाला था। बहन के पाद डूब गया। दोनों का रदा के हित मैं भी डूब गई। बहन सागर की लहर बन

गई। भाई भी लहर बन गया। माँ भी जानती थी यह चमत्कार वह भी लहर बन गई।

भ्रमरपूणा सोच रही थी। सब छटना है। रग जगने हैं रग बुझते हैं। सब खल चुन जाता है। सूरज हूबता है ता भ्रमरी हथिनी धूमने लगती है घर घर डगर डगर। पर य लहरें कभी नहीं घबती। पहले सबसे बड़ी लहर उठती है जा माँ है उस छोटी लहर, भाई, और उससे भा छोटी लहर परम सुन्दरी बहन। यह ता मात्र क्या है। ऐसा नहीं हुआ होगा। परम सुन्दरी बहन लहर नहा बन पाई हागी। लहर बनना सहज नहीं।

यह गोविन्दन के सम्बन्ध में सोचने लगी—जाकर पहुँच की चिट्ठी भी नहीं लिखा। नीलू की माँ को तालू की चिट्ठा धा गई। उस किसी विशालतम में नुय विद्या मिलान का नाम मिल गया। अच्छा है सब काम करें। मय भपना भार उठाएँ। वाटिका की धारदीवारी पर नुनियाँ टके लमने लखा—भव न गुलाल था न सिन्दूर, न ऊँचील रग की धारियाँ। सब एकाकार हो गया था—भ्रमरवार। भव न सबसे बड़ी लहर दीखती थी जो माँ थी न वह लहर जो भाई थी न परम सुन्दरी चन्न की मय प्रयाग द्वारा परिवर्तित मुखाकृति ही सबसे छोटी लहर के पीछे भ्रमरवार निरखी जा सकता थी। लहरा के अभिनय का भी एक षय है जा क्या में दात दिया गया। लहरा का अभिनय शय नहीं होना। यह गिरस्ती निरा दायित्व का पहाड है। सब सुख-अल्पता निरी धूप-दाया है।

भ्रमरपूणा का यह बात अच्छी न लगी जय त्रिवेद्रम् स लोचन पर गण्डम् न गोविन्दन के चले जान का मारा दोष उसीके माथ घोष लिया। 'तुम्हारे उम विगाड़ा! व कह रह थे तुम्हारे लाह-प्यार न हा उसम घर में भाग जान का सात्म भरा। यह ता व उल्ला दात कह रह थे। मैंने क्या चान गोविन्दन भाग जाय? मैंने कब उस घर से भागन का उल्लाहित किया? उसने जाकर चिट्ठी नहीं लिखा ता यह

भी क्या मेरा दाप है ? बाहर जाकर दुनिया भर की बातें करते हैं घर में भाबर मितभापी बन जात हैं। क्या यह भी मेरा लोप है ? एक हा बात कहेंगे उसी म डक रहेगा।

गगन पर चाँद उठा। चाँद मुम्बराया। यह दीवार पर बापा दूध पूजा का चाँद न था। यह तो सचमुच का चाँद था। चाँद को दायकर तो सागर की लहरें भी चक्क हो उठी। भाई-बहन-माँ की पहचान तो इनकी दूर से कठिन थी पर अन्नपूर्णा यह सोचे बिना न रह सकी कि चाँद की किरणों ने उन तीनों लहरों के मुख उजाड़ दिए होंगे। एसा ठिठोली मे कब पीछे रहें चाँद की किरणों ! अन्नपूर्णा को लगा चाँदनी उन गुदगुदा रही है। यह कसा अभिनय है ? क्या भाप्रह है ? चतुर्भुज भ्रमभिन भ्रमभिन। वहाँ भी चाँद होगा जहाँ मेरा गाबिन्दन गया।

उमन जाकर धिन्धी भी नहीं ले।

चाँद की घोर एकटक दलती अन्नपूर्णा कुहनियाँ टके लठी रही। गोबिन्दन को भेजने वाली मैं कौन जम वह चाँद स पूछ रही हा। काने काम ही सही बम्बर्द। पर चाँद तो वहाँ भी होगा—यही चाँद। नीलू को चाहिए था अन्न सामन गोबिन्दन को बिठाकर चिन्ही लिखवाना। एकटक चाँद का दबते रहो मत कब उबता है ! ऐसा ही है माँ का प्यार। बेने की एकटक याद अब तो नहीं लाती। अघी हथिना क सिर पर चाँद मुम्बरा रहा है। लहरों क गीत का वही स्वर गूज रहा है। कोई ऊब नहीं। भाई बहन को टर रहा है माँ बन्-बन्टी का टेर रही है। सय मोह का राग है मोह का बसीकरण मात्र है। चाँदनी छिन्की है। लहरा के गीत म बाजू मन्त्रि का नशा है। कभी लगना लहरें गना साफ कर रही हैं। अन्न जमे लहरें घोर भी उच्च स्वर म गा रही हो। स्वरो की सम्बोधन-टेर ऊची उठनी गईं टेर की जय पनावा पहराती रही।

अन्नपूर्णा का यात्र भापा भोजन से उठकर स्त्रपन्म विद्यालय म चल गय थ। फिर विद्यालय स लौकर अन्नेन घटे लिखने रहे। इनकी

धामक्या तो कभी शेष नहीं होगी । एक धव्याय लिखा, पसन्द न आया तो पाह डाला फिर लिखा मुड़-मुड़ लिखा । विचित्र ही भाषा लिखत है । नारियल का छत्रनार हिनने की उपमा किसे देंगे ?— हाथा क कान हिनाने स । कभी लिखेंगे—घृणा-भवहलना का अपना ताता रहता है जस मृग बजता है । कभी लिखेंगे—ज्वार-सी बढ़ती है घृणा भाटे-मी उतरती है । कभी लिखेंगे—यन ने सुगविन घुएँ क महग ऊपर ही-ऊपर चल जाते हैं आत्मा-मर्यादा के कुण्डल । य सब उपमाएँ हम कहीं पहुँचाता हैं । मरे साय बान करने की पुरस्ठ नहीं । धीरा बजान वीठेगे तो नाजन की सुप-बुध नहीं रहता, जैसे यह मरा ही काम हो कि उनकी भूख को अपनी भूख समझें । दामोदरन की दुःखान पर बठ गणगण कर रहे हैं तो समार इसमें डूब जाता है न पर का चिन्ता न मेरे स्वास्थ्य की परवाह, मैं बठी बाट जाहती रहूँ ।

बन्धन का हमारा प्रम-सम्बन्ध ही हुआ था । मैं ही इन पर मरन लगी था । मैं स्वयं इनके भवन स बया । इनके सगीत पर रोमकर घर से निकल पड़ी कल्याणुमारी में बट्टान से छत्रांग लगाकर मागर में दूँ पडा । साचा था मैं लहर बन जाऊँगी । वह परम मुन्दरी बहन लहर बन गई थी, तो मैं कस नहीं बन सकती ? आत्मक्या म क मुझ पर काणु छाडने स नहीं शूकन । एक जगह लिखते हैं—'बनी विवाह का याग टन गया हाता भयवा जीवन-सुगिनी के रूप में मुझ परम सुन्दरी अन्नपूर्णा न मित्ती होली, तो कशाचित् में सगीत क प्रति अदिक मकान घान रह पाठा । यह बात ता के मुझन कई बार कह चुके हैं कि विवाहित जीवन के मनव वष कामिनी-कासन मानना के ही वष बने रह । कभा कहन है वासना ता उयती है उस पर ता कना कर दूय गद्य नहा उग मक्ता । कभी कहते हैं—अन्नपूर्णा तुम तो मनका क मनान मरा तप भग करन घा निकनी था । मैंने विवाह क्यों किया ? अब मैं भी जनी-भुनी सुना जानती हूँ । मैं साक कट् दती हूँ—'तब तो कामिना के प्रणय-गान की भीड म ही तुम्हें धाम-साय पितता था ।



वे कहते हैं—सुख का तत्व ही जीवन की अन्तिम उपलब्धि नहीं। इधर वे अपनी आत्मकथा में इस बात पर जोर देते हैं कि कला का सत्य है यातना। इसे ही वे कला-साधना की कसौटी मानते हैं। कहते हैं—यातना स्वयं रागिनी बन जाती है। कभी लिखते हैं—काई भी सत्य स्वयंसिद्ध नहीं। कला करके ही चलना होगा। दो परछाइयाँ भीखें चाहे चार। परछाइयाँ तो परछाइयाँ हैं। कला स्वयं अपना स्तर खोजती है जैसे गर्भाधान के पश्चात् प्रजनन तक नारी को एक कठिन परीक्षा में से निकलना पड़ता है। मैं इसका एक ही उत्तर देती हूँ—सभी क बिना जनापन स्वामी भी सम्पूर्ण नहीं और निब क साथ पावती आ जुड़ें। रागों की भी तो पलियाँ हैं—रागिनियाँ। एक जगह लिखते हैं—भ्रम मेरी दृष्टि में मेरी कला है मेरा ध्येय है। घर की वाता में मेरा मन नहीं रमता। मैं सब समयभती हूँ। मैं बात करती हूँ तो इनका ध्यान बही और रहता है। एक जगह लिखते हैं—भ्रम तो कला के पाप-नागा पर स्नान करके मेरी एक ही परछाई रह गई, दुविधा जाती रही। सगीत में आत्म-सृष्टि ही मेरा ध्येय है।

भ्रमपूणा का मन खुम्भ हो उठा। ध्येय है मेरे लिए इनकी विचित्र धीणा। मैं क्यों इसकी धूल झाड़ती रहूँ? घर बने या घर टूटे मेरी बधा से। जब देखा इनका सगीत चल रहा है फिर सगीत विद्यालय में भी समय देना पड़ता है। फिर छुट्टी हुई तो लिखने लग या दामोदरन की दुकान पर घड़ा जमान जा बड। धूमन निकल गए। घर की बिये चिन्ता है? घर क लिए मैं रह गई घर की दासी भ्रमपूरणी। कहने को दबी वास्तव में दासी। मैंने गोविन्दन की जन्म दिया यह भी मेरा दोष गोविन्दन अपनी खुशी से चम्बई गया यह भी मेरा दोष। भ्रम मेरा ठेगा झाड़े विचित्र धीणा की धूल। मैं भोजन भी नहीं बनाऊगी।

चारनीवारी से हृत्कर वह कमर में आ लेटी। रत्नपद्म घर आय तो उन्होंने पूछा कुछ पचाया-बचाया नहा? भ्रमपूणा कुछ न बोला। रत्नपद्म ने उन कभोहा। भ्रमपूरणी ने मुह फर लिया।

रूपदम् दीय के प्रकाश में बड़े लिखती रहें। फिर वे शीया बुझाकर बिना खाय पिये ही सो गए।

अन्नपूर्णा को नौद नहीं आ रही थी। वह विचारधारा में बह गई। राम को तो इन्होंने सगीताचाय बना दिया। पर पराया वेदा पराया ही रहता है। उसे याद आया कि जब चिलाक्कोर के मछुआटोला में रूपदम् ने अपनी धोर से सगीत-शाला खोली तो सबसे बड़ी आपत्ति मुत्तू बाबा ने ही उठाई थी। उनमें कहा था 'जनादन स्वामी के मन्दिर में तो हम जा नहीं सकते फिर आपका शास्त्रीय संगीत हमारी आपत्तियों में घुसने की क्या मचल उठा है?' हमारे पास हमारा संगीत ही रहने दायिम। इसके उत्तर में रूपदम् ने कहा था 'मन्दिरों के द्वार भी आप लोगों के लिए खुलकर रहेंगे। आज शास्त्राय संगीत चलकर आपके द्वार पर आया है यह उसीकी पूज्य सूचना है। इस पर मुत्तू बाबा हम पढ़े थे। पर अगल ही क्या जब सचमुच राज्याशा से सब मन्दिर उनके लिए खोल दिये गए तो मुत्तू बाबा यही कहते फिरत थे कि रूपदम् की भविष्यवाणी सच निकला। इस पर प्रसन्न होकर रूपदम् ने एक धोर भविष्यवाणी की थी—'अश्रु ने बाद बरकत का सगीताचाय कोई मछुआ मुक्क ही होगा। इस पर मुत्तू बाबा को सन्देह है। सन्देह तो मुझ भी है। यह नहीं होता कि एक न जो बोल दिया वह भ्रम्य होकर रहे। यह तो ससार है। बरजोरी नहीं चलती। भाग्यरेखा तो भ्रम्य है। अपने बने का वग म न रम सक, सारे ससार का टेका ल रह है। स्वस्ति-भुजा बनाय बठ रहत हैं। यह सब सो बगुला भक्ति है। यह बार-बार करवट ले रही थी।

रूपदम् अभी के सो गए थे। उनके सुरति सुनाई द रह म धौकना सी बन रहा थी अम यह भी किमी रागिनी का बिन्पु हा। अन्नपूर्णा पान्नी थी कि पति को भूमोहकर जगाय धोर साफ-साफ कह द—भव इन पर म मरे लिए स्थान नहीं रहा मैं ता खली जाऊंगी मैं बम्बई जाऊंगी धान गाबित्तन के पाम। यह मरा बना है। मैंने उने काल मे

जना है। वह मुझे जवाब तो नहीं दे देगा। सोचते-सोचते वह सपने में खो गई। पुरखा की बीस पीढ़ियाँ एक स्वर से बह रही थी—संगीत की जय हो! भक्तपूर्णा ने वहाँ खड़े-खड़े काना में श्रृंगुलियाँ डाल ली। वह यहना चाहती थी—संगीत बहुत बड़ी बरबास है। वहाँ रत्नपदम् भी आ निकल। बोले—तुम कब भाइ भक्तपूर्णा? एक पीढ़ी छर्नांगता हुई जाती है दूसरी पीढ़ी से भाग निकल जाती है। जैसे एक रागिनी दूसरी रागिनी से भाग निकल जाय। कहे तुम्हारा क्या विचार है? भक्तपूर्णा बोली—‘यै सब तो प्राणश की बातें हैं। पहले यह बताना तुमने मुझे नीड़ की तरह कितना निबोना। मेरे लिए काँकी बनाओ। मेरे लिए इट्टी-ओशा बनाओ। बड़े बनाओ। पायसम् बनाओ मुह मीठा करने को। और मेरे लिए बच्च भी जनो। देखो तुम दूध-नाछ हो भक्तपूर्णा! क्या तुम्हारा क्या विचार है? ‘मेरा क्या विचार होगा? भक्तपूर्णा ने झुंझाकर कहा तुम पूरे टग हो। तुम्हारी टग विद्या अब मुझ पर नहीं चल सकती। मुझ पर नहा बलगी यह उलटवाँसी। मुझ में धर्म हृदय में धिप। तुम्हारी वही रीति है। पर मैं बहे दती हूँ जो भाग खाता है अगारे उगता है। अरे-अरे तुम तो रष्ट हो गई भक्तपूर्णा! सुनो एक राग सुनाता हूँ। भक्तपूर्णा राग सुनने लगी। प्रम और उत्कण्ठा का राग था। इसमें भाज की अनुभूति थी कन की भी युग-युग की। कही ने गोविन्दन भी आ निकला। बोना—मैं बम्बई तो नहीं गया था मैं! तुमने समझ लिया मैं बम्बई भाग गया था। बरकना को संगीत प्रिय है मुझ भी! मैं पिता का भाजाकारी पुत्र हूँ। भगनी पीढ़ी का भगाताघाय क्या मधमुच कोई मधुभा युवक बनगा पिताजी? उधर से मुत्तु बाबा आ निकल। छ फुट में ऊपर निकलत हुए, केवल एक सगाता में अपनी नगनता ढीप मुत्तु बाबा बाव ‘कहा गुरुद्व कब जमेगा हमारी भगनी पाढ़ी का संगीताघाय? बचन दिया है तो पूरा कर लिखामा। गाविन्दन बोना—यह नहा होगा। इस पीढ़ी का नगाताघाय भी राख नहा मैं हूँ। और भगनी पीढ़ी का संगीताघाय

होगा मेरा बग। मैं नीलू से विवाह करूँगा। नीलू दूध-गाछ बनगी। वह मुझ बग दगी। मेरे मुतू बाबा क्या आप नहीं जानते कि बीस पानियों से हमारे परिवार में मंगीत बनाया गया रहा है? निद्रापथ पर चलते-चलते अन्नपूर्णा दूर निकल गई।

उसकी धाँस खुली तो रद्रपदम् आसार में बस बीणा बसा रह प।

मन-ही-मन अन्नपूर्णा इस राग पर मुग्ध हो गई जब पहल कभी यह राग सुनने का न मिला हो। वह सोचने लगी बीणा तभी बीणा है जब उस पर कलाकार का हाथ चले। नाचो भी पुरुष के बिना सगीत विह्वल है। वह उठी और आसारे में रद्रपदम् के पास जा बठी। रद्रपदम् मुम्बराग और उन्हीने भानो सरस्वती का अभिषादन किया।

अन्नपूर्णा उनके घरणों पर मुक्त गई। 'यह क्या कर रही हो अन्नपूर्णा? व धाँसा म अशु नाकरवाले दाप तुम्हारा नहीं मेरा है।'

बीणा पर आँसू के हाथ चलते रहे। एक बार भी उनके हाँस न हिल माना बीणा कह रही थी—अन्नपूर्णा तुम तो मरी स्वर-साधना की दवा हो। अपना आत्म-कथा में क्याचित् मैं यह भाव व्यक्त करने के लिए उभरता भाषा नहीं पा सका।

एक ठाँस दोष हुआ तो रद्रपदम् बाव 'मगवात् बुद्ध कह गए हैं— बुद्ध म बुद्ध सुनने पहले आउ बहुत से पीछे धार्ये। मैं पुराने प्रकाश की फिर से फला रहा हूँ। उन्हीने दूधरा ठाँस धारम्म किया। धाँसा से धाँसू भर रहे प। संमलकर बाव 'एक परम्परा का चलाता है गिष्य दूधरी की पुत्र।' और फिर उन्हीने ठोड़ी साध ली, गाबिन्धन जहाँ भा है प्रमत्त रह। मैं उसे लिखूँगा कि यात्रा जीवन का बल दती है उस 'अ' का धारा बजाता है स्वर! भाव ही मैं उस यह भा लिखूँगा क्या वह है जिन कलाकार बनाना है धाँसा तो उलटा कलाकार को गरी का बल बना डारता है।

अन्न-पूर्ति क्या इतना ही धनावन्दन है? अन्नपूर्णा चुप न रह सका किन्तु मैं उस सगीत से पछा भिन्न और वह हमें भा भेजगा।

उस पने को क्या हम फेंक देंगे ?

फेंक तो नहीं देंगे । रत्नपदम् मुखराय 'पर उदर-पूर्ति के निमित्त ही कसा का उपयोग शास्त्र में वर्जित है ।'

वर्जित क्या है ? भक्तपूर्णा ने बात को धाग बढ़ाया हमारे बरकला को ही लो । यहाँ भी तो 'शशी मियेटर' बने कई बरम हो गए । न-नई फिल्म घाती हैं । उनम जो संगीत रहता है वह क्या बिलकुल बला विहीन है ?

फिल्मों की धूम है ! फिल्मों का बालबासा है ! रत्नपदम् के स्वर में खीक का धाग ही अधिक था गली-गली भर घर फिल्मों गीता की धुनें ही सुनाई देने लगी हैं ।

तो क्या बुरा है ? मधुर भी तो गाने हैं अपने गीत । किसान भी । भाषका शास्त्रीय संगीत ही कैसे सबझपापी बन सकता है ?

फिल्मी संगीत पर लट्टू हा रहा है बरकला । रत्नपदम् न क्या सर्व प्रस्तुत किया दूध-गाछ की सोयी भूल रहा है बरकला । और फिर उन्होंने ठण्डी खान भरकर कहा 'शशी मियेटर न भी धना होता तो भी क्या बरकला म फिल्म-संगीत का प्रवेश रोक जा सकता था ? ग्रामोफोन रिवाइजों मे धा गए य गीत । इन रिवाइजों को रेडियो वाल भी बजाते हैं । दुकानों और रेस्तरां पर रेडियो तो बजता ही रहता है । रेडियो के हमारे देवता हम जो प्रसाद भेजते हैं, उसम जहाँ शास्त्रीय संगीत होता है वहाँ फिल्मी गीतों क रिवाइज भी बजाने जाते हैं । हे भगवान् ! तुम्हारी क्या इच्छा है ?

'भगवान् की कोई इच्छा नहीं । भक्तपूर्णा हस पड़ी ।

यह गोविन्दन की सगत था प्रसाव है । बम्बई की छूग वह यहाँ छोड गया । एक के हमारे भाकवासू देगमुल हैं जो शास्त्रीय संगीत क पीछे लट्टू लेकर पडे हैं । भना हो बपारे माधवन नभूतिरिष्पाट का । जनान स्वामी के मन्दि के बापिक नवनम् उत्सव पर व इस बार भारत के नामी गायकों और वाक्ता को कुतान का प्रबन्ध कर रहे हैं !

इससे क्या फिल्मी गीत रुक जायेंगे ?' अन्नपूर्णा चुप न रह सकी ।

“मछुआदोला की हमारी संगीत-भाऊशाला भी तो चल रही है । भव तो मुत्तु बाबा को भी कुछ-कुछ विश्वास आने लगा है कि मछुआ में भी शास्त्रीय संगीत पनप सकता है । मैं बड़े देता हूँ अन्नपूर्णा यह तो देवासुर-सग्राम है—फिल्मी संगीत और शास्त्रीय संगीत का सग्राम । देवना हमारे साथ हैं ।

इस सग्राम में देवता ही हारेंगे यह मैं देख रही हूँ ।’ अन्नपूर्णा मुस्कराई । और पूरव दिशा में उपा भी मुस्करा उठी मानो कंधे पर प्रकाश की बहनी उठाये धा रहे ये सूर्य भगवान् किरण चन्नी धा रही थी इस क्षणिकमा ने पीछे-पीछे ।

उठकर बॉम्बे बनाओ अन्नपूर्णा ! रुपदम् मुस्कराये ।

‘रात का उपवास तो स्वास्थ्य के लिए अच्छा ही रहा होगा न !’ अन्नपूर्णा हस पड़ी ‘बॉम्बे का मूल्य चुकाना होगा । गोविन्दन को बिट्टी लिखवाऊँगी । होगी तुम्हारी और से लिखवाऊँगी मैं । गोविन्दन वन्ना ही तो है । यही लिखना होगा कि बटा जहाँ भी रहो चाहे जो भी करे बस प्रसन्न रहा । लिखना हागा कि मल ही फिल्मी संगीत का ही पचा करो हमारा धानीवान् तुम्हारे साथ है ।

यह तो मैं नहा लिख सकता । फिल्मी संगीत के पक्ष में अपना शाय तो नया बटा सकता । बिट्टी तुम्हा लिखना अपनी तरफ से ।

‘नहीं तुमसे ही लिखवाऊँगी । तुम्हें ही लिखनी होगी । गरम-गरम काश का यहा मूल्य चुकाना होगा ।

‘पन्न कापी ठा बनाओ उठकर !

ओ तो बनाऊँगी ही ।

दिना घत हो बनाओ ।’

दिना घत नहीं । मैं माँ हूँ दूध-गाछ हूँ । बेग कहीं भी रहे कुछ भी कर, मेरी चुम इच्छाएँ उसका साथ हैं । तुम्हारा धानीवान् भी गोविन्दन का मित्रना ही जानिए ।



सभी जानते थे कि उत्तर भारत के उस्ताद फयाज खाँ रद्रपदम् के अनन्य मित्र हैं पर जब उन्होंने दामोदरन को उस्तादजी का पत्र लिखा तो उसकी भाँसों को जैसे विश्वास ही न हो रहा हो। फिर जब शाहवाज़ू देशमुख ने दुभापिये का काम करते हुए पत्र पढ़कर बताया कि उस्तादजी ने यह वचन दिया है कि वे अपनी पूरी मण्डली सहित रद्रपदम् की साठवीं वषर्गाँठ पर बरबला धायेंगे तो दामोदरन मुग्धी से उछल पड़ा।

रद्रपदम् की साठवीं वषर्गाँठ पर बरबला में कुछ हाता चाहिए, यह मुन्नाब नम्पूतिरिप्पाड का था। शासपरन ने भी हाँ-भ-हाँ मिलाते हुए कहा था, 'दलकती-दलकती आती चाहिए गुरुदेव की वषर्गाँठ। उस्ताद फयाज खाँ आ जाय तो जादू ही न हा जाय। और सब वही जादू होने जा रहा था। उस्तादजी का पत्र भी आ गया। उन्होंने आने का वचन दिया था। साने में मुहागा हो जायगा।

सब तो एक ही बात की चिन्ता थी कि रद्रपदम् का स्वास्थ्य सुधर जाय क्योंकि इधर लम्बी बीमारी के कारण वे बहुत दुबल हो गए थे। वषर्गाँठ में बहुत दिन नहीं रह गए थे। देगमुख को ता यही राय थी कि उस्तादजी का लिख दिया जाय किसी कारणवश साठवीं वषर्गाँठ मना ही नहीं रह दकसठवीं वषर्गाँठ पूरी तैयारी के साथ मनाई जायगी और अभी समय में बरबला प्यारें ता बरबला निवासी उनके

दूध-नाद ।

लिंगे रूप से इतना ही। देशमुख को मर या कि बरगाँठ के अन्दर पर स्नानम् फिर से बामार पड गए, तो मुर्द मस्त गवाह कुम्भ बाबा दात हाजी। पर देशमुख का यह मुभाव निजी के भी मन न सा। नमूनिरिप्याड तो इस पर हंस पड। 'सखतन न भा नाक भों बडातर पहा बन 'इस बहम का इलाज नहीं !'

अनूपगुा बोनी 'गल ठीक बहता है। उस्ताबा का बरगंग में एक बप पाड घाने का सिखना तो वह बात्र हागा कि 'बना मान जायें और हद बहें—हे देव तुम अपना अनुकम्पा अस्त बप तक उठा रवा ।

द्वि ता स्नानम् भा भठ गए। उन्होंने घोषणा कर दा कि साटरीं बरगाँठ पर ही उस्ता फयाड सी का माना ठाक रूपा जिसक लिए ये पत्र ही अपनी स्वीकृति मत्र शुक्र है।

स्नानम् के मख पर सन्तोष की भाभा प्रसन्न मृग बन गई। उनका मकर या अद बामार नहीं पड़ेगे। बरगाँठ भी उनक लिए अनुपान स कम न थी क्योंकि इनकी विधि उगा तिन पटली या जब बनान्न म्नामी के मन्दि का बापिक नवकम् उन्वब मनाया जाता था। इस अन्दर पर बातर स भाद यानियों का अपार भाड उखी थी।

कई बार स्नानम् को अपना मतपगिरि का ध्याग-बही सुर्यों का पार बरली भा ली है गवा जिसम उस्ता फयाड सी अपना मष्टना मानि बठ है। भावन के साठ बप उनकी कम्पना म धूम बज—विविध बाजा के स्वर-कलक पर विरक-नवरक उल्ल-से साठ बप। इनमें शन् शन् स्मृतिपाँ वी हाथा-मूँड-धार कर्पा का स्मृतिपाँ पुत्र के कुहाल-ला छपन बनबापा स्मृतिपाँ छाये शताव का कानाबाना सन्यों का पाण्टु रिनी म्रवत मत उबपस की धून-मिट्टी। एन साए बपों में एम एउ मा ता भाव अब मया कि माँ के म्दन में हमारे विण दूध की एक भा बूद म्प नने रहा और उस उगाड मूँड में वे दृष्टा सावकर रू म-निगम मत्र हला म् ! चित-उरय है परता ! कइ बार ता



वे साने-सात हडबडाकर उठ बठने और दखते कि अभी तो बपगौठ में कुछ दिन नेप हैं और खाँ साहब बरकला व स्टेगन पर उतरन की बात भूतकर त्रिवेद्रम् तो नहीं जा पहुँचे ।

भास्त्रि वह जिन भा गया \*जब खाँ साहब अपनी मण्डनी-सहित बरकला पहुँच गये । उन्हें सगीत-विद्यालय म ही ठहराया गया । रुद्रपदम् वृत्त प्रसन थे । उम्बी बीमारी का उपहार—देह की दुबलता और रक्त की कमी के कारण कभी-कभी हाथ-पाँव भूठे पठन की-सी स्थिति भव व भूत-स गए थे ।

खाँ साहब को यह स्थान बहुत पसन्द आया । वाटिका की चार दीवारी पर कुहानियाँ टेके खड़े-भड़े नाचे सागर का घनत विस्तार उनकी कल्पना को छू-छू जाता और व बार-बार वह उठत भाप तो शुक्तिस्मृत हैं !

देशमुख और रुद्रपदम् के लिए खाँ साहब और उनकी मण्डनी के दूसरे सन्धियों की भाषा समझना कुछ भी कठिन न था । व इस भाषा के मुहावरों की नीर-भरक तब समझत थे । शखधरन आधे रास्त पहुँच पाता था और किण्व रूप से मुहावरों की गली म भटक जाना । दामान्तरन और नम्पूतिरिप्याड के पल्ल कुछ भी न पडता जब तक देशमुख दुनापिये का कतव्य न निमाता ।

दिन क समय खाँ साहब और उनके साथी नवकम् की घोमा यात्रा दखते रहे और फिर वे नारायण स्वामी की समाधि देखने गये । साहब ने समाधि भवन म सग चित्र दत्त महात्मा गांधी को नारायण स्वामी से दोनों महानुभाव बरकला पधार चुके थे । रवीन्द्रनाथ पहन आये थे ॥ गया कि सूप्राष्टन व विरड जिस भावाज उठाई की गांधीजी की

नवकम् की घोमा  
समाधि देखने गये ।  
साहब ने समाधि भवन म  
सग चित्र दत्त  
महात्मा गांधी को  
नारायण स्वामी से  
दोनों महानुभाव  
बरकला पधार चुके  
थे । रवीन्द्रनाथ  
पहन आये थे ॥  
गया कि सूप्राष्टन  
व विरड जिस  
भावाज उठाई की  
गांधीजी की

५ से

साहब

१२ ~

भाषा

खबर ?

रद्रपद्म मन्थानम् म वीन मुत्तु बाबा रात को मगीत-गोष्ठी में बसना। वहाँ साहब का संगीत सुनकर तुम मरा संगीत भूल जायाग ।

दशमुत्र न वहाँ साहब का हमका मतलब समझाया तो वे कह उठ हम ता आपकी तरफ देखत हैं । हमने तो हिन्दुस्तानी मगीत का ही शान रियाज किया है और आप हैं कि बर्णाटकी और हिन्दुस्तानी गाना का पूरा-पूरा मुन्नावरा रक्ने हैं ।

यह आप क्या फरमा रह हैं वहाँ साहब ? रद्रपद्म मुस्कराय 'यह बात क्या किसासे छिपी है कि आज से वीन बप पन्ने जब आप ममूर राय म ध दरबार ने आपका भावभाव मौसीकी' की पत्वा दी। जा नगीत का मूरज है धत्री हमारा भी ।

"धर भाई मैं सूरज-सूरज कुछ नहीं । मैं तो माता का मामूली ना फवाज मियाँ हूँ ।

मुत्तु बाबा कुछ नहीं समझ पा रह थ क्योंकि याठचीन वहाँ सान्य का भाषा में बन रही थी ।

वहाँ सान्य न मुत्तु बाबा की भार संकेत बरत हुए कहा जहाँ क मष्टा तक मगीत क रसिया हा वहाँ संगीताचार्य रद्रपद्म क घरान म वीन पीढ़ियों से मगीत बना आ रहा है यह हमार लिए कोई अचरज की शान नहीं है ।

मन्गली क बाकी साग पीछ की भार मुह चुक थ ।

मत्त बाबा रुद्रपदम् का कथा झूमोठकर बोले अपने प्रतिधि में कहिए मैं जरूर उनका गाना सुनने आऊंगा। बहुत दिन से उनकी महिमा सुनता आ रहा हूँ। सुना है त्रिवेन्द्रम् में तो कई बार आये। हमारा सौभाग्य है कि वरकला भी पधारे!

देगमुख न इसका भावार्थ खाँ साहब को समझाया तो वे धाले मुत्तु बाबा से कहो, यह तो हमारा सौभाग्य है कि हमें वरकला में आप लोगों का दान हुए।

देगमुख ने भट्ट दुमाविय का कतब्य निभाया। खाँ साहब और रुद्रपदम् घाने सग तो मुत्तु बाबा भाँखें नचाकर और बाँह उद्यान कर बोले एतु बर्तमानम्? क्या एवर?

खाँ साहब के हसते-हसत पेट में बल पड़ गए। मलयानम और हिन्दुस्तानी का यह घमोला सगम उन्हें गुदगुदा गया था।

चलते चलते खाँ साहब समलकर बोले दखिए गरुब। हम एक बात कह दें अगर आपकी नागवार न गुजरे। ठीक ही कहेंगे। आपके तो दोनो हाथ लड्डू हैं। एक तबे की रोटी क्या छोटा क्या मोटी। क्या बर्णाटकी क्या हिन्दुस्तानी दोनों आपके तम्बूरे की घाँदी हैं।

यह सब तो आपकी फयाजी है खाँ साहब। मही तो मैं क्या?

खाँ साहब न भाँखा-ही भाँखों में कहा— आप ता गुस्तेब हैं!

देगमुख द्रुत गति से जा खाँ साहब की मण्डली में सम्मिलित हो गया था। चलते चलते खाँ साहब बोले रागदारा बढी सपस्या रागिनी है। गबया तो राग रागिनिया की कठपुतली बन जाता है। राग रागिनियाँ छुट ही घपना हिसाब न रमें सो गबये की घट भद उड कि उम महकिन स भागने ही बन।

मुझ तो कभी-कभी लगता है खाँ साहब कि मैं दूध-मीठा गिगु हूँ और माँ का छाती से ही राग रागिनियों की रगभूमि को निहार रहा हूँ!

यह तो आपने हमारे ही दिल की बात कह दी गुरुदेव ! मैं भी यही कहने वाला था । माता को तो हम भूल ही नहीं सकते । यह तो अच्छी बात है । जिस दिन हम माता को भूल जायेंगे उस दिन हमारा कना मिट्टी में मिल जायगी ।

'यह तो ठीक है खाँ साहब ! फिर हम लाख बिल्लायें—हम हैं कनाकार बला क सच्च सूत्रधार । सजना नमस्कार !' काई हमारी बात नहा सुनेगा । कला के सजनामक उपयोग में माँ का याद हो रग भरता है । इच्छानुसार भावयक्तानुसार कला का हम नित नूतन उपयोग करना चाहें और माँ परम्परा को एतदम भुना दें फिर हम कैसे सफल हो सकते हैं ?

यही तो मैं भी मानता आया हूँ ।

हम कना को एक नया प्रयोजन दे सकें हममें आत्म विश्वास बोनता रह, मेधा-ममपण की भावना अस्तित्व में आनन न होना पाए— ठीक माँ के समान ही हम कला की नूतन सृष्टि करें तभी तो बात बन सकती है । गिणु में जैसे दृष्टिगत और ननिहाल वापों के गुण आगे बढ़ चलन हैं ऐसे ही नूतन कला-सृष्टि में आना चाहिए ।

बिनकुल बजा परमा रहे हैं गुरुदेव ! मतलब यह कि परम्परा हम पर बोझ न बन जाय बलिव फूल में सुगंध बनकर महक उठ ।

माँ के ध्यवित्तत्व का प्रतिबिम्ब ही तो नहीं होता गिणु । वह उमम अधिक् होता है अधिक् होने का सम्भावना रखता है । परम्परा बठार अनुशासन का पालन करना सिखाती है । इसकी प्रपना जगह है । पर कला को मैं मात्र परम्परा का अनुकरण ही नया मानता । यही बात मैं प्रपन शर से हमारा बट्टा हूँ ।

'गोबिन्द क्या भाग निकला ? उन क्या आपन नई रचना की छूट नहा दी थी ?

'उमका तो यह बात थी गामाह्य कि यन् आरम्भित अनुशासन स ही विद्रोह कर बटा ।

चलिए ठीक है। मैं सुना है फिल्मों में उसकी कण्ठ ही रही है। पटन-पटते खी साहब हस पडे 'भाजवन क छावरे हमसे कही जवान भवनम-द है। भातिर इस बात का फायदा तो वह उठाता ही होगा कि वह एक सगीताचाम का बेटा है और वह बड़े मज से दुगो पीटता हागा कि उमके खानदान में सात पीढ़िया स सगीत बना भा रहा है।

परम्परा का अनुशासन एक सस्कार है खी साहब । रुद्रपत्रम् का गला भर प्राया गोविन्दन यहाँ रहता ता अच्छा था। चलन-चलने सूय की ओर हाय उठाकर बाल है मूम भगवाद् गाविन्दन कहीं भी रह कछ भी करे बम मरे नाम की कलक न लगाये ।



मच पर प्रगस्त मस्तक बाल खाँ साहब विराजमान थ माना सगीत  
 का दबता घरती पर उतर आया हो । बाईं ओर बेंगलीरी टोपी  
 पहन बठ थ खाँ साहब व भानज गुनाम रमून खाँ उनने दोनो हाथ  
 हारमोनियम पर टिक थ । पाछ बठ थ खाँ साहब व दा तयार गिप्य—  
 घता हुसन और मुहम्मद बगीर उनने हाथ म या एक एक तम्बूरा ।  
 उनम सट बठे ये दो नौसिखुण । तबन पर सगन करन जा रहे थ विष्णु  
 पन्न गिरोडकर । छ आदमियों की मण्डनी सातवें खाँ साहब ।

गनों तरफ और पीछे सात-नाव हाथ धुली जगह छोड दी गई थी  
 जिसन मण्डली का टाठ उभर सक ।

मण्डनी व बायें हाथ बर थ दामोदरन देगमुय और नम्पूतिरिप्पाड—  
 घीनों ही घीनों में कई-कई का ताल उठात-से ।

मण्डली व दायें हाथ सगीताघाय रूपम् और उनक गिप्य शत्रघरन  
 न घासन जमा रखा था । गुरु मानो बला-भारावार का आचमन करते  
 म गिप्य मानो मधमित्र बनने का सपना देखता-सा ।

मुत्तु बाबा थोडा-मण्डनी में एक जगह दुबके बंठे थ । उहें मच पर  
 बुतान का स्वयं खाँ साहब न आग्रह किया पर वे जाने में यहीं ठीक  
 हैं । मैं पारठा हूँ सबको देखू न कि सब मुझे दगें ।

मगीत-गोष्ठी की ध्यवस्था सगीत-विद्यालय की वाकिना में विचार  
 मचन बनाकर की गई थी ।

नवकम् क उपनक्षत्र म मन्दिर के प्राण म पुनभडियां और मनार छूट रहे थे। आकाश पर प्राण क चित्र विचित्र फूल बन-मिट रहे थे।

यह रात बहुत दिना की प्रतीक्षा के बाद आई थी। इसे अधिकार था कि संगीत से प्यार करे जिसके अग प्राण म रागिनियां जाग उठें। रात की आयु तो उतनी ही थी पर वह चाहती थी अछोर अछाज रागिनी की अनुकम्पा जिसे वह अपना प्राण को सौंप दे। गेस्मा मिट्टी को अधिकार था कि गेस्मा रहकर भी हर-हरे अक्षर उगाए तो रात का भी छूट थी कि नयन उजागे रहन पर भी किसी अनिच्छ का मपना देखे। जस रात भी कोई अत्रतीय सरोवर हो जिसके एक-एक कमल से किसी शकुन्तला की मन-तूनासी क्या भा खुडी हा।

‘तो गुरु करें। खौ साहब मुस्कराये।  
 थोड़ा ठहरिय। हृत्पद्म बाल अभी कुछ और थाता भा ल।  
 माना रात ने भी किसी सुन्दरी के सहस मनासी विन्ध्या बान  
 माय को मुवाकर मूक सनेत से हाँ-म-हाँ मिलाई—हाँ-हाँ अभी कुछ  
 और भोना भा लें।

‘नगता है तिन पीकी वार्ता है और रात निरी कविता गुरुदब।  
 जपर मे दामोवरन बोल उठा।

रात कविता न होती ता संगीत क लिए कस इनकी मौजू  
 होती? खौ साहब ने छुटकी ली और विन्ध्या न पान निवासकर  
 बगल वाली जेब स सूटियों वाले कपड़े की गुयनी निकाली और इसमें  
 से छुटकी भर मुरादावादी तम्बाकू डालन हुए पान मुह म गवा। एक  
 पान तबनची की तरफ बढ़ाया, तुम भी ला विष्णु।  
 मानो रात सुन्दरी ने फिर मूक सनेत से हाँ-म-हाँ मिलाई—हाँ हाँ  
 तुम भी लो विष्णु!

विष्णुपन्त अभी तबना टोच कर रहे थे। नम्मूतिरिप्याउ न उठकर  
 खौ साहब को माना पहनाई। दगमुय ने हृत्पद्म क गल म माला डालत  
 हुए कहा इसम पूरे साठ फूल है, गुन्नेव! और यह है आपकी माटवी

वपगाँठ ! नम्भूतिरिप्पाठ और दशमुख ने खाँ साहब ने साधियों को भी मालाएँ पहनाई ।

नम्भूतिरिप्पाठ ने उठकर कहा बरकला म खाँ साहब का आगमन एक ऐतिहासिक घटना है । खाँ साहब का नाम हमारे लिए नया नहीं । उनके सगीत में आप भद्रभुत रस पायेंगे । यह भी देखेंगे कि खाँ साहब अपने साधियों के सहयोग से सगीत को परम्परा से बहा ऊपर उठाकर बना को नूतन रूप देते हैं ।

दशमुख ने खाँ साहब की भाषा में इसका सार बताया तो खाँ साहब जान हमें तो बल्कि गिकायत है कि गुरुदेव ने साठ वष का उम्र तक पहुँचने में इतनी धर लगाई ! क्या व हम इससे पहल यहाँ आने की दावत दे ही न सकते थे ? दशमुख ने खाँ साहब की यह चुटकी मलया लन म प्रस्तुत की तो सारा मण्डप थोताघों की तालियों म गूँज उठा ।

रुद्रपदम् न सडे होकर कहना आरम्भ किया—

यह हमारा सौभाग्य है कि खाँ साहब यहाँ पधारे । मैं जानता हूँ आप लोग उनका सगीत सुनने को उत्सुक हा रहे हैं । पर इस धवसर पर इनकी बग-परम्परा बना और जावना का सक्षिप्त-सा परिचय दना मेरा कर्तव्य है ।

प्रतिभा जिन्ह बरगान में मिनो थी उन्हीं मियाँ रगीले के प्रपौत्र हैं आफ़ताव-मौसीकी उम्ताद फ़याड खाँ । मियाँ रगीले की प्रसिद्धि का कारण था धनगिनत चीत्रों को धपनी शली म बाँधन की उनकी क्षमता । प्रतितामह का पूरा रग प्रपौत्र में आकर खिन उठा ।

धव रही दूध-नाछ की धोर से उनकी पृष्ठभूमि । हाँ तो उनका ननिहान भी उचकोटि के गायकों का पराना रहा है । उनके नाना के गुनाम धव्वास—उनी-उलाई आवाड बाल ब नाकार त्रिनका सत्र मन्दर के रागों का गायकी बने शरफ़ाफ़ और तयार थी ।

‘प्रतितामह से रंग मिला नाना से आवाड पाई । पर धना के छः मान के गभ में ही ये कि उनके पिता चन बस । बानव फ़याड



पावन-पोषण उनके नाना गुलाम घास ने किया जो भागरा म रहत थ ।

भागरा म नखन माँ का सहवास भी बालक फयाज की प्रतिमा का दीया सजान म सहायक हुआ ।

कोटा ने पिता हुसन से भी कुछ कम विद्या-लाभ नहीं हुआ ।

क्या ददिहाल और क्या ननिहाल दोनों रहे ध पण-धमारियो ने घराने । फयाज साहब का गिदाण इसी ढंग पर हुआ ।

फिर उर्होने खयाल की गायकी म हाथ डाला मने ही उस युग में ध्रुपद-धमार को ही ऊँचा और शुद्ध मानते थे । विसम्मित गायकी तो फयाज साहब की पुट्टी म है । दरबारी गान म उनका जबाब नहीं । और वे नट विहाग म गाते हैं— भन भन भन भन भन पायलिया वाज । इस राग म वे कितना भ्रमूत घालते हैं ! जजवन्ती म गाते हैं— मोरे मन्दिर भवतों नहीं भाप । प्रिम से बिछुनी नायिका का पूरा चित्र लिख जाता है । झिमोटी म उनका विख्यात चीज है— भतिपाँ उन सग लाग रही ! फिर वृन्दावनी सारग म गात हैं—‘सगरी उमरिया मोरी । और सोहनी म उह गाते सुनिये— चनो हटो जाओ सयाँ ! हर धार वे भाप पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं । और मच तो यह है जिसन एक बार उनका सच्चा सगीत सुन लिया वह फिर किन्ही घटपटी चीजों पर तो रोझने से रहा ।

सन् १९२५ म इन्दौर-नरेश सुबोजीराव ने होली क भयसर पर दस सहस्र रुपये के भूस्य का रतनकण्ठा दस सहस्र रुपये नक़ और पाँच सौ रुपये के वस्त्र भेंट करते हुए फयाज साहब की सगीत-साधना का अभिनन्दन किया था ।

मभी भाप स्वर्गे कि हमारे उस्ताद फयाज ताँ कसे अपना विनम्बित लय का ठाठ प्रस्तुत करते हैं और कौस हम रगते हैं । भव में उनन और आपने बीच व्यवधान नहीं बनना चाहता ।

श्रीगार्गों ने तालिमई बजाकर हृष प्रकट किया और बड़ी उन्मुक्तता म भतिपाँ गायक के सगीत की प्रतीक्षा करने लगे ।

मण्डप म धनन्तगयनम् श्रीर कल्याणसुन्दरम् के चित्र खते हुए फयाज् खाँ ने कहा वे तो परिश्ले ये सगीत न दवदून ये । यस गवये धव जम नग सत । व नाग् ब्रह्म के उपासन थे । सगीत ही उनका अल्लाह था वही ईमान था । उसी धरान न ज्यातिप्मान् हैं रद्रपदम् । हमें बताया गया है कि ज्यातिप्मान् गन्त का एक अय ब्रह्मा का सीमरा चरण भी है । वस ता इस धरान म बीस पीढियो स सगीत चला आ रहा है जो एक बढी बात है श्रीर इस पर हम सभी नाज कर सकत हैं । हाँ तो पितामह श्रीर पिता न बाद ता रद्रपदम् ब्रह्मा न तीसर चरण ही हुए । श्रीर आज ब्रह्मा न उमी तीसरे चरण नी साठवा वपगाँठ पर हम उह मुबारकवाद दत हैं श्रीर आप सागा की इजाजत न अब कुछ अज करते हैं ।

इनने म मन्दिर से फुनभडियाँ श्रीर धनार एक साथ छूट श्रीर खाँ साहब न आकाश की आर दखनर कहा ला इन फुनभडियों ने भी आस्मान पर इसठ का जिल्मा तिल टाना ।

दामुय न खाँ साहब न मधुर हान्य का मलयानम में रमास्त्रान्तराया ता मण्य तानिया म शूँज उठा ।

विष्णुपन्त गिराद्वर तबना मिनान लग श्रीर या ही उहोने वपका मो दवर धिन् गम्भीर स्वर निकाला । उधर दानों तम्बूरे भी बान उठे श्रीर खाँ साहब न मटफिन का अभिवादन करत हुए तम्बूरे म बसा दृषा समुद्र स्वर मितया । धीम धीमे पूगिया का रूप भरत लग । धानाषा का मन प्राण गायन का नबध चत्रा रखा था ।

नम्पुतिरिप्पाड ने दामोदरन न बान म कहा कम मद्र म मध्य श्रीर मध्य स मद्र म चल रहा है खाँ साहब का सगीत ?

'बसे माठ नजर कामल अति कामल तब दरगात हैं । धनि सुन्दर । दामोदरन मुम्बरया ।

खाँ मान्य जहाँ छाडत उनके गिष्य धनन-वन्तवर आलाप को उठान नय स्वर बानत पुन मूल स्वर पर आत विष्णुपन्त स सन्

की धिन् लेते। गुरु शिष्यों की यह परस्पर गायन-पद्धति घरकला के लिए नई थी। 'दे रे ना' नूम-नूम' आदि गानों के साथ आलाप चल रहे थे। फिर पंद्रह मिनट के बाद लौ साहब ने 'नि रे ग' का रागवाचक स्वर लेकर गाघार पर मुकाम किया तो सारी महफिल भूम उठी। रदपन्म ने घाल के कान में कहा 'इतना पक्का सच्चा पूरिया का गाघार हर कोई नहीं लगा सकता। और गुरु की भाँसों में हप के श्रीमू उमड़ आए।

घाल न कहा लौ साहब वहाँ तो भी आप आज मत गाइए। अभी आपका स्वास्थ्य आज्ञा नहीं देता। रदपन्म ने कहा 'हाँ हाँ मैं नहीं गाऊँगा। लौ साहब वहाँ तो भी नहा गाऊँगा।

बार-बार मद्र सप्तक में उतर रहे थे लौ साहब। ऊपर गाघार पर मुकाम करते। हर बार नये-नये-नया अलकार पहनकर बन-ठनकर मामन आता वह गाघार।

नम्पूनिरिप्पाड ने दामोदरन के कान में कहा 'पूरी गाछी पर पूरिया की छाया पड़ गई।

लौ साहब तारसप्तक में गाघार लगाकर धीरे-धीरे आलाप का विस्तार करने लगे। फिर दुगुन-बौगुन में 'दिर दिर नूम-नूम' वाला वा राग बंधन लगा। लौ साहब एक और निप्य-मण्डनी दूसरी और निप्य मानो गुरु स होड़ लते हुए सवान' शानते गुरु मुस्कारते हुए सहज जारगर आलाप बरके 'सा पर आकर जवाब' देते और हर बार श्रोताओं पर जाडू-सा होता चला जाता।

यह क्रम चल रहा था। नम्पूनिरिप्पाड न दामुय की धार देता। वह धीरे-से बोना में मग्न गया। गुरुत्व का स्वास्थ्य तो इस योग्य नहीं कि गा सके। गाना चाहेंगे तो भा हम साप मना कर देंगे। दामोदरन ने पास से कहा 'स्वास्थ्य का ही सारा जाडू है। मरा भा यही विचार है। आज गुरुत्व को तो नहा गाना चाहिए।

मन्दिर की घोर स छूने वाली फुनमडियाँ बीच-बीच में थोताओं का ध्यान भंग कर जातीं ।

गुरु-शिष्यों के दाँव-पैच अभी चल ही रहे थे गुरु ने साँ पर आकर मुकाम किया घोर पूरिया के निताल की चाँज आरम्भ की—  
मध्य लय में

माई सपन में घाय !

कुछ ऐसे ढंग से साँ साहब ने कहना आरम्भ किया कि दूसरे घावत पर पहुँचते ही एक मुन्ना मारकर विष्णुपुत्र 'सम' पर धा गए, घोर प्रितान का 'ठका' उठाया । न साँ साहब को कहना पड़ा कि अमुक ताल नगाओ न जमी हुई रगत में नहीं विष्णु-वाधा पडा । सहज भाव से गग का दूसरा दृश्य चल पडा । 'माई' गल की भावृत्ति करते समय साँ साहब इसमें भिन्न भिन्न भावनाओं की वाता सजाते चल गए । एक ही गल का विविध अर्थों में मुड-मुड सामने घाते दबकर नम्पूतिरिणाड न गामान्तरन के कान से पान मुँह ले जाकर कहा 'माई का अर्थ है माँ अर्थात् दूध-गाछ ! मुझ का अर्थ है, सारी गाछी पर दूध-गाछ की छाया पड गई । दत्ता दत्ता मुत्तु बाबा भी किस तरह भूम रहे हैं !' गामुस न गल की ओर संबोध करते हुए कहा 'सल घाय साँ रहा है कि गुरुत्व को छाँटकर साँ साहब का चला बन जाय !

सगता या 'माई सपने में घाय ! की रागगारी कभी शय न होगी । पर कौड़ी-पान का समय हो चुका था । कौड़ी के बाद फिर पूरिया का दौर चला । पता ही न लगा कि डेढ़ घण्टा कम बीत गया ।

मुत्तु बाबा ने उठकर मुन्नानी की प्ररमाणा की साँ साँ साहब चान 'इम वक्त इम रागिनी की हम गाते नहा ।

गल्पम् न विफारिस की 'मुन्ना दीत्रिए न ! आताओं का नाराड करा करते हैं ?

'तो तोत्रिए !' कहकर साँ साहब न लगी हुई मुगल्लि भावाड से मुन्नानी का ध्यान किया घोर फिर महफिन की टन्नुवता गवर

शीघ्र ही त्रिनाल में नये रंग की चीड़ पेग की—

धरी ए रो घाली रो

इम बुजन लोगन को काहा कोसू ?

राग चल पड़ा। समी वय गया। नम्पूतिरिप्याइ ने दामोदरन के बान में कहा 'देखो-खो कसे सोच और कसी मिठास क साथ लौ साहब घाली रो को सौंचत है ! दामोदरन न घाली-ही भौवा म जताया—उस्ता उस्ता ही रहता है !

लौ साहब न सिद्ध कर लिया कि जादू वह जो तिर पर चढ़कर वान। घावाइ बड़े नखरे से सय म लगात। दूसरी पक्ति नाना विष सजान लय के नय-नय रूप म पत। इसे गात समय उनका बलघाली बठ बिनना कोमल हो उठना घा किस बिनती स बाहर भाते और विरह व्याकुलता का विष-सा उरैह जाने ! घावाइ पर बिनना अपिबार या ! भावानुकून घाओच्चार और त्वरित रसोत्पत्ति द्वारा गायक न महफिन को अपन रग म रग लिया।

दाव ने गुस्तेव के बान म कहा सस्कार रक्त म घाल है !

रद्रपदम् बोन 'मुना-मुनो ! बाते पाछे हागी।

गाता वन् हो गया। महफिन की उत्सुकता बनी रही।

यह है बनाकार का समय ! रद्रपदम् मुस्वराए।

इसके बाद लौ साहब न दो-तीन चीड़ों पेग की। राग का चलन शुद्ध रक्त। रागवाचन स्वरा की भावुति तारा राग का स्वरूप स्पष्ट करत। बीच-बीच म छोटी-छोटी 'मुरकिया' रग लिखानी। सुरीले सन्धे जादू-सा कर-कर जात। हरवतें लहर मानो गायक घोना के हृदय को बस म करता बसा जाता। धीरे-धीरे भन्तर भरा जाता। फिर बाषायण लय म भग स बढ़त की सृष्टि करके महफिन को मुग्धा देते। एनदम तान पर भाते। घालाप म से धारे-धीरे तानों का रूपाकार करत। जोरदार बोन-साना की मड़ी-सी लगात। चीड़ को रग कर ल घान धीरे-से वन् कर देते।

क्या मजात कदा लय छूट जाय । आलाप-तान और स्वर विस्तार म नय का अथ कुछ इस प्रकार सजाते कि महफिन म प्रत्येक धाता यही सोचता कि गायक उसी का लक्ष्य करके गा रहा है । या गायक और धाता म आत्मायता की लय रग लिखाती । गायक और श्रोता को पान सिगरेट और इनामधी-मिथ्री की सुष न रूखती मानो व संगीत की स्वप्नपूरी म विचर रहे हों ।

सहसा यह स्वप्न टूटा तो साँ साहब न रद्रपदम् की ओर सकेत करके कहा अब आपकी बारी है ।

रद्रपदम् ने मुस्कराकर दाख की ओर दखा । दाख भी जैसे इसी प्रतीक्षा म था । बोना गुम्ब अब तो गाना ही होगा ।

विष्णुपन्त बोले 'तवम से हा पत्रगा या मृदग उठाऊँ ?

'तवला ही ठीक है । रद्रपदम् मुस्कराए ।

दाखपरन ने तम्बूरा संभाल लिया ।

मैं तो अब बूढ़ा हो गया !' रद्रपदम् ने क्षमा-याचना क स्वर म कहा 'कठ इच्छा का साथ नया देता । तम्बी बीमारी और रक्त की कभी क कारण हाय-पर भूठे पढने क दोरे का भय बना ही रहता है ।

हम आपकी क्या नहीं जान देंगे ! साँ साहब मुस्कराये यह आप क्या करमा रहे हैं ? यह न भूल जाइए कि हम थोताभा ने लिए गाने हैं और आप हमारे लिए ! और साँ साहब ने उठकर रद्रपदम् का आन्विगन कर लिया आपका साठवीं बपगाँठ पर हम आपका गाना मुन बिना बन जायें यह कम मुमकिन है ?

मैं गाँ साहब और आप सबका गृष्ट नहीं करना चाहता !' और रद्रपदम् ने दो बार लम्बाकर सुगठिन आवाज से धानाप धारम्म कर लिया ।

गाने-गान गायक का कठ कभी धनि कामन हा उठना और कभी थोताभा को लगता कि कोमल स्वर ता रास्त का पदाव-मात्र था । स्वर बढ़ बना था । इसम रौं रम का पूरा मबार हा रहा था ।

विष्णुपुत्र पूरी शक्ति से हाथ चला रहे थे पर पीछे रह रह जाते थे और फँसाइ खाँ उसे हाथ की टेक से समझाते जा रहे थे पीछे मत रहो । साथ-साथ चलो !

शरत् को तन्मूरा बजाते-बजाते लगा गुरुदेव का ऐसा गायन पहले तो नहीं सुना !

मृत्यु बाबा ने जैसे अपने-आपसे कहा इसे कहते हैं संगीत !  
देसमुख ने भी जैसे अपने-आपसे कहा ऐसा ठिकाने का गबया दमिण म दूसरा न होगा !

नम्भूतिरिप्पाड के कुछ कहने से पहले ही दामोदरन कह उठा ठिकाने का और फिर रीति का लयदार !

पास से नम्भूतिरिप्पाड बोले "और फिर कितन सहज भाव से गाना रग दिया ! यह भाव आप खाँ साहब की भाँतों में भी पढ सकते हैं । गुणी को गुणवान पहचानता है !

स्वर फूट-फूट पड़ते थे । यह कोई उमत्त प्रवृत्ति का राग था । लय का भ्रम पास भा रहा था । आलाप बढ़ता गया । आनाप न लय क भ्रम को पकड़ना आरम्भ किया । यह कोई साथ-थड़ा का राग था । इसमें भ्रतीत की छवि थी । कश्चित् यह उस समय की छवि थी जब सद्यःस्नाता धरती ने सागर से बाहर आना आरम्भ किया था । समवेत चीत्कार बज-बज उठता था तबले पर—ऊँघ ऊँघ जाता था तन्मूरा । यह तो कोई कोसों लम्बी रागिनी थी—कोई युग-युग की जम-जम की लम्बी रागिनी जो अछोर भ्रतीत को पकड़ने जा रही थी । अभी उगना यह तो मगन-जामना की पूजा रागिनी है जब आनन्द का हृदय रोए आलाप को छू-छू जाता । जैसे हम्पम्पू में राग रागिनिमा का इष्टदेव प्रवेश कर गया हाँ जैसे हम्पम्पू कहा भी न हाँ कोई राग स्वयं अपने को गा रहा हो ।

खाँ साहब कई बार बाह-बाह कर उठे ।

छाती में बितना दम हो सकता है और आवाज म निहनी पकड़

साँ साँव यही तेवकर खाद-स बडे रह ।

एक-एक श्रोता के मन म संगीत बठ गया जैसे गीत और धाता एकाकार हो गए । राग का अछीज अगेप भरना भर भरकर भाग बढ रहा था । संगीत म ही सबका गरण-स्वन है गल-बह्य है ! मुक्ति भव कोई दूर नहा रही । संगीत स्वय अंपना स्तर टीक रखता है ! संगीत धार तिन की धाँनी नहीं । संगीत तो नित्य है सनातन है । बड साधव स बड जतन स छद्रपम् अपने आलाप द्वारा यही मिद्ध सिच जा रह थ ।

नम्पूतिरिप्पाड ने गमोऽरन स कहा 'भव गुम्ब का गाना बन्द कर दना चाहिए ।

दमाऽरन बोला रम भग तो टीक नहीं ! दंगमुख बुद्ध न वाला वह तमय होकर सुन रहा था ।

विष्णुपन्त न मम पर आकर धिनु' का स्वर निकला सा गुम्ब गाना बन्द करन की वजाय फिर आरम्भ हो गए । 'मुन्दर ! प्रति मुन्दर ! विष्णुपन्त के मुह से निकल गया ।

साँ साहव भूम उठ ।

रद्रपम् की आवाज उच्च गिगरी का छूती उनके विराट विन्तार म समाधा बला गई डूबती चनी गई । उगान में विचित्र-ना धानन् था तो इसम एक अची-ही-सा बेन्ना और पीडा भी थी जम बष्ट रा रहा हा जम राता ही संगीत का अन्तिम लक्ष्य हो ।

गान-गात रद्रपम् का मुख-मण्डन पीला पडने लगा पर इस पील पन का बाद न दग्य मका—साँ नाँव भी नहीं ।

सहसा रद्रपम् न अपनी डूबती मिचती भाँवों म गल की ला और धाँवों-ही धाँगा में बहा—भर संगीत को निरन्तर धान स बला ।

गगधरन का बष्ट जम बठ गया था फिर भी उमन गुम्ब क साय अपनी आवाज मिलाई ।

कोई भी न जान मका कि कहीं गुम्ब का स्वर मोन हुआ और कहीं गिप्य का मुगर ।



तबन्ची ने गति तेज कर दी । छोडा देने का उस ध्यान ही न रहा उसे मगीत उडा से चला ।

रूपदम् भाँखें बन्द किये बठे थे और दक्षधरन उसी उठान म उसी लय म उसी स्वर मे गाय जा रहा था ।

रूपदम् जम किसी समाधि म लीन थ । जैसे व कोई भूली विसरी क्या का स्मरण कर रहे थ । धरीत तो पीछे रह गया था बहुत पीछे ।

सबन दखा । दख गा रहा था । खाँसाह्य ने भी देखा उनक साधिया न भी देता । गुरुदेव के साधियो की दृष्टि गुरुदेव पर ही थी ।

किसी के भी हाथ न हिने । किसी का भी यह साहस न हुआ कि रूपदम् मे पूछे—क्या सोच रहे हैं ?

खाँसाह्य भवाकू-से बठे थ । अपने साधिया की घोर दग्ग नेते जो बडा जिज्ञासा से रूपदम् की घोर देख रह थ ।

दक्षधरन गा रहा था । गुरुदेव का ऐसा ही आच्य था—भर मगीत की निरन्तर आगे ल चली ।

तबन्ची बराबर लय को बढाय जा रहा था । सहसा गुरुदेव ने आँखें खाली । हाथ फलाकर उहोंने तान लगान की चष्टा ही की थी कि तान की बजाय रक्त-घार बह निकली और रूपदम् एन घोर को सुडन गए ।

खाँसाह्य ने चिल्लाकर कहा हाथ भमा !

और जैसे दूटने तार की खण्डित झकार के साथ समस्त मगीत धम कर जम गया ।

रूपदम् अपने मगीठ की लय धामे सदा के लिए बही दूर निकल गए थे !



## ग्यारह

चलन बिना पर रत्नपदम् का दाह-क्रम किया गया। फयाज ली जाने से पहल मन्त तब यती कहते रहे 'बाध, ऐसी परिदत्तो जसी मोत हम मिली हाती।

घनपूरणी की धारिणों से धामू धमने ही न थे। गाबिल्लन पांचवें दिन धामा। माँ व धरणां म बठा भाग्य को कोसता रहा। पिता के धनिय दशन न कर सकने का उसे दुःख था। दर से खबर मिली। बम्बई का पासता! दाह-क्रम के समय तो उसका पहुँचना वसे भी धनम्भव था। उस धव पिताजी की सभी विधेपताएँ याद धा रहा थी। एने दवता-स्वरूप पिताजी की धामा पर न धसने धा उस बहूत दुःख था। वह पूर-पूर कर रोने लगता। उसके धामुधों में माँ के धामू लो गए। उसटा माँ उस सपन्ना रही थी 'बटा रोने से तो वे बापस धाने न रह। यही लीता है। ऐमा ही हाता धामा है। धव विलाप स क्या लाम ?

उसे इस बात का भी दुःख था कि पिताजी के पूर भी वह धपने हाप न मातर म न डाल सका।

य सब तो मन रपन की धारें हैं बटा!' धनपूरणी ने समभाषा पछी तो उड़ गया।'

मधूमनिरिष्याड को दुःख था कि रत्नपद्म धाम्यक्या के तीन धध्याय धव धोड गए। एव उषाव सोध किया था। गुम्ब एव विट्टी धोड

गए वे शास के नाम जिसम उन्होंने जहाँ अपने पून क-यापुमारी म हालने का आदेश दिया था वहाँ अपने अध्ययन और जीवन-दशन का सार भी दिया था । इसमें कना की टक थी । उस पर गहरे अनुभव की धाप थी । कसा के मविष्य म उनका बि-वास दोस उठा था । नमू तिरिप्पाड इसे आत्मकथा का उपसहार बनाकर धापन जा रह थ ।

‘गुरुत्व की आत्मकथा मलयालम साहित्य का बहुत बड़ी न्न होगी । नमूतिरिप्पाड न भाखें ऊपर चढ़ाकर कहा ‘एक एक अध्याय लिखन पर उन्होंने कई-कई सप्ताह लगाय ।

यह तो उनकी पुरानी आदत थी । गोविन्दन न बड गव म सिर हिनाकर कहा एक ही चीज का पाँच-पाँच सात-सात बार दिख चुकने पर ही वे साचने थ कि अब ठीक भाषा हाथ लगी और जा कहना या कह पाय ।

यही बात तो आज हुनम है । हर वार्द जल्म म है । सोचने का अवकाश किन है ? पुस्तक शीघ्र धापा जाय यही ता सब चाहते हैं ।

कोई प्रकाशक भिनगा ?

यह काम मरे ऊपर धाढो । गुरुत्व का हम पर मुद्ध कम ऋण नहों ।

‘तो आप ही धापिय । हमारा सहयोग तो रहेगा ही । गय क-या पुमारी स सौन भाये योजना बना लेंगे ।

गोविन्दन के हाथ में गुरुत्व का पत्र था—पिता की अन्तिम रचना ।



## घारह

प्रिय गल

तानपूरा सामन पडा है । मन म है सापना की बात । कसे करू ?  
तुम सयन मना कर रखा है । उनमठ वष हो गए । पचाम वष से ऊपर  
ता सापना म ही बात गए ।

माचा नित नित का धम्माम—साधना नी कर मजना ता यह  
पत्र ही लिम डालू ।

जा कहना चाहता हू कह सवा ता !

गस्ट्रनिया मिलती है । आस्टिक घाय ऋविड घाय घाय घाय  
दृण घाये, गव घाय सिवियन घाय मुमनमान घाये अग्नेज घाय ।  
मर घाय टकराय और गने मिन । बुद्ध निया बुद्ध निया ।

मरन व पञ्चान् में बरबता म हो जम लू गा में मुत्तु यावा स  
क० घुवा हूँ । उह विन्वाम नगी हाना । हो भी कस ? में जम साचना  
हूँ ये नही माचन । साचें भी बने ? पर कह निया मा कह निया । क  
दिया कि बरबता म अगली पाड़ी का सगीताबाय पिनाबरीर व मटुप्रा  
टाला म हा जम मगा । यवन निभाना होगा म्वय दोबारा जम  
सपर ! दूप-गाछ ता दूप-गाछ है ! उमकी बाद जाति नहा हाता ।

धीमता यमुना नम्पुनिरिष्पाट अपनी मातृभाषा बगला की एक  
मावागिन मुनानी है— 'उपल जसत है गोदर हमता है ! टाय बहरी है  
यमुना ।

अथ-यथा म निव की निग मती को महन न हो सकी उहोंने प्राण त्याग लिए। निव ने सती की मृत रह को उठा लिया मत हा उये धरती रमान का जान रगी। देवता नारायण के सामने गिड़गिड़ाय चत्री ने चक्र बनाया और सती की रह धावन-वण्ड हो गई।

प्राणहीन देव के तो कोद धावन छोड़ एक मी एक लण्ड कर टाने। यहाँ ता दूसरा ही सकट उपस्थित है। सस्कृति की जीवित दह का हम धपनी प्रपनी मात्र घसीट रहे हैं मन हा इस छोना काना म उनके प्राण छूट जायें।

तानपुरा सामने पडा है। इधर बहुत जिनो से तिन नित की स्वर साजना बन्द है। जीवन भर स्वर के पीछे भागता रहा। स्वर भिला ता लगता है भगवान् का धुआवा भी साथ ही आ गया। जाना ही हागा। व। दूर जाना नहीं। फिर म बरबरा म ही जम लने की बात है। खान चल रही थी सस्कृति की। सस्कृति एक है। धायों न बिडा स बहुत-बुद्ध लिया। यन्त्रि सम्यता की धुरी या यत्र द्रविड सस्कृति की धुरी या तीय—नीय अथात् नरा का तरण योग्य स्थान। नगी के प्रति पवित्रता की भावना धायों ने आस्ट्रिकी से ली। पतितपावना गगा का नाम भी आस्ट्रिक है। सब कहती है यमुना कि आज भी मयाल की प्रति नहीं होती जब तक उसकी अस्थियाँ दामोदर नगी म न डाल दी जाय। धृग-भूजा भी धायों म पहले की है—बहुत पहले की। अनक देवता और तीय उत्पन्न धायों त यनी वाता म लिय। नाग-भूजा भी प्रवन्तिक है पर धायों व क्राज नम्पुनिरि आह्ला ही आज केरल म नाग-भूजा क मुख्य सचालक हैं। विवाह म सिन्दूर-रान की रीति आस्ट्रिका की दन है। पूजा ही नरा भक्ति-परम्परा भी प्रबन्धिक है। एत धायि नामों का भी वे म उल्लेख नहीं। चदिक और प्रवन्तिक सस्कृतिमां टकराद। ऋषिगण निव-भूजा और सिग-भूजा के प्रति नाक मी चदान थ। वामन पुराण में धाया है कि ऋषि-भक्तियों का तो निव प्रिय थे पर स्वयं ऋषिमा म इनकी उपासना न थी। दन

यस म भा इसीलिए गिव का कोई प्रतिष्ठा नहा दी गई था। स्वल् पुराण' म प्राया है जब महादेव ऋषि-भुनिया क आश्रम में गय तो उानि क्रुद्ध हाकर बहा— र पाप तरे द्वारा हमारा आश्रम विहम्बित हुआ। तरा यह त्रिग पृथ्वा-नल पर गिर पड़े। फिर वामन पुराण' म हम त्वन हैं नि ऋषिगण गिव क प्रति उत्तर हाने लग।

जंम सोच रहा हें वने तिस्र रजा हूँ। जान का वर समाप है। वह तानपूरा तो यहा रह जायगा। नय घर म प्रवेग करना होगा। वन' नया तानपूरा हागा। हाँ ता में कह रहा था अब और वष्णुव पय आयेतर धर्मों म ही गिय गए। पुराण माप्ती हैं। पहन इनका तिस्कार हुआ फिर उहें ठौर मिल ही गया। बन्दि कमनाण्ड म भक्तिवात् न प्रवेग कर लिया। दवतामा की यन-स्यता म आ त्रिगजा भवनारवात्। इद्र गय विष्णु प्राय। विष्णु का उपद्र बहवर सम्मान दिया गया। हमारे भनक भवनारों का जन्म भद्ररात्रि को ही हुआ—दो ससृत्तियों क सक्रान्ति प्रार में।

ससृत्तियाँ भिन्नो हैं। भिन्नो हैं नर्तियाँ। सगान म स्वर भिन्न हैं। ससृत्ति जाडती है विलग मन्ग करणी। आदान प्रदान के बिना जीवन द्योत्र जायगा बला चुब जायगी स्वर-ताल नग हो जायगा। इन बहून पीछ न आ रहे हैं बहुत घाने जायेंगे। मुन्न तो दूर नही जाना पुन' यरवना म नी जन्म लना है।

विष्णुधरम् के नटराज मन्दिर म प्रवेग करत हा प्रथम भूनि भक्तवर नन्तार की है जिहोंने भसृत्तय परिषा जानि में जन्म लकर परिषा दूध-गाद्य का दूध पिया था। आज नन्तार क गान गाय बिना ब्राह्मणों के अनुष्ठान भपूरा छन है। फिर यन्ि में भा मद्युमा दूध-गाद्य का दूध पा सूगा ता इसमें क्या सुराई होगी ?

न्ग के एक-शय जनर' म घाम-त्वता की पूजा हाती है। मन ही मनु ने कहा है—घाम त्वता क पूजन पनिउ हान है। मद्युमागोता म जन्म भकर में यहाँ क तेयता का वरदान प्राप्त करुंगा।

धायों के आगमन से पूव दक्षिण के मातृ-रात्र समाज म देव-मंदिरा की अचिकाएँ स्त्रियाँ ही हुआ करनी था। महाभारत के सभा-पत्र म यह उल्लेख है कि जब दक्षिण धम दक्षिण म पहुँचा तब भी स्त्रियो के सुन्दर घोठों की फूव के बिना अग्नि-वेता जागने ही न थे। फिर देव-मंदिर की अचिका के रूप म स्त्रियों का स्थान उनसे छिनता गया।

तानपुरा मेरे सामन पडा है। जावन मर यह मेरा प्रिय साथी रहा। इसे देखकर बना की ही नहीं घर की बाल भी ध्यान म धाय बिना नहीं रहनी। संगीत विद्यालय म जाँ-कुद मिलता रहा वह झुना बन रहा कि उममे तो घर की गाडी ही ठनी जा मकी। सोचना हूँ मेरे पीछे गोविन्दन की माँ का क्या यतना? गोविन्दन दम्बई म है—फिल्मो म भूमिजिक् डाइरेक्टर बनने के चक्कर म। उसने अपनी माँ की सेवा का कतय्य न निभाया तो मुम्ह ही गुम्पली की सेवा करनी होगी। भूलना नहीं।

तुम सोचोगे मैं यह सब क्या लिख रहा हूँ। मामने पडा तानपुरा तो बजा नहीं सकता। निव निव का अभ्यास बन्द है। किसी भी त्रिन भगवान् का ब्रुताया भा सकता है। सोचना हूँ जो कहना है कह डालूँ। कुछ मत म न रखू। गोविन्दन की माँ से कहना हूँ मेरे जान की बर समाप्त है। बहू पीभकर कहती है—छि ऐसी बात मुह स न निकाना। मैं कहता हूँ तुम ना दूध-गाछ ही तुम्हारे लिए जमा गोविन्दन बना घाम। मैं उसे समझाना हूँ—गल की मन्व तुम्हारा ध्यान रहगा। वह रोत लगती है। मैं कहता हूँ—छि अन्नपूरणा तुम हो बच्चा की कष्ट रो रही हो। जान की बर तो भावर रहनी है। समी पगे जाना है—बलाकार हो चाहे साधारण व्यक्ति। उमकी घ्रांसा से भर भर भाँसू भरन रहते हैं।

मैं बहुत पीछे भी खलता हूँ बहुत आगे भी। दृष्टि बारम्बार पाछ को मुह-मुह जानी है।

नम्पूतिरि ब्राह्मणा म सबसे बडा भाई ही ब्राह्मण-क्या से विवाह

करने का अधिकार रखता है। छाने भाई नायर कायाओं से सम्बन्ध जोन्ने हैं। इसी से बहुत-सा नम्पूतिरि कायाओं का पति नहीं जुड़ते। इनके नायर युवका का नायर-बधू नहीं मिल पाती। धीरे धीरे, नम्पूतिरि खान-पान में सा नायर-काया का गूद समझता है पर उसका नाम गार्हम्य सम्बन्ध जोन्ने से नहीं हिचकिचाता। नम्पूतिरि की दृष्टि में सभी स्त्रियाँ गूद हैं। वह सोचता है प्रातः स्नान के बाद वह फिर गूद हाँ लेगा। यह क्या धम है कसा सम्बन्धम् है ?

तानपूरु मरी धार एकटक दब रहा है। मैं इन उठाकर गान रूँ। जा तो बहुत चाहता है पर नहीं समी भाषणों की यह इच्छा है कि कंठ पर जोर न डालूँ। हाँ सा काकण के विन्यासन ब्राह्मणों की क्या विस्मय है। परपुराम न पृथ्वी की क्षयिणी बनने पर धीरे धीरे करना चाहता तो ब्राह्मण कहीं मिलन ? उर्हानि कवतों के गन में यज्ञोपवीत डाल चिता के नाम खटा करके उन्हें ब्राह्मण बना टाला। यह सब कम हा हुमा जन्म सगान में हुमा। हमारे गार्हम्य गणों के प्राणण प लोक-संगत में प्रेरणा ली जाती रहा। मेरे इस मत में सा उम्नाद फयाव साँ भी सहमत हैं कि समय समय पर हमन लोक-गुनों के गन में यज्ञोपवीत डालता जैसे परपुराम न कवनों का ब्राह्मण बनाया।

तानपूरु मेरे सामने पग है। मैं इस कर्म हाय सागळे ? तानपूरे में मरे प्राण बसत हैं। तानपूरु अन्तर मुक्त इत बान का स्मरण हो जाता है कि मातृ-भ्रूदा भी धारैर है। नमुना सब कहती है नन्यान जाति में माँ की सगा है 'लोपा दारे' भर्षान् दूध-गाछ। दक्षिण में अन्तमा प्रया का प्रचनन रहा। कर्ण यह मायना रही है कि काइ स्त्री दक्षिणा हो जाय तो वह मग गूद है। दक्षिणियाँ मात्र प्रवार की गी है—

१ दक्षा—भर्षान् स्वयम् धरिता ।

२ विराता—अन्तर क मन्मग स्यादोवा ।



३ भग्या—बुल-कस्याणाय देवता को निवेदिता ।

४ भवता—भक्तिवत् दवापिता ।

५ हुता—प्रतिच्छा स भानीना ।

६ प्रसकारा—राजा द्वारा नृत्यादि कला निभिता एव देवापिता ।

७ ह्यगणिका प्रयवा गोपिका—मन्दिर की वेतन भोगिनी नर्तकी ।

वर्नाश्रम म देवदासी नाइकानी बनकर रह गईं । हम अपनी सस्कृति पर हमे या रोमें ? मगन-काय म विधवा का प्रवेश वज्रिन है । वश्याएँ नौक मे भायें और नाचें । ठीक कहती है यमुना बगला म दुर्गा-पूजा आदि शुभ भवसरा पर बग्या के द्वार की मिट्टी लाना आवश्यक हैता है । यह ता अत्रि संहिता' वानी धारणा हुई— न स्त्री दूष्यति जारेन अर्थात् स्त्री उपपत्ति के ससग म दूषित नहीं होनी । संहिताकार की यह स्थापना कितनी विचित्र है कि सवप्रथम देवता ही स्त्री वा उपभोग करते हैं और इस प्रक्रिया के फलस्वरूप लोग उसे पवित्रता प्रदान करत हैं । गंधर्व सप्त-मुत्तर नारी और अग्नि सब भग्या । फिर कोई उन अपवित्र कर ही नहीं सकता । ऋतु-साव से उसका सारा दुस्ति (पाप) धुल जाना है । नारी क प्रति यह दृष्टि हमें वहाँ स जायगी ? नारी तो दूध-नाछ है । आज बना म नारी क प्रति हम स्वस्य और सच्ची दृष्टि लकर बनना होगा ।

तुम साबोण मुम क्या हो गया गुरुत्व की लसनी स तुम्हें य सब सबेस अरचिपूण लगेंगे । पर कला को जीवन क साथ सम्बद्ध करन की बान है ।

सगीत विद्यालय की आर से मुम महाराज के बाप स जो-बुद्ध मिलता रहा उसे मैंने कभी कम न माना । गाबिन्नन दूमरी तरह साबता था । वह बहता था महाराज ता दान क रूप म ही यह धन दते हैं । उनसे वह माग छाड दिया जिममें महाराज म दान लकर निर्वाह करना पड़े । उसन शास्त्रीय सगीत वा माग छोड़ दिया । तुम ता गोबिन्दन की तरह नहीं गावन । तुम्हारी तो शास्त्रीय सगीत म पूण

निष्ठा है। गाविर्जन की दूनरी बात है। वह बम्बई में फिल्म बनाने के सामने यह दावा करता है कि उसका जन्म उस घराने में हुआ जिसमें बीस पाठियों से संगीत चला आ रहा है। इस प्रकार वह मिद्ध कर दिया जाता है कि संगीत तो उसके रक्त में है। यह बात यह छिपा जाता है कि शास्त्रीय संगीत नौ बीस से छोड़ भागा। वह अभूतपूर्व प्रतिभा का दावा भी करता है। उसकी यह जान। तुमने तो मुझमें दीक्षा ली।

संस्कृति के बना मन्दिर में हम पुन सत्य की प्रतिष्ठा करें। बीज की मुक्त शक्ति के ममान सत्य भा धकुरित होने के लिए समय क्षेत्र और सुयोग की प्रतीक्षा करता रहता है।

तानपुर को तो मैं अभी हाथ नहीं लगा सकता। यह पत्र लिख रहा हूँ। इसे भी तानपुरे की तुन-नन-नन ममभो। जो मैं गाना हूँ वह भी तो यह गाना है। संस्कृति का गान ही तो करना है। संगीत यदि हम हमारे घराने में ऊँचा नहीं उठता तो उसे संगीत कैसे बना जायगा? मरा वह थप्पड़ तुम मून तो न होगी। मुत्तु बाबा का गीत सुनकर तुम हम पढ़े थे। मैं तुम्हारा घट्टहाम मुन लिया। जब मैंने पूछा कि तुम क्या हैं तो तुमने मच-मच बना लिया कि तुम मुत्तु बाबा के गीत पर हैं। फिर तो थप्पड़ घाब-यक हो गया। तुम रान लगे थे। फिर मैंने शान्तिपूर्वक समझाया था कि संगीत पर हैंना तो सर स्वर्गी का अपमान है। मैं तुम्हें विस्तार में समझाया था कि भन नौ शास्त्र में पढ़ा बात आई है कि संगीत विद्या नहीं बरतान है पर हम यह स्मरण रखना होगा कि इन मानव न अपना साधना द्वारा विषयित किया और घाग बड़ाया। शास्त्र में माग-संगीत के साथ-साथ देगा संगीत का भी प्रमाण मिलता है। दगा संगीत का आज हम लाक-भगान करन लगे हैं। उम्मा फ्याज गी बताते हैं कि उत्तर भारत में लाक संगीत में बहुत-बुद्ध किया गया। तयान और ठप्पा लाक-भगान में ही घाय। भ्रमाटी घाणि रागिनियाँ भी सोब-संगीत के घराने में उठाई गईं। एक दिन बगाल में माँभियों द्वारा गाई जान वाली भाणियाली

भौ गान्नाय सगोत्र की वस्तु बनकर रहेगी ।

तानपुरा मेरे सामन पडा है । इस पर नित नित की स्वर-साधना तो बन्द है । फिर भी इसम मेरे प्राण बसते हैं । यह तानपुरा मुझ कह रहा है कि हम बसा-तीथ को पहचानें जिसम अनेक ससृष्टियाँ गने मिलती हैं । तानपुरा कह रहा है कि सगीत म दौली का भेन भी क्या ?

हम उत्तर और दक्षिण के भेद भाव मिटायें । बसा की यहा टेर है । बसा के दूध-गाछ की यही माँग है । बसा एक है । महासती की मृत पेह क सदृश वही हम इसे वावन खण्डो म विभक्त न कर डालें ।

यमुना क मुक्त स मीने अनेक बार रवीन्द्रनाथ ठाकुर की ये पत्रिनयाँ मुनी है

तोमारे शतषा करि क्षुद्र करि दिया  
माटिते सुढाय मारा तप्त मुप्त हिया  
समस्त धरिणी आजि अबहेला भरे  
पा रण्ड ताहावेर मायार ऊपरे ।

—तुम्हें शत शत खण्डों म विभक्त करके अपने सोय हृदया म लुत्ति कर जा लोग पृथ्वी पर चोट-चोट हो भक्ति दरगात हैं आज सारी धरिया न भवहना के साथ उनके माये पर पर रख दिया है ।

ज एक तरणी लक्ष लोकेर भिभर  
खण्ड-खण्ड करि तारे तरिये सागर ।

—जा एक नया है लाखों लागों का आधार उस खण्ड-खण्ड बरके क्या मागर पार करोग ?

तानपुरा सामने पडा है । अब जस वह मुझ घूर रहा है । इस उठा खूँ और छेड डूँ बाई-सा भा राग यही जी चाहता है । पर पत्र तो नित्य रहा हूँ । क्या मैं अपनी बात कह भी पाया ? हाँ ता हम बसा को अपनी ही ओर खींचते हैं । कालिदास के महान् मानने स पूव पहच यहा पटा करते हैं कि उस अपने ही प्रान्त का कवि सिद्ध कर डालें । त्यागराज को महान् गगाताधाम सिद्ध करते समय हम एम सोचते हैं

जम उत्तर भारत का उसम कुछ लना-दना न हो । वने ही उत्तर भारत बाल तानसन की यशकीर्ति म स्वय ही गव करके रह जाने हैं हम उसम सामीदार नही बनते । हम कितने सनुचित होते जा रहे हैं ।

बस हम विन्गी सत्ता स नड रह हैं । हम एक दश की जय बुलाते हैं भारत माता का नाम सेते हैं । पर बला का उत्तर-दक्षिण और पूव-पश्चिम म विभक्त करने इसके खण्ड-खण्ड करके ही भात्म-नुष्टि अनुभव करत हैं ।

तानपूरा तो एक है । सामन पडा तानपूरा साक्षी है । हाँ ता हम उत्तर-दक्षिण की भाषना मुलाकर हिन्दुस्तानी और कर्णाटका संगीत को पाम-पाम नायें । भाय-द्रविड ससृति पारावार के सत्ता-शुद्ध जल स प्राध नन करे ।

तानपूरे की तो यही टेक है कि कला में दग-देग के सीमान्त भी धिनीन हो जाय । सब भेत् भाव मुनाकर एक ही मानव-बला और मसृति क दावंगार बने । यह स्थिति दूर करे कि उपल जलते रहें और गोवर हँसता रह ।

भव रही मुत्तु बाबा को न्यि वचन की बात । जी म आता है नामन पडा तानपूरा उठाकर भालाप करन सगू । मन की बात गाकर कह सकूँ छी !

पच थ ऋग्वेत् क हमारे पूवज, जो देह स विद्युडा भात्मा को तम्पाधिन करने भालाप लिया करते थे—

—जाओ उस प्राचीन माग से जाओ  
त्रितसे हमारे पितर पुराबास में गदे ।

—वहाँ तुम वरुण  
और यम को स्वया ग्रहण करत  
देसोगे ।

—यम मे मिसो । पितरों से मिसो ।

परम स्वर्ग में सुसम्पादित कर्मों का पुण्य  
साभ करो ।

—बाप को छोड़ पुन नवग्रह को प्राप्त हो !

नूतन आलोचनय तन धारण करो !

मुझ तो वही दूर नहा जान मुसु वावा ! अपना वचन याद है ।  
बरकला के मसुप्राटीरा म किसी मसुप्रा दूध गाछ की कोठ में ही जन्म  
सूँगा । वह दिन आ रहा है । मैं उसे देख रहा हूँ ।

प्रिय बाप मरे प्रिय गिप्य तुम्हें वसा का उत्तराधिकार सभाजकर  
रखना हागा । मैं आ रहा हूँ—पुन जन्म लेकर फिर मे गिगु बनकर ।  
गिप्य-का गिप्य बनकर ही मेरा जीवन सायक होगा । गोविन्दन मे  
कहना मैंने उसे क्षमा किया । वन् स्वतंत्र है । अपने लिए अनग पय  
चुनने की उय स्वातन्त्रता है ।

विभिन्न वीण मरा प्रणाम स्वीकार करो । तानपूरा मेरी और  
दय रहा है जमे कह रहा हो—मुझ उठा तो और कोई राग गाधो ।  
अन्न म यही कहना दोष है मरे फूल बायाकुमारी म डालना जहाँ तीन  
सागर मिलते हैं—इसलिए कि कला-संगम ही मरा आश रहा । और  
मेरी भग्नी चिनाकरोर के ही सागर में डालना जिनके समीपवर्ती  
मसुप्राटोला म मुझ जन्म लेना होगा मुठ-मुठ जन्म बना होगा—सागर  
नगीत का समूह-मयन करने के लिए ।

—दूधपत्रम्



गुम्ब का पत्र गोविन्दन न तीन बार पढ़ा । हर बार उस लगा कुछ  
पूरा गया कोई वस्तु पकड़ म माने से रह गई । उस यह पत्र रात  
के लिए नहीं उसी के लिए लिखा गया हो ।

बम्बरे में जहाँ गुम्बे बंटा करन ये सब-कुछ बस ही पढ़ा था । बन  
गुम्बे ही नहीं थे । पीछे के प्रथम म जडे गुम्बे के सुन्दर सुनेत्र का  
उत्सवहरण थी य पवितर्या

राजा उत्पन्न ने मिथु मानन्द को पाँच सौ चारदरें दीं और पूछा,

'मन्ते इतन चीवरग का क्या करेंगे ?

'महाराज जिन मिथुमो य चीवर पत्र गण हैं उन्हें बान्गि ।

उनके जा पुरान चीवर हैं उनका क्या करेंगे ?

महाराज विद्योना का चारदरें बनायेंगे ।

'पुरान विद्योना की चारदरें का क्या करेंगे ?

'महाराज गद्दों के गिनाफ बनायेंगे ।

'पुरान गद्दों के गिनाफों का क्या करेंगे ?'

महाराज पत्र बनायेंगे ।

'पुरान पत्रों का क्या करेंगे ?

'महाराज पाँच-भाद्य बनायेंगे ।

पुरान पाँच-पाँदों का क्या करेंगे ?

'महाराज भादन बनायेंगे ।

पुराने भाइना का क्या करेंगे ?'

उन्हें कूटकर कीचड़ के साथ मर्न कर पत्थर करेंगे ।

—एक बौद्ध क्या

उसे लगा यह बौद्ध-कथा भी गुरुदेव ने उसी के लिए लिख रखी है । तो क्या उसे बम्बई नहीं जाना चाहिए ? वह बैठा यही सोच रहा था । माँ ने सामने उसने प्रस्ताव रखकर देख लिया था कि वह उसके साथ बम्बई चले । माँ ने साफ़ कह दिया था कि वह बरकला नहीं छोड़ेगी । बरकला में ऐसी क्या बात थी ? अब तो उसे भी लगा बरकला में कोई बात है ।

गुरुदेव का पत्र उसने धीमी धारपढ़ा जिस गुरुदेव कह रहे हैं—  
गोविन्दन उठ जाग ! या नूतन राग ! रे धरूरदर्रीं उठ मोह त्याग !  
मूनन माय नूतन चाव भर ले मन के भीले में हे वीतराग ! ले नूतन प्राग ! या विहाग !

वह उठकर खड़ा हो गया और दोघे में जड़ी बौद्ध-कथा पढ़न लगा—एक बार दो बार तीन बार । इस कथा में से भी जिस हर बार कोई सूत्र पीछे छूट जाता था । आखिर बीच का सूत्र हाथ लग गया । उसने मन से पूछा यदि धीवर न एक दिन भाइना बनना है और भाइना ने कीचड़ में मदन होकर पत्थर में काम धाना है तो फिर क्या समूचे मानव-जीवन का इसी दृष्टि से देवना होगा ?

फिर यह गुरुदेव की आत्मकथा इपर-उपर से पढ़ने परतकर पढ़ने लगा । माँ ने आकर टीका बेटा इसे छोड़ दे । जाकर सागर-स्नान कर आ । पर वह न उठा ।

वह माँ से कहना चाहता था कि बरकला में जीवन पर पिताजी ने जो प्रभाव डाला उसी का प्रमाण है पिताजी का आत्मकथा । पर उसने यह बात मुह से न निकाली । वह कहना चाहता था कि बरकला में एसी कोई विशेषता अवश्य है जिस पर वह बचपन में मुग्ध रहा ।

‘वरना क भटन व्यक्ति को पिताजी ने समझा माँ ! उसने माहमपूवक कह ही डाला ।

‘ठीक होगी यह बात । माँ को जन्म अपनी ही बात स्मरण हो ‘तुम सागर स्नान कर घामो बना ।’

यह न उठा । माँ रसोई में काम कर रही था । बाहर से सागर का जय घोष सुनाई द रहा था ।

उसे स्मरण हो आया कि एक बार उसने पत्र में पिताजी को लिखा था ‘हमारा देश तो इतना विनाश है कि कोई व्यक्ति मात्र वस्त्रों को देखकर समूचे देश का चित्र हृदय में नहीं बिठा सकता ।’ इसके उत्तर में गुस्से में लिखा था ‘तुम्हारी बात का साथ इतना और जोड़ दो—हमारी विनाश जन्मभूमि के वर्तमान स्वरूप की भाँकी देखकर ही कौन हमें महामहिम अतीत की कल्पना जुटा सकता है ? उसे लगा कि पिताजी ने ठीक ही लिखा था ।

माँ हमारी जन्मभूमि की जहाँ तो हमारे अतीत में पाताल तक चली गई हैं ! उसमें आध्यात्मिक स्वर में कहा ।

ऐसी बातें तो तुम्हारे पिताजी रोज ही कता करते थे । माँ का जन्मे इस प्रकार की मुक्तिपथा में कोई रस नहीं रह गया था ।

हमारा अतीत हमारे वर्तमान के साथ जुड़ा है माँ ! और हमारे वर्तमान से हमारे भविष्य का अनुए फूट रहे हैं ।

गोविन्दन की यह बात भी माँ को न छू सकी । वह बोली ‘तब इसी गाड़ी से आ रहा होगा । तुम उसने आन तब सागर-स्नान कर घामो न !’

माँ के पर ययाय के घरातल पर थे । जाने वाला बना गया था और अब वह मौनकर नहीं आ सकता था । अब माँ का आग्रह टाटना सहज न था । माँ ने उसे कंधे में पकड़कर उठा लिया था ।

यह स्नान का बाद मौन तो देमा उस चोट आया । उस फूट-फूट कर रो पड़ा । गोविन्दन भी स्थिर-भन न रह सका । बचपन का मित्रो



के धामू गने मिलते रहे । माँ न बड़ी मुश्किल से उन्हें धरलन किया और गम्भीर आवाज में कहा 'रोने से तो वे लौटकर आने से रहे । सोचो और विचार करो । आगे की बात सोचने वाला ही बुद्धिमान है ।

सब स्नान करन सब दिया । गोबिन्दन पिता की आत्मबधा पढ़ने लगा । स्नान के बाद सब नीटा तो माँ न कहा 'भोजन तयार है ।

मैं तो कुछ नहीं पाऊंगा माँ ! मुझ भूख नहीं । सब का आवाज में बेचना का स्वर था ।

तुम नहा आओगे तो मुझ भी भूख नहीं । गोबिन्दन भी चुप न रह सता ।

अन्न तो किसी से छूटा नहीं बेटा ! माँ ने समभाषा अन्न की स्तुति से ही तो गुरुदेव ने अपना पुस्तक आरम्भ की है ।

तीनों की आँखें पुस्तक की पाण्डुरिति पर झुकी थीं—समपण-मृच्छ १७

अन्नमय है हमारा मन ! उसी अन्नमय बना छोट को समर्पित है यह ग्रन्थ ।

ब्रह्मविद्या की दोसा गते हुए उद्दालक ने अपना पुत्र स्वयंकेतु से कहा 'पन्द्रह दिन तक कुछ मत खाओ ।

पन्द्रह दिन का उपवास के बाद उसने पिता से पूछा 'देव क्या मुनाऊँ ?

पिता ने अपना ही 'सौम्य भुञ्जे श्रुत्वा यजुः साम वे मन्त्रमुनाओ । पुत्र ने हताशा धाणी में कहा 'देव क्षमा करें । मैं सभी मन्त्र भूल गया हूँ ।

तत्पश्चात् पिता के आदेशानुसार स्वयंकेतु ने भोजन किया और सभी मन्त्र उसकी जिह्वा पर उतर आए ।

तब पिता न कहा 'सौम्य अन्नमय है हमारा मन । अन्न के अभाव में उनकी गति यही ?

अब दोनों मित्रों को भोजन के लिए बैठने देर न लगी ।



## चौदह

गा। त्रिनन वेग स आने की ओर भागी जा रही थी। गलघरन का निष्कारपारा उतनी ही गति से पीछे दूर पीछे बरकला की ओर भाग रही थी।

गल का चुप पाकर गोविन्दन ने कहा 'यह पीछे की बातें छोड़ा आग की सोचा।

गल ने कुछ उत्तर न दिया। वह कुछ इस तरह धठा था जम आगले किसी भी स्थान पर उतर सकता है। एक विचार आता एक जाता। एमी दुविधा में इसमें पहले वह कभी नहीं पड़ा था। कभी साचता उमका या बम्बई का टिकट नटानर गाड़ी में आ बठना गुरु-वरम्परा का अपमान है। गुरु की सब बातें भुगानर उसने गुरु की महिमा का नीचा गियाया उम धट्टा लगाया। फिर गोविन्दन की बातें याद आती। बम्बई की रम-नाथ ध्वनि का जो चित्र गोविन्दन ने आता ही-बातों में उम गियाया था उसमें कितना आनपण था।

गोविन्दन ने उस बठपुतली धना निया जब उसने बताया 'जहाँ मैं रहता हूँ बम्बई में मरीन ड्राइव पर एक फ्लैट में वहाँ से सागर का हस्य बटून बना सगता है। गोविन्दन ने यह भी सो कहा था 'बम्बई में तुम्हारा सितारा एकदम चमक जायगा! यह सभानकर बठ गया अहमात्र का टेक मिन गई।

यह साधन सगा गोविन्दन कितना निपुण है। आरम्भविश्वास था

उसकी घुट्टी में है। गोविन्दन ने उसे यह भी तो बताया था कि बम्बई में बड़े-बड़े लोगों से उसकी मित्रता है, जा उसकी प्रशंसा करते हैं। उमने अपनी योग्यता का लम्बा चौड़ा हिसाब किताब बताया था, अपने सम्बन्धियों का मानो त्रिताल में टेका लगाया था।

गोविन्दन ने उसका क्या-क्या भरोसा कर कहा, बरखला अपनी जगह रहेगा, वही चला नहीं जायगा। बम्बई में तुम्हें बरखला की याद नहीं सतायेगी। बम्बई का जादू मिर चढ़ बोलगा।

गुरुदेव ने मुझमें जिस आश्चर्य की भाँगा की थी, मैं उससे हट रहा हूँ।

यह तुम्हारा भ्रम है। तुम्हारे धर्म जो भय भरा हुआ है, उसे निवास दो। मैं कहता हूँ, बम्बई में तुम्हारी क्या चलायगा। तुम्हें पता मिलेगा। पता तो जरूरी है।

दुविधा में उलझा-उलझा शस्त्र बठा था, जम भय भी वह अपने स्थान पर नीचे उतर जाने का फैसला कर सकता हो। वह वह मकान था—मुझे तो बरखला ही पसन्द है, वही लौट जाऊँगा, बम्बई नहीं चाहिए। पर गोविन्दन की बातें मुझे मुझे मन पर थाप लगा रही थी—बम्बई की सुख-सुविधा की बातें। बम्बई में नीलू भी तो था जो किमी विद्यालय में पढ़ाती थी। गोविन्दन को तो विश्वास था, एक दिन नीलू को भी फिल्मों में ले जायेंगे। नीलू का आग्रह था, फिल्म में काम करने के लिए पिताजी की स्वीकृति चाहिए और पिताजी कभी इसका अनुमति नहीं दे सकते थे। गोविन्दन का विश्वास था कि जब शस्त्र बम्बई से नम्पूतिरिप्पाड को निसेगा कि नीलू का भविष्य तो फिल्म में माय जुडना ही चाहिए, तो वे मान जायेंगे। गोविन्दन इस बात पर हसता था कि नीलू का ही नशिकता की दलील देता है और उस विद्यालय में अपना समय गँबा रही है, जबकि फिल्मों में उसकी म्याति मिल सकती है और अपार दौलत।

क्या सोच रहे हो शस्त्र? गोविन्दन ने उसकी पीठ पर थपकी

दकर बहा तुमम साहस होना चाहिए । हम पिताजी की जीवनी पर फिल्म बनायेंगे । उनकी आत्मकथा छपने भर की देर है । इसके अनुवाद की व्यवस्था बम्बई में कुछ भी मुश्किल नहीं होगी । अनुवाद निकमा नहीं घोर मममो चर्चा गुरू हो गई । फिर हम इसम पसा लगाने वाले भी ठूँड ही लेंगे । गुरुत्व का सगीन तुमम अच्छा कौन ागा ? इस तरह तुम गुरु-परम्परा की कुछ टक्का ही तो करोगे ।

“गुरुत्व की यग-महिमा का आगे ल चरन म कुछ कर सकू यह तो मेरा धम है ।

यही ता मैं भी साचता हूँ । इस नाम म इरा भी हमारी महायता करेगी ।

साख चुपचाप बठा रहा । इरा की महिमा यह सुन चुका था । सात सप्त भाव म वह बीच-बीच म गोविन्दन की ओर दग नता । उनन साचा गुरुत्व पर जा फिल्म बनगी उत्तम नालू को ना ल ही आयेंगे । इरा ता रटगी हा । साठवा बपगाँठ वाला अन्तिम टय ठीन म खिस्तान म आपताब-मोमाकी फयाज खाँ अवाय सहयोग देंगे । बम्बई स बडौंग कौन दर है ! बटान स व बम्बई तो आ ही सकेंगे ।

तुम्ह दावर नीलू नितना प्रमन्न हागी धम ! गोविन्दन मुस्कराया जब भी मिलती है गुम्हारा समाचार अवाय पूछती है ।

साय मुस्कराया । इस समय नीलू की स्मृति नितना सुवत् था ! गुरुत्व की जीवनी का फिल्म का बात ता धाव पर मरहम का काम कर गई । यह मुमय गोविन्दन क जम-जान सखारा का प्रताक था । आगिर गोविन्दन पिता का पुत्र निकमा । गल का नगा जैसे वह फिल्म सवार भी हा गद । पिता का प्रनिद्धि म गोविन्दन न हाय बटाया । पुत्र हो तो एना । पिता-पुत्र म ऐना ही ताव-मत होना चाहिए । मन-वाला क वार मननना उड । गव और आनद से उनकी बल्पना नाच उठी ।

खिन्व म बहूत भीड़ थी । गादा दननाती हूँ भागा जा रही थी । बरकता पीछे रफ गया था—बहुन पाछे ।

गोविन्दन ने इस बात पर सन्तोष प्रकट किया कि बरकला के संगीत विद्यालय में त्रिवेन्द्र से एक महोदय भा रहे हैं, और जसा कि नमू तिरिप्पाड न कहा था चिलाबकोर के मसुमाटोना वाली संगीत शाला के लिए भी वे गुरुदेव के एक अग्र गिप्य की सेवाएँ प्राप्त कर लेंगे। यह तो समार है शय ! उगने शख की आँखा में भाविकर कहा 'एक जाता है, एक घाता है। बरकला की चिन्ता छोड़ो। तुम्हारे बिना भी बरकला की गाड़ी चलती। तुम्हारी जहरत तो बम्बई में है। बम्बई तुम्हारी बना को समायी देगी।

शय मुस्कराया क्या ही जीवन है गुरदेव कहा करत ये। कला दूध-गाछ है।

तुमन दस्ता था न शय ! गोविन्दन न प्रसन्न बदलकर कहा मैं न मुझ बम्बई भाग से रोका नहीं था उसने तो मेरे इस मुभाव को भी मराहा कि तुम मेरे साथ बम्बई चलो। मैं बहुत मममदार है। वह जानती है पता ही गाड़ी का बन है। वह तो पिताजा से भी यही बात कहा करती थी। पिताजी जीवन भर धादगावादी रहे। क्या मैं झूठ कहता हूँ शय ? और फिर पतरा बदलकर वह बम्बई की प्रस्ता का पुन बोधन लगा। साथ-साथ वह यह भी कहता जा रहा था कि वहाँ ममवा-भातिग का बिना तो काम नहीं चलता।

शख फिर किसी साथ में लो गया जसे वह अग्र भी अगले स्टेशन पर उतरकर बरकला की गाड़ी पकड़ सकता हो। वह सोच रहा था मैं तो निमीका ममवा-भातिग नहीं लगा सकूँगा। फिल्मों में मेरा संगीत कसे चलेगा ? वहाँ तो घटपटी धुनों की ही पूछ है।

विन्मी में लोग खूब पसा लगात हैं। गोविन्दन मुस्कराया और खून मुनाभा बमाने हैं। संगीत का बिना विन्मी की गाड़ी नहीं चलती।

संगीत ! शय न नाक भी चड़ाकर गन्न हिनाई। गदन तक पडत उमक धु मरान बात भूम उठे।

हाँ हाँ, संगीत ! गोविन्दन न अपना बात दोहराई।

गुरुदेव तो कहत थे उस संगीत कहना क्या का अपमान है ।

'बात-बात में उनका हवाला न दो ! गोबिन्दन जस साम्न् उठा  
 अपनी बात करा । बरबला पीछे रह गया—बहुत पीछे । दो स्थान  
 धीरे । फिर बम्बई की सीमा शुरू हो जायगी । हम विक्रोरिया टर्मिनस  
 पर उतरेंगे । कहत-कहते वह मुस्करा उठा "गुरुदेव तो हम दोनों के  
 गुरु थे । वे अब नही रहे । अब यह समझा कि बम्बई में कुछ दिन मुझे  
 ही तुम्हारा गुरु बनना होगा । मैं तुम्हें बताया करूँगा वहाँ ठुमरी धीरे  
 दासरा न गहू-महू से काई चीज उभारना है वहाँ टका लगात-सगाते  
 मानो पातान में उतर जाना है जहाँ हमारे महात्रि रहते हैं—नाचे,  
 बहुत नीचे ।

'बहुत नीचे—यज मन्दर से भी नीचे !" धर हँस पडा ।

'पसा देने वाला हम चाह जितना भी नीचे क्यों न ल चल ।  
 गोबिन्दन की छाँसे नाच उठीं 'यह ना मसवा-पानिग है । हमें पसा  
 चाहिए । हममें कोई ऊँचा स्वर नगदाप चाह नीचा सात पातान बाना ।





मौना-बाजार







मैरीन डाइव को दखकर यह कहना तो बठिन है कि बम्बई किसी समय मछुमा का साधारण-सा गाँव था। हाँ तो मैरीन डाइव के तीन रग हैं। एक रग उषा का है जसा शृङ्गार स पहले नववधू का होता है। एक रग दोपहर का है—न शोल न खचन जान क्या ऊपना भा रहना है। एक रग साँभ का है जिसम इन्धनुष के साता रग मुम्क राते हैं। यहाँ का उषा है किसी भाँवी का भनक-भौ दापहर विराम सी घोर साँभ एवम् विलम्बिन लय-सी। साँभ का निगुरा हुमा रग ही मैरीन डाइव का मञ्चा रग है।

जहाँ मैरीन डाइव की गगनधुम्बी घट्टानिवाएँ सागर के साथ-साथ खती गई हैं वहाँ बनी मागर ठाँ मागता था। यह सब भूमि सागर स छीन ली गई।

मैरीन डाइव से धारम्भ हान वासा यह पथर घोर सामण का रास्ता एक सम्यी भुजा के समान सागर व भीतिर तब चना गया है जम माँ अपन बच्चों को पाम बुना रही हा। इमना प्रतिम मिरा है नरीमान पॉइन्ट। नरीमान का सपना था कि एक दिन इस पापाखी भुजा की बासाबा ग मिलावर इसके उत्तर-पूर्वी भाग का जन निषान निया जाय घोर फिर इन गमनस भूमि का रूप द निया जाय। फिर तो हम वहाँ मैरीन डाइव की घट्टानिवाओं ग भा ऊँचे भवन बनन दखेंगे घोर मोबेगे मनुष्य चाहे तो क्या नहीं कर सक्ता ! बम्बई ता इमा

प्रकार फनती खली गई है फल रही है—नई-नई बस्त्रियों के रूप में नये-नये उप-नगरों का चेहरा मुहरा लेकर । पूरा नगर एक विराट् बर गद के सदृश है जिसकी हर छोटी-बड़ी धागा एक-दूसरी पर बाजी ल जाने को हाथ-बर मार रही हो ।

नरीमान-यादट पर बठ-बैठे गोविन्दन न कहा वह रहा उस ऊँची झट्टानिगा म हमार पसट । उसस सात फलट छोड़कर रहती है इरा । क्या उमका जन्म दिन है । तुम भी चरना मरे साथ ।

तुम कह रहे थे माँग का सिन्दूर म माँ की पृष्ठ भूमि म काम किया है इरा ने ) सख मुस्कराया ।

इरा की धपनी माँग म सिन्दूर नहीं पडा । गोविन्दन ने झालें नपाई वह माँ नहीं है पर ममता क अभिनय म वह गोल म दूध पिलान कात्रिया को भी पीछे छोड गई । हथ धाज दूसरे घो म यह पिकवर देखत चलेंगे ।

दास कुछ न बोला । वह बडे ध्यान स उन युवतियों को देखने लगा जो सभी भभी एक युवक के साथ धाकर खडा हो गई थी ।

फिर एक धपेड जोडा धा निवला । साथ ही स्पष्टी ब्याजू पर स्वन पून खोसि ।

तीना क्यारै पुल मित्रकर गप शप करन सगों माना के धिर-परि चिता हा ।

गोविन्दन ने दास के बान म कहा यह उज्ज्वल फूल वाली मठकी पुछ-कुछ इरा स मिलती है—वही चेहरा मुहरा वही उठान ।

मैं तो यह नहीं कह सकता । दास मुस्कराया 'मुझे तो इरा स मिताया नहीं ।

कल तुम उमस मिसोगे न ठाठ से । गोविन्दन हें पडा धीर रेखा माँग का सिन्दूर तो धाज तुम दन्व ही तो । धायर वह पूछ चले । धीर दया इरा म मिलने पर काई कन्धी-कन्धी दात न कह चम्ना ।

सूय सागर में डूब रहा था। सागर की सहरोँ नरीमान पाइंट से टकरा रही थीं मानो डूबते सूय की सुनहरी धरेदार घर्घरिया पहन नीलवण सहरोँ ने भी किसी नृत्य-मुद्रा में गोविन्द की बात दोहरा दी—हाँ-हाँ, कोई कच्ची-पक्की बात न कह बठना।

राज तीना कयाघा की घोर मुठ-मुठ दम्ब लता घोर साचता इनकी माँग में भी सिन्दूर पड़ेगा। य भी माँ बनेंगी, सिंगु के लिए दूध उतरेगा। उसकी बल्पना में बरबला घूम गया। वहाँ भी सागर-तट पर सूय डूब रहा होगा। वहाँ भी लाल घट्टानो से खेलती सहरोँ ने सुनहरी घर्घरिया पहनी होगी। इसी प्रकार सहरोँ उबक-उबककर बरबला के दबता जनामन स्वामा के दगान लाम की इच्छुन-सी दीखती होंगी।

गाविन्द म्यान का घोर इकट्टे शरीर का मुबक था। मुम्बराता बात करता तो गहरी नशों के नीचे में उसकी बड़ी-बड़ी घाँसे उसकी प्रतिभा का नामम उछानती-नी लगती। उस कभी कभी इस बात का ध्यान भ्रम्य घाना कि उसका का ऊँचा क्या न हुआ। पिताजा तो छ फुट छ त्रिजन्त हुए थ पर कह पिता पर नहीं माँ पर था।

गम लम्बा था माना मूर्तिवार ने ऊँची घट्टान खुनकर उसकी घाँसित घड़ी हो। लम्ब हाथ बड़ा सिर चौड़ा माया। वह बरबला के बेप म था—कमर में मुण्डुँ खुली घान्तीनों का कुर्ता कपों पर सुनहरी किनारी वाला पटका। गाविन्द का समान पेंट और बुगाट फटनन का वह राजा न था। उसके मुग पर मुम्बान सित रही थी—केन का बुञ्जा म धिरे घर क सदभाव और स्रागतम् माद-सी।

ताना कयाएँ सूय की डूबती बिरणों में स्वप मूर्तिमाँ-सी लग रही थीं। वह मुबक एक घोर को ह्पर भ्रष्ट जाड़े क माय किसी गलत ने जाने सिपाक जने प्रसंग पर जल्नी-जल्नी उदान थापा रहा था माना उन निपाव की सही मजिन पर पहुँचने का कोई भागा न हो।

गाविन्द बोना बम्बई में मुझ कम डूबना पडा। बहुत दिन तक पुण्याय पर सोया। फिर यानी मिता। घोर शर का गोरी

मे मरीन ड्राइव के पन्ट म घाने की कहानी तुम सुनोगे तो मेरे साहस और परिश्रम को अवश्य सराहागे ।

इस दृशाव से तो मैं भाग्यशाली हूँ ! शख मुस्कराया ' मैं तो बरकत से सीधा मरीन ड्राइव के पन्ट म ही चला आया ।

एक बात यह भी तो है । मुझे इरा से मिलन म अन्व दिन लग गण थे । तुम वन ही यानी बम्बई घान ने तीसरे ही दिन इरा न मिल लीगे । गोबिन्दन हँस पडा बस इरा के सामन कोई बन्ची-पक्का बात न कहूँ बठना । यह भी मत पूछना कि उसने सपनो के सूटकेस म क्या क्या शख-सीपियाँ सोई पडो हैं ।

तुम कहते हो तो बानूंगा ही नहीं । केवन मुस्करानर ही उसे देखता रह जाऊँगा । मैं ऐसा ही बनूँगा बोलूँगा ही नहीं । घोर शख की बत्पना म जनादन स्वामी के मन्दिर का मुनहरा बलदा घूम गया जा आकाश मे गटवठा सा लगता था जैसे मन्दिर की घण्टियाँ की आवाज बराबर बान म पड रही हो । श्वता का दान-नाम बरने वाल यात्री जैसे साक्षिमाँ बढकर मन्दिर को जा रहे हा । उसकी धाँपें खुन गईं जैसे नाद स जागवर उमन पूछा 'रा का जम यही बम्बई का है ?'

यहाँ का नहा हैरावाद का । यह कहकर गोबिन्दन बभव म पनी उन बयासा की घोर दखन लगा जिनके विचार मिट्टी म दवे बीजों से जमे नवजाठ अणुधों-से थे ।

शख की भाँला म बरकता के घर घूम गए—वेन के कृष्णा क बीच मुस्करान घर नवजाठ बछटों को प्यार स चाटती गीए पवने को गटवाम केना के गुच्छे घूप म सूखन को फलाई वाली मिच काजू के भूरे छिनके बान दर, जो बम्बई तब आ पहुँचते थे घोर जिन्हें डातहा म तखवर और नमक लगावर बम्बई के बगतीरी और ईरानी रेस्तोराँ म परोगा जाता था । बरकता के किती भी घर की बिशपता भी ताजा दोग की गरम-गरम सुगन्ध । गोबिन्दन ने उसने बन्ध पर

हाथ रखकर कहा, कमान हो जाय, यदि हमारी नीलू भी इस समय पनी पा निकले ! वन तो नहीं परसों उससे मिलने चलेंगे ।'

श्वेत फून वाली रुपसी दोना युवतियों के बीच खड़ी चौखटे में जगी तस्वीर-सी लग रही थी । उसे देखकर दाव की छाँवों में पिता की बनाई मान मूर्ति घूम गई । यह भा भा बनेगी उसन सोचा—इसका दूध भी उतरेगा ।

तीनों कन्पाएँ किसी बात पर हसकर दोहरी हो-हो गई । गाबिन्दन बोला 'तुम्हें देखकर नीलू कितनी प्रसन्न होगी ।'

और दूरा भ्रममल्ल होगी ?

परिषय की बात है । नीलू अपनी जो है ।

और दूरा ?

फिर वहीं कच्छी-यक्की बात ! पूछ तो रहे हो पर इनका भाव तुम नहीं समझन ! गाबिन्दन मुस्कराया 'मैं तुम्हें भ्रहल्या की माँ से भी मितार्जुण ।

और भ्रहल्या मे नन्ग ?

फिर कच्छी-यक्की बात ! हाँ ता भ्रहल्या की माँ आज भी उसी खोली में रहती है—उम खोली से तीसरा खोली में जहाँ कमी में रहता था ।

इस बात कई लोग नरीमान पॉइण्ट पर आय और चले गये । अंधेड़ जाड़ा उन युवक म बातें मिय जा रहा था माना व अपनी कन्या क लिए घर पा गए हो । और उपर तीनों कन्पाएँ मुस्कान के नीरम-मोती बिसर रहा थीं ।

पिताजा हम सग के लिए छाड़ गए ! गाबिन्दन ने खमाना-सी अग्रज म कहा 'भव तो व अपनी धाम-बया में हा जावित रहेंगे । मन्दाजन में छप जाने ल । हम उन शिन्नी म भा धरवायेंगे । पिताजी का पन तो बढ़ना ही चाहिए ।

"क्या उमका किम्म नहा बन सुकता ?

क्यों नहीं। पर रुपया कौन लगाये ? देखेंगे—जो भी बन पड़ेगा करेंगे।”

गुरुदेव तो शबारा भ्रम लेंगे बरकला के मछुभाटोला में। शख ने बरकला भरी आवाज में कहा 'चिट्ठी में लिखी बातें झूठ तो नहीं हो सकती। तुम उन्हें उतना नहीं जान पाए जितना मैं !

गोविन्दन ने झालों में व्यग्य-सा चमकावर कहा सुना नहीं था धँधेरी स आँटते समय रेल में हमारे पास बैठा युवक क्या गा रहा था। धीरे वह गुनगुनाने लगा—

“प्रगले बक्तों के हूँ य लोग इन्हें काँच न कहो !”

शख के लिए इस विचार से सहमत होना सहज न था। गुरुदेव की बातें रूढ़ रहकर उसे याद आ रही थीं। उनकी कला उनकी सहृदयता उनकी लेखनी में समन्वय की भावना। इनका सगम ही तो थी गुरुदेव की आत्मकथा। गुरुदेव की चिट्ठी को आत्मकथा का उपसंहार बनाने की बात भी नम्रूतिरिष्याह को समय पर सूझी।

तुम मेरे माथ आ गए यह तुमने बुद्धिमानी का काम किया। गाविन्दन मुखराया “अब देखो हम बम्बई को किस तरह उगलियो पर नधान हैं। हम एक नहीं दो हैं। नहीं हम दो नहीं एक हैं। मुम्बालेवी हम पर दयानु होगी। जमभूमि—नहीं नहीं जहाँ मनुष्य का जन्म होता है। जमभूमि तो सारा देश है। लक्ष्म-कोटि मुआएँ उठाकर जमभूमि अपनी सत्तान को प्यार करती है।

शख बृह न बोला। उन लगा गाविन्दन ठीक बह रहा है। जमभूमि में तो मात लाख गाँव थे। उसमें तो दात-शात नगर उपनगर थे। जगत पहला मैदान था नगे-माताधों के प्रिय दात-शात जनपद थे। ऐसी जमभूमि में छा जितना प्यार किया जाय कम था।

‘इरावती को इस बार तुम मातृपूति भेंट करना दात !

कहाँ यह भी कच्ची-बक्की बात छा नहीं होगी ?

घरे नहीं शख ! धीरे गोविन्दन ने प्रसन्न बरकला कहा बज

गाम जब हन एक मित्र से निम्न काँडा में प्रवेश कर के ठा टुन्ट्रें  
 दिव्य में जैस पूरा हिन्दुस्तान लिखाइ द फला का झार मुन्त प्रान्त में  
 पूछ निवा था—क्या य सब मोठ प्रवेशि वा रह है ? और न हूँकर  
 कहा था—और नो क सगनों स साठ प्रवेशि वा रह हों। इ  
 सुमन कहा था—भव तो सुमन-सुमन प गग में क सग द सन  
 नबर धाया-जाया बगेंगे ।”

गान न साँखें नचाइ ‘प्रवेशि में इन मित्र क फा दूँकर हूँकर ठा  
 हुमन बम्बइ क कइ रग दन लिए थे ।”

वह प्रथम जाडा चन पडा सप-साय वह सुकना । लिखाइ  
 बा ली था तानों क गएँ गनवहिनी गन ।

नरमान पाठ पर प्रवेशि छा गया था पर नजि दूँकर का  
 एक-एक फनट विजय क प्रकाश न बगगा रग था । ‘गना श पछवा  
 वरकना में नो धम रहा हाग इस मन ।” ‘भव न गदिन क ग  
 में बाँह शनकर कहा ‘भव गठा जय । ‘नो का लिखु’ लिख ग  
 हा न ?”

भव ! गदिन हस पग ‘मैं ना दूँकर हा गग क लिख  
 देगने की बात । पर कन तुम गग स निज गग हा । इ लिख स  
 सग होकर हा मुझे इय न निमना कहिय । ता इद क सग गग  
 पेट-पूरा करे फिर लिख क लिख ले ।”



एट्रेस और एग्जिट । गोविन्दन जल्दी जल्दी कह गया और फिर उमन इस बात की जरा भी परवाह न करत हुए कि दशधरन उसकी बात समझ भी गया या नहीं दूर से एक कार का उस पोटो के झटते में घुमते देखकर कहा तो वह भा गया !

दशधरन ने कबल इतना ही कहा कि एक कार उम कीठी के झटाने में प्रवेश कर रही है । उसने दवे स्वर में पूछा वह कौन ?

'मरा होने वाला फाइनान्सर मनोज सायान । गोविन्दन ने छुटो से उछलकर कहा और वह दशधरन को खींचकर कोठा में ले गया ।

भीतर बहुत प्रकाश था—हाई सौसाइटी का चमत्कारमय सौन्दर्य इन्द्र का झवाड़ा ।

इरावती ने दूर से गोविन्दन को देखा तो वह लपककर उसका पास था गई ।

गिन्मकपूख भाई लट एराइवन ।

चलो सेट हो मूडी था तो गए । इरावती मुस्कराई ।

य है गुरुदेव छद्रपदम् के शिष्य मगीनाथाय शखभरन । उमन परिचय कराया 'यह भाषने लिए एक भेंट लाय है ।

मम ने वह दिव्या इरावती के हाथ में ले लिया ।

इसमें क्या है ?

उत्तर में दश केवल मुस्करा दिया ।

कोनकर दक्षिण न ! गोविन्दन ने हँसकर कहा तुम भाई हैत्य मू ? उसने दिव्या ले लिया और उसमें म चमचमाता मूर्ति निकाल कर इरावती के हाथ में थमा दी ।

'दुर्किया ! इरावती मुम्पान बिनरेली हुई बोली किसन बनाई यह मूर्ति दशधरनजी ?

दश दोबारा मुस्कराया और मुह ने कुछ न बोला ।

तीन-चार मुक्कन और एक मधेइ भासु का व्यक्ति भावर इरावती के पास लड़े हो गए और मुग्ध दृष्टि में इस मूर्ति की ओर देखने लग ।

घाप हैं श्री मनोज सायल । गोविन्दन ने परिचय कराया ।

गस्त न हाय जाद लिए । मुँह से कुछ न बोला, सदा मुस्कराता रहा ।  
 अब यह मूर्ति सान्याल क हाय म थी । उसन कहा 'सखधरनजी क्या  
 इरा के मन में माँ बनने की भावना जगान के लिए ही यह मूर्ति बना '

सान्याल के ध्येय वा शेष न कोई उत्तर न दिया ।

इरा को मूर्ति देने हुए सायल गिनखिलाकर हँस पडा घाप हो  
 चाह पीछ माँ बने बिना स्त्री का छुटपारा ना ।

'बुछ घाप भी कहिय न गखधरनजी ! इरा ने घाप्रह किया ।

'मै मयाग न ही सगानाचाय बन गया जब बि हमारे परिवार की  
 परम्परा क अनुमार ता मुक मूर्तिकार ही बनना चाहिए था । यह मूर्ति  
 मरे पिताजी की बनानृति है ।

बरे बड़ी-बडा प्लटों में बाजू किममिस और वादाम की गिरियाँ  
 लिय धूम रह थे । किमी क पाम चाय और औरेंज था ।

घाप क्या लेंगे सखधरनजी ? इरावनी मुस्कराइ और फिर  
 उमन मुँ ही फमला किया 'बासा लेंगे घाप ! बच्छा बाजी  
 मँगवाती हूँ ।

'हमारे लिए बाजी उपर निजवा दीगिए—उम बान में । यह  
 कर्त हुए गोविन्दन गखधरन का एक बान की तरफ ल गया ।

पार्टी कोठी म मट हुए लॉन म हा रह थी । बनार्ते ठानवर सुन्दर  
 मण्डप प्रस्तुत किया गया था । मण्डप म एक और स्टज बनाई गई था ।

बाँधी घाई लो माय म बाजू का प्लेट भी था ।

सर्मा रगभूमि क पत्ते क पाछे म धु परधों का भावाब तरती हूइ  
 घाई । नीलू नाच रही थी । नीलू का दमकर दोनों मित्र चरित्र रह  
 गए । गोविन्दन बोना 'मग्ना है नीलू हमग भी पाछे घाई ।

नीलू नाच रहा थी जग लाक-कथा की राजकुमारी सी सार की  
 नीलू म जाग उठी हा । जब वह रगमण पर नाचत-नाचते बठ जागी  
 और दोनों हाय ऊपर उठकर उँगलियाँ मिखाइती-झपाती ता नबला,

कमल खिल रहा है।

नीलू या नाच रही थी जस किसी नदा को पहली बार पहाड़ो ने रास्ता दे दिया हा। धुधरु यों बज रहे थे जस नदी का रास्ता आत्म विश्वास और भरोसे की अगर बन गया हो।

जानते हा इरावती ने मुझ बताया था उसकी माँ बिलकुल नहीं चाहती कि वह ऐक्ट्रेस बने क्योंकि ऐक्ट्रेस बनने के लिए तो उसकी माँ ने बड़ी लड़की को परल ही तयार कर रखा था। और फिर बड़ी बहन मर गई। कहत-कहने गोविन्दन रक गया।

मोह ! कस मर गई ?

वस मर गई, जस हर कोई मरता है।

तो फिर इरावती ऐक्ट्रेस कसे बन गई ?

यह मल पूछो सख ! सर छोड़ो नीलू का नाच देखो।

नीलू नाच रही थी—नीली-पीली हरी रंगनियों की बिनरी ! विद्यम पदों पर बादला क फिर आने का दृश्य प्रस्तुत किया गया। फिर बहुत सी लड़कियाँ एक साथ घाड़। वे सब इन्द्र-पूजा नृत्य कर रही थी। उनम इरावती भी थी और वह बिलकुल अनग नजर आ रही थी। उसके घुँघट का आदाज दूसरी लड़कियों से बिलकुल अलग था। मच के एक ओर गायक और बाएँ बडे गीत का स्वर उभार रहे थे।

गोविन्दन न गव का कथा भँडोडपर कहा 'दंग रहू हो न ! इरावती सबम अनग नजर आ रही है न ! उसकी भाँखों म सचाई का काबल चमक रहा है। उसकी भवों की सीधी रेखाएँ अपनी पवित्रता की कथा सुना रही हैं। ऐसा प्रतीत हाता है स्वयं धरती नाच रही है धरती की आत्मा नाच रही है।

राशनियाँ बदलती गई—रंग बिरंगी रंगनियाँ। फिर कुछ छावरे आर—गाँव व छावरे। राजस्थान की तरफ का लिबास प्रतीत हाता था। लड़कियाँ एक तरफ का भाग गई और वे फिर आ निवली। एक-एक लड़के ने साथ एक-एक लड़की मानो राधा और कहेया की जोड़ी बनी

नाच रहा थी। एक विशेष ताल था जिस पर इन्द्र-पूजा नृत्य हो रहा था और इरा प्रलग नजर आ रही थी।

मान कृशों की टहनियाँ लार्ई गई सात प्रनार का अन्न लाया गया और भव गांव की छाहरियाँ इन्द्र-पूजा नृत्य की चरम सीमा प्रदर्शित कर रहा थीं। इरावती की दह-तता मानो किसी वृष की टहनी के सहसा ही झुक झुक जाती थी। उसकी आँखें पहल स बढी प्रतीत हो रही थीं, उनम काजल के डोरे जस मुँह से बोल रहे थे मानो वह स्वयं धरती हो—हरीतिमा की प्रतीक। सभी तो उसने हरे वस्त्र पहन रये थे।

किर सहसा नाच बल हो गया। रगभूमि पर पर्व गिर गया।

अब जम तिन की पार्श्वों के अतिथि एक एक बरने जा रहे थे। इरावती सबको विना द रही थी।

जब सब अतिथि चन गए, तो इरावती नीलू के साथ उस अंधरे कोन म बठ गोविन्दन और शम्भरन के पास आकर बाली में काफ़ी का घोंडर खबर आई है। काजू की प्लेट भी आ रही है। मैं तो कुछ भी गाना नहीं सबी अब तक।

नीलू बोनी बम्बई म तुम्हारा मगीत चमनेगा।

नीलू और इरा प्रसन्न मुद्रा म बठी था। इरा हर वस्त्रों म सज रही थी। उसन अपार सौन्दर्य पर शम्भर मुग्ध हो गया।

रात की आँखें उगी पर गरी थीं। वह लजा गई। गोविन्दन ने इस स्थिति पर व्यग्न-ता बसत हुए कहा बाजराज ने एक स्थल पर कहा है मगार में सबसे गुदर तीन चीजें हैं—धुली पान वाला बगमयी नार सरपट दीटना पोड़ा और नाचती हुई नारी।

मीनू हँस पडी 'यट मरे नृत्य की प्रणामा है या इरा का भाव मुना की !

शम्भर इम हसी म आ गम्भीर रहा।

इरा बासी 'आपको कैसा सगा मेरा नृत्य शम्भरनजा ?



सामने घान मलट की बुढ़िया पडासिन का मधुर व्यवहार न  
मिना होता तो दाखधरज यहाँ से भाग निकला होता । लख बहू  
बरकता पट्टेपकर ही बम सता । कभी वह मराठी बहावत का हवाला  
दनी— दवा बी करनी भाणी नारियाळ पाणी । [ दवता का प्रताप  
है कि नारियन के भीतर जल पदा हाता है । ] मसार म लागा का वसे  
ही रहना चाडिए—नारियन क दूध के समान । कभी वह हमकर  
बहती— 'भज कलदारम् भज कलदारम् भज कलदारम् मूडमते ! [कल  
दार का भज ले कलदार का भज ले कलदार का भज ले मूड मति ।]  
'भाररावाय यहाँ बम्बई में भा भाते बेटा तो व कभी यह न बन्ते—  
भज गाविन्दम् भज गोविन्दम् भज गोविन्दम् मूडमते । बुढ़िया पडासिन  
हाथ हिलाकर भापें नचाकर बहती 'बम्बई म ता चादी के रुपय का  
राज है । कलदार चाहिए कलदार जते भी मिले । कलदार बिना बम्बई  
बेकारी है । यहाँ कलदार का ब्याह होता है कलदार ही बच्चे-बच्च पडा  
करता है । कलदार ही बम्बई का जहाज है ।

गोबिन्दन भी बुढ़िया पडासिन के खर म-खर मिलाता बह बात  
भी तो सुनामो न माँ । बही—जेव न कलदार हा तो बम्बई का  
मवासी भी सेठ की बोनो बालता है—दुन बड गली तग बाजार का  
रास्ता किधर ?

तो तो टोक हा है बटा । मूठ नाठ नहा ।" माँ दाना हाय

आकाश की ओर उठकर मानो बम्बई के देवताओं का ध्यान धरती हुई कहती "कलदार न हो जेब में तो बम्बई रोनी मूरत बनाकर कहती है—हूँ हा-दुलहन सावधान घर म नहीं एक पायली घान ।"

घास विचित्र वीणा पर अभ्यास करने लगता, ता कमरे से निकल कर झट्टिया की माँ कहती "तेरे बण्ड में तो सरस्वती विराजमान है बग । तेरी गाँठ में लक्ष्मी का निवास होकर रहेगा । फिर तो ठनठना टन घले भायेंगे बनार-ही-कलदार ।"

गोविन्दन कहता 'बम्बई का यह मौसम भी कितना विचित्र है ! धूप निकलती है तो पूरा तरह खुलकर । और फिर ऐसा भी होता है कि घर से निकले आधा घण्टा भी नहीं हुआ कि रास्ते में ही वर्षा बर सेती है ।

मिट्टी म लड़े होकर वे बाहर की ओर देखते तो सामने स उठती हुई घटा एसी लगती जस विसा ने आकाश पर गोट लगा दी हो । जब मूजसाधार वर्षा होन लगती तो इस गोट का कहीं पता भी न चलता ।

बम्बई के बादल तो हाथियों की तरह हैं । झट्टिया की माँ ने एक दिन सबरे-भबरे ज्ञान बघारा 'अपनी अपनी मूँड में सागर का पानी भरकर उँडेस डालत हैं य हाया ! और वह मिट्टी से सागर की ओर दस्तवी रह गई ।

'यह उपमा तो सचाई से परे है माँ ! गोविन्दन ने हँसकर कहा मैं जानता हूँ । मैं केरल का रहने वाला हूँ जहाँ सागर भी है और जगन भी जिसमें हाथी खुने घाम बिबरते हैं । सागर के किनारे घाना तो दूर रहा हाथी तो सागर की आबाद से भा बसे ही डरता है जैसे घान स ।

घास ने अपनी ही हाँकी तुम्हें याद है गोविन्दन ! जब हम बच्चे थे तो बाइसा की गरज सुनकर यही साधा करत थे कि बाइस अपने घरों म पनाइसी पसीन रह है ।

'बाइसों की आबाद ता घान भी बसी है ! झट्टिया की माँ कह

उठी, "हम ही अब बच्चे नहीं रहे। अभी एक महीना और रहगा वर्षा का जोर बम्बई में। फिर आवेगी नारियाल पूणिमा। सुन बेटा गोविन्दन। और तुम भी सुना, बेटा शश। नारियाल पूणिमा को मेरे संग मन्दिर चलना।

ये मन्दिर हम नहीं छोड़ेंगे। गोविन्दन ने विचित्र-सा मुह बना कर कहा। बरकना में तो एक जनादन स्वामी का ही मन्दिर था यहाँ बम्बई में तो मन्दिरों की गिनती करना कठिन है।

य नास्तिको जमी बातें मुझ अच्छी नहीं लगतीं बेटा। तुम मत जाना। मैं शश को तो ने जाऊंगी अपने साथ मन्दिर में देव-दान कराने। मन्दिर में देव-दान करने हम सागर-पूजा को चलेंगे।

'सागर-पूजा में क्या हाता है?' शशघरन की उत्सुकता सजग हो उठी।

माँ का जैम श्रोता मिल गया हो। गोविन्दन रोव कर रहा था। शशघरन विडकी में खड़ा था। माँ ने पास आकर सागर-पूजा का चित्र उमारा 'बड़े धाराम से पूजों को दोन में रखकर अपना नारियल सागर की तहरों पर छाड़ने हैं बेटा। माँ ने श्रोतों नवाकर कहा।

'तहरा पर पूज और नारियल डोतते-तरते हूंगे।' गल न रख विभोर होकर कहा। जस घीणा व तारा पर किसी रागिनी व स्वर डोतते-तरत है।

माँ ने नारियल-पूणिमा के दृश्य में थोड़ा और रंग भर दिया 'सागर व तिनार बड़े मछुने भूत वह नारियल उठाकर पाव कर लेते हैं।

गोविन्दन बड़ा शव बनाना रहा। वह जानता था कि भातों की पूणिमा नारियल-पूणिमा व नाम से मनाई जाती है। यह त्यहार वर्षा समाप्ति का प्रतीक था। उस दिन से मछुनों व लिए अच्छा मौसम आरम्भ होता था। उन दिन से सागर-तट के साथ-साथ खरन वाली स्टीमर सविम जो वर्षा के कारण रुक जाती थी फिर से आरम्भ हो

जाती। शैव चरते-चरते गोविन्दन बोला "बहुत स लोगों का विचार है कि भारम्भ म नारियल-भूषिमा मछुवों का त्योहार था। प्राचीन काल म तो सागर-गूजा चरत समय बड़े-बड़े सौभाग्य नारियल पर सोना मढ़वाने मेंट किया करते थे और वह मछुवा भाग्यवान जाता था, जिसके हाथ पड जाता था यह स्वर्ण-मण्डित नारियल।

"भव तो बसे घनी मानी नहा रहे वेग। माँ ने ठण्डी साँस भर कर कण।

गोविन्दन बोला तुम्हें यह मालूम नहीं होगा गख कि नारियल भूषिमा के तिन ही पडता है रक्षा-वचन।

इतन म घटल्या भी अपनी घाई 'मैं तो इस बार एस भया क भी राखी बांधू गो।

"एक बलदार स त्याग नहा भिनगा। गोविन्दन हस पण, मजा तो यह है कि नारियल-भूषिमा में नारियल डालकर बनाया हुआ भात मा विलाना पडेगा।

'वह ता चाह आज मा खा तो। माँ क मुख का भुरिया भी मानो मुस्करा उठा और ठण्डी साँस भरकर बोली 'भैहगाई तो पडल स भी षड गर्द, घण। टकम भी तो घटन के स्थान पर उतटा बड़ रह है।

इसम क्या मन्त्रि का देवता बुद्ध नहीं बोल सक्ता माँ? गोविन्दन हस पडा दबता कहीं है? वे तो सब सागर में डूब गए जैसे स्टीमर डूब जाते हैं गूपान घान पर।

नारियल-भूषिमा म चलत-चलते बान भैहगाई तक घा पहुँचगी यह सो कहीं नहीं जानता था।

घटल्या का एक काम घटाकर माँ न कमरे म भेज दिया और हाथ उटाने बोली 'हे भगवान, यह दिन जल्दी नामा जब घटल्या की दानी उठे और रास्त-रास्त हू नुक्कड़ पर नारियल लाडा जाय।

घट्या ता भव मममा उस गीत का क्या भाव है जो घटल्या गण करती है। गोविन्दन न गम्भीर होकर कहा 'वही गीत—नहर



में मानन् से रहती है कया समुराल जाने लगती है तो नारियल टूट जाता है ।

गीत म नारियल के टूटने से लडकी के रोने का भाव है वेटा । माँ ने खडे-खडे बाँहे फैलाकर कहा ' इस मँहगाई म ग्रहत्या का विवाह कैसे हो ? पुण्य की जड हरी होगी । वह शुभ दिन आवेगा जब ग्रहत्या की बोली उठेगी और रास्ते रास्ते हर नुबनड़ पर नारियल तोडा जायगा इससे भूत प्रेत का भय जाता रहता है ।

सहसा बादल धिर आए । एक-दो बार बादल गरजा तो माँ ने कहा ऊपर वाली बुढ़िया चने की दाल दल रही है ।

गोविन्दन को हँसी भा गई 'यह क्यों नहीं कहती माँ कि भगवान् चने क्या रहा है या हमारे साथ भगवान् भी हँस रहा है । और फिर उसने दास की ओर भाँसें नचाकर कहा चने की दास दलते हैं तो भरड भरड की भावान निकसती है । ऊपर वाली बुढ़िया के रूप में चने की दाल दलती बादलों की माँ की कल्पना भी उतनी ही घटपटी है जितनी हमारी उपमा कि बादल चटाइयाँ घसीट रहे हैं ।

बाहर भूमलाधार वर्षा आरम्भ हो गई । बीच-बीच में विजसी खमक जाती ।

माँ बोली अब तो शुभ योग दिन भर के लिए यही कँद हो गए समझे ।

दास के मुस पर चिन्ता की रेखाएँ दिखाई दें । वह यही सोच रहा था—मैं दूधदान करने कैसे जाऊगा ?

इनने म ग्रहत्या न पास भाकर कहा 'गोविन्दन भया मेरा एक काम नहीं करेगे ?

उसा भी क्या काम है ?

'मेरी सहेली है भभाठी वह एकस्ट्रा नहीं बनना चाहती । घाय उसे एकट्रेस बनवा दें ।



**मा**नावार हिस पर रहने पे नटवर देसाई, बिनकी सुपुत्री उवगी का विवाह जयन्त रावल के साथ हुआ था। पर अपने पति की अनुपस्थिति में उवगी अपने पिता के घर पर ही रहती थी। सागर के किनारे थी यह बोट।

उवगी की ट्यूशन गोबिन्द ने इरावती से कहकर दिलाई थी। दासघरन को उमन समझा दिया था कि इस प्रकार की उदकिया संगीत में वसे ही रचि रखती हैं, जस लिपस्टिक लगाती हैं। वस कुछ राग रागिनियों के नाम घा जाय, एक-घाय राग का घानाप सुना सकें वसे ही जसे अपने डाइगसूम क पदों का रग दिमाती हैं और अपने टस्ट की रींग मारती हैं। 'यमुना मुलावना और इला—ऐसी-ऐसी कई लड रियां सम्बी ब्यू म छड़ी हो रही हैं! उसने हेंसवर कहा था पर सजान तो यह है अधिक-स अधिक बनदार बोन दती है! अभी तुम उवगी को संगीत सिखाता प्रारम्भ करो। संगीत तो वह क्या सीखेगी घागे बनकर तुम्हारे संगीत की पट्टन जरूर सिद्ध हो सकती है।

उवगी ने दासघरन के सम्मुख पहले ही तिन अपने व्यक्तित्व का पूरा परिचय द डाता मेरी कल्पना म सहजत भाज भी जीवित है। मोग कहत हैं घषिा मरिा-धान के बारण उमकी मृत्यु हुई मैं कहती हूं सङ्गत के घदर जो घाग थी वह उखी में जल मरा। हाँ उसका गीत नगी मरा कभी मर भी नहीं सकता।

इसके उत्तर में शशधरन ने उदास-सा मुँह बना लिया ।

उसने एव अत्वम म बहुत से फिल्म-स्टारों और दूसरे कलाकारों के फोटो लगा रखे थे । सहृदय के चित्र के नीचे उसने ये शब्द लिखकर अपनी सुझ-बुझ का परिचय देने का प्रयत्न किया था

Time goes you say ? Ah no  
Alas time stays, we go !

[तुम कहते हो

समय बीत जाता है

पर नहीं

अफसोस, कि बीत जाते ह हम

समय नहीं ।]

फिर उसने अपनी डायरी स एन नोग्रो गीत का श्वास्त्र पढ़कर सुनाया

यदि तुमसे कोई पूछे—

कि यह गीत किसने बनाया ?

केवल इतना कहना—

कि यह एक जासा किसान था ।

तु ख के नीले रंग में रंगा

घोर उसका कोई घर नहीं था

उसका कोई घर नहीं था ।

डायरी में सामने वाल पन्ने पर फास के एव खोबगीत का उल्लेख था

न कोई नदी है बिना मछलियों के ।

न कोई पहाड़ बिना घाटियों के ।

न कोई अलग्ग बिना मीसोफरों के ।

न कोई प्रेमी बिना प्रेयसी के ।

इन्हें देखकर शशधरन मुस्कराकर रह गया और फिर उसने अँगो

पर यन् मुस्मान मानो एक प्रान चिह्न बन गई ।

अब तब कौन-कौनसा राग मोखा है ?

विनाप नहीं ।

तो कैसे चला जाय ?

‘जसी भी आपकी राय हो । दो-तीन महीने का समय खानी है मरे पास । इसमें एक भाष चीज तो सीख ही जाऊँगी ।’

‘फिर ?

फिर जसी जयन्तजी की राय होगी । और सुनिए, वे माते ही एक विक्कर बनायेंगे । कहानी मने निखी है । हासोबुठ गम हुए हैं जयन्तजी सात महीने से । वे डाइरेक्शन और प्रोडक्शन का अनुभव लेकर आ रहे हैं । इरावती हीरोइन होगी ।

और हीरा ?’

‘देखें विगरे मिर पर यह सेहरा रखा जाता है ?

कहानी क्या है ?

बम्बई के लोगों वधर लोगों की कहानी समझिए जा न जाने कब से पटरी पर रात गुजारत आ रहे हैं ।

इतन में औरर भाय ले आया । साथ में बेक-पेस्ट्री और मिठाई थी ।

बालवनी से सागर का हृदय बहुत मुदर था ।

मेमा पर तो नर क्रिमी का नहीं मित खरता । सागरन न प्रसववस बना, पत्रा पर माने बान तो पहल गानी मिनन का सपना हो दग गवते हैं । सोरी भी मिन जाय तो ममभी बम्बई दयालु है !

माना में खन बाला को क्या-क्या छपसोके हैं व भी इस विक्कर में दिस्तार्द जायेंगी ।’

सागरन ने कुछ कहना चाहा, तो चवरी न मुस्कराकर बहा, परने भाय पात्रिए फिर मैं आपकी बातें सुनूँगा । सीजिए, व रन गुन्ना धमिए ।

सागरन ने टण्डी माँग लेकर बगा हमारे ग्य क लोगों को बट्टन

कट्ट हैं।

इसीलिए तो यह पिक्चर बनाई जा रही है।

पिक्चर का नाम क्या होगा ?'

'विप मन्थन !'

शालधरन ने बड़े ध्यान से उबशी की ओर देखा, अमृत-मन्थन तो सुना था यह विप मन्थन क्या हुआ ?

न सागर मन्थन कहने से घाव बनती है न अमृत-मन्थन से ! कहते-कहते उबगी हूँस पट्टी खैर कहानी पर अपनी में काम कर रही हूँ। सागर के साथ मेरा सम्बन्ध कोई नया नहीं है। गोविन्दन बाबू बता रहे थे आप लोगों का जन्म भी सागर के किनारे हुआ ! तब तो इस कहानी को आप पूरी तरह समझ सकेंगे और इसमें आवश्यक सुझाव भी देंगे। आप ही सोचिए, दम्बई के बेपर लोगों के लिए सागर से अमृत निकाला या विप ? कहते हैं सारा विप अनेके महेस पी गए थे। पर इसकी सच्चाई तो उनसे पूछिए जिन्हें आज भी विप पीना पड रहा है। ये लोग इस विप के कारण पन-पन मृत्यु की धार जा रहे हैं। अफ्से घर नहीं मिलेंगे इन लोगों को तो एक ही बात होगी कहते कहते उबशी हूँस पट्टी फिर तो ये लोग हमारी कोठियाँ चीन खेंगे ! खैर छोड़िये। अपनी कहानी की कहाँ तक प्रशंसा करूँ !

बेपर लोगों की कहानी भी हीरोइन के लिए तो कोई बसी ही हीरोइन चाहिए थी।

पर पिक्चर को बॉक्स ऑफिस में सफलता तो बसी हीरोइन से महा मिल सकती। और इसलिए, सगीत आप दीजिए ! पर ध्यान रखिए, बेपर लोगों की कहानी में ध्रुप काला सगीत तो नहीं चलेगा।

शालधरन ने बतपूबक कहा 'हीरो का चुनाव भी हीरोइन जैसा न कीजिए। मैं तो कहूँगा, सच्चाई और अनुभव के भेज से ही बनाइए यह पिक्चर। बाकी रहा सगीत। हम देखेंगे आप लोगों की आवश्यकता की समझेंगे। फिर सोचेंगे क्या होना चाहिए और क्या नहीं !



“तुम हो मगीतबार में हूँ भवतार ! हम दोनों मिले रहे तो एक  
जिन बम्बई हमारा पानी मरेगी ! हमारे गुं ने तो एव ही बात  
सिखाई है— यादव जीवत सुग्य जीवेत श्रुण श्रुत्वा घृत पिबेत् । [जब  
सब जीमो मुग्यपूर्वक जीमो श्रुण लेकर भी घी पीमो। ] गाबिल्लिन  
हंसन-हमत दोर्रा हो गया आज डालटा मिनता है ता बन प्रमती  
घो मिलगा ।

मैं ममक गया । रासपरन मौन न रह सका तुम्हारी जेब गरम  
है । तुम्हारी बम्बई तुम्हारे लिए घुम हो मुक्त जाने दो ।

तुम नहीं जा सवत । गाबिल्लिन न मड पर मुक्का मारकर कहा  
‘यह गाबिल्लिन का हुक्म है । घात्मा क बन्दे बना । जो मिनता है उत  
मन छोड़ो ।

मेरा जिन तो यह कहता है कि मुम बरकता मौन जाना  
चाहिए । रासपरन न दबनापूर्वक कहा ।

तुम हो मगीतबार में हूँ भवतार । गाबिल्लिन न घाँगे नधाकर  
परा ‘तुम यहीं रहोगे बम्बई में ।

रासपरन सोचन लगा—एक सड़की है दरावती एक सड़की है  
उपची एक सड़की है घहत्या । एक सड़की है गाबिल्लिन एक सड़की है  
जगत, जो हालीकूट से अपना उपची का चिट्टियाँ सिखता है । चाप का  
पुस्की भरत भरते अपना बटाना में इन सड़की दारेगा उमर भाई ।

कट्ट है।

'इसीलिए तो यह पिक्चर बनाई जा रही है।'

पिक्चर का नाम क्या होगा ?

विप-मन्थन !

सातधरन ने बड़े ध्यान से उर्वशी की ओर देखा 'अमृत-मन्थन तो सुना था यह विप मन्थन क्या हुआ ?

'न सागर मन्थन कहने से बात बनती है न अमृत-मन्थन से ! कहते-कहते उर्वशी हँस पड़ी। सर कहानी पर अभी मैं काम कर रही हूँ। सागर के साथ मेरा सम्बन्ध कोई नया नहीं है। गोविन्दन वाबू बटा रहे थे आप लोगों का जन्म भी सागर के किनारे हुआ ! सब तो इस कहानी को आप पूरी तरह समझ सकेंगे और इसमें आवश्यक मुझाव भी देंगे। आप ही सोचिए, बाबाई के बेघर लोगों के लिए सागर से अमृत निकालना या विप ? कहते हैं सारा विप भजने भोग पी गए थे। पर इसकी सच्चाई तो उनसे पूछिए जिन्हें आज भी विप पीना पड़ रहा है। ये लोग इस विप के कारण पल पल मृत्यु की ओर जा रहे हैं। अच्छे घर नहीं मिलेंगे इन लोगों को तो एक ही बात होगी कहते कहते उर्वशी हँस पड़ी फिर तो ये लोग हमारी कोठियाँ छीन लेंगे ! खैर छोड़िये। अपनी कहानी की जहाँ तक प्रशंसा करूँ।

बेघर लोगों की कहानी को हीरोइन के लिए तो काई बँधी ही हीरोइन चाहिए थी।

पर पिक्चर को बाँझ ऑफिस में सफलता तो वही हीरोइन से कहाँ मिल सकती। और दलिये, संगीत आप दोबारे ! पर ध्यान रखिए, आप लोगों की कहानी में ध्रुपद वाला संगीत तो नहीं चलेगा।

सातधरन ने अचानक कहा 'हीरो का चुनाव भी हीरोइन जैसा न कीजिए। मैं तो कहूँगा, सच्चाई और अनुभव के मेल से ही बनाइए यह पिक्चर। बाकी रहा संगीत। हम देखेंगे आप लोगों की आवश्यकता को समझेंगे। फिर सोचेंगे क्या होना चाहिए और क्या नहीं।



“तुम हो मगाठकार, मैं हूँ घबठार । हम दोनों मिले रह तो एक दिन बम्बई हनारा पानी नरेगी ! हमारे गुन न तो एन ही बात सिपाइ है— ‘मावत जीवत सुत जीवत ऋण कृत्वा घृत पित्त । [अब तब जीमा मुमपूवक जोषो ऋण लकर ना भी पाओ, ] गोबिन्दन हसन-हसन दोरा हा गया । आज ठासठा मिनता है तो कन मनली भी मिनया ।

‘मैं समझ गया । नामपरल मौन न रह सवा तुम्हारी जेव गरम है । तुम्हारी बम्बई तुम्हारे सिण घुम हा, मुझे जाने दो ।

तुम नहीं जा सवत । गोबिन्दन ने मज पर मुक्का मारकर कहा, “यह गोबिन्दन का हसन है । धान्नी के बच्चे बना । जा मिलता है उस मत छोड़ो ।

मेरा तिन ता यही कहता है कि मुझ बरषसा लीन जाना चाहिए ।” समपरल न रहतापूवक कहा ।

‘तुम हो मगाठकार मैं हूँ घबठार । गोबिन्दन न धाँखें नधाकर करा ‘तुम यहीं रूण बम्बई म ।

समपरल साधन लगा—एक लटका है इणवता एक लटकी है उवपी एन लटकी है घहम्मा । एक लटका है गोबिन्दन एक लटका है जयन्त या हातापूवक से घपनी उवपी को चिट्टिपी सिधता है । पाय का पुम्की भरते भरते घपना बलना में इन लटकी टारिया उनर धाई ।



उम लगा उसकी विचित्र धीसा के तार परस्पर उमकर एक एस  
सगीत प्रस्तुत कर रहे हैं जिसमे सम-बुद्ध होते हुए भी कम-से-कम गुरु-  
देव का सदस्य तो नहीं है।

गोविन्दन ने नौकर को आवाज दी 'यह चाय तो ठण्ठी हो गई।  
घोर घाय लाया गरम-गरम।

घाय का ध्यान घपनी घोर धार्कपित करते हुए गोविन्दन ने कहा  
फिल्म के लिए कहानी लिखना उसना कठिन नहीं जितना हम बेचना।  
जानते हो फिल्म में कहानी कैसे बेची जाती है। कहानी-लेखक कहानी  
सुनाने बैठता है तो लिङ्कियाँ ही नहीं रोशनदान तक बन्द करा लेता है  
ताकि कहानी की हवा भी बाहर न निकल सके। वह कहानी सुनाते  
सुनाने कई बार पानी पीता है। कई बार छाती पर दाह-यड मारता  
है। कई बार गिरता है कई बार उठता है। कई बार मरता है कई  
बार जिन्दा हो जाता है। डाइरेक्टर और प्राड्यूसर घाँसा-म-घाँसें  
डालकर बातें करते हैं द्वारा ही द्वारा में घोर कहानी-लेखक बीच  
बीच में इन लोगों के द्वारा से ही उनकी पसन्द-नापसन्द का सुराग  
लगाने का यत्न करता है। प्रेरणा को जो नहर खाने का काम सौंपा  
गया था वह फिर भी आसान था पर फिल्म में कहानी बेचना सी  
नहरे खोदने से भी कठिन है। घोर कहानी बेचने में कमचागीरी करना  
बातों का बहुत हाथ होता है।

गणवरन ने आश्चर्यपूर्वक पूछा 'कमचागीरी क्या हुई ?  
मस्का पालिंग तो हुई चाप-तूसी। जो मस्का लगाता है उस भी  
मस्का कहने। मस्का की ही एव बिस्म है कमचा। हाँ तो कहानी के  
बिचने में सेठजी के कमचा का बहुत हाथ होता है। एक कमचा पास  
से रहता है—हाँ जो हिट जायगी, सेठजी! भाड़ में गई कहानी की  
टैकनीक घोर बरेक-ट्राइडेशन सेठ को तो कहानी के हिट जाने से मउ  
सब रहता है। घोर सुनो कमचा कहानी-लेखक का भी हो सकता है।  
पर कमच का बमान यही है कि सेठ के कमचों के साथ मिलकर उठी

का चमचा बन जाय। खर मेरी कहानी बल बिक गई। सवा हजार मिना था। ऊपर के ढाई सौ चार चमचों को देने पड़े—दो चमचे सेठ के थे दो भरे भपन।

शम्भुधरन ने आश्रय से गोविन्दन की भार दखा। वरनला में सागर-तट पर रेत के धरौंटे बनाकर अथवा मन्दिर के प्रागण में बस्तीर की गालियों से खेतन समय तो शम्भुधरन ने कभी न सोचा था कि गोविन्दन बड़ा होकर हाथ की सफाई में इतना होशियार निकलेगा।

मैं हूँ गोविन्दन भवतार ! गोविन्दन ने शम्भुधरन को कहा, हमो मत। भवतार को भी बहुरूप भरने पड़त हैं। अहत्या की माँ मुझसे खिची-खिची-सी रहती है। कोई बात नहीं। अहत्या के लिए घर का बहुरूप भरने में मैंने इन्वार कर लिया। मैंने माँ से साफ-साफ कह दिया—भपने को यह सब नहीं होना माँ ! ब्याह करना नहीं भाँगता गोविन्दन भवतार ! यह सुनकर माँ की आँखें ऊपर की चढ़ गईं। भव मैं क्या कर सपता था ?

सो तो ठीक है ! शम्भुधरन मुस्कराया।

जानत हो यह कहानी क्या थी जो सवा हजार में बिकी ? एक सूखे मास्टर है जिसे बहुत कम बैठन मिलता है। इसलिए वह रूँव-बाड़ पर देग का मक्का बनाकर उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखता है—निधनता ! और फिर वह सड़वा से बहता है—रमार देग में इतनी रबट पना होती है पर सड़को यह सारी रबट भी इस बात के लिए काफी नहीं कि देग के सफे माथ से बड़े-बड़े कान अक्षरों में लिखा हुआ यह शब्द निधनता मिटाया जा सके !

कहानी का आरम्भ तो बहुत अच्छा किया है।

आरम्भ का यह भाग को धन प्रतिष्ठित मीनिक है। भाग की सारी कहानी एक ह्यरिभन कहानी में उड़ाई हुई है। पर पबन्द लगाया है पूरी होनिपारी से। इस सूखे मास्टर का घर का सफ पूरा नहा होता था। माथ ही उसे बहुत प्याग लगी थी। वह नीचरी छोड़कर घर से

निनल पड़ा। आधारा ही गया। इधर-उधर से हथकर करके पेट तो भर लेता पर दो चीजें उसका ध्यान खींचती रहती। एक तो ब्लकबोर्ड पर बना देश का नक्शा और उस पर लिखा हुआ शब्द—निधनता। और दूसरे उसे प्यास लगी रहती। किसी ने एक साहर में उसे यह सलाह दी—हिमालय के एक झरने का पानी पीओ। इसके लिए वह यात्रा पर गया। पर हिमालय के झरने का पानी पीकर भी प्यास न मिटी। फिर किसी ने कहा—मंत्रिा पीओ। उमने खूब मंत्रिा पी फिर भी प्यास न बुझी। किसी मवाली ने बम्बई में उस यह सलाह दी—सह पीओ ! प्यासे स्कूल मास्टर ने किसी बच्चे को मार डाला और उसका सह पीकर प्यास बुझान का यत्न किया। प्यास फिर भी न बुझी। वह पकड़ा गया। पर मैंने उससे पत्र जाने से पहले उसकी रंगरेलियां खूब दिखाई हैं। उसकी प्यास कई गुना बढ़ती गई। एक दिन वह पकड़ा गया। मुकदमा चला। जब उसे फाँसी दी जान वाली थी तो उससे उसकी अन्तिम इच्छा पूछी गई और उसने बताया—अब उसे वह बात याद आ गई है कि जब वह छोटा था—बहुत छोटा तो एक दिन वह माँ की छाती से लगा दूध पी रहा था और किसी न उसे ऋककर माँ की छाती से अलग कर दिया था ! पहली रात में उसकी प्यास माँ के दूध की प्यास थी। उसन माँ का ठिकाना बताया और माँ के दूध की चार बूँदें माँगी।

तो क्या उसकी वह इच्छा पूरी की गई थी ?

‘यह तुम उस समय देखोग जब यह कहानी फिल्माई जायगी।

तो खतो आज तुम्हें मुक्तिबोध से मिलाने से बसूँ जा आत्मी के स्थान पर कबूतरों से प्रेम करते हैं।



कबूतर की घोंगी में भाँकते हुए मुक्तिबोध का 'रात का माने-मोत मरी घोंगी खुल जाती है' का मैं कबूतरों का कर्म में जा भ्रम विजयी का घटन दबाकर दखता हूँ कि कबूतरों का यह है या नहीं। कबूतर पग फटफड़ा उड़ते हैं। मैं सब कहता हूँ मुझ धाँसा उतन मध्य नहा गया जितना कबूतर।

“धन्य हो माना मुक्तिबोध। गोविन्द न घोंगें नचा। य पचाग जाइ कबूतर तो मधुमुच यही धाँसी पाउ सबता है जो धाँसा उरु हूँ एव कर्म द सब।”

विचित्र शूर है बम्बई। रातपरत ना मोत न रू सना जही सागें साग रात को घन के नीचे नहीं गा सतत पटरी पर विम्बन उगात हैं वही हमारे मामा मुक्तिबोध के कबूतर अगर उन जागों से घबड़ नहीं तो भाँकती घबड़ है।

मैं कबूतरों पर एक पुस्तक लिख रहा हूँ। मुक्तिबोध न गम्भार होकर का धाँसा का उमाना रिम्भ का है। साती घोंगी के हानन दकर गा घबड़ा पुस्तक मग जागें जा मवती कबूतरों पर। कहन का य मुम्बराए और उरुने एव सस्यत इतोक पड़कर मुनाया जिनम कबूतर-कबूतरी के प्रेम को धाँसा बनाया गया था। फिर वे हैंनरर बाते साप साग एगर धाँसिस्ट को तो जानत हंगे ?

यही नहीं बाता शगर ? गोविन्द मुन्दराया।

या कहिए शिखर वाली लुबी ! मुक्तिबोध गम्भीर हो गए उनका प्रेम सच्चा प्रतीत होता है ।'

उन पर आपका वरद हस्त है मामा ! गोविन्दन मुस्कराया वे कमरे में हों तो उन्हें बुलवाइए उरा ।

क्यों न वहीं घन घले ?

यही बुलवाइए ! गोविन्दन ने हसकर कहा 'वहाँ जाना तो ऐसे ही होगा जब आप रात का चुपके से बिजली का बटन दबाकर पब्लिकों का हाल चाल देखने लगते हैं ।

पता चला कि उनका कमरा बन्द है ।

यह जो आपके मामले में बठ है मामा ! गोविन्दन ने भाँसों नचाकर कहा बहुत बड़े संगीतकार हैं ! मालाबार से यहाँ आए हैं । पर पता नहा आज की फिल्मी दुनिया में बटे रहते हैं या नहीं ।

वह भी क्या जमाना था ! मुक्तिबोध ने पब्लिकों को अपने हाथ में छोड़त हुए कहा फिल्म द्वारा हमने अपने इतिहास को सँवारा निपारा । धार्मिक फिल्मों में हमने अपनी सस्कृति पग की । सामाजिक फिल्मों में हमने जनता की राष्ट्रीय चेतना का प्रमाण दिया । वह भी क्या जमाना था ! मैंने एक्टर बनकर नाम कमाया पसा नमाया । पर उसे लाग नहीं रहे मैंने पाम छोड़ दिया ।

आपका सकेस 'यू थियेटर्स की ओर है । गोविन्दन मुस्कराया 'यू थियेटर्स की क्या बात थी मामा ! एक-एक बढ़कर फिल्मों बनाई उन लोगों ने ।

वही तो मैं कह रहा था । मुक्तिबोध ने उगात स्वर में कहा 'पूनी की लडकी, दक्कान' 'मन्त्रिस' मुक्ति' और 'प्रेसिडेंट' जसी फिल्मों में अब क्या नहीं बनता कमी सोचा है आपन ? 'विद्यापति' 'बन्दी दाम' और 'स्ट्रीट सिगर' जसी फिल्मों बनाने वाले 'यू थियेटर्स की कमरे क्या हूँ गई ?

प्रमात पिक्चर्स को भी हा नहीं मुतापा जा सकता । गोविन्दन

ने बनपूवक कहा मरर ज्याति पडोसीं शीर मादमा' जसी फ़िल्में कोई शान्ताराम ही दे सकता था ।

'उन सबमें कोई-न-काई बात कही गई थी । यह भी नया उमाना था ! हर नदम पहले काम स प्रागे जाता था । अब तो यह हाल है कि बास फ़िल्मों म कोई एक फ़िल्म अच्छी भी मा जाती है । यह नहीं कि पहले घटिया फ़िल्में बिलबुल नहीं बनती थी पर अब ता बुरा हाल है । अब तो अच्छी फ़िल्में घाटे म नमब के बराबर भा नहीं रह गई ।

एक बात यह भी तो है । गोविन्दन न पतरा बसकर कहा जो उमाना बीत जाता है वह अच्छा नगन नगता है ।

नहीं यह बात नहा । मजिन' मुक्ति शीर मादमी जसी फ़िल्में सब भी अच्छी मानी गई थीं जइ व बनी थी । शीर अब तो हमारी फ़िल्म इण्डस्ट्री फ़िनामर क हाथ की कठपुतली बन गई है । मेठ कहता है—मासी फ़िल्म ता अन्त मापी दो । [सानी फ़िल्म ना मल्ल कर डालो ।] शीर वहा कहानी को तोड-मरोजर ममाप्त कर निया जाना है ।

मापवा मतनव है मात्र की फ़िल्मों म कहानी नाम की चीज भी होनी है ? गोविन्दन न अबसर दगकर पूछ निया ।

कबूतर न अपनी जगह म उठतर कमरे म दा-नीन बबतर लगाए शीर मुक्तिबोध के हाथ पर मा बठा ।

'राजधरन मुम्बराया इम भी हमारा बानों म रस मा रहा है ।

मुक्तिबोध कहने बन गए, पिछन सप्ताह की बात है एक मजिन मुक मिनने माप । नाम नहीं सूंगा । एक दाइरेकर प्रोड्यूसर है । बना रह य मागीर में एक फ़िल्म बन रही थी । क फ़िल्म मुविन स मापी ही सवाग हो पाई था कि पमा मम हा गया । बम्बई म मातर उन सोर्गान उस अधूरी फ़िल्म को पूरा करना चाहा । गाने तिमने क लिए एक टायर की सवाए प्राप्त की गइ । पनबक क लिए टायर नूरजरा को पुना गया । स्त्रीन पर एक बया का गाना था । उमने लिए एक एकम्पा सक्की श्रिय गई । य बबारी एक सीन म

काम करने व कुल पच्चीस रुपये मांगती थी। डाइरेक्टर प्रोड्यूसर कज़मी पर घड़ गा। बीस में सोना तय हुआ। अब वह एकट्टा लडकी एकट्टा आग्निगी एकट्टेम बन गई है। हँ तो वह डाइरेक्टर प्राड्यूसर सज्जन बता रहे थे—अब दूसरे डाइरेक्टरों की तरह वे भी एक दिन उस एकट्टस व दरे-दौगत पर पहुँचे और एक पिक्चर के लिए मामले की धातचीत हुई तो वह बोली—पूरी पिक्चर में काम करने व पच्चीस हजार मू गो ! वह अपनी इस कीमत पर घटन रही और हमारे उन डाइरेक्टर प्रोड्यूसर को उसी रकम पर काट कर करना पडा। कहेते कहेते मुक्तिबोध ने कमूतर को उठा लिया जो कबूतरों व पास जाकर चोच से घोंघ लढान लगा।

सगीत व मम्बाष में आपन कुछ नही कहा। गाविन्दन न बढावा दिया।

इस पर मुक्तिबोध गिनखिनामर हँस पडे और फिर समनकर बोले 'हमारे डाइरेक्टर प्रोड्यूसर भाजकल यन सममन लगे हैं कि मरानो गई भाड में नाच और गाना व वन पर ही व पडिना व चल्नू बना सकन हैं। और यही हो रहा है। मतनब यह कि रम्भा सम्भा और जाड को चुन-चुनकर जाना जा रहा है फिलमा सगीत के मतधान में ! इस पर शखपरन को कोई आपत्ति न हो ता मैं भी अपने होंट सी लता हूँ !

शखपरन भी मान न रहे मरा मीने तो सुना है कि बम्बई के हर म्यूजिक डाइरेक्टर ने टप रियाडर ले रखा है रेडिया की मदद से वे बिदेनी सगीत के नव-नव रिकाड टेप रियाडर पर चढ़ाकर अपने पाम रखने रहन हैं। और फिर इहाँ धुनों की सोड नरोकर हमारी जिन्मा के हवान करते रहने हैं। क्या मैं कुछ मूठ कहता हूँ मामा ?

दिलकुल यही बात है। मुक्तिबोध न कहा 'तुम्हें आग दिन तो हम दोगल सगीत से बचना।



**सात** पीठियों का इतिहास या इरावती न पीछे । कई बार वह सोचती — सात पीठियों कम तो नहीं होंगी ! यह विचार उसे बन देता, विद्याम दत्ता और अग्निपथ करने समय उसका बल्यता पाछ की भार मुड जाती । पाँच पीठियों की कहानी तो फिर भी जाना-मुनी बात था । पिछती दा पीठियों की बात ता भाँवा-ग्नी थी । दाणी अग्नी का उसने देना था । माँ की अन्न-दाया तो अग्नी तक बनी हुई थी ।

उसकी माँ विद्या समय नगर की सबसे अग्नी गायिका थी । माँ ने शाग समाना तो दाणी अग्नी न गाना छाड लिया था । अपन उमान में अग्नी अग्नी वितनी बड़ा गायिका रही थी यह ता इनो बाल में स्पष्ट था कि हैराबाद न दूर नवाद छाह्व ने उसे गालकुण्डा न वित के पास एक जागेर दन न अतिरिक्त अग्नी में मरीन टाइम की बौटी एव रात उागी गायकी पर गुन हातर उस अँग कर दा थी । गगान विद्या की माया म उसका माँ न नी ता बुद्ध कम समान न बिना था । दाणी अग्नी बना करती थी सब मरनन की बात है । रिवाज चाहिए रिवाज ! जस धाते का गिषाया जाता है वसे ही गन का नी तयार करना था । हर शब्द रिवाज करना हाग और दामन बनक स बचाना हागा । दा ! मगा महा कि बात न्ह ।

दाणी अग्नी गुन थी कि बडे-बडे जोरगा उजना बग की बना पर माना बरगात रहत है । बटा न पाँच पाठियों की सात रग सी माँ न



दूध को बाग भी नहीं लगने दिया, कोई यह नहीं कह सकता कि बंदी किसी भी तरह माँ में पीछे रह गई—यह बात दादी धर्मा की पुनर्निर्माण करने के लिए काफी थी। दादी धर्मा के पास कई डाइरेक्टर था चुके थे, हर बार उन्होंने साफ इन्कार कर लिया सिनेमा विनेमा के चक्कर में नहीं पड़ने दूरी अपनी बना का ! आखिर ऐसी भी क्या मुसाबत पड़ी है कि नवाब घोर राजा रईस की मजलिस छोड़कर भदवों के बीच ठिकाना तलाश किया जाय ! मेरे रहने तो यह नहीं होगा ।

अब तो वह लगाना बहुत पीछे छूट गया था । वहाँ यह हाल था कि दादी धर्मा ने माँ का फोटो तक बिसा का दान की मनाही कर रखी थी वहाँ अब बम्बई की सुप्रसिद्ध गायिका बना की बंदी इरावती हर रोज़ परदे पर चाँद बनकर उगती है !

इरावती का कहानी काफी मनोरंजक थी । माँ ने तो बड़ा बनी सुधा को ही सिनेमा के लिए तयार किया था । सुधा क उठते इरा कभी सिनेमा के परदे पर न उतरती । सुधा के रियाज के सामने इरा का रियाज तो रपय म खबन्नी भी न था । माँ तो बहा करती थी 'मेरी इरा का ब्याह होगा उसकी शान्ती उठगी वह सिनेमा विनेमा क चक्कर में नहीं पड़ेगी । सिनेमा क परदे पर दुनिया की फनह करन धाई है सुधा !

सिनेमा के परदे पर उतरने से पहले ही सुधा चल बसी । माँ के दिल पर बड़ी चोट लगी । फिर उसकी नजर इरा पर पड़ी । इरा भी तो सुधा बन सकती है—उसन सोचा । मट फँसला हो गया । रियाज पर जोर दिया जाने लगा ।

दादी धर्मा की मृत्यु तो पहले ही हो चुकी थी । माँ न गानकुण्डा वाली जागीर अब दो थी । मरीन ड्राइव वाली यह काफी पुरानी स्मृति बनी उ रह गई थी । माँ के हीरे-जवाहरात भरे पड़े थे । बैंक बसैम इतना था कि धाराम में गुजर हो सकती थी । पर संगीत का साथ पीढ़ियों की विरागत था । इसे कम छोटा जाता । अब इरा बम्बई की प्रसिद्ध धर्मि

नेत्री थी। उसने पीछे लम्बी कहानी है उसका किसी को ध्यान नहीं। इरा पर फिल्म को छाप है फिल्म पर इरा की यह सभी मानने थे।

बालकनी म श्रुती स उठकर इरा टालने लगी। सामने सागर का दृश्य उसका ध्यान खींच रहा था। प्रब यह दोबारागीर पर रखा मौन्ड की मूर्ति के सामने खड़ा थी। इस कलाकृति म उस क्या नजर आता है यह बताना तो उमक लिए कठिन था। हाँ उसका मन यह तो स्पष्ट शर्तों में कह सकता था कि कानानार न इस कृति म अभिनय नहीं किया था। माँ के मुख पर बड़ी भाव था जा होना चाहिए, बच्चा भी माँ की आश्रयों का क्षेत्र प्रतीत हो रहा था। इस मूर्ति को देखकर उसे शान्त का यात्रा था गई।

वह कई फिल्मा म काम कर चुकी थी। अभिनय-कला म उसकी अपनी माकेंट थी। माँग का सिन्दूर' म उमक अभिनय की सबन मुक्त कण्ठ स सगाहना की थी। एव प्रान उसने मन में सच उठाना रहता— क्या अभिनय हा सब-कुछ है ?

शान्त के गिष्टाचार व व्यक्तिगत स वह कुछ कम प्रभावित नहीं हुई थी। उसने अपने मन का समझाया—मेरे पीछे साठ पीढ़ियाँ हैं पाँच कानों-मुनी दा आँखें-ज्या। पाँच पाठिया म सगीठ चला आया है। शान्त तो शायद ऐसा दाया नहीं कर सकता !

मूर्ति में माँ की ममता गिआई गई है ! उमक मन-ही-मन कहा— 'माँग के सिन्दूर' म मैंने माँ का अभिनय किया है। मैं माँ नहीं हूँ तो क्या ? अभिनय के लिए जा चाहिए वह मैंने किया उस मैंने छिपाकर नहीं रखा।

उम माँ आया अपनी पिछले दिन गोविन्दन मिला था। वह बताना रहा था कि 'माँग का सिन्दूर' फिल्म उमने शगपरन को गिआई है।



**मीना-बाजार** ही तो थी बम्बई की फिल्मी दुनिया जहाँ कम्पनियों व मालिक घोर फिनांसर ही नहीं डाइरेक्टर और गवर्नर भी चन्द्रमुखी अभिनेत्रियों के पीछे लट्टू हुए घुमने थे। सेट पर चन्द्रवल्मी कोमलागिनियो की भटाएँ भी मुठ मुठ मीना-बाजार की छवि भक्ति कर जाती थी।

बहानी चुनन का काम हो चाहे गीत पसन्द करने का रोल' बॉन्ने की बात हो चाहे बतन या मजदूरी दन का प्रसंग—बन्म-बदम पर दत्ताली का दौर-दौरा था। बहानी-लेखक की हैमियत मुग्गी से अधिक नहीं थी। इसलिए इस मीना-बाजार म बाड़ा-बहुत दम खम रखने वाला बहानी-लेखक भी डाइरेक्टर बन जान वे बक्कर म था जिससे उराकी बहानी महग नामों विने और पूर रंग-रंग से फिल्माइ जा सक। सवा'नेखक भी डाइरेक्टर बनने की किता म पुले जा रहे थे। 'रिहसत' म जहाँ-जहाँ प्रेम-भुवाद थात लगता था सहारा म नस तिस्तान सामन भा गया। प्रेम-भुनाएँ धाप लगाती। 'प्यारी और प्रिय तमे बहने रग छनकता।

कितन लोग इस मीना-बाजार म बरखाइ हुए इसका तिसाय कौन लगाय ! जिनकी इस बाजार में जीत हुई उहाने ही तो इतिहास नहीं बनाया। जो हारे और मदान छाड गए व भी तो भपना अनुभव मिलाने गए। मुठ क लिन है। घटिधा-ने-भन्पिया पिन्म बनाने की होइ लग

रही है ।

रिज्मल म मीना बाजार की दुकानें पीछे न रहतीं । घर या कॉलेज से सीधी यहाँ पहुँचने वाली हर युवती हीरोइन बनने का सपना लेकर पहुँचती बनदार का नाम जपती जैसे हीरोइन बनना इतना ही सहज हो । सफ़्त म प्रील' म पूरी उतरने वाली क्यारों की भी परख होती । उनकी दह के 'नव' देखे जाते । डाइरेक्टर और कमरामन की आँखें उसकी रूपराशि को मानो घम-कटि पर तोलती । उसे 'सिट' पर घाने का सोमाग्य प्राप्त होता तो हजार हजार कण्डल के बल्ब के प्रकाश म उसकी 'ह' की एक-एक कव को सिलोलाइड पर उतारा जाता । यही फ़िल्म का दस्तूर है !

इरा से कुछ भी छिपा तो न था । वह थी मीना-बाजार की रानी । जिन विषों में वह काम कर चुकी थी उनम स कई बाक्स ऑफ़िस हिट' हा चुके थे । माँग का सिन्दूर' म उसका काम सभी ने पसन्द किया था ।

माँग का सिन्दूर तो शरत की भी अच्छी नगी थी । साथ ही शरत ने दूसरी दो-तीन फ़िल्मा की मुक्त-बण्ड मे निष्ठा की थी जिनम सम्ते ही नया गाने मटपटी घुना म गाये गए थ । भाड मजाक मन्वीन वातावरण क जनक थ । उसने एक धार्मिक चित्र की भी जो खोनकर बुराई की थी जित्तम देवी-देवता भी बम्बइया मीना-बाजार क प्राणी दीखते थे । यह बात भी उसकी समझ म नया आती था कि 'एक-एक' इजन गाने देने का क्या तुव है । कोई मरे चाहे जन्म ले हर जगत् गाना क्यों इतना आकर्षक है और फिर गाना भा ऐसा जो न बल्बना की जाती मजोता है म कहानी को भाग मडाना है । पाँच-छ नृत्य भी रहन पाहिऐँ—पर क्या ? हर कहानी म नृत्य क्यों आकर्षक है ? बाँकम ऑफ़िस हिट क रिए वह सब करना पड़ता है ! यत्न निठना विचित्र उत्तर है ।

मीना-बाजार की यही मूल प्रवृत्ति है । इरा ता हीरोइन है । जमी कहानी यही हीरोइन । पर कहाना तो अच्छी भी हो सकती है । गुरुद्व

रूपदम् पर क्यों फिल्म नहा बन सकती ? इसके उत्तर में इरा न इतना ही कहा मैं वह दखूंगी। खाली मेरी पसन्द-नापसन्द पर तो कोई फिल्म बनने से रहा।

गुरुदेव की आत्मकथा छपकर आ गई थी। नीलू ने किया था अनुवाद। पत्रों में इस पुस्तक की अच्छी-भरखी आलोचनाएँ प्रकाशित हुई। किसी किसी ने तो गुरुदेव रूपदम् को दक्षिण का दानसेन कहकर उनकी सराहना की थी। मल ही गुरुदेव इसी युग के संगीताचार्य हो गए थे।

नीलू न पहल ही पुस्तक की प्रति इरा को न पहुँचा दी हाती तो शायद वो यह पुस्तक इरा व हाथो म दते कितनी खुशी होती। फिल्मी दुनिया म हर तासरा आदमी महा कलाकार होने का दावा करता है। शायदपरनजी। इरा ने स्थिति स्पष्ट करत हुए कहा यहाँ

हर आदमी एक-न-एक कहानी लिये प्रसन्न है। मेरा तो विचार है कि जैसे शरत्चन्द्र व कई उपन्यासों के सफल चित्र बन चुके हैं और अभी और बनेंगे वैसे ही गुरुदेव की आत्मकथा पर आधारित अच्छा चित्र बन सकता है।

'संगीत ता आपका ही रहेगा। इरा मुस्कराई और गुरुदेव ही नाम रहना चाहिए।

फिर इरा ने यह प्रसंग छेड़ दिया कि हमारे आज के फिल्मी गाने भ्रष्टपटी दली विदेशी घुना का खिचड़ी होकर रह जात हैं। फिल्मी कवि का कोई व्यक्तित्व नहीं होता। एक्टर और एक्ट्रेस से जिस भी भूमिका में चाहो काम करा लो। वैसे ही यह आगा की जानी है कि गीतकार फिल्म-निर्माताओं के इशारे पर लिखे। मुसलमान पसन्द न माने पर मुसलमान द चाह तो एन-एक करके गीत के पूरे बोल ही बोलवा लिये जायें और इस प्रक्रिया में गीतकार के महम् को ठेस लगने का ता प्रश्न ही न होना चाहिए।

एक गीत का कितना मान पड़ना है ?  
पचास से पाँचगुना तक।

तब तो फिल्मी कवि भव-के-सब खाते-पीते प्राणी हैं ।

'मभी तो भाग्यगाली नहीं । चार-पाँच रुपये में गीत लिख देने वाले कवि ही अधिक हैं । उनसे ये गीत दूसरे लोग खरीद लेते हैं और प्रागे अधिक दाम पर चलान की काशिष्ठ करते हैं । महाकवि मौज करत हैं । सस्ते दामों खरीती हुई चीज पर अपनी छाप लगाकर मुनाफ़ा कमते हैं ।

मैंने दूसरी बात सुनी है । संगीत निर्देशक गान की धुन पहल तयार कर लेता है । गीतकार से कहा जाता है, इस धुन पर फ़िर बठने वाले पाठ जड़ दो ।

ऐसा ठा बहुत हाता है । मैं एक गीतकार का जानती हूँ, जो एक गीत का एक हज़ार लेता है । दस रुप पहले वह अपना एक गीत पाँच रुपये में बेच डालता था और इसने लिए भी पदल दान्तर से अपिरो हाउस परैचना था ।"

वास को दूरा क मुग पर महम्मयता की कोइ रेखा तो दियाद न दी । उसने अपने हाथ से चाय का दूसरा प्याला भरकर दिया । 'बत तो हम मीना-बाजार में भाकर मैं भूल का ! भव नी साचता हूँ उवशी जमा गो-तान और टयूशन में मिन धायें तो काम चल जाय । पर एक मन कहता है गुग्गु पर विन्न भवय बनना चाहिए ।

'गुरैव पर विकर बन-न-बने दूरा मुम्न-राई, अब हम आपनो तो नहीं जान देंगे ।

भीतर में दूरा का मी न धाकर क्या वहाँ जाने की बात चल रही है ?

इहें बम्बई का पाना पनाद नहीं ।

'बम्बई की हवा में नमी तो बहुत है ! मी न गम्भीर मुद्रा बना कर कहा हर पाठ में गान था आती है ।

दूरा ने प्रसन्न बनकर कहा 'बहुत न तात फ़िल्मी दुनिया की जोड़कर भाग गए । जा टहर गए उनमें से ही हमें सनलिए ।

‘हमारी इरा के तलुए घिस गए, बेटा ! माँ ने प्रशसा-मूचक स्वर में कहा मेहनत के बिना तो सेहरा नहीं बँधता ।

इरा की निगाह मटन पीस पर रखी माँ ब्रटे की मूर्ति पर पड़ गई । माँ ने हँसकर कहा जिस दिन से तुमने यह मूर्ति लाकर दी है बेटा हमारी इरा पर तो जसे जादू नर दिया है । स्टूडियो जायगी तो थोड़ी दूर इस मूर्ति के सामने खड़ी रहेगी लौटेंगी तो फिर यहाँ घा लखी होगी ।

इरा ने यहाँ खड़े-पड़े घालें घुमाकर कहा बॉक्स ऑफिस हिट के तौर पर हमारी फिल्म-कम्पनिया न तानसेन’ और बजू बावरा जसी फिल्मों बनाई पर उनकी संगीत माधना को जिस तरह पेश किया गया उने तो असल स दूर का वास्ता भी नहीं कह सकते ।

इरा ठीक कह रही है बेटा ! माँ ने बेनी से एकमत होकर कहा यह ठीक है कि तानसेन और बजू बावरा पर बनाई गई फिल्म बाक्स ऑफिस हिट सिद्ध हुई और उनके कई गाने भी लोगों की जवान पर चढ़ गए पर इतने बड़े नामा के साथ इस तरह की अटपटी चीजों का ताज-मेल करने की कोशिश बड़ अफ़सोस की बात है ।

“यही तो मैं भी कहती हूँ माँ ! क्या कोई इन तरह की हिमाकत यूरोप के बड़े-बड़े संगीतकारों के जीवन पर बनी फिल्मों में कर सकता था ? चौपिन क जीवन पर सॉंग टु रिमैम्बर’ फिल्म बनाई गई । स्ट्रीस क जीवन पर ‘दाम्पन यात्रा । मुझ बियेबिन’ फिल्म भी हमेशा याद रहेगी । इस तरह की सभी फिल्मों में संगीतकार क संगीत और उसकी वाली का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया । पर हमारे यहाँ का तो बाबा घाम ही निराला है ।

सो तो तुम ठीक हा कह रही हो इरा ! तानसेन और बजू बावरा’ में उन बयारों की संगीत-वरम्परा को कहीं खियाया गया ? मैं कहती हूँ तानसेन और बजू बावरा अपने सम्बन्ध में बनी उन फिल्मों को दस्त तो घम स सिर मुवा जेत या गुस्से स लाल-मीले हा जाने ।

‘दूमरी बात ही ठीक है माँ ।

गमन गम्भीर मुद्रा बनाकर कहा ‘गुरुत्व रत्नपदम् पर फ़िल्म बनाने पर बनने पर उनके संगीत और उनका शती का पूरा तरह दिनाया जाय ।

मैं भी यही कहती हूँ कि बाद ठोस काम उठाया जाना चाहिए । या फिर उस काम को किया जाना जाय । इरान गम्भीर मुद्रा बना ला ।

क्या न किया जाय बटी ? गुरुत्व की जावनी तो मुझे भी मुग्ध कर गई । उनका शिष्य बनने सामने बैठ हैं । गुरुत्व की महिमा तो उस्ताद फयाज खाँ भी गाते हैं । उन्होंने मुझे गुरुत्व के मास्के जमने पर जान का हाथ मुताया था जब मैं एक बार बंगला गई थी । उन्होंने झोंकों का हाथ मुताया था—कैसे गाते-गाते हा गुरुत्व के प्राण पकड़ उठ गए थे । क्या बटा था तो तुम यहाँ प्राय ही न होते भ्राम हो तो गुरुत्व पर फ़िल्म बनवा ही जाया । मैं भी एक-दो जगह डिस्क बनौंगी । उस्ताद फयाज खाँ साहब से भी कहना सकती हूँ ।

‘बरकत से दिवाजी का पत्र पढ़ा है कि गुरुत्व का क्या जन्म हुआ ।

कैसे बटा ?

‘बरकत का पूरा मसुमा है मुत्तु बाबा । मुत्तु बाबा के पाठ के रूप में हा गुरुत्व न दोबारा जन्म लिया है । ऐसा ही बरकत बातों का दिवाग है ।

‘ये यारों तो मनघड़न ही होता है बटा । इतने महानु सगोशकार का क्या मुक्ति नहीं हुई होगी ?’

‘बेटा गुरुत्व की भनाई इच्छा थी । उन्होंने कहा था कि मैं बरकत के मसुमागोता में जन्म लेकर अपने शिष्य का शिष्य बनूँगा । जो ता कहता है कि मैं भनाई कठिन पूरा करने के लिए बरकत बना जाऊँ ।



"पहन वह फिल्म लो बन जाय ।" कहते-कहते इरा ने स्विच दबाकर रोसनी कर दी और माँ-बेटे की मूर्ति पर नजरें गड़ा दी ।

साख उठकर बोला अच्छा तो मैं चलूँगा ।

खाना खाकर ही जाना बेटा ! खाना बन रहा है । माँ की धावाज में ममता की गहरी पुट थी ।

साख ने एक-दो बार जान को कहा पर इरा और माँ ने एक स्वर होकर राक किया ।

माँ ने हँसकर कहा गाविन्दन क साय तुम्हें कष्ट हो बेटा तो हम तुम्हारे लिए यही रहने का प्रबंध कर सकते हैं ।

मुझे वहाँ कोई कष्ट नहीं साख ने बलपूर्वक कहा ।

माँ ने सात पीढ़ियों की बात छेड़ दी सात सागर सगीत के सात स्वर और सात पीढ़ियाँ । हाँ सात पीढ़ियाँ से ही हमारा परिवार बम्बई में है बना । पीछे हम रेणुका के हैं । भागरा से दूर नहीं रेणुका । वही रेणुका जहाँ कभी जमदग्नि ऋषि का आश्रम था । बम्बई में निचे गए हमारे परिवार के सात अध्याय । सोचनी हैं आठवीं अध्याय और इरा ने माँ के मुँह पर हाथ रख दिया ।

सात राग गाये गए, बेटा ! माँ कहती खली गई आठवें राग का कैसे जन्म हो ?

इरा उठकर भीतर खली गई ।

शाम श्रुद्ध न थाला ।

माँ ने कहना शुरू किया इरा की बड़ी बहन जाता रही । मझना भाई भी न रहा । माँ चुप हो गई । उसने उठकर माँ-बेटे की मूर्ति को समीप से देखा और फिर समलकर बोली अब मेरी इरा है या फिर उसका छोटा भया सावर ! तुम बठो बेटा ! मैं इरा को भबती हूँ ! कहते हुए माँ भीतर खली गई और संवर धावर साख से खिन्नोनों की बातें करने लगा ।

फिर सावर भी भीतर चला गया ।

शाम ६ जी में आया, उठकर नीचे उतर जाय । पहले इरा घली गई फिर माँ, और अब शबर भी चला गया । बालकनी से सागर नज़र आ सकता था जब वह यहाँ आया था । अब रात्रि ने अचानक म सागर की हल्की-सी आवाज़ ही सुनी जा सकती थी । उसे बरकला की याद ही आई । माँ मुझे याद करती होगी । पापनाग पर माँ पहले के समान ही सागर-स्नान को जाती होगी । उसे अपने ऊपर क्रोध आने लगा—मैं यहाँ चला आया । बम्बई की फिल्मों दुनिया में मीना बाजार सजा है । यहाँ मेरे राग रागिनिया की कौन लगा ? डाइरेक्टरों को मस्वा लगाने की कला से तो मैं अनभिज्ञ हूँ । प्रोड्यूसरों का चमचा बनने की कला कैसे सीखूँगा ? मुझे बरकला खोना चाहिए । उसे लगा राजवाँ और साधारण परिवार उदय और अस्त हाँट आए हैं युग-युग से ! बदला नहीं नारी और पुरुष का भावपण । इरा के गिर धूमती है फिल्मों दुनिया । सुपना की मूर्ति है इरा ।

शोध ही इरा ने सफ़्त सान्नी की साथी में महाश्वेता के समान प्रयोग किया । मुँह पर स्वीकृति की मुस्कान जो इस बात की सूचक थी कि मनुष्य की क्षमता ही चरम गायकता की पहली घात है । और फिर एषाएक हँसकर बोली कहते हैं बिपोविन को मगीत रचना में अटक लगती तो वह मिर पर नज़ की टोंटी खोकर बठ जाता था । धाय क्या करते हैं ?

शाम अन्तरघावर चुप हा रहा । इरा न पास रख ग्रामोफोन पर बिपोविन का एक रिकार्ड लगा लिया, और हाथ से हलक दन लगा । उगनी आँसू मानो शय से कह रही थीं—मैं जानती थी मेरे जीवन में एक-एक दिन आया उन्नाम-कौतूत का गीत । और वह दिन आ गया । कहा क्या करते हा ? क्या तक दन हा ? मीना-बाजार में अभिनय करना छोड़-छाड़कर किरकत हो आज ? यह बात मन में आती तो है पर एसा करने की साहस नहीं जुटा पाता । बोली क्या

मदन बाबू की बातें सुनाते हुए माँ के मुख पर करुणा की रेखाएँ उमरीं। भाँखों में भाँसू धा गए। जीवन भर यही पड़े रहे। कुछ काम नहीं किया। बुद्ध करन की जरूरत भी नहीं पड़ी।

इरा उठकर दूध के चित्र के सामने खड़ी हो गई। गल को लगा यह सब अभिनय है।

फिर इरा रो पड़ी। वह भीतर चली गई।

'क्या ऐसा नहीं हो सकता क्या? माँ ने ममस्त करुणा उड़लते हुए कहा कि मेरी इरा को भी जीवन-साथी मिल जाय? भावेग स माँ का कण्ठ-स्वर उगात हा गया था यह कोई अपराध तो नहीं क्या? ऐसे ता बहुत हैं जो मेरी इरा को मुझ से छीन ले जाना चाहते हैं। पर कितन अच्छे थे मदन बाबू! भाय और यही रह गए—हमारे हो गए। विद्वता इतिहास भूल गए। नया इतिहास बना गए। कभी-कभी मैं मोचती हूँ बेटा! वह इतनी जल्द क्या चले गए! और जानते हो बेटा! मदन बाबू भी एक ही बात ने मेरी नाव बिनारे लगा दी थी।

वह क्या?

एक दिन जब सब सोग गाना सुनकर उठ गए मदन बाबू बठ रहे। मैंने हसकर कहा—क्या सगीत में गुमराह हा गए? यह बोले—सगीत में बिना भी गुमराह हा सकता हूँ। मैंने कहा—वह कस? वह बोले—सात का चक्कर चलता है। यह सदा से चलता आया है चलता रहेगा। मैंने कहा—यह क्या गूढ़ पहिनी है। सब यह बोले—

जब मेह तब घात !

जब घात तब प्रजा सुखी !

जब प्रजा सुखी तब ऐंग !

जब ऐंग तब जलम !

जब जलम तब कहू !

जब कहू तब तोया !

जब तोया तब मेह !

वह ठीक कहल घे न ब्या । बसे मैने ऊपरी मन से कहा था—  
 गुम्हारी बात मरी समझ म नहा घाई मन्न बाधू । वह मुस्करा लिए ।  
 फिर वह चले गए । बहुत दिन तक न प्राय । फिर वह नौटकर प्राय  
 ता घर से सब नाते ताटकर । घोर हमन गाणे कर ली । मुजरा का  
 अपना नाम ठहरा । घट न रवा । क्या रपता ? वह भी क्या जमाना  
 था ! पचास रुपये मुजरा से सक्कर एक हजार रुपये मुजरा तक मिनन लगा  
 था । ठुमरी की सानीम पाई थी । उस्ताद कहन—मना तेरे गले म जादू  
 है । कई उस्ताद प्राये घोर गये । फिर एक उस्ताद ने कह लिया—मना  
 सब मींग गई । कद तरहू के लिबास साथ रखने पड़त य घोर कपड़ों  
 के साथ मय करन वाले उबरभा जरूर थ । दोबारा मुजरे की परमाइश  
 की जाती तो मैं सिर म पर तक लिबास घोर उबर बन्नकर मुजरा  
 करती था । बन्न-कहन मां रन गई । क्या की वृष्णभूमि म मां की  
 मुग-मुग पर मानो किसी मुजरे की कोद यात्र सक्रिन हा गई थी । गग  
 को मना जन बार्डि किहन दग र्हा हो ।

मां न फिर कहना शुरू किया प्रादत क मांघ म टनन पर गब  
 धनता रखता है । इन्दौर-नरेण हाती बहुत धूम घाम से मनाया बरत  
 थ । हिन्दुस्तान भर की सवायकें उन त्तिों इन्दौर म रामा क जगन पर  
 महाराज की महमान हुमा करती थीं ब्या । मैं भा आती थी । गौहरजान  
 ता मैं मना कह बन सकती था । वह ता कनो इम मौक पर इन्दौर  
 न गई । एक महकिल म जहाँ मुझ मा गौहरजान क साथ दुनाया  
 गया था—भने ही मैं गौहरजान की बनी ही मगती थी—इन्दौर-मगाराज  
 न पूछा—सारे हिन्दुस्तान का सवायकें इन्दौर आती है हौरी पर, तुम  
 क्यों नहीं आता गौहरजान ? भन्न बोले उठा गौहरजान—घापन  
 मुझ दुनाया कब ? महाराज बोले—मह इमारा दम्पूर नहीं कि हम  
 सवायकें का योगा हैं । माता मरावर बापों की निन्द करता है ।  
 इमक पमाब म गौहरजान बापों—सब तो मैं भी मजबूर हूँ । मरा भी  
 बिन-मुगाए क्ना जान का दम्पूर नहीं । घोर बेग मरल दम तक

गौहर न हानी पर इन्दोर का रख नहीं किया था। मैं गौहर न बन सकी।

घर न पूछ लिया 'गाना सीखने में तो बहुत कष्ट रहा माये होंगे ?

क्या नहीं ? गुरू-गुरू में तो यह हान रहा बेटा कि जरा-सी भूल पर उस्ताद भरो महकिल में मुह पर तमाचा मार दते थे। नाथ रंग की महकिलों में उन तिनों गान बालिया में सुवाबले हुमा बरत थे। एक बच्चा लखर सभी तवायफें अपने अपने ठग में गाती और सुनने वाल बन्दगीन छत्र का फमना करत। ऐसे मौका पर अगर जरा-सी भी भूल हो जाती तो तबानची उठकर सबक सामने मेरे मुह पर तमाचा जड़ता। और जमा कि कायदा था मैं गुस्सा हान की बजाय उलटी गुदगुजार होती। उसी तालीम का नतीजा था बटा कि पचास रुपय मुजरा से एक हजार मुजरा तक पान सगी थी। बहते-बहते माँ जैसे अपने प्रतीत में गये गई।

इरा न आवर क्या 'गाना तयार है माँ'।

तो लगवायो। हम बात हैं।

माँ का मुँह पर फिर चमक आ गई। 'मरी बहानी बहुत सम्बी है देग'। उन दिना तवायफ का खडे होकर गाना पढता था। सुनने वाल भागम से बठ जाते थे। भला ही जहन बाई का। उन्होंने तवायफा में बन्दर गाने का तरीका खलाया। शादी-ब्याह में तवायफों का आना जरूरी था। नवाब रामपुर एक जगन करत थे। जब तवायफें जगन में भी साथ जाता थीं। जहन बाई को या बाजीपरा की तरह निबगन में तवायफों की हलक महमूम हुद। भाँवों-पेची बाठ सुनानी हैं। उन्होंने तबकीड रावी कि हम जगन में निबगने से इकार कर दें। जब जुनूठ का गमय प्राया ता सब डरवर चल पडीं। मैं पीछे रह गई जहन बाई का साथ। नवाब साहब का हमारी हम टकत का पना धन चुका था। बाँ में हम सामने पडे ता उन्होंने मुह फर लिया। जहन बाई न मरे

बान म कुछ कहा । मैं ही में सिर हिलाया । हम दोनों भिन्नाकर  
उपट पाँव लोट गए । पीछे-पीछे आ पहुँचा नयाय साहब का हुक्मनामा—  
पो फटन से पहन रियासत की सरहला स बाहर निगन जाया । और हम  
रातों रात वहाँ स चल आय थ बटा । वह भी क्या जमाना था !

इरा ने हँसकर कहा यह भी क्या जमाना था ! और यह भी क्या  
जमाना है !

भाजन व बाद शर चलने लगा ता माँ ने गम्भीर हाजर कहा  
'जब मेह सब घाम !

इरा गम्भीर हाजर बाना यह किसी गेट का विचार नहा यह  
सो हमार डही का धान है ।



शख ने इरा की कथा सुनी तो पहले उमे रलानि-सी हुई। फिर ब  
 माना इस कथा को तकसगत मिद्ध करने के लिए मन ही-मन यह  
 उठा—बमल कीबड में खिलना है! कमल से इरा की तुलना उसकी  
 कल्पना को छू-छू जाती।

गोबिन्दन का किसी प्रकार पता चल गया था कि इरा से पट्टी  
 अधिक बूढ़ी गायिका मना ही राम व संगीत पर मुग्ध हो गई है। उसने  
 गल का नमन्नाया इन लोगों से सबकर म मत फँसना। पहनी बाव  
 ता यह है मना को कभी यह सहन ही नहीं हो सकता कि कोई इरा को  
 ध्याकर ले जाय। दूसरी बात यह कि मना को बहुत दिनों से एक  
 घर-जमाई की तलाश है। छि छि एव बेगमा क घर में घर-जमाई  
 बनकर रहने पर साम्य-नास विक्रार! मैं बहता हूँ पास तुम भल ही  
 इन लोगों म मिलो पर अपना काम निकानने के लिए। इरा तुम्हें मान  
 निला मक्ती है अछे लोगों स मिना सकती है। तुम होशियार रहना।  
 तुम्हारी बुद्धिमानी इसा म है कि साठी व इण्डों पर पर रग रगकर  
 उंच चढ़ते जाया न कि सीठी स ब्याह करने घर-जमाई बन बटो।  
 उम रूप में सो तुम मिट्टी क मायो ही बन जाप्रोग। सबरदार! यह  
 म यह रहा हूँ! मैं हूँ गोबिन्दन भवतार! बम्बई के फ़िल्म-जगत् का  
 भवतार त्रिसवीं प्राज पूछ नहीं ता बल जरूर होगा। इस सम्भ  
 नायण व उत्तर म राख ने एक भी शब्द न बहा। बदन मुम्बरकर

माँवों-ही माँवों में कहा—मैं इतना मूख नहीं !

बम्बई में हर कोई दौड़ रहा था। अपनी अपनी एंजेजमेण्ट का चक्कर। एक मित्र दूमरे को हलों कहता और अगले ही पल देखता कि मित्र भागे निकल गया हलो पीछे छूट गया। शख को इतना सन्तोष तो था कि गोविन्दन उसके लिए बड़ी-से-बड़ी 'एंजेजमेण्ट' ढोड सकता है।

उवगी ने बह-सुनकर दो-तान और द्यूगनों का प्रबन्ध कर दिया था। जब तक फ़िल्म-जगत् में कहीं पर नहीं जमते द्यूगनों का ज़रूरी थी।

नीलू इस प्रयत्न में थी कि शख को फिल्मी संगीत की दलदल में रंगन से बचाकर अपने विद्यालय में संगीताचार्य की पक्की नौकरी तिनका दे नल ही वह जानती थी शख जीवन भर गोविन्दन के चक्कर में नहीं निकल सगगा जिसके जीवन का उर्य यही हुआ अस्त भी नहीं हागा। पर यह ता नीलू भी चाहती थी कि गुस्ख की जीवनी पर फ़िल्म बने ता उसमें शख का संगीत रहना चाहिए।

गम की कलना का कोई धोर धोर न था। उवगी को अपनी कथा में प्रवर्णन न था। उसका पति की अगले मान के धारम्भ तक था जाने की सम्भावना है, अब देर नहा होगा। संगीत में उवगी का मन नहीं लगता। बातें करत चकती नहीं। कभी किसी नीचो गायिका को सम्मनि प्रस्तुत करते हुए कहती कि भारतीय और पश्चिमी संगीत में मय की पद्धति एक ही प्रकार की है। कभी भावों मटवानर यह दावा करती कि उस नीचो गायिका के लिए भारतीय रंगों की मृन्दवाद्य द्वारा प्रस्तुत रचाना सुनवान का अर्थ उसीको मिमना चाहिए। बातें-नी-बातें। बातों की मरक पुकरी थी उवगी। कई तिन ता नाचा गायिका का चक्कर था। रंग मुनत-मुनते ठब गया। भारत जाने स पूव नीचा गायिका न धमराका में मा भारतीय संगीत गुना था। धमरीका में उवने रवीन्द्र नाथ ठाकुर के धान बिच प। ठब वह चकती थी। तभी स भारत जाने



के लिए वह लालायित रही। नीग्रो गायिका ने यह बात बलपूर्वक कही थी कि जैसे हम लोग यहाँ पश्चिमी संगीत सुनाने में हैं वैसे ही अमरीका और पश्चिमी देशों में ऐसे सुप्रसिद्ध मिशन चारिटेबल हैं। जब भारतीय संगीताचार्य और गायिकाएँ भारतीय संगीत का प्रदर्शन करें। उबानी दर तब यह चर्चा न बँठी कि शक्य जैसा भारतीय संगीताचार्य को विदेशों में जाकर अपने देश का नाम ऊँचा करना चाहिए। शक्य न बाहर जाने की उत्सुकता न दिखाई ता उबानी यह प्रसंग से बठी अमरीका में नीग्रो लोगों की जा हेय स्थिति है उसके पत्रस्वरूप वहाँ नीग्रो सस्कृति पर परलोकवादी छाप पड़ गई है। इन लोक के प्रभाव से मुक्ति पाने के निमित्त नीग्रो परलोक की कामना करता है। इस भाव धारा के नीग्रो गीत समूह-गान के रूप में विकसित हुए हैं। सबसे अधिक लोकप्रिय यही गीत हैं। समूहबद्ध होकर नीग्रो स्त्री-पुरुष ये गीत गाते हैं तो पूर-मूर पड़ता है उनका भावना-वातावरण में तिर तिर जाती है। उबानी ने भीखें मटकाने पर यह वस्तु बख्त इस प्रकार लिया जम वह भीखों-दत्ता हाल बता रही हो।

उबानी को दुःख था तो यही कि दाय उस समय बम्बई आया जब वह नीग्रो गायिका लौट गई थी। बम्बई के पत्रों में उस गायिका का विस्तृत परिचय प्रकाशित हुआ था। एक फाइल से निबालकर उसने एक समाचारपत्र की कटिंग सामने ला रखी

इसली के प्रसिद्ध संगीतज्ञ स्वर्गीय धातु रो टास्कानीनि ने अमरीकी नीग्रो गायिका मिस नारा फिशर का संगीत सुनने के पश्चात् उसे देवसाय की किन्नरी की उपाधि दी थी। एक सुविख्यात जर्मन संगीतज्ञ ने उसकी मधुर आवाज का यह कहकर अभिनन्दन किया था— गी वषों में भी ऐसी आवाज बड़े भाग्य से सुनने का मिलती है।

'नारा फिशर की मधुर आवाज सत्रप्रथम ग्लोबॉल व एक नोट्स बच में सुना गई थी, जहाँ वह एक सिंगु-मण्डली व गाय मिलकर रही थी।

नोरा का सफलता तक पहुँचने के लिए लम्बा माग पार करना पड़ा। मनषक लगन उम माँ से बिरासत में मिली थी। पिता से मिला था वह सबल्य। पहला वायलन खरादने के लिए वह पढोस के एक सम्पन्न परिवार में भाडने-भोछने का काम करके कई महीना तक पसे जुटाती रही। तब वह दस वष का ही थी।

‘या भमरीका की इस सुप्रसिद्ध गायिका ने जीवन की डगर पर चरना शुरू किया। मुड मुड बाधाएँ आई। मुड-मुड उसन साहस से काम लिया और बना के उच्चतम लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उसने अपनी साधना रागिनी को चरने लिया। सरलता और यिनम्रता का मूठि नारा निरन्तर भाग बढती गई। उसकी कटु भालाचना मा हुई पर इस भी उमन बन प्राप्त किया। माता पिता-बिहीन नारा ने संगीत में ही माता-पिता का स्तह उपलब्ध किया। बठिनाइया न नोरा का सोने की तरह उपाया और शुद्ध किया।

सगात के छोटे कार्यक्रमों में भाग नकर और बह मा बहुत घोडे पमा में नारा अपनी गिधा और जीवन-निर्वात् की जारी रख सकी। यह एक कमलवार है। जब मिस नोरा की स्नातकीय गिधा पूरी हुई, तो बानिज्य के प्रिमिपल न एक विख्यात संगीतन के सामन मिस नारा के गान की अद्वस्त्या की। प्रेस काफ़ेस में यह बतान हुए कि उस सगातन न बरन बगरता से बह दिया था। अतिरिक्त छात्र-छात्रा के लिए भरे यही विनदुन गु जाइता नहीं। तुम्हारा संगीत सुनने के लिए मैं न जो बहूतून ममप लिया बहा सबमुव तुम पर भारी कृपा है। यह बनात हुए मिस नारा का गना भर आया था।

फिर नारा न बताया कि संगीतन के कठोर दत्तर ने बावजूद उमने अटल नशिया गायक पुरानन नारा गान का सुनाया। संगीतन मन्मस्य-मा रह गया। नारा को प्रवेग मिन गया। अब यह समस्या थी कि गिधा के लिए गच यहाँ से आए। एक धनी परिवार की मन्िना न कुछ मित्रों के साथ मिनकर नारा के सगात का आयाजन

किया। उससे जो धन आया सब खच निवालकर सात सौ डालर बच रहा।

उससे भगले ही बप नोरा को 'यूपाक के संगीतमों ने सबश्रेष्ठ गायिका घोषित किया।

फिर तीन बय बाद फिलाडेल्फिया ने नोरा को दस हजार डालर का बोनस पुरस्कार प्रदान किया। पर नोरा ने इस राशि से एब पुरस्कार वापस करके उदारता का परिचय दिया।

नोरा ने पूरे यूरोप की तीन बार यात्रा की है और अनेक विश्व विद्यालयों ने उसे डाक्टर ऑफ म्यूजिक की सम्मानमूचक उपाधिमाँ प्रदान की है। इस सिलसिले में बम्बई विश्वविद्यालय भी पीछे नहीं रहा।

उबगी ने स्वयं नोरा का जीवन-परिचय पढ़कर मुताया। उस के मुँह से निबन्धा स्वयं अपने ही देश के क्याकारों का सम्मान देने में बम्बई विश्वविद्यालय को देर लगगी। पर कोई बात नहीं। हम इन्तजार कर सकते हैं।”

‘नोरा जाते-जाते एक बात कह गई थी।

‘क्या?’

‘नोरा ने कहा था कि अमरीका में फ़िल्मी संगीत की कोई मूचक पद्धति नहीं है और न ही फ़िल्मी संगीत की निरन्वार का सावना संभवा जाता है। कहने-कहने उबशी खब गई। और फिर मभतकर घोनी में नोरा को ‘तायसन’ और ‘बजू बावरा’ फ़िल्में दिवाने ले गई थी। य फ़िल्में देखकर नोरा को कितनी निराशा हुई, इसका अन्धाना भाप नहीं जया सकेंगे।

‘ठीक है। बहुर उख न इस प्रसंग का यही समाप्त कर देना चाहता।

उबशी मुखराँ मैंन मुहनेव की आत्मकथा का शरीर-ले लिखना पुरु कर दिया है, यह सो आपनी बताया ही नहीं।”

‘ठीक है ।

क्यों इतने आपको खुशी नहीं हुई ?’

‘सब ठीक है । घनता है ।

निराग होने का बात नहीं । नींबू बल घाई पा । वह कह रही थी कि वन तो डाइरक्टर प्राइमर सान्याल भी गुरुदेव की जीवनी पर फिल्म बनाने का सपना है पर जयन्त भाई अपनी सम्पत्ती से पहनी फिल्म के तौर पर हा इसका निर्माण करें तो और भी अच्छा होगा । मैंने हां कर दी और यह कहकर उसे धोका दिया कि जिस दिन पुस्तक की प्रति मेरे हाथ में आई, मैंने इसे पढ़ना शुरू किया और समाप्त करत ही स्त्रीन-पन लिखने बठ गई, जो साथे से ज्यादा दिया जा चुका है । बढ़िया चीज बनगी । क्यों ?

‘ठीक है ।

उबना जो शय का ‘ठीक है’ कहना बहुत खतरा । वह घृण हा गई ।

शय ने टांडी माँग भरकर कहा सब पस का मत है । पसे को पसा समाता है

‘उमम गुरुदेव का रोज मुक्तिवाप करेंगे । मैं बल उनक घर गई थी । मैं हमबर कहा—बचुर तो बहुत पान निय । अब फिर बाहर नियनी । बान—तुम कहागा सो बना इन्दार है उरु ! मरा वा यचपन दगा है मुक्ति काका न ! मैं ता उनम ही कराय बिना न टनी ।

‘यह तो बहुत अच्छा हुआ ।

सगान भापका रहेगा ।

यह सब संमना तुम घनत भाप ही बिय जा रहा है ! जयन्त भाई का तो धान दो ।

‘उनका सरफ़ से मुक्त सब अपिनार है । और एक बात बताऊँ । प्राणको विचाम नहीं हागा ।

क्या ?’

इस का तो सना चुने है । मैंने इस की माँ का चुना है । गुरुदेव

की पत्नी अनपूर्णा का रोन मैना करेगी । कमाल हो जायगा । मुक्ति बोध और मना का यह मेन क्या रहेगा ?

‘ठीक है ।

उर्वेगी खीर उठी ठीक है’ का मलावा भी उत्तर ही सकता है संगीताचायजी । खुश नहा होने । पसे मित्रों जितन मुह से मांगोगे । घोसो भाज की डेट से ही काट्टक करते हैं ?

‘मुझे अपना मोल स्वय मासूम नहा ।

मोन दे भी वीन सकता है ? खाली पत्रम्-मुष्पम् देने की बात है ।

वसे सो बात ठीक है । गुरुत्व पर फिल्म बने तो मैं उससे पसा कमाने की बात तो सोच भी नहीं सकता । फिर भी गोविन्दन म भी सलाह कर लूंगा ।

गोविन्दन से क्या सलाह करनी है ? उवशी हंस पड़ी मैं कहती हूँ भाज ही और अभी फसला कर लो । मुक्तिबाध और मना का काट्टक बल ही हुए हैं । भाज आपका काट्टक भी हो जाय । बनियागीरी मुझे भी नहीं आती । मैं चाहती हूँ अजन्त के आते ही काम शुरू हो जाय । स्टाडिया का प्रबंध भी कर रहे हैं । अब आप यम्बई में हैं बरकता म तो नहीं । यह फिल्म गानदार बन जाय और साथ ही गुरुत्व की परम्परा के अनुष्प संगीत समक उठ तो आपका भविष्य उज्वल है । अब केवल एक कवि की चिन्ता है । कवि भी ऐसा जो यह जिद न करे कि वह पहले गाने लिखे और आप उन पर संगीत फिर करें वलिक ऐसा कवि जो आपका धुनों के अनुसार टाट्टक करे ।

दाव कुछ न बोला ।

उर्वेगी दर तब इधर-उधर की बातें करता रही । मूर्खास्त हो रहा था ।

सिद्धकी म सागर की लहरों पर मुनहरी घामा नजर आ रही थी । पहने चाय भाई ।

फिर उवशी ने जल्दी जल्दी काट्टक टाट्टक किया और दाल के सामने

रखकर बोला "सीजिए । पाँच हजार की बजाय मैंने सात हजार ही निम्न लिए । मैं भना जयन्तजी का ही पगपात्र क्यों करन लगा ? कनाकार का भा भूख लगती है । यह और बात है कि यदि मैं आपकी जगह होती तो एसा मुझबनर पान न लिए सात हजार पान की बजाय पन्ते स सात हजार न खालता । गोविन्दन यह बाट्टेक देसगा सा कहगा कि उबगी उगार है । "तो सीजिए, इस काट्टेक पर सही कीजिए । आज हा मैं अपना महमा नोरा डिपार का भी इसना नूषना द रही हूँ ।

गम न बहुत तर तक लखना न उगई । फिर उसन वान्त हाथों से इस्तागर कर लिए ।



जयन्त के हाथ में मिरर' मगझीन का ताजा भव था जिसमें एक संगीतकार की महान् प्रतिभा दरशाने वाली यह टिप्पणी छपी थी :  
 एक बार एक संगीत प्रेमी युवक सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ माजट के घर गया और बाला सिम्फनीज के नोटेशन कैसे लिखे जाते हैं ?

इस पर माजट ने उत्तर दिया 'अभी तुम सड़के हो। पहले बलट' के नोटेशन लिखो। उसमें सफल हो जाओ तो आगे बढ़ना।

आप सो दस बय की अवस्था में ही सिम्फनीज के नोटेशन लिखने सके थे !'

सो तो ठीक है। पर मैं किसी से पूछने तो नहा गया था तुम्हारी तरह।

पढ़ते-पढ़ते जयन्त को सिहरन-सी हुई। फिल्म जगत् को ही सो। कुछ साग इसमें बर्षों से घबक ला रहे हैं फिर भी किसी टिकाने पर नहीं पहुँच सके। कुछ किसी प्रकार गाणी टेनने योग्य हो पाए फिर भी उन्हें सफल तो नहीं कह सकते थे।

तीन साल बाद लौटा था जयन्त। अच्छी फिल्म बनाने के हजारों भरतब सींग डाले। यूरोप को भी मूक यात्रा की। कोई स्टूडियो छाडा नहीं। बड़े-बड़े डाइरेक्टर प्रोड्यूसरों से भेंट की। उनका अनुभव का पानी के घूट के समान पी लिया।

उसके पास अपना इतना सामान न था जितना फिल्म-सम्बन्धी

सान्त्वित्य । अनेक पत्रा की कटिंग अनेक पुस्तकें । दुनिया भर के फिल्म सम्बन्धी नुसखे । और बहुत सी ऐसी पुस्तकें भी थी जिनका फिल्म-जगत से सीधा सम्बन्ध तो न था फिर भी उनसे मदद मिल सकती थी ।

बम्बई पहुँचकर उस पता चला कि उषगी ने बहुत काम कर लिया । गुरुदेव की कहानी के पात्र चुनन में तो उसने यमान ही कर डाला था । मुक्तिबोध तो अब पुराना सिक्का था घिसा पिटा । उस फिर में जाने की बात अनोखी थी । वह तो वपों से अबूतर पालन में ही अपनी पला विमाने लगा था । इसलिए यहाँ वह कना के अबूतर उदावगा । इरा की माँ मैना पहली बार आ रही थी ।

रागपरन—उम तो जयन्त भूल ही गया था ! नहीं पन्चीम हजार वहाँ सात हजार । द्यूराग के फन्दे में उषगी न उसे खूब फसाया । बच्चे का पहला वाट्रेक है । उने क्या पता बम्बई की मार्केट में म्यूजिक स्टोरेज्जर का क्या मोल है । वाट्रेक पर साइन कर दिया । अब तो वह बच गया । अब वहाँ जायगा ?

आज कना माथीटोन का मुहूर्त है । जयन्त के आनन्द का पारावार मटा । उमका स्वप्न सागर हान जा रहा है ।

उषगी सवेरे में 'गुरुदेव की आत्मकथा' की मारकती बाइडिंग वाली प्रति खिच बठी थी । जयन्त कई बार उठकर उषगी के पास गया । मुम्बान-से-मुम्बान टकराई । नपनों न दाद दा । घब है उषगी ! एक स्टोरेज्जर प्रोड्यूसर की पत्नी को इतना ही कमठ हाना चाहिए । पूरा स्त्रीनन्दे लिन चुकी है । फिर से पुस्तक पढ़ रही है । घायल कहा बार्ड नया नुवता हाय लग जाय । महानन का पत्र है । सफतता और किस रिटिया का नाम है । टोना नहीं सफतता बार्ड मात्र नहीं । यह सब तो घापना पर निभर है । जयन्त को लगा उसने स्वयं भी कुछ काम घापना नहीं था की । छोटी उम्र से ही वह फिल्म में लिपिस्थी बन गया था जग मात्र दम दम का उम्र में ही मिम्पनीक क नागन निगन लगा था ।



“सिगनेचर टपून मुनोग ? उवगी मुक्कराई ।

‘उरर मुनेगे । जयत बोला भाज तो कुछ मिलगा दापें हाप की हथेली खुबला रहा है ।

पर मरी ता बाह हथेली खुबला रहा है । उवशी हस परी सफनता निदिचन है । और उसने उठकर टेप रिक्काडर लगा दिया ।

‘बाह-बाह ! जयत भूम उठा दाख का स्वर भी खूब है । पित्रन दम वर्ष म मैंने ऐसी घुन नहीं सुनी ।

हालीकुठ में भी नहीं ?

नहीं ।’

यह तो बताओ सिगनेचर टपून के रूप म वह कसी रहेगी ?

भभी यह बताना क्या बाकी रह गया ? बहुत ही बढ़िया घुन है । कला मोबीटोन की कना तो तुम्हीं हो उवशी ! इन पिक्कर से हमारी धाक बढ जायगी । हम फिम इण्डस्ट्री का स्टण्डड एन्गम ऊचा उठा देंगे ।”

उवगी मटक चिड़िया की तरह चहक उठी । जैसे मुक्कगरात की दाहनाई बज रही हा भाज उसकी सिगनेचर टपून की जयत ने पसन्द कर लिया था । सिगनेचर टपून ता पूजा प्रताद है । उवगी न दोबारा टेप रिक्काडर चनात हुए कहा एक बार तो सत्तार भूम उठगा । बातों ही-बातों म दाख ने यह घुन सुनाई । मैंने बहुत प्रगमा की । घाटिस्ट की प्रथमा ठीक स्थान पर की जाय तो बात बनती है ।

‘यह तुम्हारे त्रिमाण का समत्वार है ।

मरी प्रगसा तो उरा घोरी ही करो ।

क्या तुम क्या घाटिस्ट नहीं हो ?

‘एक बात कहें ? पहले मुन लो । फिर कही भून न जाऊँ । इम त्रिक्रम म एक सिधुण्ठन ऐसी उरर निवासेंगे जहाँ वह गाना भा सक्क कन्ते कहत उवशी रक गई । फिर सँभलकर बोली ‘उरर धाडो । पायत तुम हेंग दोग जयन्त !

कहा तो ।

'वह एक गीत है न ।

'यौनसा ?

रतिया हाइ गई मोर मवतिया पिया के लाटि सई गइ न ।  
उवगी न लोकोगीन की पूरा गवित दरखान का यल किया ।

घर बाह ! तुमने यह धुन कहाँ सीखी ?

'यस दर सा । तुम हानीबुड और यूरोप में घूमन रह । इमाग भा  
अपना हानीबुड है ।

क्यों नहीं ।

'हाँ ता हमार लग म बहन-बुछ है जिसे अभी एकप्लायाट ही नहा  
किया गया । हम बहन-बुछ द मबन है ममार ना ।

क्यों नहीं क्यों नहीं । पर रेतिया मवतिया बाल गाठ का तुम  
कहाँ बिपबाना घाटती हा ? क्या इसी गुरुत्व वाली किम में ?

अबय ।

जयन्त न मुस्कराकर कहा 'हमें मुहूत स एक घण्टा पहन स्टूडियो  
पहूच जाना चाहिए । तीन घण्ट रहन हैं । एक घण्ट म ता तुम जाकर  
कहा तयार हागी ।

मैं तो दस मिनट में तयार हो सकती हू । अभी सा ! उवजा न  
रिवाइ भगा निदा—रर ल निगार गारी रर ल सिगार !

सबिन इन रर ल सिगार गाथ । ने पतानीस मिनट ल लिय ।  
मोरी सिगार करता रहा । सिगार पेय ही नही हो रहा था ।

'जाना बरा ! रर ल निगार गारी ! जयन्त हंग पड़ा 'आग  
निगार क्या घात्र हा रर लगी ?

उवगी तस क मानने गड़ा निपन्त्रिक सगा रही थी ।



स्टूडियो बहुत सजा हुआ था। जयंत और उवशी गेट पर लड़े प्रतिपियों का स्वागत कर रहे थे।

मुक्तिबोध भा चुका था पर मैना अभी तक नहीं आई थी। मनोज सान्याल तो या कह रहे थे जैसे यह उही की फिल्म का मुहूर्त हो।

इरा का कहीं पता न था। बार-बार लोग उसी को पूछ रहे थे। फिर किसी ने कहा 'वरा तो आजकल घस के चक्कर में है।

यह सब गलत बात है। मनोज ने बलपूर्वक कहा 'योगों ने न जाने इरा को क्यों इतनी मूख समझ रखा है? वह तो बड़ी चतुरी रक्म है।

'होगी चतुरी रक्म! फिर किसीने कहा 'समय घाने पर सब बुद्धि धरी धराई रह जाती है। मनोज बाबू आपकी इरा तो आपन हाथ से गई।

मनोज हस पंग 'इरा तो अपनी माँ की है। उसे जो पसा मिलता है वह सब मना की जय में ही तो जाता है।

मुक्तिबोध भी चुप न रह सका 'मना तो अपने उमाने की बहुत बड़ी गायिका है। मना न जितना बमाया उतना तो इरा क्या राकर बमाएगी? और अब देखने जाइए। मना दबी फिल्म में उतरने जा रही है। मरा तो गयात है कि वह नया स्टैण्डड थापम करेगी।

घोर आप अपनी बात भी तो कहिए मुक्तिबापजी। मनाज ने

शुक्र की ता 'क्या भाप फिर स 'यू पिपेटस घानी भाप जना सकेंगे ?

क्यों नहां ? काम करने वास पर नही यह तो काम सन वास पर निजर है । हम ता इतना ही कहण मुक्तिबाप अभी डिन्ना है और वह मरेगा नहां । यह तो कला स ही जी रहा है और सब वह कना स ही अमर हो जायगा ।

बई और ता एसी भायाजें भाइ नि इरा धायद जान-भूमकर नहीं भाइ । पर मना भी तो सब तब नहां भाई थी ।

फिर किमा ने कहा 'जयन्त भाई आपन म्यूजिक डाइरेक्टर कहां रह गए ?

सात हजार वाता म्यूजिक डाइरेक्टर मुहूत पर भी अव्य पधारे यह कुछ जरूरी ता नहां । मनोज न मुक्तिबाप के समाप भाकर कहा ।

मुक्तिबाप न यह विन्सा छड गिया कि जिम जमान म मना देवी न गाना सीगा और मुजरे में नाचन का अभ्यास किया तो उस्ताद सांग बरो मुक्तिन म कहीं गुर बताने थे । मना देवी ने एन बार भापबीती मुनाई था कि पत्नी बार मुजरे म गनत कर्म उठन पर तबत वात ने सबके सामन उनक गाल पर तमाषा जड गिया था । कहते-कहते मुक्तिबाप ने विचित्र-ना मुह बनाकर कहा वह भा क्या जमाना था !

इसक उत्तर म किमी न कना भगत यवतों के हैं य सोण इहें कुछ न कहा ।

मनोज बाबू धोन सब हमारे जयन्त भाई मना भाई पर तो किन्म बनान से रह ।

उत्तरी गमन नहो पा रहा थी कि वात कहीं रह गया । मना नहीं भाई इसका ता उसे बहुत पत्रगोस नहां था । फिर भी यह पत्राई नहां । यह तो बलि जयन्त स कह रहा थी 'मुज में जितन सांग घाय उनक हम शक्ती हैं जा नहां था पाए, उनका भाई मन्नूरी रही हाया ।

मुज का धरती में मचनता का बाज पूरता है । जयन्त न उगमित मित्रों का धायवा किया एन जयन्त कदावत है—किसी की

पीठ पर हाथ फेरो उसका दिमाग भासमान पर चढ़ने लगता है ! आप मित्रा का घनेक घन्यबाद ! आपने हमारी पीठ पर हाथ फरा आपने हमारे दिमाग का भासमान पर चढ़न का मौका दिया ।

इस पर सबन तालियाँ बजाइ और उन सबकी नज़रें मिठाई नमकीन और चाय की तरफ जा पड़ी ।

चाय आरम्भ हो गई । किसी न कहा मना दबी क न भान स हम घाटे म रहे । वह आती तो हम उनस उनकी प्रिय रागिनी जयजयवन्ना भवन्त्य मुनत ।

उबनी न टप रिवाइर लगाते हुए कहा यह है हमारी इम फिन्ग की सिगनेचर टयून ! इसक बारे म आप लोग जरूर अपनी राय दें । एक-दूसरे की ओर देखकर सबन मौला-ही आँसों म सिगनेचर टयून की प्रणामा की ।

'बलिशरी ! मुक्तिबोध चहक उठा 'मंगलसाकार की प्रतिमा भी महात् ।

जयन्त की खुशी का वार्द और-छार न या । उसकी बतायी यदी जा रही थी । उसे बना की अब भी प्रतीक्षा थी । वही रास्ते म वार एक्कीडेष्ट न हा गया हा ! उसने उषणी के समीप होकर पटा । सफनता भी क्या चीज है मतोज बाबू ? मुक्तिबोध ने प्रणामा का बयूतर उड़ाया जिदगी भर हम सफलता के पीछे भागने फिरत हैं । हम वही ठिकाना नहीं मिलता । और जब मित्रन पर आता है ता भट मिल जाता है ।

प्रटरिया प गिरा रे बयूतर आपी रात । किसीने चुटकी ली क्यों मुक्ति बाबू इम गीत का क्या मतलब है ?

मुक्तिबाध ने भ्रंपन की जरूरत न समझी । सभी जानत थे कि पिछले कई वर्षों स उसे बयूतर पावन का शौच है । वह अपनी हा वात कहता बला गया 'बयूतर किसी अनजानी प्रेरणा के वशीभूत हाकर गगन म दूर-दूर तक उड़ता है । नहीं तो बजाइए आपके पात क्या दुःखमनाम

है ? और अगर ठीक आधी रात के समय प्रेमिका की ही झटारी पर पहुँचकर प्रेमी की चिट्ठी पहुँचा देता है कबूतर तो इसमें बुराई भी क्या है ?

मुहूर्त के दोर में सभी बातें दब गईं । इनमें म मना इरा और दास न एक साथ प्रवेश किया ।

सबने तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया ।

इरा का दास के साथ दगदग मनाज सान्याल का रंग फीका पड़ गया ।



नीलू नृत्य-कला के विकास की उस सीमा तक पहुँच जाने को उत्सुक थी जहाँ परम रस की अनुभूति हो सके। उसकी साधना चल रही थी। जीवन का सारा सुख दुःख नृत्य में उड़न द नृत्य में ही मिल तिस परके घुन जाय यही उसकी साध थी। विधिपूर्वक अर्जित कला का सम्बर्द्ध क मीना-बाजार में कोई मान न हो सकता था। वहाँ तो विचित्र घराबकता का युग चल रहा था। उसी नृत्य का भासा उपहास ही कहा जा सकता था। षट्क रग विलासमयी भाषा और अविवेकपूर्ण मुग्धाएँ—यही तो फिरमी नाच-गान की गाढी को घाग ले जा रही हैं। भागे या पीछे—यही नीलू इनप्रभन्सी साचती रह जाती। फ़िल्मों में प्रत्येक नाच में रसिकप्रिया ही चाहिए यह क्यों? वहाँ तो अपरिपक्व कला की ही पूछ है। कला का शुद्ध अध्यापक रूप वही नहीं बनता। साग मिकता चलता है अमनी नहीं। मीना-बाजार का न टग विद्या क फनी है। निरहृदय उद्यन-बूद की नाच बन्कर भाग टेन देने हैं। मीना-बाजार में रहन वाल मेरी दूबान को वहाँ नहां न जा सकन। यह सब सोचने-मोचन उम गोरिल्लन का ध्यान धामा जिम भाज धाय पर सुलाया था।

उसके हाथ में नीलो कविता पर लिखी गई छाटा-गी पुस्तक थी। विद्वान् नगक न यह मिद्ध पर लिखाया था कि स्वतन्त्रता क प्रति भाषी कविता में जा छापगहट मिलती है उसका अन्वय वहाँ जवाब नहा।

नीला-अनला न गुनामी के दिना म बबिता का मुक्ति-मुषय का हयियार बनाया । उमन एक पन्न पर छपा चार पक्तियों ने नीचे ताल पमित म निगान उगाया—

दास बनन की अपेक्षा  
म बच्चों में गढ जाना चाहूँगा ।  
म भगवान क घर जाकर भी  
स्वतंत्रता की माँग करूँगा ।

फिर उसने नीलो बबि पाल लारन्स डनवर (१९७२ १९० ) क सम्बन्ध म दा गर्द युद्ध पक्तियों परी जिनमें बताया गया था कि वह एक निष्ठा घातक था और निष्ठा क ऊपर-नीचे धान-जान का भवस्था म हा उमने अधिकांग बबितामा की रचना का था । पाल लारन्स डनवर की एक बबिता का चार पक्तियों पर उमने नीली पमित म रेखाएँ मीथा—

हम मुहराते ह प्रभ ईश !  
किन्तु हमारी व्यथित आत्माओं की पुकार  
गायद तुम तक नहीं पहुँचती  
हाँ तसार कुछ और ही समझना ह ।

पुम्पन का नूमिका में बताया गया था नीला-अनला बबिता नीला या बबिता अगल मरना ही है ता नाओ जानि क स्वतंत्रता-मुषय का युद्ध-गान बन गई था । उग बबिता का इन पक्तियों का मायू न फिर मान पमित से रेखांकित किया—

हमें अगल मरना ही ह तो  
गुदरों की भीत नहीं मरना चाहिए  
जिन्हें गढ घरों में बन्दी बनाकर मारा जाता ह ।  
अगल हमें मरना ही ह तो  
याओ सादियों हम गालीयों की भीत मरे ।

नीला-अनला क गंगा-अन न बिलार म बताया था कि बने नीला



ज्ञान को धीरे-धीरे राजनीतिक और सामाजिक सुविधाएँ प्राप्त होती गयी और आज के नोबो-कवि का स्वर भविष्य का आशाभरी आँखा न निहार रहा है—

घब हमारे सामने घाने वाला बस ह  
जो दीपक के प्रकाश जसा उज्ज्वल होगा ।  
धीता हुआ बस तो वह रात ह  
जो बीत चुकी ह ।

नीलू ने ये पवित्र्या बार-बार पढ़ी । फिर उसने अपने पुत्र शेल्फ से 'भारतीय कविता' का एक सक्लन निकाला और बगला कवि प्रमोद मिश्र की एक कविता का अनुवाद पढ़ने लगी जिसकी कुछ पवित्र्या को उसने जान-नीली पसिल से जहाँ-तहाँ भ्रमण भ्रमण रगी छ रेगाकिन किया था—

म उन सब लोगों का कवि हू  
जो जुट हुए ह घग्घों में  
मन विलास को नहीं घुना  
घपन घग्घों में छग्डों में  
म उनका कवि हूँ जो—  
सोटे लकड़ी मिट्टी में गड़ते ह  
म उनका कवि हू  
तरह तरह की बीमों को जो गड़ते ह  
म मेहनत और पतन के स्वर गाता हू  
म घपन घग्घों को विलास को  
मरु नहीं दे पाता हूँ  
घरती हवाकल ह  
हम की टोकर घान को  
सागर की लहरें हवाकल ह  
हास को समान को

पथी के भीतर सोहा सोच रहा है जो  
 कोई यत्नगाली छोट सादकर  
 मन्त्र निकाल नहीं लेता क्यों ?  
 मदियों की इच्छा है  
 कि कोई उनकी छाती पर पुल बांध  
 फिर कैसे ममकिन है कि बलम  
 मेरी बचन गोभा साध ?  
 म उन सब लोगों का कवि हूँ  
 जो जुट हुए ह थर्यों में  
 मन बिलास को नहीं घुना  
 अपन शब्दों में, छ ों में ।

नीलू न घड़ी देखी गाविन्दन अभी तक नहीं प्राया । शायद भूल गया हो । उस यत्न सावकर हँसी भा गई कि बम्बई के मीना-बाजार में खाता मिथ्या ही चलता है । गुरुत्व रत्नम् का गिण्य है दास जिसने गुरुत्व के चरणा में बैठकर संगीत-साधना का । गाविन्दन तो घर से भाग प्राया था । वह तो मगीन में बच्चा है । पर मीना-बाजार में यत्न भी म्यूजिक थैट्रेक्टर की दूबान गाते बटा है जैसा उद्यम धीरे धीरे म कोई धनर ही न हो ।

त्रिवेणी बना सगम के चौगाटी के समीप स्थित नय भवन में ही नीलू एक कमरे में रहनी थी । छुनी का जिन था । उसने जिन्की से सागर का हृदय दया । उस लगा यहाँ तो सागर पाननू-मा प्रतीत हाता है । सागर का प्रमत्ती हृदय तो जूह में है । जह में सागर के साध-भाव धमीरा के बगन बन गए हैं । वहाँ बम्बई के नय म्याह जोड़े घर बनन धात है । सुन सागर-संग पर दूर तक घूमत रही । साधन पौड़ा ध्यान न रखा तो सागर की सहरे साधक कत्मा का भिगो जायेगा । सागर की सहरे धपन नाथ म कभी छुनी नहीं सती ।

गिड़की में राड़े-राड़े उगन पाधे मुहवर द्यगु में धपना मुगड़ा

देगा। भाज वह गुट्टिया-सी सजी पड़ी थी। गोविन्दन अपना ही भादमी सही अपने दरबान का पुराना मित्र सही फिर भी उसके स्वागत में नये वस्त्र कस न पहनती, जूड़े में फूल कसे न लगाती? उस ध्यान आया कि भाज तो बरसोवा चला जाय। गोविन्दन भा जाय सही छूटते ही यह प्रस्ताव रखूँगी कि उस मेरे साथ बरसावा जाना हा हागा।

नीच से दरबान ने धाकर बताया गोविन्दन यादू कह गए हैं हमें देर हुई। नीलू वन से माँकी माँगना।

भौर कुछ नहीं कहा? घबेले से या साथ में कोई धौर भी था?

घकेला नहीं था। तीन भ्रातृमी साथ था। बोला हम नीलू वन के पास भाष घण्ट बाद भायगा।

नीलू मच्छण कहकर चुप हो गई। दरबान नीचे चला गया।

भाज उधे बैरल की याद सतान लगी। घप्रल का महोना करन में 'विगम' कहलाता है। भाज व तिन बैरल में नववर्षोत्सव के रूप में विगम उत्सव मनाया जाता है। कितनी श्रद्धा और भास्वा चला भाई है इसके पाछे। नारिगल के झुरमुट भी खुशी में नाच उठते हैं। मंदिरों में हाथियों की सज-धज, मुनहल वस्त्रों से विद्या गया उनका शृङ्गार। गाजा-आजा मन प्राण को पुलकित कर जाता है। भाज से भाई सना ग्यारह सौ वर्ष पूर्व त्रायणवार के एव राजा ने 'मलयानम्' वर्ष चालू किया था।

उमकी भासों में करल का विग्र उभरता चला गया। दरबान की सड़कें साथ-मुपरी हा गई हागी विगम की खुशी में। पर घाँगन गावर से पुन गण। इमसा से हाक कर लिय गए पातल के बसने। बच्चों ने रागर-तण से सीप पुन पुनवर कई तिन से पटाग बनान शुरू कर दिए। पर के बड़े-बूढ़ा न कितना मना किया फिर भी कर्म तिन से नव मुपरी पर यह मूठ सकार रहा कि पर के बोलों का पुनमदिया घौर मणालों में राजाया जाय। पिछले वर्ष से भी दरबाना में थी, विगम के तिन। विगान सेतो-बाड़ी से छुट्टी पाकर मेत की घूमपाम दगन है।

मूर्धास्ति होत ही नवयुवक चन्धरे की बाट जोहने लगते हैं । मौसो तक पत्थरा की झाड़ों मुनाई अने लगती हैं । घर घर स्त्री पुरुष नारियल के पत्तों का जलती मंगालें घाम लेते हैं । प्रतिक्षण कवि' का नाम ल खेकर मंगाला को उपर-नीच घुमाते हैं । इस यात्रा स नीलू पुलकित हो उठा । पिछले वष तो यह भा गली क युवकों के साथ-साथ मंगाल उठाए उन वृद्धा क पास गई थी जा पुराने होन पर भी फल प्रदान करने म असमय रट् । नीलू न पुनवित होकर साचा—मने भी तो उन वृद्धा को मंगाल जिखाइ थी । वे गाछ नज्जित हो गए हगि धीर ध्रुव के उनम भी फल लग हगि । पूर तीन घण्ट तक मैं युवकों क साथ मंगाल लिय घूमती रहा थी ।

उसे माता पिता का स्मरण हो आया । पिछले वष की तरह ही मां ने घर क भीतर अपनी पहासिना की दग्गा-देग्गा छोटो-सा मन्दिर बनाया होगा । गोबर स पोनर पवित्र किया होगा । इस मन्दिर म पोनस क कई दापक रख जायेंगे । उन दीपका म विषम सख्या की यतिपां रगेगा मां विधि क अनुसार सब सामग्री रगा रहूगा—घरवा चावल नारियल सान क गहन चांभी के सिक्क रामायण या महाभारत । पात्र म हीगा सुरहाप्य या विष्णु का चित्र । बट हूए खीरे क दो टुकड़े नी रगेगा मां । बन्दन घाम धीर क व चट्टे धीर कनात्मक दग स सजा दिण जायेंगे । मुनहल-गोल पून भी तो मजाकर रहे जायेंगे । अष्टौ तरह घुला हुआ मुन्टर निनारी का सपत्र बस्त्र मह उगाकर पनाया जायगा ।

फिर उस गाविान पर चाय घान लगा—अभी तुम नहीं आया । अब चाय क्या पीयेगा ? अब आया भी हा गाना गाएगा ।

पूरा घनेना हा बठकर चाय पीन सगा । उन याद आया घात्र हा बहल-मूहल म तीन बर प्रात काम स हा दरबला क मनी दात यजन लग होंगे । दगनाए धीर भात की घनिया के बीच-बीच मन्त्रा का उपचारण हान सगा हागा । उगना जा हुआ घात्र तो उग भा कर

कमा म ही होना चाहिए था। आज रात प्रज्वलित मंगालों बरकला के रास्तों पर पकितबद्ध हो जायेंगी, भवतगण अपने अपने घर के मन्दिर को उठाकर जुसूस निकालेंगे घर घर धूमेंगे।

उसे यह बात भी स्मरण हो आई कि विष्णु-कनीतम के समय गृह-स्वामी का होना परमावश्यक है। एक दिन पहले ही रुपय छोटे सिक्कों में भुना लिये जाते हैं जिससे उपहार बाँटने में सुविधा रहे। उपहार बाँटने का काम मामा चालू करता है जो घर के प्रत्येक सदस्य का नाम लेकर पुकारता है और हर किसी को एक-एक सिक्का देता जाता है। बसे उपहार बढनी का भी हो सकता है और पाँच रुपये का भी। फिर यह बात याद आने पर कि गभ के सात चार मास में ऊपर के बच्चे को भी उपहार का भागी समझा जाता है वह मन-ही-मन मुस्कराई। गोविन्दन उसे छेड़ता रहता था— नीतू तुम तो एक स दा ही नहा होगी और दो से तीन तो फिर भसा कैसे होगी।

चाय पीते-पीते नीतू का ध्यान बरकला पर घूम गया। विष्णु का प्राविर्भाव तो पहले-पहल प्राचीण ज्योतिषी 'बनम्यन' के यहाँ ही होता है। बरकला तो गाँव नहा नगर से होड़ नेता है। गाँव की तरह वहाँ तो एक ज्योतिषी से काम नहीं चलता। बरकला के ज्योतिषी अपने अपने इलाके के घरों के लिए रात में देर तक बठगर भविष्यवाणियाँ तयार करते हैं जिनमें प्राणामा वष का सत्ता जोगा दर्शाया जाता है। अना घृष्टि महामारी प्रथवा प्राण-देवता के शीघ्र तरीके सम्भाषी वृष्टा के निवारणाय यथेष्ट उपचार की प्राप्ति भी तो सगी ही रहती है और इस तरह बरकला के ज्योतिषियों के लिए विष्णु ज्ञान का सीना धनकर जाता है।

नीतू की बलना में बरकला के किसान घूम गए जा विष्णु दिवस पर हम से श्रेष्ठ जोतने का शीघ्रगण करना घुम मानउ आए व। विष्णु के दिन शीघ्र शोन पर शक्यी क्रमत् की प्राप्ति की जा सकता है। मानो बरकला बान रहा हा। और फिर यह यह मौसमर मानो किसी नग म

भूम उठी कि आज रात बरबला क किमान ताडीमान से गान भूमन अपने घरा को लौटेंगे ।

गाबिन्दन भनी तब नहा आया था । नीलू तनवर बठ गई । भागे को भनी गाबिन्दन को नहीं बुलाऊंगी चाहे वह सोने का आत्मी हा क्या न बन जाय ।

नीला बकिता' गुमी पढो थी । उसकी दृष्टि इन पक्षियों पर पड़ी—  
 अथ हमारे सामन धान घासा बस है  
 जो होकर क प्रकाश जसा उज्ज्वल होगा ।  
 धोता हुआ बस तो यह रात है  
 जो धोत चुकी है ।

फिर वह बगला बकि क इम विचार पर गौर करने लगा—  
 पक्षी के भीतर सोहा सोच रहा है, जो  
 कोर घतगासी सोद-सादकर  
 मुक्त निवास नहीं लेता क्यों ?

इतने म गाबिन्दन भूमता भामता आ पढ़ेवा धीर पहन से माफी मांगकर उमन नामू का मुह बन्द कर दिया ।

त्रिवेणी बसा सगम का अक्षण छाड़ा नीलू ! वह गम्भीर हारर घाना ये बनिब सुझारी बसा का मोच नहा ने सक्त ।

तो त्रिवेणी को छोड़कर कहाँ जाऊँ ?

मोना-बाजार में घोर कहाँ ?

सगीत नृप धीर नाटक—य जना विषम त्रिवेणी' क अचार म्भम पे । त्रिवेणी की नृप-सचासिवा क रूप म नीलू ने दग दिग्ग में बाघी स्वाति पाद थी । वह पूराय क कई दगों म अपनी मस्था क विद्यापियों का बला का प्रचन करन गई था । र्ग के बडे-बड नगरा में सभी प्रान्तों म उगने त्रिवेणी का पताका पढ़्यई था । फिर भी गाबिन्दन का यह सातग कि वह त्रिवेणी' का 'बकिन्दन बन्ता को 'बनिब' बटकर उग बिनाय । यह बस नीलू का अन्त अगरी ।

उसने छूत ही भाषण आरम्भ कर दिया

तुम्हारा यह विचार एकदम गत है गोविन्दन नि बम्बई केवन मीना-बाजार है। एक बम्बई क चन्द्र बई बम्बईयाँ हैं। उनमें एक छोटी-सी बम्बई तुम्हारी फ़िल्मो एनिया भी है जिसे मीना-बाजार कहते हैं। बम्बई की चेतना एक आरबेस्ट्रा है। इसमें उत्तर का भी हिस्सा है दक्षिण का भी पूर का भी और पश्चिम का भी। गुजरात की दन अधिक है या महाराष्ट्र की यह झगडा हमारे लिए नहीं। इतना तो हम मानते हैं पागली भी बोलता है बम्बई को भाषा म। एक बम्बई मान वाग और परेन है जहाँ मजदूर रहते हैं। किसी भी फिल्म स्टूडियो को निक गुजराता या मारवाठी सेठो का सट्ट म कभाया हुआ रपया ही नहीं चलाता। उस ज़मानत है टक्कीदियन जो मजदूर हैं। मैं भी गई है वहाँ मैंने अपनी आँखा स ल्या है। एक बम्बई बरसाया है जहाँ तुम इमलिए नहीं जाने कि वहाँ सूचना मछलिया की बढवू आती है।

हाँ हाँ नीलू ! गाबिन्दन ने विमिधाना-ना होकर कहा मैंन क्या कहा था कि तुम मीना-बाजार को विनकुल ही नहीं जानती ?

पिर तुम कहना क्या चाहते हो ?

गोविन्दन ने हँसकर कहा तुम क्या सब कुछ और पवित्र कला के चक्कर म फँगे रहोगा नीलू ? कभी तुमने यह भी सोचा कि आदमी को एक जीवन-माथी भी चाहिए।

'तुम्हारा मतलब क्या है ?

'यही कि मवा के लिए थी एकही घाठ गाबिन्दन धवतार हाजिर है !

नीलू एकज्म चिढ़ गई। यह कुछ नहा बानी।

गाबिन्दन ने स्थिति समझार कहा 'मुझ माफ़ कर दा नीलू ! तुम समझी नहीं। मैं तो यह कहा था कि तुम्हारे साथ सब करने के लिए आज मेरी मवाएँ हाजिर हैं।



गोबिन्दन का भरख म साय जाने याने य दान्द बहूत प्रिय य भीर  
 वह मह पति दाहरादा पुनबिन-सा हा-झो उठना— दीपक की  
 ज्वालि घटा अलिपन की अजना ।

संत अमी सा रहा या जब गोबिन्दन न समीप सादर भरख का  
 डाक जगाया और आनाप लेजर वह राग न बान पर आ गया

जागिए गोपाल लाल भीर भई अंगना ।

बाट की बटोहा अलत पछो अगत धुगना

दोपक की ज्योति घटी अलिपन की अजना,

जागिए गोपाल लाल भीर भई अंगना ।

अभी यह जा न साथ अम पर आया हा या नि दास न अलिं  
 गीन दी ।

'आमा गोबिन्दन लूख आमा !' म सुम्भरादा, मैं ता आब रहा  
 या मुम्हें पार गान से बिड़ना हा गई हा । मुम्हने ता भरख की आत्मा  
 जगा दा आन ।

अगमा क पुन न अयो । गोबिन्दन हैन पटा जानन हा अत  
 थी अजनी आन गोबिन्दन अपनार ने बिगने साथ सब जिया या ?

'अहोमी ती न अजनामा ।

अजना दी हा अडा तेना है । नातू न मरी यह मना का नि  
 'बिभू' अमर का मजा आ गया ।



'अच्छा तो क्या किंगू' था ? बम्बई क्या भाय यह भी याद नहीं रहता कि किंगू क्या खाता है और क्या जाता है ।

अभी तो और भी खो जाओगे बम्बई में । बस तुम्हें इरा मिल जाय, बस । और हमने भी अपनी इरा डूढ़ सी जिमके साथ हमने खच किया ।

नीलू ? य ठाठ हैं भाजवन ? गल उछलकर उठ बठा पर अगर मैं नीलू का मन पठ पाया हूँ तो याद रखना वह कभी तुम्हारे फन्दे में नहीं आयगी । मैं उसकी इज्जत करती हूँ ।

पर श्री एक्सी भाठ गोविन्दन भवतार ता नीलू की इज्जत नहीं करते । वह तो उससे प्यार करते हैं प्यार ! गोविन्दन हैम पडा और देख लेना चापद तुम्हारी और इरा की जोड़ी बनने से पहले ही मरी और नीलू की जाड़ी बन जाय । उम्र का अन्तर कम है या अधिक् यह देखना मेरा काम नहीं ।

तुम्हारा काम क्या है ?

वही जा तुम्हारा काम है । बस इतना अन्तर है उरूर तुमने अपना काम पहले शुरू किया मैंने बहुत पीछे । या यह कहो कि तुमने यह रहस्य पहले समझ लिया और मुझ इसमें देर लगी ।

बुछ बहोगे भी ?

'बह तो रखा हूँ । स्त्री चाहती है कि पुरुष दवाकर उसकी प्रणसा के पुत्र बांध । क्या मैं बुछ झूठ कहता हूँ ?

'भात तो अच्छी है । पर नीलू का समझन में तुम बिलकुल गलत कर रहे हो ।

'मैं तुम्हें अपना जादू सिखा दूंगा । क्या मैंने नीलू की बहुत प्रणसा की । उगने भी मुझ पर रोय शालन के लिए नीलो-नबिता गुनाफि फिर बगला बबिता का अनुवाद पढ़कर गुनाया । दोनों ही बकवास थीं । पर मैंने श्री गोविन्दर नामू के 'टस्ट' का प्रणसा की । मुँह और भ्रान्ति से उग बपाई दी । उगने मुझ पपाता गिलाया । सतरे और थोड़ू बक

म लगे हुए। भडा भा गया। यह एव कहानी पढ़कर मुझ मुनाने लगी।  
तमिन की कहानी है। नाम है 'सध्या की वना'। लेखक हैं रगनाथन।

तो तुमने उस कहानी की सी प्रशंसा की ?

बम न परता ? पर कहानी बुरी नहीं था।

गोविन्द ने वह पत्रिका सोनवर दिवाई जिसमें सध्या की  
वना का अनुबाण छपा था। कुछ पत्रिकाओं नीची पसिन् से रेखांकित  
थी जिन्हें शाय ऊंची धारावाह से पढ़ने लगा

हर मान उस दहाती नाटक में नवमी दाड़ी-भूछ प्राप्ति  
सगा हाथ में छड़ी ल घोर कुबड़े की बाल-बाल लिपावर बाह्यण  
नगमन का पाठ सन वा ह्व गिफ बड घर क मुत्त कुत्पन का हा  
था। यह चिन्तयन माना चम्पती क भय क लिए ही जमा हा।  
प्रतिबध सध्या का पात्र यही लिया करता था घोर रो घोर तमाशाप्यो  
क लि द्रवित बल म ता यह बजाड हा था। भासपास भाठों मोना  
दक उसका शाकालाप अपनी भाव जमा चुवा था स्या-वा उस पर  
एमा पयना वि बम सोच-सचक सह उठती। केहरा भी एमा मूव  
मूल वि सोप एव प्रत्यत गुत्तर पुवती ही समभ जत ।

यहाँ नीत्र का प्रमग कन गया घोर दोनों मित्र प्रारम्भ स हा  
यह कहानी पढ़ने स।

दगाण भारत की यह महज-मुदर नाँवा उन्हें पुनरित कर गई।  
ये नाटक-प्रभिनय दग की विरागत थ घोर उनका यषपन दधी वना  
के प्रांगण म घीना था।

घोर क्या-क्या बातें हूँ नीत्र स ? शग मुम्तरास।

'बास हन दान प्रूम। परत मुम्तिषाय के यहाँ पढ़ैव। यनी शान  
की बाव था। यही शगर प्राप्ति अपनी पनी रुबा क माप बटा गप  
होबना रत। मुम्तिषाय को कन कबतरा की प्रगत स पुग्गन  
नहा थी।

घोर क्या कर ?

नातू तो बरमोवा जान की जिन् कर रही थी ।

सूखती मछलियों की बन्बू सूघन । और क्या रता है बरमोवा म ?

वह बन्बू रही थी एक बम्बई म कई बम्बईयाँ हैं और उनमें एक छोटा-सा भी बम्बई है हमारी फिल्मी दुनिया यानी बम्बई का मोना-बाजार । वह मुझ बरमोवा से जाकर लिखाना जाती थी कि एक बम्बई वह भी है ।

वह तो तुम बरमोवा जाय बिना ही मान सकता था । क्या तुमने हमसे पटल बरमोवा देगा ही नहीं ?

दगा क्या नहीं बरसावा ? और इतीनिए मैं साफ इन्तार कर गया । मैं समझ गया नीलू को बरमोवा का सागर याद था रहा है और मैं उसे छुड़ ले गया ।

‘बहुत मजा आया होगा ।’

मैंने उसकी प्रशंसा का वह स्वाँग भरा कि लगता था उस भी किन्वास होने लगा था । तुम्हें याद होगा त्रिवेणी की घोर स पिछन त्तिना नय-नाटिका मछुमा और जन-मरी’ पदा की गई थी । हम तो उस नयन नहा जा सके थे । वह कहती रही—मछुमा शान्ति और सतोष का प्रतीक हैं और जन-मरी ठहरी ऐश्वर्य और बभर की दवी । जन-मरी ने मछुमा का अन्तरात्मा छीन ली । फिर क्या था यचारा बभय और विसाग के शक्वर म पड गया । शान्ति गई, सतोष गया प्रम गया । और उनकी जगह आइ पन-मन की ब्याकुलता दण-शण की घनक्ति और हमेगा का अहकार । दग नृत्य-नाटिका की कहानी की मुखी यह है कि मछुमा अपने पन्थ जीवन को पाने के लिए ब्याकुल हो उठता है । यही समय इस नाटिका की जात है । मैं धाराम ग मुन्ता रहा । जन-मरी तो तुम्हा बनी हागी ?—मैंने पूछ लिया और उसे मुस्करात देखकर मैंने कह डाला—बात ! मछुमा मैं बना होना !

‘तब तो वह प्रगल्भ हो गई हागी ?’

क्यों नहा ? मुना नहीं चापलूमा स मिश्रता और सचाई स गनुना उपजनी है । बल रात मुझ पता चला कि चापलूमी नारा का आहार है ।

आन ता मुम बहन दागिनव हुए जा रहे हा । यह मत भूत जाया गोविन्द कि बिना ने ठीक ही कहा है—प्रेम नाराजगी के समान छापी वाता का बनी बनाना है । पर एक का यत् बडा बनाना गगन व तारा का दूरबीन से ज्ञान व समान है सा दूरर का रागसा का सुद बीन ग यटा बनान व समान ! समझे ?

मरे हाथ में सा दूरबीन थी सुखान महा । नीनु का रूप में दूरबीन स ही ज्ञान मारा । यह दूरबीन है चापलूमी जिसम नारी तुम्हारी तरफ सरपन लगती है । बदन-बहने गोविन्द हम पना पहन में भी एकमी घाठ गोविन्द अवतार या अव नीनु का प्रमा । समझ ?

घोर क्या कह रहा थी ?

रा रही था—गोविन्द मुम मीना-वाजार वाता नवनी चहरा लगाकर नर पाग मत घाया करो । तुम ता उमन बिना ही अछे लगत हा । मैंन कहा—एगा न गनी नातू ! मरी सुगी लो तुम्हारा तुगी म है ।

किर क्या बोली ?

मुन्तराठी रणी ।

घोर किर तुम भी कुछ न जान ?

तुम जाना हा घन ! तुमन प्रम किया है । जब सागर हैम रहा हा जब प्रती गगन-जल पर घूम रहे ना जब जीन म विनाग जा रहा हा जब घाया की भाषा काम करन ना जब एक बलन्त म दूररे बलन्त ना जाने की गपप स सें दा मन ना किर कुछ बाने का नहीं रा जाता । सागर हैम रण था जब कह रहा हा—मैं तुम्हारा गंगा हूँ भिन्न ! गुत्तर धार करा घोर बपन ना कि तुम एक-दूसरे का पाता मना दात ।

मिरे जीवन म भी घाए हैं ऐस दाए गोविन्दन ! हमारी आवाजा  
को स्वर कौन दता है ?—प्रेम । हमारी चेतना म सहानुभूति का रस  
कौन भरता है ?—प्रेम ।

लहरा का मगीत सुनत बाह म बाँ बाले हम जुहू गागर-नद  
पर घूमने रह—इधर ग उधर उधर मे इधर ।

फिर क्या हुआ ?

नीतू वह गात गान लगी—बगाल का वही बाउत गान ।

दास बोना वही न—तोमार पय टाकाइया छे ! मैंन भी सीस  
रगा है उमंग वह बाउत गान । वह तो मुझ भा बहूत अच्छा लगता  
है । जसा कि नीतू न बंताया अपना रे के स्वर पर बगाल का बाउत  
घरमायस्या म बाक गायप धीर नतक बनकर स्वय अनह का  
प्रतीक बन जाता है । मदन बाउत रचित यह गान तो गुना है रबी  
नाथ टापुर भी मस्त होकर गाया करे थ ।

'बास तुम भी हमारे साथ हान दास !

य म न पहा । मैं यहाँ क्या करता ? जो प्रमिया क बीच न मन्दि  
बनना अच्छा है म मन्दिद । कने-कते गाय गम्भीर मुन बनाकर  
पठ गया मीर गान रगा

तोमार पय टाकाइया छे

मन्दिरे मन्दिदे ।

तोमार टाक मुनि सार्दि

घलते न पार्

दबाइया र्दिवाप

गुद ते मुरगिदे ।

इबाइया पान अग अहाप

पस तो पठ कोपाय दाइयाप

तोमार अमद सापन मरलो भदे ।

तोमार दुबाण्ड मानान ताता

पुरान कौरान तसबी माता  
 भल पलइ न प्रधान ज्वाला  
 बदिई मन् मरे सदे ।  
 [तुम्हारा पय ठरु दिया है  
 मदिरो ने मस्जिबों ने ।  
 तुम्हारी पुकार सुनकर, साइ !  
 मैं चल नहीं पाता ।  
 रोकर सड हो जाने ह  
 गुरु घोर मुरगिद ।  
 जिसमें डूबकर भग जड जाना चाहिए  
 उसीसे यदि जगत जलन सग  
 घोस, गुरु ! फिर हम कहीं सड हों  
 तुम्हारी अभद साधना भव भाव स मारी गई ।  
 तुम्हारे द्वार पर है धनक साता  
 पुरान कौरान तसबी माता  
 भय घोर सम्प्रदाय ही तो ह प्रधान ज्वाला  
 सब से रा रो मरता ह 'मदन ।]

गाबिन्ग बाला तुम्ह विन्यास नहीं हागा शग ! नीनु या बरी  
 बनी शीने डबइया सार्दे । उमन य गीत एक स अधिय बार गाया ।  
 बाउत क विग अस प्रम ही जायन है प्रेम नी ममार घोर प्रम हा  
 भगवान् । प्रम म स्वय को गा जना हा बाउत का साधना है । उतन  
 एक घोर गीत भी गाया था । घोर यह सधना टानरी खानदर गान  
 गया

तुमि सागर घामिई तरी  
 तुमि लसापार मान्ति ।  
 कूम मा दिया टुबाघो यन्  
 सान् घामि राति ।

[घोगो] तोमा हदत कूस कि  
बढ भरम कि घामार ।

[तुम सागर हो तो म हू मया  
तुम्हीं हो उसे सन घासे मांभी ।

किनारे न सगाकर तुम मुझ डुबाना चाहो  
तो भी मैं राजी हू ।

तुममें लो जान की अपेक्षा किनारा अच्छा है क्या ?  
क्या यह मेरा बड़ा भ्रम ह ?]

राज की घाँसे डबडवा भाइ । घोला हम इस भावना से बहुत  
दूर निकल आए हैं । देखा जाय ता यही सच्चा प्रेम है । पर हम तो  
इरा घोर नीसू व पीछे भटक रहे हैं । जिम मीना-बाजार में हम रहते  
हैं वहाँ घाँसे गान की घनन्द पुवार हम पर घमर नहीं करती ।  
मीना-बाजार तो हमारे मन में दूमरी ही तरह की मस्तिष्क बा-बो जाता  
है गाबिन्दन ! कभी-कभी मैं साधता हूँ हम वहाँ ठिकाना मिलगा ?

ता सन्यासी हा जाय । इरा से विवाह का विचार छोड़ो । मैं भी  
नीसू का ध्यान विचार करता हूँ । पर यह कैसे हो सकता है ? मैं तो  
कमयागी बनना चाहता हूँ । तुम्हें इरा मिले न मिल मुझे ता समझो  
नीसू मिन गई । घोणी बसर बायी है वन भी पूरी हो जायगी । उह  
में वही सागर है जो बरबना में है । नेद नना एव न्ति यही सागर  
हमारे प्रेम का साक्षी होगा ।

राज बोला घाँसे घाँसे बाने । ये घाँसे क्या कभा सख्त भी होंगी ?  
कभी घनवर वहाँ मजेदार बॉकी पी जाय । वह उठकर मुह-हाय  
पान बना गया ।



दुरा को पाए घा रही थी गग की बात जो उसने जान बिन महापुरुष  
का हवाला देकर कहा थी— लक्ष्मी का घाना नाचघर में भीड़ खट्टी  
हान जमा है उसका जाना भी भीड़ के विपर जान जमा ही समझा।  
घपल हा हा घाना निघन हान पर भी धनी रहगा और घार घपल  
नहीं हा घन-शीलत के रहस भी वह एकदम बगना है ! उन लता गग  
का पावर के निदान हो जायगी !

वह मौखिक का मूर्ति के सामने लक्ष्मी बर्षा करना जा रहा थी।  
दपल म उसकी रूप-भापुरी स्वयं उन भी घाज बितना प्रिय लग रही  
थी। बनाव सिगार ता जगता है वह साधवर के मुम्तदाई। लता म  
नारी की जीत है। दपल भूट नहा वासता। एक घालि खानर में जरा  
मुम्तदाई कम हनी पर गग मन्त्र हो उटना है। टार्नी उठार बनमिना  
म जगती घार दगूँ घोर फिर योग लजातर घालि भुगा मू फिर हा  
गजब हा जाना है। मैं दरा हूँ जनाब ! का एनी यमा घोरल नहा।  
यं तुम्हारी गुणकिम्बना है मिस्टर दग रि मैं तुम्हें नित द जाना।  
जरा टीत हा जान घारा बन्। फिर लपना रिग तरु सिन्ना घगकार  
घोर भैरवीन लमाग मबरे उदमा है। दरकर भाग जाना हा ता पदन  
का दा। तुम्हें वार्द नवान न। हाणी। मैं तुम्हारी बनीज बनकर  
रर यं ता घादर मुमकिन न हा। टार्नेकरों घोर प्रादुम्तरा का गुण  
रगना ना उठरी हाग मेरी मुम्तानें शाग के बन् मा जना तरु



तपनेंगी पक्ष की तरह ही । फिर न घुरा मानना जनाय । भीना-बाजार  
म ऐसा ही होता रहेगा ।

एक उबटती-सी नजर से माँ-बेटे की मूर्ति देखकर वह फिर कभी  
करन नगी । उसकी स्मृति की खिड़कियाँ खुलती गइ । पास वाली छलमारी  
म उसके चाहत वाला ये छमस्य पत्र पड़े थे फाइनों म सँभालकर रख  
हुए । उसके अभिनय की प्रगसा में नूनिया के हर कोने मे पत्र आते रहत  
हैं । उसने साचा विवाह के बाद भी इन पत्रों की कडी तो बन्द नहीं  
हागी । क्रिस्म क परते पर मैं बसे ही मुस्कराया बरूँगी । बसे ही लोग  
मुझे पसन्द करेंगे । बस ही कहेंगे—क्या रूप पाया है ! क्या नगरा है !  
य नाउ य अदाए य सब दुरा पर खत्म हैं ! बम्बखन शोल दुरा ! जादू  
गरनी ! अगडाई नेना तो काई दुरा स सीखे ! 'उसने कधी करत  
करन मन-हो-मन अपने इन प्रगसवा का सम्बोधित किया—शादी करने  
पर भा मेरा अभिनय मरेगा नहीं । मेरा रूप ता घौर भी निखर जायगा ।  
अभिनय जादू है तो शादी क बाद भी यह उषी तरह सिर चढ़कर  
वोचना रहेगा । घो मरे प्रगसको मरा अभिनय तुम्हारी पूजा म पण  
धु पण धाँप नावेगा जमे भीरा नाचो घो अपन गिरिधर क रामन !  
पर मेरे प्रगसको मुझ माप कर दना । मैं शस म विवाह करत जा रही  
हूँ माकि हमाग प्रेम एव गप धनकर ही न रह । विसो न कहा है  
न—अपनी भूना का ही लाग अनूमव का नाम द निया करत हैं !  
पर मैं तुम्हें विवाम निनाती हूँ मरे प्रगसको ! मैं कोई भूत करन नहीं  
जा रही हूँ । विवाह का मैं भूत नहीं बढूगी जीवन मर । घौर  
उगकी दृष्टि माँ-बेट की मूर्ति पर जम गई ।

मकरे की ठण्ठा-ठण्ठी हना धाँप रही थी । उमन गिडकी से मापर  
पी धार गया । नरामान पाँदृष्ट तव उगकी दृष्टि फिनतती घनी गई ।  
उमे लगा उगना कोई प्रगसव बूध रहा है—'बाप पी लो दुरा ? घौर  
ब मुन्नराकर कपी करती र्हा । दणए भूत नहीं धारता । दण तुम  
धारद धान सुन्नर हा । जसे यह दणए की नहा, कियी प्रगसन की

आवाज हा—तुम कितना मुलकण्ड हो इरा ! घरे तुम्हें इसना भा बना नहीं चलता कि चाय का बत्त हा गया । घोर फिर उसे तगा कि उसन किमी दूसरे प्रससन का आवाज उसके कानों के पर्णों पर थाप लगा रहा है

ऐड इन ऐड आउट, एबव एबाउट बिलो  
इम नथिंग बट ए मजिक गडो गो  
प्लेड इन ए बाक्स, टून कडिस इन दि सन  
राउंड दिघ वी पाटम फीगम कम एण्ड गो !

उमर गजाम की खाई का यह धनुवा इरा को बहुत प्रिय था । पर इउ गमय जब वह राग म विवाह करन की बात सोच रहा थी खाद की भावभूमि उसे झपटी सी लगी—घोर घदर-बाहर ऊपर नीचे चढ़े पार जादू क एक छाया-नाटक क सिवाय कुछ नहीं है जा मेता जा रहा है एक बसम म जिगम मूरज का दया रागन है जिस के चढ़े घोर हम छाया आहिनियों-न घूम घूम जात हैं । क्या प्रम भी मात्र एव छाया है ? नहीं नहीं नहीं ! इरा मात्र चिन्ताकर बहना पाहती थी—प्रम ता महा मय है । बांगुरी-नी बज-बज उटना है प्रम योना । उमरी कल्पना में उमने प्रमकों की छाया आहिनियाँ घूमन लतीं । आहिनियाँ बान रही थीं—तुम इरा हा । हम जानत हैं तुम एन पताना-ना घूम घूम उटना हा ।

इरा न दरग म बह—तुम नट नहीं बोलत ! गन्त घुना-फिराकर उमन पाद बान स्पगु म धरना न्न का पिछता भाग लगी । यह है दो दरगा का जादू । उस लता क्लेश घोर कतमान भी दा दरगों का जादू है । गान है गल्पित है । कतमान क स्पगु में धरना भी दगा जा सकता है । धरात का मारा जना-जवार मित्रता तुनना मगर के माय-माय पने ए नरदिन-भाण्ड घोर उत घुनाकर मार का सरों म खेलना हवा । हवा तो क्या है । क्या धरात का कतमान ! धरात क कीर्ति चिह्न ता पामन का दूध जउ है । मता किम काति-चिरु म

वनमान गुरू है मिस्टर गल ?—यह सवाल तो इरा पूछ ही सनती है । दखना विवाह के बाद मुझे अभिनय छाडने को मत कहना । बभन पोखर के पास हम चलेंगे, पोखर के जल पर मुस्वान बिबेरते पमल तो हम फिर भी देला करेंगे । फिर भी तुम एक बमल मरे पूडे म खॉन सकागे । पर मिस्टर धग्य मुझे अभिनय छाडने को न कहना । अभिनय ही मेरा जीवन है । अपने प्रगसका को मैंने जा बचन दिया उस तो मैं निभाऊंगी ही ।

मगान का पुरजा विगड़ सक्ता है मिस्टर शख ! हमारी गानी ठीक बनगी । दादी तो एब ही धार की जाती है !

वसे तो मैं जानती हूँ कि तुम्हारे जसा पति मुभ मिल ही नहीं सक्ता पख । हम एब न दो हो जायेंगे धीर दो से तीन

मुकू किसी डाइरेक्टर या प्रोड्यूसर क माय हँसत देखकर अपना निमाम मत बिगड़ने देना । भपडा मत करना । अपना गनाप जो जी में भाय बनना मत । खुगफिस्मती समझो मैं तुमस धानी बन जा रही हूँ । मरी मोठी हसी के लिए ता बम्बई का मीना-ब्याजार तरपना है । अब वह तुम्हारे लिए ही होगी । पर ऊपर से ता सबके लिए मुम्बराना होगा । यही ता दुनिया चाहती है । लफा मत हाना । मुम्बल सता मत रह मिस्टर शख ! फिर ता गानी बलेगा नहीं तो हम दानों ही रोयेंगे धाँसों पर हाथ रखपर । हम रोयेंगे नहीं । हम दुनिया को अपने ऊपर हमने नहीं देंगे ।

हम मिलकर गुण-दुल की सार्ने किया करेंगे तिन निम जीवन का रस सेंगे । मुकू बिगा क गाय हँसत दग्यकर कतज को मत पटने देना । सागा को छो-छी मत बटने देना । ग्या मिस्टर ! परल म समझो । धानी कोई जार-अबरदस्ती ता नहा है । मिजाज टग्ग रसना जगा अब है । तुम्हारे शाल स्वभाव ने ही तो मुकू मोट लिया है ।

पगा तो अभिनय करने से ही मिलगा । पसा जगरी है । पम क

बिना गाड़ी नहीं चलती । बमायेंगे नहीं तो गायेंगे क्या ? खायेंगे नहीं तो जीयेंगे कम ? जीवन है तो प्रेम है ।

कधी बरत-बगन उमने हाथ रुक गए । फिर वह साफ पर बठकर अपनी हाथरा पहन लगी जिसमें कुछ पान बन ही थाय ने अपन हाथ स लिम हान थ घोर कह गया था कि यह दस-दस व महापुरुषा की इन मूर्तियों की पढ़कर उमव विचार समझ सबती है

—अच्छा स्त्री व माय विवाह जिन्ना व तूफान म बन्दरगाह है चुरी स्त्रा व माय बन्दरगाह म तूफान ।

—विवाह व प ल अपनी भाँख गूब पुती रमो सादी व चाण प्रापी बन्द ।

—विवाह जफर करना । अच्छी पनी मिलगा तो सुनी हाग घोर मराय ता तस्वगानी । प नी क्या कराव है ?

—घाज हम जिम विवाह कहत हैं वह विवाह नहीं उसका घाड म्वर है । जिसे हम भाग कहत हैं वह अष्टाचार है ।

—नारी सत्ता का मार है ।

—नारी पति का मारती नहा है पर नारी का मित्राज पति पर हड़मौ करता है ।

—यह एक राय था किम गापु पुरण का मैं नहा जानता कि दुनिया म कवा एक अच्छी स्त्री है घोर जगता मत्ताह ची कि हर विवाहित घादगा का मायना ताहिए कि उमकी पना ही वह स्त्रा है ।

—प्रेम स्वयं का सम्पा है ।

—मब-मुद्द प्रेम की गानिर घोर बान में कुछ नहीं ।

—प्रेम म हम गव ममान कर म मूर है ।

—प्रेम की भाषा धाँगा म है ।

—जिम प्रेम का प्रकट न किया जा सव दत मयम पयिम है ।

—दू-गों म प्रेम करना स्वयं करने काय प्रेम करने क करावर है ।

—प्रेम घोर पुमी छिन्न म । वा म्म ।

—प्रेम समय को गुजार देता है और समय प्रेम को ।

—प्रेम भौंपड़ी को साने का महान बना देता है ।

—जीवन एक फूल है प्रेम उसका मधु ।

—प्रेम वह सुनहरी जजीर है जिससे समाज परस्पर बंधा हुआ है ।

—सफ़ाई का माग बुद्धि से नहीं प्रेम से ही मूमता है ।

—प्रेम प्रत्यक्ष बात में विश्वास करता है आगराएकर प्रत्यक्ष बात सहता है किंतु प्रेम कभी असफल नहीं होता ।

—प्रेम में असम्भव सम्भव हो जाता है ।

—प्रेम सबसे कर विश्वास घोर पर कर तुकसान किसी को मत पहँचा ।

—प्रेम की ज़ापा सबकी समझ में आती है ।

—अगर तुम चाहते हो कि लोग तुममें प्रेम करें तो तुम प्रेम करो और प्रेम बिय जान योग्य बना ।

—धनवान होना अच्छा है धनवान होना अच्छा है पर बहुत स मित्रा का प्रेम-पात्र होना और भी अच्छा है ।

य मूर्खियाँ किसी एक पुराण या स्त्रा में लिख नहीं थी य ता मभी के लिए थीं । किनी एन दग के विवकील प्राणियों न ही इनमें अपना अनुभव नहा उठेगा या इनमें ता एग एग का मुग-मुग का विवेक कीर उठा था ।

माँ की धाराज आई इग नान्त क लिए नहा धारोगा ?

चाय की मेज पर दूरा बनहागा हँगती रही । माँ चौकली-सो पारर बोती धान कसी दोना हाथ धा गर् ?

किर नीच से दग जीना बदन-बदत हाँगता हुआ-सा था पहँचा ।

म भी गान चाहिए यह बाता ।

गाय पीत समय वह एक्टर दूरा की धार देगना रहा । धात्र उसे नीदरगता दूरा बान्त मुदर सग रही थी । कानों में गाने क भुमक धाग दग डोप जाने जैसे व दूरा क विचारा पर तात द रहे हा ।

इस ता बार-बार उमना बार बारकर उसके प्रेम का उत्तर द रही थी ।

इस आज ना तुम बहुत सुन्दर लग रही हो ।

इस हम पडा ।

मौ बानी अपनी सज्जना प्राप्त करा गन बना । हिम्मत मर्ना  
मर्ना गुना ।

और गग चीर छोडकर माने लगा ।

चीर के अरुदा गार्डि पत्र नहा वह मुन्दराया ' नुम्हिन यहा है  
वि इन भी छावना पडता है । वसे प्रेम भी छो छिन्नक व नीचे छिपा  
रहता है ।

इस पर इस और ना गप नाप हंस पडा ।



शम्य का सिपागा एकदम ऊँचा उठ रहा था। इरा का प्रम उसका स्वागत कर रहा है यह बनी बात था। प्रम का सलाल पता चल जाता है। प्रम हर विचार को सँवार निखारकर पग करता है। सुदर भावति और भी सुदर नगन नगती है। इरा सगमरमर का मूर्ति-नी हा तो नग रहा थी। उसका मुग्धमण्डल कमल जमा खिल उठा था। इरा का उपस्थिति में उस कितना रम भाना ! इरा उस मितनसार समभता है उसका समभ म यह बात ता कब की था चुकी थी माना वह उगके और अपन प्रम का तराजू म रखकर तान चुका हो। मुझ सब अपना तन-मन इरा को ही समर्पित कर देना चाहिए यह साचता इरा अच्छा है मी म नहीं हँडार म भी उस जसा सुदरी मिलना कठिन है।

मानो सब रागिनियों म इरा हा परम सुन्दरी हो। उसका गम्भ और व्यावहारिक मनोवृत्ति न उस माह निया था। कहां भा तो गुरुपता कपवा गुरुचि का इगिन न था। सब-नुद्य मन्त्रिपूग था। यमउपूग भजन धातिव्य प्रब-भायना खानदानी जायनाद स्याति—इरा क पास गव-नुद्य था।

मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का वाता है। इगम ता काँ असगति नरी। प्रम मन का परम गस्वार है। प्रम स ही मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हानी है। प्रम हा परम भान है परम उद्दीपन है। यह इन प्रमग पर कस ही गाच रहा था जमे उसकी सार्थी दुँ मगुलियाँ बीणा पर पगती था।

दर में कितना उत्साह है कितना स्फूर्ति ! आनन्द-विभार ही-ही उठती है छानियाँ बजाती है झंझा में झंझें डालकर दबती है । बाल-बाने बाल लम्बे और पुष्परीन जूझ बांधती है तो मरा जिन हाथ स निबसने लगता है । माँ-बाँ की मूर्ति न उन मोह लिया । यह सब उमीका जादू है । चिरञ्जीवी इरा तुम धय हो ! उसे इरा क छोटा की यात्रा घा गई । इरा का आनन्द-वचान कितना आश्चर्यजनक है । यात्रा है तो बाँसुरी-आ यत्र-यत्र उठती है ।

नरीमान-माँइए पर पूनम क ज्वार भाँटे का खेत दखना गम नये उचरकर धरा रहा । जो रागिनी हमें अच्छा लगता है उस हा हम गन और मुनन हैं उसन घोषा सी चमत्कारों का एक चमत्कार यही है कि इरा मुझ अच्छी लगता है । उगन मुन्दर काँड दूनरी ब्या नही होगी वध्वद में । वह स्वयं मुझमें प्रेम करती है । चमत्कार ! रागिनी स्वयं गावव से प्रेम करती है । गीत्य प्राग प्रतिष्ठा करता है ।

उग यात्रा आया आज गवेर जब वह इरा क यही गना था ता इरा ने आनन्द हाथ म एक आँसू छीनकर उगव मुह में डाला था ।

सागर की गहरे नरीमान-माँइए स टरग रही थी । उग माच रहा था इरा क पनट का बत्तियाँ जन रहा हैं । क आनन्द कमरे म बटा बुद्ध पड़ रही होगी गावव वट यही पड रही होगी कि आँ की निरखें सागर मयन करने की दामना लगता हैं । वह पड़ रहा हाँ कि जब मनुष्य प्रेम करता है तो वह किसी दर-मूर्ति म कम नहीं हाता । यह पड रहा हाँ कि जिन की आग म आग को घुमा पडता है । सागर स यही आँ है आशा आशा म जो बटी थी है मनुष्य का आत्मा— का गूँठि नी तो इरा ने आँसू पड़ रमी होगी । आज गवेरे जब मैंने किर्गी का यह शोध हुआया दुनिया में कुछी आँसू नहीं हैं ! ता उग आँसू मरा और देगा जन हाँ आँसू प्रति प्रबट कर रही हो । ता क्या वह अपनी और मरी आत्मा का कुछी मयनन लग है ?

आँसू गवेरे आँसू पीउ-पीउे मैं इरा म पूरा क्या मुझे किर्गी



विवशशून्य प्राणी का यह यान पसंद नहीं—'एव आनन्दमय मनुष्य स मिलना सो रुपये का नाट पा जाने स अच्छा है ! तो वह गम्भीर मुह बनाकर बठी रही जैसे यह बात उसने गस न उतर रही हो ।

मैंने कहा—इच्छा से कुछ आता है ! वह हसकर बोली—क्या मेरी इच्छा पागल की बड़ है ? मैंने कहा—जो लोग इतिहास के प्रसंग बनते हैं उन्हें इतिहास लिखन का भवकाग नहीं होता ! वह कनकियों से दसवर बोली—आजवन सूक्तियाँ रटी जा रही हैं तात की तरह ?

आज दिन के समय मेरे साथ घूमते हुए दूरा ने वह दिया कि उसका प्रेम मुझे समर्पित है । मैंने भी खोजती आंखों में उसका मन में भावन का यान किया था । तो क्या मैंने दूरा को जीत लिया ? यह मेरी जीत है या मेरे सगोत की ?

पूनाम रश्मिया ने सागर की नहरा में जो उष्यन-शुषल हा रही थी उससे बनी अधिव मादक-सी अनुभूति क्षण के दिन और निमाग को नकभोर रही थी । प्रेम भी विलक्षण वस्तु है । 'जीवन की सबसे प्रबल भावना है प्रेम । यह बात दूरा के मुह से निबन गई आज । और दूरा उत्तर में मैंने कहा प्रेम करना न बन सहज था न आज । वह फिर बोली प्रेम का कारण ही इन्सान का भविष्य है ! प्रेम का बिना कुछ नहीं क्योंकि प्रेम के बिना न जीवन है न भविष्य ।

आज न जान क्यों दूरा मेरे बचपन का बाते पूछती रही और यह भी भात्रुम करती रही कि मेरे पिता वह माँ-बेट की पीतल की मूर्ति बने बनाउ हैं । यह भी पूछती रही कि गाबिन्दन इनना चतुर का है और मैं बड़े भोली प्रकृति का हूँ । वह गुरुर्य के बारे में भी दर तक पूछता रही । उनका आत्मबन्धा की साहित्यिक विवेकतामा पर उन विलम्ब करती रही । शायद यह मुझ समझने के लिए हा यह सब पूछ-सुन रही थी । कभी मेरी मगाल-साधना की प्रशंसा में या पाला कभी यह यह कहकर गम्भीर हो जाती—'राग राउ ना है हगते भी हैं ! फिर वह मुझ समझती रहा — मर निम पथर का नहा है । बाहर में सदा

## दूध-गाछ |

हँसता रहता है भातर स भी रोती है। मैं हँसता हूँ रागिनी नहीं रोता  
 हूँ रागिनी हँसती है। मैंने हमर बजा तुम्हारे रोने से मर राग भा रात  
 मरेंगे।

इस का आत्म-विवागबुद्धि मन्त्रित मुख मण्डल इस समय उमका  
 कल्पना को छूटूँ जाता था। उमने पूनम क चाँद की धार दगा सागर  
 की लहरा का गजन-तजन मुना। दग हय का बन्न बाग दगा था।  
 उम उन माग्नाडा और गुजराता मठा का ध्यान घाना जा सट्ट क  
 बाजार म राया कमान य और फिर इग म्पद म बम्बई क माना-बाजार  
 म विम-कम्पनियों की गंगा म पट्टाज हागत थ। पन का जोर तोड़  
 नेठ का काम था। एस्ट्रना का म्प-भापुरा क रनिया थ सेठ। मीना  
 बाजार का म्प-राय में मठ का काट्ट न कमे न रहता ? इस म भा य  
 वात नूती हई न। कि सेग का याने उवान याती जाता है।

तुम्हें दग्धर तुम्हारा बाते मनकर मरी मन-धीणा क नार वज  
 ल्कन है ! इग न घात्र क्क हा ता थिया। मैंन मय दग्ध-मन थिया।  
 प्क दगा क्कना घाना था रि सेग वाने किना मठ का ठरह उवान  
 काना नहीं है।

इग घात्र बन्न प्रमन्न था। राग रागिनियों की धाराधिया म उतरन  
 के लिए घात्र उमा न पन्न की था। घात्र म पट्ट क्कना उनन राग  
 क्कनियों क बार म क्तनी क्कनमा नहीं थिया था। घात्र उनन  
 यात दग्ध-राग नू म बध हूण थ। घात्र उतरा क्कनता किना  
 मुग्ध मग रगी था। उमन सेग थिया है रि मैं मग्ध-माग्ध घात्रमी क  
 गादिन्न की तरह बगुन नहीं। मुग्ध गादिन्न न घाघा क्कनुरा  
 ना हवा ता गाग्ध-राग न मुग्ध टुहरा थिया हाता।

घात्र क्कबर का जन-मन करक हन क्कनिराग्य कद का याग पर  
 क्तन थ। गीत का गाना दगा गाया थिदुक्ति क पम क्कनर।  
 घात्र की घात्रा क्कना मैं क्कना नून ग्कता हँ ? इग का म्हूत्र गीत  
 मुग्ध मुग्ध क्कनगा। चिन्ता क्कते हँ ! उमन मुना हँ गाग थिया

घोर साना की प्रेम-बधा क्या मैं कभी भूल जाऊंगा ?

दोपहर के समय शारी मियाँ और सोना की बधा सुनाई दूरा ने । साहनी रागिना के रमिया थ घोरी मियाँ जा घाघी रात की रागिनी है । वह कहती चली गई थी शारी मियाँ मुनतान थ थ और उन्होंने टप्पा ईजाद किया था । सरनऊ का नतका थी साना । मुनतान से चलकर गारा मियाँ लखनऊ आय । साना का ख्याति सुनकर आय थ । उसमें मिल तो प्रेम हो गया । लागे न साना से कहा—घोरी मियाँ तुम्हें दिन न प्यार करने हूँ तो तुम उनसे कहो अपने सीने पर गरम-गरम लवे बाँधकर परीक्षा दें । शारी मियाँ न यह बात मान ली । गरम-गरम लवे बाँधने न थ मर गए । उनके पीछे साना भा पागल हो गई । बहुत न लोग थ मानते हैं कि साहनी के ये पञ्चाषा भाषा न बाल शारी मियाँ न ही रच हुए हैं जिन्हें उत्तर भारत के गायक आज भी गाते हैं ।

उसने सोहना के बोल मेरी डायरी में नोट कर लिए थ

जा वे मियाँ केहीयाँ कीसीयाँ  
तू साइड नास घुराइयाँ ।  
असाँ हस्त हस्त लइयेँ नास  
घरल्लीयाँ लाइयाँ । जा वे मियाँ  
[ जा रे मियाँ, कसी की  
तमन हमारे साथ घुराइयाँ !  
हमन हरा हस्तकर तुम्हारे साथ  
घाल सगाई ! जा रे मियाँ ]

घाघी रात का समय तो नहीं हुआ था । एक बीठा सोहनी का यह बान घनापना रहा । डायरी में घन्टा के घण उसने लिख लिए थ । घण ता लगता था जम वह अपनी ही भाषा में रागिना गा रहा हा ।

यह गोचने लगा—दूरा ने आज घोरी मियाँ और सोना की बधा मुझ क्यों सनाई ? गायक वह यही समझाना चाहता था कि घण गरम गरम लवे मान ने बाँधकर परीक्षा देने का मुझ बात गया । मैं भी ता

घपने पारी मियाँ का पाला खाता है दसा जावन में ।

व न मनमुगध-सा बठा रहा ।

पूनम का चाँद मुस्करा रहा था । सागर की लहरें मानो घपना भाया म कह ना रही हों—यह घन्टा इसा सागर म बाहर निकली था ।

उमे दूरा का बाद मतान लगा । उसने पूनमर दूरा के फलट पर नडर गली । वनी गोगना था । क्या दूरा अभी तक गाई नहीं ? दूरा भा क्या यग नब माच रहा हाणा ओ में मीच रहा हूँ ? दूरा क बाल रेगम के लछे हूँ । मीने उन्हें छूकर देखा है । व चान्ती है हम एक स दा हो जाय और ग से तीन वह भाग कुछ न मोच सया । पूनम की निरगो मस्कराती छ। सागर की लहरें उमा तछ नरीमान-पाँद क पघरों स टकरानी रहा ।

दूरा के स्वर म आज कितना उजार चढ़ाय था जब वह लविषग्य वय की विपूति क गामन पडी मुनमे बातें कर रही था । घोर भी दगक मीनू था । आज दूरा कितना सुन्दर लग रही थी उमरी घानों का घोर ही नापा धान रहीं था ।

मैन गाफ-जाफ कह टिया—दूरा मैं सुन्तारे जिनना गितित नहा हूँ । गाफ मैं सुन्तार पाप्य मिट्ट न हा सखू ।

व बागी—गिया एग ग तछ की नरी हाता । तुम घाना गिया की बमी पूरी कर चुने छ। गग ।

मैन कहा—हम जगी न करें । पूरा विचार कर सें ।

व बागी—मैन ना कब विचार निया । मारी बान सोव सा । हम एक म दो हात ग दुनिया मरी रात खना । हमारा द्रन गितारव है ।

मैन का—सुन्दर चीज तो सुन्दर ही टगी है ।

व बागी—सुन्दर भा घोर पवित्र भा । मैं सुन्दर घच्छा तरह समझी हूँ गग ! क्या तुम मुन्द नहा गमना ?

मैन कहा—गमनना क्या नहा मैं सुन्दर वस ही गमना

हैं इरा जस में निम्नी रागिनी को समझता हूँ। और जब भी रागिनी न गुड़ स्वर लगाये जाते हैं तो यह पवित्र होती है।

यही तो मैं भी समझती हूँ। चिरकाल तक खलेगी हमारी कहानी। हम एक-दूसरे के साथ पाय करेंगे। हम निर्माण करके जम बलशाली हाथों ने और विवेकशील निम्नाग ने सभी यह विभूति बनाई थी।

मैंने कहा—क्या यह सच है इरा कि प्रेम आदमी को निर्माण शील बनाता है? यह कसो अनुभूति है? सच्चे प्रेम में सभी नू-नू मैं-मैं को नौबत भी धा सपती है यह मेरा जिन न। मानता इरा! यही देयना होता है कि रागिनी में उगीन सच्चे घर स्वर लग रह हैं।

रट बोली—भविष्यवक्ता होती है सच्ची रागिनी। वसा ही प्रेम है।

मैंने कहा—सभी और देत लो इरा! कहीं जल्दी में भूम न हो जाय।

वह बोली—मैं निम्नी किलम के पाण्डुपत्त पर साइन ता नहा कर रही। मैं कोई सौग नहीं पटा रही।

सहें और पूनम की चाँदनी थी। सागर अपनी माखी में बाल रहा था। राग सहरा से बाते करने लगा—इरा का स्वर प्रति मपुर है। और दग के मपुर स्वर में एक राग गहरा है सागर की सहरो। यून जल हम एक स दा होकर रहेंगे।

उसने चाँद की ओर देखा।

चाँद माना स्वीटनि में मूसराया।

सागर की सहरो हम पढी।

'क्या मेरी भानों में तुम्हें कोई भयगति दिखाई दी सागर की सहरो?'

सागर का सहरो फिर हँस पड़ी।

मैं इरा के प्रेम करना हूँ सागर की गहरो! दग माना-बाजार



हूँ इस जग में किसी रागिनी को समझता हूँ। और जब भी रागिनी न गुड़ स्वर लगाये जाने हैं तो वह पवित्र हानी है।

यही तो मैं भी समझती हूँ। चिरकाल तक घनेगी हमारी बहानी। हम एक-दूसरे के साथ याय करेंगे। हम निर्माण करेंगे जम बलगासी हाथों ने और बिबेकान दिमाग ने कभी यह त्रिमूर्ति बनाई थी।

मैंने कहा—क्या यह सच है इस कि प्रम घातमी को निर्माण दीम बनाता है? यह कभी त्रिमूर्ति है? सच्चे प्रम म कभी तू तू मैं-मैं की नौबत भी घा सपसी है यह मेरा तिल नहीं मानता इस। यही श्रमना होता है कि रागिनी म उमीके सच्चे गरे स्वर लग रह हैं।

वह बोली—नविष्यवकता होनी है सच्ची रागिनी। क्या ही प्रम है।

मैंने कहा—प्रभी और देम तो इस! कटी जन्मी म भूत न हो जाय।

वह बोली—मैं किसी फिल्म के फाण्ड्रक पर साइन तो नहीं कर रहा। मैं कोई सांग नहा पटा रही।

चहूँ मार मूनम की घातनी थी। सागर अपनी वाली में बोल रहा था। शम सहरा स बातें बरन लगा—इस का स्वर घनि मधुर है। और त्रा के मधुर स्वर म एक सास गहराई है सागर की सहरो! बहुत जल हम एक म दा होकर रहेंगे।

जगन घात की घार दता।

घात माना त्रिमूर्ति म मुस्वराया।

सागर की सहरो हँस पडी।

क्या मेरी बातों म तुम्हें कोई प्रगति दिताई तो सागर की सहरो?

सागर की सहरो फिर हँस पडी।

मैं इस के प्रम करता हूँ सागर की सहरो! इस माना-बाजार

म रहती हुई भी मीना-बाजार म खो नहीं गई । वह उसस अलग है । हमारे बीच कोई दीवार न होगी—न बनावट न धोखाधड़ी । हमारी भाषा शान्तातीत को पकड़न का जतन करेगा । एक-दूसरे को घन्यदान देने की जरूरत न होगा । इतिहास के पदचिह्न कोई नहा मिटा सकता । सावना फलवती होकर रहती है, ऋतु-चक्र की तरह चलती है । सुन रही हो न सागर की लहरा ?

सागर की लहरें फिर हंस पड़ी । रात आधी स ज्यादा बीत चुकी थी । गल्ल उठकर खड़ा हो गया और अलसाई झांखा और थके परों से मरीन द्वाइव की ओर चल पड़ा ।





## शोलह

जयन्त ने पुष्प का भागी होने की टान ली थी। इरा और सल की जोड़ी बनने में अब अधिका देर न हो इसके लिए उसने एक स्वीम बनाई। उसकी कोशिश थी कि बात अभी छुन जब विवाह हो जाए। इरा हमारे महमान तन दबी रहेगी डालिंग ! उसने अपनी पत्नी में बना हमारा तो नाम-ही-नाम है। यह जाड़ी हमारी फिल्म अपनी का ही पहल किया करेगी।

पर हम स्वाय की दृष्टि से ही क्यों देखें ?

स्वाय की धारती उतारने वाले हम अक्षत तो नह। बिजनेस की बात तो देखनी ही पडती है। यह आत्मा के पावर में बिना है यह फर्मन डालिंग !

आत्मा के पावर की भी एक ही रही। उसकी हम पत्नी गर छोडो यह बात। हम अपनी विचर का काम अब धरुन से मुक्त करना चाहिए।

विचर का नाम तो मैंने गोच लिया।

क्या ?

'जान'घर।

जान'घर ठा पत्राब का एक नगर है न !

तो तुमने नगी गुनी जान'घर की पत्नी ? यह एक प्रति पगानी रागम हुआ है। गिव के सृतीय नेत्र की अग्नि में उगसा जन्म

न्मा था ।”

‘वह कन ?’

गिव क दानाय एउ वार इन्द्र बन्ना गय । वहाँ एक भयकर पुम्प वन देखा । इन्द्र बान—तुम कौन हा ? उत्तर न पाकर इन्द्र न उम पर वज्र प्रहार किया । इन प्रहार म उस पुम्प का कण्ठ नीला पड गया ।

क्या स्वयं गिव ही था वह पुम्प ?

बिनकु न टोक । हाँ तो वज्र-प्रहार स गिव का भाव स्थित तृताय नेत्र भी खुल गया और अग्नि की ज्वाला निकनकर इन्द्र का भस्म करने लगा । इन्द्र अपना रक्षा क लिए प्रायना करन गये ।

‘बडा मुँ कल न वच हाण । पर तुम ठा जालघर का तथा सुनान चल थ ।

‘सुना ता । गिव न वह अग्नि सागर म फेंक दी । उसस एक बानक उत्पन्न हुआ । बुरा तरह रान गगा वह बानक । सारा नगार बहरा हान लगा । बानक का रक्षा हनु ब्रह्मा भाय । ब्रह्मा न उस गान म न लिया । बानक न इन जार से ब्रह्मा का मू छ खीचना गुस् की कि ब्रह्मा का भ्राँखों म पाना भा गया । ब्रह्मा न उसका नाम जानघर रखा और वर लिया कि गिव क अतिरिक्त उस काइ नहा मार सकगा ।

जय जालघर ! उवगा हँस पडा ।

एक मत यह भी है कि जालघर की उत्पत्ति गगा तथा सार न मया म हुई था । पना हान ही जालघर ब्रनाकय नग भयानक स्वर म गेन लगा । ब्रह्मा ने उन अमुरों का राज्द लिया । फिर जालघर न इन्द्र का परास्त करक शृन्गा नामक कया न विवाह किया ।

‘जम थाव इरा स विवाह करगा । उवगा फिर हँस पडा ।

‘जालघर क अत्याचारा स तग भाकर दवताओं ने विष्णु न प्रायना की । तमी रोक्ता रहा पर विष्णु गय । बडूठ अग्नि तक मुड चया । अन्त म प्रगल्भ हो विष्णु बरदान करक चन भाए । यहाँ

म जानघर की क्या म एक मोड़ आता है । जालघर न नारद स पावती की गुत्तरसा सुनी और उमक मन में यह इच्छा बलवती हा उठी कि पावती का छीन लिया जाय । निगुम्भ गुम्भ कालनेमि आदि राक्षसों को माय स जानघर ने कलाग पर धाया बोल दिया ।

विवाह की इच्छा कितनी बलवती होती है !

गिव की सना म पार न पाकर गाघर्षी विद्या से गिव को मोहित कर स्वयं शिव रूप धारण कर जालघर पावती क पास गया । पावती को पता चन गया कि यह राक्षस है । यह गुप्त होकर विष्णु की धारण म चला गइ । जालघर को बरगान था कि जब तक उसकी पत्नी का पनिव्रत धम थायम है कोर उसे मार नहा सवेगा । विष्णु ने जालघर का रूप धारण करके जानघर की पत्नी का सतीत्व नष्ट किया । पता चनन पर बुन्दा न विष्णु का ढाप दिया कि प्रता युग म उनकी पत्नी रागम द्वाग भपहत की जायगी और वह बन-बन भटकन फिरेंगे । बुन्दा न धयन प्रति को प्राप्त करन के लिए एक स्थान पर बठकर और तपस्या की । उम स्थान का नाम बुन्दावन हो गया । एक बार बुन्दा को जानघर क गान हुण और घत म विष्णु न चक्र म जानघर का सिर घड स धनग कर दिया । जहाँ जानघर गिरा वहाँ तक म्पूव तेज प्रकट हुमा । वह तेज भी शिव के तेज म मिन गया । बुन्दा घग्नि म प्रवेग करे इसके मिथा वह बचारी कर ही क्या सकती थी ? कहो कैमा रहेगी यह क्या हमारी धयनी किम के लिए ?

'ता तुम भी पीरगिक विन्न यनान की सावन लगे ? यह काम तो और बहुत म सोग कर रह हैं । मैं पूछनी हूँ इसम गिद क्या होगा ?

पसे धायेंगे घडाधट । और क्या गिद करना चाहती हा ?

'जगी कशानी यग गाने । इगम दरा को घृदा की भूमिका म पग करोग क्या ? मैं तो माय भी नगी सचता कि रक्षघरन इग तरर की किलम म मगीत न्न को रात्री होगा ।

कना जब जानघर' नाम कना रहगा ? वाली जानघर तो

ठीक नहीं रहेगा ।

नाम का सवाल नहीं । नाम तो लिफाफा है । मैं पूछता हूँ लिफाफे के भीतर छिप्टा क्या होगा ?

ता तुम्हारा क्या सुभाव है ?

सुभाव मेरा नहीं इरा का है ।

वह क्या कहती है ?

'कल रात एक जगह मिल गई थी इरा । बता रही थी कि वह रात के साथ एलिफण्टा देखने गई थी । कह रही थी काई पहली बार तो नहीं देखी एलिफण्टा पर इस बार बहुत आनन्द आया । और वह कह रही थी—जयन्त माई को भव ऐसी पिक्चर बनानी चाहिए जिसमें बम्बई की नया बोल उठे यानी बम्बई का गत दो सौ वर्ष का इतिहास—किस बम्बई का जन्म हुआ किस वह बड़ी हुई ।

बान तो ठीक कहती है इरा । पर सवाल तो पस का है डार्लिंग । पीछे मल ही यह पिक्चर हाथ में ले सकूँ । पहले तो जय आनन्द ही बनानी होगी ।

डार्लिंग पौराणिक दानदल में एक बार फंस गए, तो फिर इससे बाहर नहीं निकल सकोगे । क्यों नहीं बम्बई की कहानी में फिरगी का आनन्द के रूप में दिखाते ?

बिना यह समझ कि इस बान में कोई तुफ़ भी है या नहीं पति पत्नी हंस पड़े । फिर उवशी ने नौबर का आवाज दी कि वह खाना खगाए ।

पक्की रही न यह बात ? उवशी ने हंसकर कहा कल इरा मिसिज गल बनेगी ।

कृष्ण पक्ष की रात में सागर की लहरें उतनी घबल नहीं रहे गई थीं जितनी पूनम की रात की थी ।



मेना क मन म धुकधुकी-सी हो रही थी वहीं सचमुच दूरा का कोई पुरावर न ले जाय । सबरे से ही उसकी दाइ घात फडक रहा थी । उसे दाय बुरा मान न गगता था पर मनोज और गल का क्या मुकायला ! मात हजारे का बाण्टेकट करन गल न खुटिया ही दुबो नी थी । इसम तो यही अच्युता था कि मुफ्त ही मवा-समिति का सवा बर डालता । उसे उवगी पर भा बहुत श्लेष भा रहा था—वनिय की बनियाइन ! उमन मन नी-मन उवला का धिक्कारा—मेठ की मठानी बनने के य लच्छन । कोई घात हुई भना ! वचारे पग का टग लिया !

यह दूरा के कमरे म गई । दूरा बाहर जात की सवारी पर रही थी । नाथ से ऊपर सप आज दूरा का गान रंग का गुडिया धनी दगकर मना बोनी दूरा यह क्या स्वाँग रचा है आज ?

दूरा हम पढ़ा ।

हैंसो नहा ठीक-ठीक बनापो ।

आज एष जगह घुटिंग है । मैंने सोचा यही जाकर टुनटिन बनने क यजाय यही सारा मेक धप कर डाकू !'

मना खुग हो गई । उमन अपने मन की समझाया । मैं ना यत ही डर गई था । दूरा मरी है मुभसे पूछे बिना यह बही नहीं जा सकती । किन्तु म सी बार टुनटिन बना है । यह तो घग्घा है । किन्तु का मेक धप दही चाहता है । मैं भी तो अज किन्तु क परत पर उमन आई हूँ ।

घना ठाक है।

उमन इरा का मन जान के लिए गल की प्रणामा मुक्त कर दा।

इरा ने नाक-मौ चढ़ाकर भ्रमितय किया।

'क्यों गल तुम्ह पसन्द नहा ?

बिचकुल नहीं।

क्यों उसम क्या बुराई है ?

'उमका बात भी दखन लायक है ! मैं उसक साथ हर रात तो नहीं घन सकूगी। त्वा नहीं या उस दिन गुम्नेव क मुहूर्त पर ! किस तरह साग हमारा तरफ आखिं फाड फाडकर देख रहे थे।

मना का मन-मयूर नाच उठा। उम यह ममभत दर न लगा कि इस जम म ठा शख जमका इरा पर जादू नहीं डाल सनगा। इरा मरी है मरी ही रहेगी। फिल्म की रगानियां बनी र्हें। फिल्म की रगरलियां ही एक एक्ट्रेस की सफलता का साडियां हैं। फिल्म ने मौज-मेलों म ही नमार दिए बरकन का सामान है। फिल्म का दुनिया खुल-खजाने खुनियां बांटनी है।

'तुम्हारे मन पसन्द का घान्मी है मनाज। क्यों इरा ?

इरा लजाई नहा। दपण क मामन खनी मक ग्रप नगती रही।

मेक ग्रप का भी एक हिमाब र्हता है न ! ऐस हा हमारी परम्परा है। किसी की घर वाला बनकर एक्ट्रेस बनना कठिन है। पर-गहस्यो चनाये या ऐकिंग कर।

इरा मुम्बरा नी जस मौ क उपण पर स्वीकृति की मुहर लगा रनी हो।

यह काण्ट्रेबट डेट लाख का किया है। बगला दो लाख से कम न हो। तुम्ह तो यहा खना चाहिए। एक मैं हूँ। पचहत्तर हजार का काण्ट्रेबट मुन्विन से मित। उम्र-उम्र की बात है। मैं समझती हूँ कि मैंने फिर भी कुछ कमाया इरा।

इरा ने नाक मौ चढ़ाई जने मौ का वाज्जिनाप वग क्षत रहा हो।

माँ का प्यार तुम्हें भव भारा ढगने लगा । मना न व्यग्य व  
घाट-रूपी बाण छोड़े तुम मुमस भगण रहने की बात सोच रहा हो  
बहुत दिनों से यह मैं दख रही हूँ ।

'शायद । इरा मुम्कराई ।

'शायद क्या मही बात है । मैं साफ दख रहा हूँ ।

'तो मरा सिगार तुम्हें भन्छा नहीं लगता माँ ?

मा बात नहीं है बेटी ! माँ ने भावाज म नरमी जाकर कहा  
मुना नहीं । माँ मारे भी घौर चोट भी न घान द ।

मैं ता भपनी राह चली जा रही हूँ माँ ! तुम मारा चाहे प्यार  
करो । राह मुझ चुना रही है । राह की पुकार मैं कैसे भनसुनी करूँ ?

माँ न इरा की ठोपी उठाकर प्यार जताया जाओ पूटिंग म दर  
हा रही है बेटी ।

डाइवर तमार था ।

इरा नीच जाकर थान म बठ गण ।

'कौनसे स्टूडियो म चलना है ?

'पहल जय'त दगाई के घर चलता—मनावार हिल ।

कार शीघ्र हा हवा म वारें करने लगी ।

इरा न घाग की राह तय कर ली थी । पीछे का बात पाछे घाग  
की बात घाग । बचपन म माँ कहा करती थी न—तरा दूल्हा भायगा  
नाके घाड पर चढ़कर ! भव मैं दुलहिन बना स्वयं भपन दूल्हा क  
पाग जा रही हूँ । भपना का दूल्हा चुन लिया गया । मीना-बाबा म हर  
धीर मिलती है—दू-ट की भा क्या कमा ? नीले मोडे पर चढ़कर दूरहा  
उमके घर नगा घा पाया था । कार पर चढ़कर दुलहिन ही दूरह क पाग  
जा रही है ! घौर इरा मन-ही-मन क रही थी—भ्याह क मनावहार  
भपन तरो म्मा ही जय ! घो री घो भ्याह की दाहनाई तरी म्मक  
रागिना की म्मा ही जय !



इस गन्म आज पूरी तरह सजाया गया था।

जयन्त तिन म नहीं चाहता था कि उसका घर कोई ऐसा-वसा नाटक खेना जाय।

पर उवगी ने उसे मना लिया था कि इरा और शख की जोड़ी बनने म महापता देकर उन्हें अपने काम में भी भासानी हो जायगी। इरा हमारे महसान तन दब जायगा। उवगी मुस्कराई। और शख ?

'वह भी यही सोचेगा कि हमारे ही घर उसे उसकी इरा मिली। जयन्त को इस व्यापार म लाम-ही-लाम त्वाई दिया।

बाहर भागन म वेनी सजाई गई थी। पण्डित विवाह की तयारी कर रहा था। उसने फिर भावाज की दुलहिन अभी तक नहीं आई ?

सब बड़े हैरान थे। 'शख का चेहरा ता बहुत उत्तरा हुआ था। कहा इरा ने अपना इरादा बदन तो नहा लिया ? वनी भइ होगी। उसने सोचा किस भभट म पड गया। इससे वहीँ प्रच्छी बात होती कि मैं बरखना बसा जाना और पचानन को सगोत सिखाता।

तुम धवराभो मत ! गोबिन्दन ने शख की ओर दखा इरा तो अब तुम्ह मिलकर ही रहेगी। इरा पीछे हटने वाली लटकी नहीं। मारी बात उसने फसला करने की थी वह उसने कर लिया। तुमने मरा वान नहीं मानी। मैंने तुम्हें अपना भागीवर्ण द डाला। मैं हूँ



गाबिन्दन भवतार ! वह कहन-कहते हम पत्नी मेरी बात आज तक भूठ नहा हूँ । मैं हूँ त्रिकालदर्शी । मैं देख रहा हूँ दूरा अपने घर में क्या पत्नी है ।

उबशी में घर से तीन मकान छोड़कर एक पलट घास के लिए ठीक विद्या जा चुका था । इन काम में उबशी ने ही मदद दी थी । उसी ने पूरा सामान जुटान में हाथ बटाया था । यह बात दूरा ने छिपा कर रखी गई थी । रात्र का पहरा दूरादा था कि वह दूरा से दाना करके उस अपने उसी मकान पर ल जायगा ।

नाच से किसी ने पुकारा ।

दूरा ने नीचे जाकर बार का दरवाजा खोला ।

घास का हाथ पकड़े रात में पड़ों में सजी दूरा बार में नीचे उतर आई ।

जब वे ऊपर पहुँचे तो गोविन्दन ने हगवर कुछ कहना चाहा । हाथ के मनेत से दूरा ने उसे रोक लिया ।

बातवनी से नीचे झुककर दूरा ने अपने हाइवर से कहा तुम चलो । मैं इन लोगों के साथ स्टूडिया चली जाऊँगी ।

हाइवर खला गया तो दूरा की जान में जान आई ।

गोविन्दन बोला मैं हूँ गोविन्दन भवतार ! दूरा देवी तुमने जाने में दस मिनट की भी देर की होता तो विद्या का मुँह टन जाता । और वह अपनी बात पर स्वयं ही हस पड़ा ।

दूरा कुछ न बोला । वह दूरा की धार टपता रह गया । पहले तो सभी दूरा इतनी मुन्टर नहीं उगी थी ।

आज तो दूरा पूरी दुपहिन सग रही थी ।

दूरा की एक एक घंटा नई थी एक-एक बात नई थी । दूरा एक एक टक गेता टक । सब उम बरकसा जाकर पचानन का सगान सिलाने की बात बियाद गई थी । इन रूप-गिया में सम्मुग बघारे पचानन की क्या सिगात ! आज मेरी माँ होनी यही था अपना बनने योग्य बहू का

दूध गाछ ।

दखती हा रह जात।

उवशा न इरा की ठाठा उठावर कहा 'घर स पूरा भव-अप कररु  
आभागी यह ता हम आगा न थी ।

यह रूप यह यौवन ! गोविन्दन हम पडा, मैं हू गोविन्दन  
भवतार ! अरे गवना महाराज ! क्या साब रह हैं श्रीमान ' दुलहिन  
वही नहा आ बाहर से नजर आ रही है । दुलहिन ता मन क भीतर  
छिपी बठी है । भोली भाली मिट्टी स उगा है दूल्हा हमारा । और  
घबन मिट्टी स उगी है दुलहिन । कहते-कहते वह लोट-भाट हो गया ।

आंगन स पण्डित न टेरे लगाइ दुलहिन तो भा गई । अब क्या  
दर है ?

अब बुद्ध टेर नहा । उवगा न उत्तर लिया हम अभा आ रह  
हैं । पहल दुग्नि को उसका रूप दिखा दें दपण म ।

इरा का मुख ललौहा पन गया । लाज स उसन कानों की लावें  
तब ननीही हो गइ ।

जयन्त दान्त प्रमन्न मुद्रा म खडा था । वह बिलकुल चुप था ।

मियाँ-बाबी राजी तो क्या करगा कारी ! जयन्त भी चुप न रहा ।

इरा क जूड़े पर उवशी न फूल लगाता चाहा । गोविन्दन वाला  
"मैं हू गोविन्दन भवतार । क्या दुलहिन नग सिर बठगा जो उसक जूड़े  
पर फूल लगाया जा रहा है ? दुलहिन का फूल है दूल्हा सा हाजिर  
है । उगी शब ! अथ विवाह म नर नहा । पण्डित का तग मत करा ।  
विवाह का मुहूर्त सा टल नहा सकता । फिल्म के मुहूर्त से कहीं पवित्र  
है विवाह का मुहूर्त ।

इरा का हमो न भाई, न वह मुस्कराई । लाज-लज्जी-सी दपण के  
सामन खड़ी रही । उम उसका रूप लिखाया जा रहा था दपण म ।

बने क गाछ काट-बाग्वर जान कहीं-कहीं स खेता आया था  
गोविन्दन । बनी सजाने की उषा की जिम्मेवारी थी । दूल्हा-दुलहिन को  
एक माप चीनियों पर बिठाकर पण्डित उन्हें आश्रमन कराने लगा ।



‘गुरु’ की प्रूटिंग चल रही थी। मना का पहला बार फिल्म के परदे पर उतरते शर-गुरु में कुछ सकोच भी हुआ था। पर अब तो गाड़ी बन निपनी थी।

आज यह जल्दी ही खब गई। जहाँ यह बठी थी स्टूडियो में कुछ और नाच भी बठ थे। पास ही रात्रे ये मनोज सा-वाल और जयन्त दसाई।

‘मनोज वायू, इरा तो अब आपके हाथ से गई। सहसा जयन्त के मुँह से निकल गया।

मना ने यह खान सुनी तो पाम आ गई। मनाज और जयन्त दर तर बातें करत रहे। मर पर अगन हय की तैयारी में पाद्ये र थी।

जयन्त ने पून्ते ही यह खबर सुना वाली, ‘इरा वा म्याह हो गया।

‘कस के साथ ? मनोज चुप न रह सवा।

‘ही रात क साथ ! जयन्त को कहता पठा।

मनाज का रम पीका पठ गया।

जयन्त ने यह खबर तो सुना दी पर पीछे उसे पछतावा हुआ। यह बात तो मना तक जा पहुँची थी और अब स्टूडियो में हर कोई आलो-ही आलो में इसी का दाहरा रहा था। उवगी न जयन्त रा बार-बार कहा था कि वह आज शाम की बात आज रात को अय्य पचा जाय और स्टूडियो में किसी के कान में इसकी भनक न पडन दे। मैं द्रतनी-सी बात न पचा गया। उवगी सुनेगी तो क्या कहेगी ?

मना ने पास आकर कहा 'बुप क्या हो गण जयन्त माई ? सारी बात बताइये न । कहां ब्याह हुआ ? कितनी शहनाइयाँ बजी ? कौन भाग्यवान दूल्हा मिला है मेरी इरा को ?

जयन्त भेंप-सा गया मैंने ता यह खबर उठती चिट्ठिया मे सुनी ।

'खबर सुनाकर वह चिट्ठिया कहां उठ गई ?

क्या तुम्हें नहीं बनाया था इरा न ?

मुझे वह क्यों बताने लगा बेटा । जमाना ही ऐसा है । मुझसे पूछती तो कोई अच्छी राय ही देती ।

'यह तो ठीक है । मैं हमसा बेटो को अच्छी राय ही देती है ।

सागर घरती और पहाड से कुछ कम दूढा नहीं इन्सान । जयन्त ने पान बघारा जितना दूढा है इमान उतनी ही दूढी है ब्याह की परम्परा । अच्छा तो यहा है कि बती माँ स पूछकर यह कदम उठाया । पर वह किसी कारण ऐसा न कर सके तो भी क्या बुरा है ? ब्याह का खम्बरी है । मैं तो हालीबुड भ रहा यूरोप का चप्पा-चप्पा छान मारा । हर जगह यही देखा । हर जगह ब्याह की शहनाइयाँ सुना । शहनाइयाँ नहीं तो कोई और बाजा । सब ठीक हो जायगा । इरा तो बहुत समझदार है । शख बुरा नहीं । दूल्हे के चुनाव म पहना हक तो दुलहिन का ही होना चाहिए । ब्याह ही जीवन का आनन्द है । सारी दुनिया म हर कहा सड़कियाँ पाह कराती हैं । हर फ़िल्म म कहीं-कहीं यही नुस्खा रहता है । इसके बिना कहानी चलती ही नहा ।

'उसने मुझसे पूछा क्या नहीं ? मूठ बक लिया । वाली—घर स दुलहिन का भव भप करके जा रही हैं ताकि स्तूठियो में दर न लग । मैं क्या जानती थी कि यह फ़िल्म क लिए मेक भप नहा, वह सचमुच ही दुलहिन बनकर जा रही हैं ।'

मना धातें करत करत उदाम हो गई । भव तक इरा मेरी सवा को भपना भादगा बनाय बठी थी । भव बह पराई हो गई । भान तक वह जिस इगर पर चल रही थी, उससे हट गई । नय साथी का प्यार इरा

को मुबारक ! पर मैं क्या करूँगी ? उसकी पीड़ा पाताल तक  
घसी गई ।

‘बारान को देखकर तो हर लडकी खुश होती है ।

सा तो ठीक है ।

वह गुड़िया का याह रखाती है ।

हाँ जयत माई !

तो फिर ?

तो फिर का हा तो सारा भगडा था । माँ की लोरी में दूध के  
कल्पना चुनी रहती है । एक कमीरा हाथों से मना ने यह गीत सुना  
था—व्याह का गात जिसमें कमीरा स्त्रियाँ गाती थीं हम सड़कों पर  
तुम्हारे लिए कपूर बिछा देंगी । ऐ इन्क के भौरे क्या तू भा पहुँचा अपनी  
सला को निया ले जाने के लिए ? यहाँ तो उल्टी बात हुई सला  
अपन घाघ इन्क के भौरे के पास चला गई ! उसकी कल्पना में  
मदन बाबू का चहरा उमरा । वह भी तो इन्क का भौरा बनकर भाव  
के मरा सगीन सुनने । फिर वह हमेशा के लिए मरे हो गए । एक बार  
गव भा तो घर बाबू के माथ छब रिन्न तोड़कर भावे मरे होकर रहे ।  
उमा इन्क के भौरे की निशानी है दूरा । उसी की निशानी है सकर ।  
सकर को पता चलेगा ता रो रोकर घाँवें गुजा वेगा । वह अपनी दीनी  
के बिना काम रहगा ? मना की मदन बाबू की बातें याद आती हैं ।  
वह कहा करत थे—स्त्री माँ है । बड़े-बड़े अयतार भी उसी की कोण से  
जमे । मदन बाबू यह भा कहा करत थे—जब यह तब घाम ।  
जब घाम तब प्रजा सुगी । जब प्रजा सुता तब ऐन । जब ऐन तब  
पुन्म । जब पुन्म, तब कहर । जब कहर तब तोया । जब तोया तब  
मन ! गात का चरहर चसता है । यह राग स चसता थाया है चरता  
रहेगा । मदन बाबू के साथ मना का व्याह हुआ था । वह भी बड़ी  
था मदन बाबू के दावे हाथ वाली बीवी पर ! उमन भा अग्नि के सामने  
भीरें ला थीं । अग्नि ने आगीरानि निया था । मदन बाबू के

सामने मैं कैसे गान में लिपटकर बठी थी राज रज्जी-सी, जैसे दूल्हे ने इससे पहले दुलहिन का कभी नहीं देखा था। वह सब क्या था ? एक अच्युत-खासा नाटक ! वसा ही नाटक अब मदन बाबू की बटी ने किया। पर उसने अपनी माँ की तरह नहीं किया। वह उलटी चाल चली। सदा सुहागिन रहो बटी ! युग-युग बना रहे तरा सुहाग ! पर माँ स पूछ लिया होता। माँ के मुँह पर तमाचा मारकर तो न गई हानी ! कैसे कह दिया मुँह बनाकर—स्टूडियो में दुलहिन का टक है आज ! दुलहिन का टेक है ! दुलहिन ! अब दुलहिन बनन का मजा चख लेगी—दूल्हा की गुलाम ! उन्न मर की गुलाम ! आँखा पर हाथ रख रखकर पहले का आज्ञादी को याद करेगी। न करे तो मरा नाम मना नहीं !

स्टेज पर अगल दृश्य की तैयारी पूरी हो चुकी थी और धूमिल चल रहा था। मना अभिनय कर रही थी पर मन की रग भूमि पर सघप चल रहा था। मुक्तिबाध ने गुरुदेव छत्रपदम् का मेक अप करने में कामना कर दिया था। एक बार गुरुदेव का शिष्य शस्त्र बठा वीणा पर नित नित का अभ्यास कर रहा था। शस्त्र की रोल एक नय युवक को दी गई थी। और अन्नपूर्णा के मेक अप में मना भी स्टेज पर चली गई। मना को अपना डॉयलाग पूरी तरह याद था। यह वह प्रसंग था जहाँ गुरुदेव की पत्नी अन्नपूर्णा यह शिवायत करती है कि अपने बेटे गोविन्दन को तो उन्होंने पूरा प्यार न देकर घर में भगा दिया और इस परायण पुत्र दाम पर व्यय ही माया-मच्चो कर रहे हैं। और इस पर गुरुदेव का यह उत्तर— एक परम्परा को पुत्र भागे बढ़ाता है एक को शिष्य ! बेटे न सगीत नहीं सांगता ठा क्या शिष्य भा न साखे ? और फिर अन्न पूर्णा की त्रिया-हूठ और शब्दों में विष में बुझ बाण !

तक फाइनल रिहर्सल बना फिर अन्तला धूमिल शुरू हुई। मना सोच रही थी—इरा गिरा तो किस पर गिरा ! उधर टक की आज्ञा पड़ा इधर मना बहोत हाकर सट पर गिर पड़ी।



दूरा और गल सवेर-सवेर माँ से मिलने प्राय । मात स्नि पहन हुआ  
था रा का बियाह । वे माँ के सामन जाने करने थ । मर पर माँ के  
वशेग होकर गिरने की खबर उनसे छिपाकर रखी गई थी । उबगी न  
भाज गाबिन्ध ने यह खबर गप तक पहुँचाई । गप न यह खबर दूरा  
की दी ।

माँ का देखने के लिए दूरा का स्नि सज्ज उठा । सात दिन न माँ  
धीमार है पलग न उठी ही नहा । दूरा मोच रही थी कि इमक लिए  
यश दीपी है ।

इन्द्रग मम म गल की बिग्यापर दूरा बानी 'तुम ममा मन्तर मत  
चना । माँ की उबियत सामद बहृत मरात्र है ।

रा की दगकर माँ न मुह फेर लिया । गतर बहक उठा दा के  
तुम मा गई ! जाजानी नही प्राय ?

दूरा ने शबर क वान में कहा 'बह बाहर बठ है । तुम उनके पाम  
पल जाओ । धीर गतर बाहर चना गया ।

रा ने माँ क पैर दवाने की चेष्टा की । माँ न पर खास निय ।  
नी की हार्न टम्प्रपर था । माया मय रग था । माँगा म उस प्राण  
नन रही थी ।

धारे धीरे दूरा न माँ का माया गहलाना धारम्भ किया ।

नीरर मे एक मंगसई धीर यत्र की पट्टियाँ मिर पर राने स माँ

को त्रिविधत थोड़ी समझ गई ।

तुम अकेली आई हो ?

हाँ ।

शख क्या नहीं घाया ? क्या मुझसे डर लगता है ?

वे घाना तो चाहते थे पर मैं उन्हें साईं नहा ।

इतने में शकर न आकर कहा मैं हीदी झूठ बानती है । जीजा जी भा भाये हैं ।

माँ की माँसें चमक उठी ।

इरा उठकर शख को लेती आई । शख ने माँ के चरण छू लिये ।

'यह मुजाग घड़ी बनी रहे !' माँ ने आशीर्वाद दिया यह जोड़ी सदा बनी रहे । बटो बटा । भरे पास बैठा ।

माँ को पता नग चुका था विवाह नियमपुत्रक जयन्त दसाई के घर हुआ । उबनी स्वयं आकर बता गई था क्षमा माँग गई थी ।

माँ के मुख पर सहानुभूति और प्रीति के फूल गिन उठ । माया अब भी तप रहा था पर मन में ठण्ड पड़ गई ।

सुख को बुनामी ता सुख पास आता है ! माँ ने जैसे अपने भनु भव की गठरा खोल दी राग रागिनियों के सुरा वाली बात है । एक राग में और सुर उगते हैं दूसरे में और । बंधे-बंधाय सुर उगते हैं हर राग में । हालाँकि वहीं सात सुर हैं । पर-बदन करने अलग अलग सुरा के जाड़े बनाये उस्ताओं ने । भनक उड़क हैं भनक उड़कियाँ । जो-किसी किसी की ही बनती है । मन-भरजी की बात है । दुनिया को बकन दो । बौन किस पर खुश है यहाँ ! जितने मुह उठना वाने । तुम सच्चे तो सारा जहान मच्चा ।

ज्यादा न बोला माँ ! इरा ने समझाया माया फिर तप जायगा ।

शख ने मुख-रावर इरा की हाँ में-हाँ मिनाई ।

अब क्या तपेगा माया ? पर एक बात है शख बटा । यह घर



तो मुझे जाने को दौड़ता है। या तो मैं उधर भा जाऊँ या फिर तुम नाग इधर भा जाओ। इरा के बिना मैं नहीं रह सकती। अगर की भविष्य नहीं होगा ? जिस दिन से इरा गई है इसके घाँसू नहीं घसे। रोना ही रहा। दीदी के घर चलो माँ—वह रह रही इसकी। वरुणा है कौन हम समझायें ?

इरा की घाँसों में घाँसू घा गए। वह माँ का दुखी नहीं देखना चाहती थी। फिर भी कुछ कहते उसे सखीच ही रहा था।

इरा ने एक बार दास की ओर देखा।

दास को इरा के ये तबियत बिलकुल न भाय। यह यह बात पण्डित नहीं कर सकता था कि इरा फिर यहाँ चली आयें और वह भी इरा के साथ रहकर घरजमाई बन जाय।

बीच-बीच में तुम उधर भा जाया करना माँ ! दास ने मोच मोचकर कहा। वह घर भी तो तुम्हारा है माँ !

गो तो ठीक है बेटा ! धय तो सब जगामेही तुम्हारे ही सिर पर है चाहे उधर रहो चाहे इधर। दास को सायब बनाना भी तुम लोगों का काम है। मरा क्या है और इरा ने भ्रम माँ के मुँह पर हाथ रक्ख लिया।

माँ अपनी बात कहने से बच टलन घानी थी ?

भाज नहीं तो बल। कौन जान मेरी भविष्य क्या बन हो जायें ! मरने से क्या डरना ?

दास बरस तुम्हारा उग्र हा, माँ ! इरा मुग्गराई।

“हाँ सारा बरस !” दास ने भी स्वर भगा।

माँ की घाँसों खमब उठीं। एक पल का एक महीना माना जाय एक दिन का एक बरस तो यह दिमाग ठीक बँठ गवता है। दिमाग को बात ही तो है न बेग। तुम तो जानने ही हो। संगीन पिछा में भी यही दिमाग का खेल है धारा। दिमाग ही न चनता है धार !

इरा मुग्गराई, जग मुग्गान ही सब जीवन की टक हा। मरा की

मुस्कान को वहीं रोक नहीं। वह मुस्कराती ही रही। बुद्धि स बड़ा है प्राणि। मनमानी खुशियाँ देती है प्रीति। किसमें इतनी हिम्मत कि प्रीति की किल्ली उडाय। प्रीति नय घर बसाती है। प्रीति की धूप में मुस्कान क फून किलन है। ब्याह की शहनाइयाँ नी तो प्रीति के ताल पर ही बजती हैं। ब्याह क बिना ता इस मीना-बाजार म मन ऊब जाय। जिस अभिनेत्रा का ब्याह नहीं हुआ उस पर लाख-लाख भीरे मडराते हैं। उसकी कोई इज्जत नहीं। लहू रंगों म दौड़ता है दौड़ता दौड़ता घाग-सी जग जाता है। इस भाग को टपटा करती है प्रीति। मीना-बाजार में ब्याह की खबरें आये-दिन उडा करती हैं। ब्याह की खबर! यही ता वह दाना है जिस मीना-बाजार म सपनों का कबूतर चुगता है।

क्या सोच रही हो बटी ?

कुछ नहीं माँ !

दाख मुस्कराया।

गायक न रेडियो लगा दिया। यह कोई लोक-गीत था जिसका सुर धीरे-धीरे डोल रहे थे। रत्ताइ रत्ताई र गाई पुमरत्ता। आऊरा रत्ताई जे धम-देवता ! यह कोई उड़िया लोक-गात था—नाल रग का है रे लाल रग का। गाय-भूत है लाल रग का ! उसम भी अधिन लाल है धम-देवता ! गीत की पृष्ठभूमि म मानो आगे-पीछे जुड़े छकडे बड़ घने जा रह हों जगल के भाग पर ! बड़े-बड़े गाछ झून रह थ। गाडी बानों का बल हाँकने का स्वर बीच-बीच म उभर रहा था। माँ बड़े ध्यान से सुनती रहीं।

‘हम भी छकडे क येस हैं। माँ ने गम्भीर मुद्रा बनानकर कहा

यह सब बोझ तो डोना ही होगा। गाय-भूत की धम-देवता स तुनना की जायगी बार-बार। उसमे क्या फरक पडता है ? बोझ तो बोझ है वह तो डोना ही होगा। मदन बाबू आय। उनका बोझ मैंने डोया। या शायद मदन बाबू न मेरा बोझ टोया। गाव बटा अब तुम्हारा बोझ

बोयेगी मन्न बाबू की बेटी इरा । या यह कहो कि तुम दो त चलीमे  
मदन बाबू की बनी इरा का धोम !

'ज्यादा बानना तो ठीक नहीं माँ । इरा ने चतावनी दी ।

माँ की धाँसी में भव भी काई भाग जन रही था ।

रेडियो स भव उस्ताद फयाज माँ की गाई हुई दुमरा घा रही थी  
—बाबूबन्द खुन-खुन जाय ! यह दुमरी माँ को पसन्द थी । मन्न  
बाबू इस दुमरी की भक्तर परमादन किया करत थे । 'हालांकि मैं  
फयाजवाँ जता नहीं गा सकती बत । पर मन्न बाबू यह दुमरी मुझसे  
मुन बिना न मानते थे ।

माँ की धाँसा में धाँसू घा गए । इरा ने हाथ बढ़ाकर माँ के धाँसू  
पोंछ लिए ।

माँ बोली 'जाकर अपना कर्मी की फाटा सा रंग साभा बटा !'

इरा बह फातो बनी धाँ । फाँग स मन्न बाबू की बनी-बही धाँसे  
मानो 'बाबूबन्द खुन-खुन जाय मुनकर ही नाच उठी था । माँ वाली  
रग ली मन्न बाबू ! अपना जपाई का दख ता । दख तुम्हारी इरा  
का दूना है । नामी सगीतबार ! नामी सगीतबार का गिप्य ! उस्ताद  
रूपाम् का गिप्य ! उस गख सो ! माँ बिभोर हो गई । गख न  
मन्न बाबू की फाँगो को प्रणाम किया ।



## दृक्पीठ

नीलू एक मास से बरकला म था। भाज की टाक स फ़िल्म इण्डिया' का एक भाया ता उसकी दृष्टि इसके विवाह-सम्मन पर पनी जिसम इरा और शक्त के फोटो के नीचे लिखा था नव-दम्पती।

पत्न तो उसने सोचा कि 'फ़िल्म इण्डिया' का यह एक अपन पिता से छिपा न। फिर उसने पहन यह बचन लेकर कि वे बरकला म यह श्वर किसका नहीं बतायेंगे उन्हें वह चित्र लिखा दिया।

नव-दम्पती के चित्र क साथ विशेष लेख प्रकाशित हुआ था। पत्रिका के बिगुप सवादाता न शक्त और इरा का अलग अलग इंटरव्यू लेकर यह लेख तयार किया था।

नव का गीपक था अन्तिम चट्टान के मछुव का इरा मिल गई !

नव का धारम्म एक ताक-कथा म किया गया था जिसका सम्बन्ध क-याकुमारी की अन्तिम चट्टान से था।

इस लोक कथा का नायक था एक मछुवा

एक था मछुवा क-याकुमारी का वासी। सीधा मनमोज़ा।

उसम जरा भी झिन्नक नहीं थी। गाता था मजे के गीत। सुनने वालों का मन मोह लेता था।

पर मोह न सवा वह उस कथा का मन जिसे वह अपने सपना की रानी बन्ता था अपने गीतों म।

अधिवारे में करें उजियारा एमे थ उनक गीत।

जाल उठाकर बभी नहीं निवसता था वह मछरी मारने । बस वह गाता था । सगीर बन सके मछरी-बाप यही थी उसकी प्रतिम साध ! ब्याकुमारी की प्रतिम चट्टान पर बठ बजाता जादूमरी बाँसुरी । वह मछुवा नहीं था । वह था बाँसुरी वाला—गीतों का रसिया ।

दग-काल से ऊपर उठने गए उसका गीत ।

बढ़ता गया आत्मविश्वास ।

सगतो गई प्रतिमा की छाप उसके गीतों पर ! स्वर-खूटी स बंधे गीत अनमोल थे । चाँदनी क खेत म अनजानी पगहण्णी पर गलबाँही प्रीति स्वयं दती थी अपना परिचय दाख-सीपिया की !

बहता था उसका गीत सागर-जल ठण्ण है ! भाग तेज पर प्रसन्नता था गीत, सपने क सकिय पर सिर रख ! भाग-पटी लहरों पर घिरक घिरक चलती दुध्र चाँदनी ! मुख स हली नटें हटाती । स्वर का पाँटा घुम घुम जाता । गीत का सरगम बुद्ध ऐसा ही होना था । हौंने-हौंले खिन्ती थी छविषा ।

बड़ा ही लापरवाह था बड़ा ही धायना । आप-ही आप बजाने रहता बाँसुरी यही उसकी आत्त थी ।

कोई भी पूनम एसी न जाती थी जब वह गाता न हा ब्याकुमारी की प्रतिम चट्टान पर ।

नहे मुने दातों की माला पहने दूर से सुनती थी मछुव की उगी प्रपन प्रेमी के गीत । एव जान से सुनती थी दूसरे मान में निवान देती थी । गीत की हार । प्रमिषा नकबड़ी थी । मान नहीं दनी थी बभी पपन प्रमा के गात पर ।

एव रात भाई पूनम बस पण गीत का जादू । रात भर बजती रही बाँसुरी ।

मवेरे उठार लागों ने रेगा प्रतिम चट्टान पर पदा थी मछुवे गावक की मृत देण !

तब से जिंको चाँदनी म मुनाद न जानी है बाँसुरी । लोग बह्त ह

चाँल-तारों की रागिनी बज-बज उठती है । उस गायक प्रमो की आत्मा आज भी हूँड रही है उस मछुवे की बटी को जिम उसने दी थी अपने हाथों मे नहे मुन्ने शला की सुन्दर अनमान माला ।

नीलू ने आगे पढा

क्यानुमारी की अन्तिम चट्टान के गायक ने आखिर हूँड पाई बम्बई में अपनी गुम हुई प्रेयसी । इरा वहा प्रयसी है । दाख वही मछुवा गायक । दाख इरा का पाह । नव-उम्पती को सौ-नी बघाईया ।

सगीतन न अमिनत्रा का मन चुरा लिया ।

दुश्मता क सीना पर इन विवाह न माँप लोट गए । उनकी दुभाएँ मोटे सिक्क मिद्ध दुह ।

जब न इरा और दाख का विवाह हुआ है बम्बई के माना-बाजार म हुन्दग भचा है । लोग व सिक्क-पर की बातें उडा रहे हैं । डाइरेक्टर प्रोड्यूसर जयन्त लमाइ और उनकी हागीबुड-बट पत्नी उवसी पर छटि बसने म लागे को मडा आ रहा है जिनके घर चारी छिपे इरा का जीवन अग्निव की आँवों म धुन डालकर गय के साथ बाँध दिया गया । मनोज सायान की पूजा बकार गई । इरा न हुनेगा के लिए डाइरेक्टर सायान क प्रेम को टुकरा लिया ।

इरा का माँ स्टूडियो म काम करने-करते इरा क ब्याह की खबर सुनकर बहोग हो गई । सात्र पुन्ता की तवायफ क हाप स हीरों का खान छिन गई ।

फिल्म-स्टार इरा का बकतव्य

आखिर मुझ वह पुरप मिन गया जिमने नाले घाडे पर सवार होकर मर शरबाडे पर आना था । माँ की लोरी म जिसवे आने की खबर मने पहल-बहल सुनी थी । बसा ही डीनडोल बसा हा नाक

मक्का । प्रेम के छत्रकते कटारे-सा मन । दास नील घोड़े पर नहा  
मगीत के घोड़े पर चक्कर आया । मुझे लगा बहो भा गया जिसका  
मुझ सग इन्तजार रहा जिसका मीन सदा अपना गुड़िया स ब्याह  
किया था । दास को पाकर मेरा सपना साकार हुआ ।

यह सब वणन पकर नीलू बहुत प्रसन्न हुई । उसका जी चाहा कि  
पकर बम्बई चली जाय ।



'गुरुत्व' रिलीज्ड हुए एक महीना हो गया था। अनेक पत्रों ने इस इस वष को सर्वोत्तम फिल्म घोषित किया पर यह वाक्य आफिस हिट न हा सकी। घाटे क कारण जयन्त दूसरा की फिल्मों म काम करन को विवश हो गया।

जयन्त दसाई न सारा क्रोध उत्रगी पर निकाला—काम्ट ही धिसी पिनी चुनी।

सबरे की धूप म जयन्त को उवगी स उनमत्रे दर न लगी जब हर कोई अपन अपन काम पर निकन रहा था। पहल तो जयन्त को सगा उवशी की देह उस साही की तरह है जा रीतिग पर मूलने की छाकी हो। फिर वह उमरी बुद्धि क लिए सस्ती छाट की उपमा कूँककर मन ही-मन उम पर खीभ उठा।

उवगी का मधुर स्वर भात्र जयन्त का कान की तरह चुभ रहा था। इन एप्रिन म जयन्त को हॉलीवुड स लीट एक बरम पूरा हो जायगा। उस जगा उवशी न गुरुत्व बनान का काम हाथ म लेकर मेरा प्रच्छा-वास एप्रिल फूल बनाया।

उवगी की मुस्कान भी जयन्त को भाज मन्त्री न लगी। उवगी हमनी है तो निरी किनरी प्रतीत होनी है बल तक वह मही बहा करता था। मद्भावना जगाने वाली थी उनकी बाँधें बल तक भाज नहीं।

तो तुम्हारा मतलब है मेरी ही ब प्रकृता से तुमन 'गुरुत्व' म हाथ



बात तो तुम भी मोल की ही कर रही हो नीलू ! मैं इस बात से इन्कार नहीं करती कि तुमने हमारी नृत्य-कला को प्राग बढ़ाया है । बम्बई में तुम्हारी नृत्य-नाटिका मधुमा और जनपरी की सभी न तारीफ की । तुम उससे भी अच्छी नृत्य-नाटिकाएँ पग करोगी । तुम्हारे नृत्य अभिनय की धाक तो सभी जग गई थी जब तुमने इरा के जन्म दिन पर एक बार अपना प्रदर्शन किया था । उसकी प्रशंसा तो बड़े-बड़े फिल्म डाइरेक्टरों ने की थी । और तुम चाहता तो आज फिल्मी दुनिया में तुमने बहुत नाम कमाया होता और पसा भी । नाम और पसा—मादमी ये दो चीजें चाहता है न !

तीसरी चीज है कलाकार के मन का सन्तोष ! नीलू न बाहें नहराकर गम्भार स्वर में कहा मन का सन्तोष न हो तो कौटा-सा चुनता रहता है ।

तो क्या उसी कौट की चुनन में धख का बम्बई से भगाया ? पूनम हस पड़ी कलाकार के मन का सन्तोष क्या होता है ?

गर्वोली-गहरी साँस खींचकर नीलू वाली कलाकार की बात तो कलाकार की समझ में ही आ सकती है पूनम ! यह बात बतान की नहीं अनुभव करने की है ।

माफ़ करजा दीदी ! पूनम धीमे स्वर में बोनी गायद मैंने यह कहकर अपनी मूखता जताई । आत्म-ताप से तो मुझे नफ़रत है इरा नीची जानती हैं । हम एक-दूसरे से हमदर्दो होनी चाहिए । मैंने तो देखा है जो टकनीसियन मिलकर बैठ जायेंगे पर दो कलाकार हमेशा एक दूसरे की गदन पर छुरी चलाने का सोचेंगे । बुराई करने में जान उन्हें क्या मजा आता है ! मैं मानती हूँ गलती घणन हैं ।

इनीलिंग तो जन्म जाना पडा । नाम और घन कमाने से हा उम मतलब होता तो वह दूसरा की बुराई करने से सकाच न करता और सफ़लता उमके द्वार पर दस्तक देती । कहते-कहते नीलू ने इरा की आँखा में नज़र की कोणिका की क्या दीदी क्या मैं कुछ नूठ कह

रही हूँ ?

इरा टस-से-मस न हुई ।

तुम्हारी बात विचारपूर्ण है दीदी । पूनम मुस्कराई, छल मपर घोर धोखे से दूर हैं दाखजी । इसीलिए तो इरा दीदी ने उन्हें जीवन माघी चुना । पर क्या बरखला म यह बीज मिन जायगी जो बम्बई म न मिल सकी ? फ़िल्मी दुनिया म सनसनी फल गई । लोग इरा की यत्नामी कर रहू हैं जैसे इरा ने दाख का स्वयं भगाना हा ।

मैं जानती हूँ इस समय इरा दीदी दाख को देखने को कितनी लागामित हैं । कोई दाख को लाकर यहाँ खड़ा कर दे इसलिये वह बड़ी-म-बड़ा कीमत द सवती है ।

इरा का धब नी बोलन व लिये विवष न किया जा सवा जब वह उस दाख को नून जाना चाहती हो जब उसकी घोर दाख का नजरें मिला ।

मना पास भाकर बोली इरा कुछ ता बोला । दिन ना बाध उतर । तुम चुप क्या बड़ी हो ?

इरा धपलक दस रही थी ।

घाय भाइ तो इरा ने बाई बीज मुह स न गगार ।

सोम बोती जा रही थी ।

मदक पर फारें भा-जा रही थीं । सजाय नशा म एन-दूगर का गपने इए लोग गगर क माय-माय बहलन-दमी को निपल पड़े थ ।

गोमां सही-किया क बहन स इरा ने बडा मन्विन म घाय ना कर उगारर मुह म सगाया ।

इरा क घन्नर की गहगर्द म एक ना स्वर न निरना ।

बातें बातें बातें ! नातू चुन न रह रही बाता न कुछ सिद्ध नहीं होता । बरख कुछ ता लागती है ।

पर दाख की ब्यथा की कौन गुनगा दादा ? पूनम न लागारर लग दाख स्वयं तो बातनी नहा । फ़ारा इरा का निवना परखाना म

बाल गया राख । उस क्या मिना ? यह तो बहूदगी की हद है कि बाइ इस तरह घर में भाग जाय । और फिर राख कोई बच्चा तो नहीं है ।

उमने भा बुद्ध साचा होगा ।

तुम इस साबना कहता हो दीदा । उसन काई इनाम लेने लायक फाम नहीं किया । इतनी जग-हसाइ क बात भव वह नीट नी क्या न भाम । जग हसाइ तो हो ली ।

हम यह बान यहा छोड दें ।

यहाँ किस छाड़ दें दीदी ? बरकला म क्या दूसरी दुनिया है ? वहाँ क्या पट खान का नहा मांगगा ? वहाँ कौनसा नया सवरा नइ आयाए लकर भाया करेगा नित नित ? और सब ता यह है दीदी उसके सगात क बिना क्या हनागे फिल्मो दुनिया का काम रुक जायगा ? हाँ हमारी इरा जरूर उगास रखा करेगी । फिर इरा नी उन भूल जायगी । राख घाटे म रहगा । मैं कह रही हूँ राख पछतायगा । न खुदा ही मिला न विमाले सभम । टनटनापाल । मजा करेगा बरकला म बठकर ! बर कना वाला को भनलियन का पता चल गया तो व भी हसेंगे उस पर । उम उल्लू कहा ।

नीलू ने हाथ और भाँवा क इशारे से कई बार पूनम को बोनन स राका । छाड़ा यह किस्मा ता बहुत हो लिया पूनन ! हम चले । इरा दीना म छुट्टी से ।

इरा नी भाँवा म दुनिया भर की कम्पना साकार हा उठी या । विवाता की मूर्ति-ता वह चुप बठी थी ।





कौ जागरी ?





दम बप हा गए । गन्व गया और लौटा नहा । कन्चित् वह उन माँ पर चल पडा— का तब कान्ता बस्ते पुत्र —न तेरी कोइ पत्नी है न काइ पुत्र है । कोइ बचन बम्बइ की और न खाच पाया । इधर का मोह छोड़ लिया ।

इरा एक बालिका की माँ बनी ।

बालिका का नाम रखा गया जयजयवन्ती । इरा उन जया कहकर पुकारती है । उस बप की है जया । किसी स डरती नहीं । मनच-चक्र रका नहीं श्रुतु चक्र भी धनता रहा । जया को देखकर जाता है गल गया नहा यहा है । माँ म रूप भिना पिता से स्वभाव । जया को देख कर इरा को नगा चड जाता है । जया की मुन्कान मानो गल का खबर न जाती है । गल इन्का मडा क्या जान ! रहता तो जया से धनता । देखता कि जया को गान का भी गीत है उस जसा स्वर तो हद्वार न एक लडकी का हाता है ।

जया हँसती है ता घुघल-ता बज उठता है मना नानी का तन मन सिहर उठता है । जया की हज़ी क माय गकर के उल्लास की भी ता मानो दल्लोत एकता है । बी० ए० पास कर चुका है गकर । प्रब हजीनियरिा कालज म पडन जाता है । नालज क बमरे म पडत-पडते गकर को जया की बातें याद आती हैं जस पुनसाहर क पून दूर से ध्यान खाचत है । गकर का ध्यान रहता है, गल जाजाजा

को पत्र जरूर लिखा जाय । पत्र म जया की बात ही ज्यादा लिखता है । जया के होठा पर जो अस्पष्ट-सी धुन नाघती रहती है उसी की बात लिखता है । कभा-कभा मबोव दृष्टि स देखने लगती है जया । उसक मुख पर मुस्कान खनती है जब जगन म सघन बुझा की चाटियो पर पुनम का चांद समीप खिसक आता है । घाँखा में विस्मय और फौतूहन जग जग उठन हैं । अनारण चचन हा उठती है । उस दखे बिना थोड़ी दूर उसके साथ खेले बिना वह कानेज नहीं जा सनता । उसके साथ दो धाँवें करक दिल खिल जाता है । ऐसी ऐसी धाँवें शकर अपने पत्र म शख को भा लिखता रहता है ।

एक तरफ माँ-बटे की मूर्ति पडी है—पीतल की मूर्ति माँज-माँजकर घनकाइ हुई मूर्ति ।

एक तरफ मन्न बावू का फोटो है ।

दूसरी तरफ पडा है शख का फोटो ।

इरा बता रही है

वह रह मेरे डडी यह रहे तुम्हारे डडी !

पीतल की चमाचम मूर्ति की तरफ हाथ उठाकर जया पूछती है

यह किसक डडी हैं ?

इरा कुछ क्षण तक चुप रहने के बाद कहती है

यह तुम्हारे डडी के डडी हैं ।

इरा काम पर खली जाती है । जात-जाते समझ जाती है कि मूर्ति को गिराय नहा । जया हाँ म धिर झिलाती है । बस ही करेमा जब माँ पाहती है । मूर्ति को गिरायगी नहा । फोटो या शीषा भी नहा दूटेगा । धाराम से खेलेगी ।

अपरिचय का परदा-सा उठ गया । जया अकेली है । आज वह बहुत खुश है । मूर्ति और फोटो नय धिरे स जोड़कर रखती है । बालती जाती है

यह रह डडी क डडी ! यह रहे मेरे डडी ! यह रह ममी क



डडी ।

स्पष्ट है कि जया को धपन ही डडी पसन्द है । पर उसक डडी कहाँ चने गये ? घर क्यों नहा छाते ? वह पूछना चाहती है किसस पूछ ?

मना धपन कमरे में बठी है । बार-बार उसके पास आकर जया पूछती है

मेरे डडी कब आयेंगे ?

मना प्यार में जया की ठाडी उठाकर प्यार करती है । सोचती है हमारी परम्परा चनेगी । जया भी एकदूस चनेगी ।

प्राज्ञ स्कूल में छुड़ी है । जया पठने जाती है । स्कूल की पुस्तक पढ़ते-पढ़ते वह मना के पास आकर पूछती है

मेरे डडी मुझे मारेंगे तो नहा ।

मना मुस्कराकर कहती है

पढ़ने सबकुछ याद करो । फिर खलो तब तुम्हारे डडी आकर धपनी जया की प्यार करेंगे ।

पुस्तक को बीच में छाड़कर जया फिर मूर्ति और फोटा सजाकर रखती है

यह रह ममी के डडी ! यह रह मेरे डडी ! यह रह डडी के डडी !"

जया अभी बच्ची है । गुड़िया का ब्याह रचानी है । गुड़िया के बिना नहा चनेगा येस ।

जया सब सोस रही है । वह सब साम्कर रहगी । नान-नारील का हिसाब ना लाग जायगी । पल्पना-लोम में ऊँची उठान भग करेगी वह भी । घाघा घागका उगे-उत्पष्ठा के बीज बोय जामेंगे उनके मन में । फिर वह ना सोच सनेगी मुद्दूर भविष्य की बात ।

फटाफट बातें करती है जया ।

यह रह डडी के डडी ! यह रह मेरे डडी ! यह रह ममी के डडी !

मन यही चोन्ता है । एस तो बात मुह में नहीं निकलती । स्कूल की पुस्तक में भोर-घोर बातें लिखी हैं । मन की पुस्तक पर दूसरी ही बातें

लिखी है—यह रहे डेडी के डेडी ! यह रहे मेरे डेडी !

बड़ी होकर जया घर की सुविधा असुविधा देखना सीख जायगी ।

अभी तो जया बच्ची है ।

जया बचारी क्या करे ? उसे नींद घा रही है । नानी क पास जाकर कहती है

मुझे नींद घा रही है ।

नानी प्यार से जया का मुह छुमकर वही नोरी देने लगती है जिसमें कहा गया है कि नीले घोड़े पर चढ़कर घ्राएगा हमारी जया का दूल्हा ।

जया को नींद घ्रा रही है । नींद को फौन राक सकता है ।

क्या यह सब अभिनय है ? नानी सोचती है जया बड़ी होकर अवश्य एकट्रेस बनेगी ।

दपण म देख रही है नानी । सोचती है मुह की गठन काफी बदल गई । शरीर का रंग भी बह नहीं रहा । बाल सफ हो चल । समय चक्र घन रहा है श्रुतु चक्र भी रुकता नहीं । पेड़ के तने पर लिखी रहती है पेड़ की घ्रायु । मनुष्य की घ्रायु भी छिपाय नहीं छिपती । तीस से ऊपर की हा गई मरी इरा फिर भी उम्र बीच-बच्चीस के बीच ही बतानी पडती है । इतना भूठ तो चलता है फिल्म लाइन म ! एनट्रेस का तो जवान ही रहना होता है मपने को जवान मानकर ही चनना होता है । जया अभी बच्चा है । वह सो गई खन-खेलकर सा गई । खूब खती । डेडी डेडी कहत थकती नहीं 'यह रहे डेडी क डेडी ! यह रहे मेरे डेडी ! यह रहे ममी के डेडी !

नानी के होठो पर मुस्मान खेल गई । उसने मदन बाबू का फाटो उठा लिया । फिर साती जया की घोर सकेत बरक बोली

मया मदन बाबू तुम्ह यह मपनी पौत्री जया पसन्द है न ? वह तुम्ह ममी क डेडी कहती थकती नहीं । एनट्रेस बनेगी हमारी जया । भरे क्या बात है मदन बाबू ! द डानो घ्रासीर्वाद ! इत बचारी का डेडी तो

ऐसा गया कि फिर लीटा ही नहा !

इनने म इरा प्रवेश करती है

किसस बातें कर रही हो माँ ?

तुम्हारे डडी म !

डडी क्या सुन सकत हैं ? जया सो गई ?

सोती जया का मुँह छूमकर इरा कहती है

मेरी जया एकट्ठा बनगी !

दपण म अपना मुख खकर इरा साबती है, धनी तो मैं वास और  
पच्चीस व बोच की ही लगती हूँ ! मरी आयु तक पहुँचत तो जया को  
प्रीम मान रगेंगे ! दस सान की हो गई जया । दग्धन म पाँच की ही  
रगता हूँ ।



बम्बई का जीवन-दर्शन मीना-वाजार तक ही सीमित है, यह कहना तो भयाव्य होगा। बम्बई प्राचयजनक है। कभी वह एक कवि की शिष्ट भाषा में बोलती है कभी एक व्यंगकार की मुल मुग क साथ महत्वाकांक्षियों का आड नेती है। कभी प्रदलमूचक दृष्टि से दखती है बम्बई। सबट में भी मुस्कराती है हर समय धौड लगाती है। काहिल और मुस्त प्राणी को यहाँ ठीर नहीं। समुद्र दूर नहीं। समुद्र की गहराई में पटती है बम्बई की कल्पना बम्बई की साधना।

गाविन्दन की शिक्रायत है कि यहल्या की माँ उपदेशा का ढर बन गई। एकस्ट्रा में भरती हुई महल्या। अब उसे साइड रोड मिन जाता है। माँ गोविन्दन का श्रणी है। सात हजार खच करके माँ ने महल्या का याह दिया था अब ता वह दो बच्चा की माँ है। माँ कहती है, गोविन्दन तुम व्याह नहीं करोगे ? तुम्हारी इतनी उम्र हो गई ? गाविन्दन चुप रहता है।

गाविन्दन टिप-टाय बाहर निकलता है— टेनर मड चाय ! जब तक शख यहाँ रहा गोविन्दन उस घप्रेजी सूट पहनन को कहता रहा। उम भल भादमी न करन को बप भूषा न छाडी। गोविन्दन तो बम्बईया छाप म्यूजिक-डायरेक्टर है। प्रोड्यूसर डाइरेक्टर जिस बप में रहते हैं वही गाविन्दन का प्रिय है।

पंच है हमारा टप रिकाडर माँ ! उधर रेडियो पर दुनिया के

किसी भी स्टेशन से गाना घा रहा है । जो गाना हमें थोड़ा काम का नगा टप पर भर लिया । नया गाना बनाना कौन मुश्किल ! एन की टांग एक का सिर । गाने की धुन निकान दी ! कही की इट कही का रोड़ा मानमती ने कुनवा जोडा ! ऐसे ही चलता है माँ ! वीस-पीडिया संगीतकार गोविन्द ! गुरुदेव रद्रपदम् का सुपुत्र ! वम्बई के मीना बाजार का म्यूजिक डाइरेक्टर ! चनगा ऐस ही चनगा ! हमारी धुनें बिकती है । उही धुने पर राज राज अनुपम गीत लिख डालता है । इधर हमारा नाम उधर राज राज अनुपम का नाम । दुनिया बाह-बाह कर रही है । कहती है गाविन्दन क संगीत का जवाब नही । राज राज अनुपम एक गीत का एक हजार से कम नही गता । कह दता है वह बिजी है । वम्बई का मीना-बाजार उसा क भाग भुक्ता है जा बिजी है । मैं भी बहुत बिजी' हू । एन साथ चार-चार पाँच-पाँच फिल्मो म संगीत दना मजाक ता नही ।

इस लम्बे भाषण के उत्तर म माँ इतना ही पूछती है 'गव क्व प्रायगा बटा ?

माँ जानती है सच्चा संगीतकार तो सख है । सच्च आत्मा को वम्बई से भागना पडता है । सच्चे घादमी का सच्चा संगीत यहाँ नहा चनवा । माँ गाने लगती है

रेनिया होइ गई मोर सबतिया पिया क लादि नई गइ ना ।  
उसकी घाँसेँ चमक उठती हैं जैसे वह रहा हा—सगात ता यह  
या ! तुम क्या धुन बनायागे बटा नवकाल !

उबची उगात है ।

जयन्त की नोटबुक म दोस्त का उद्धरण पढ़ती है

एक चिड़िया से किसी न पूछा— तुम्हारे गीत इनने छोट  
क्या हैं ? तुम्हारी साँस घासी है इसनिए ?

नहीं इसका कारण यह है कि मेरे पास बहुत स गीत है और मैं उन सभी को गाना चाहती हूँ।

और उर्वशी ने मन प्राण सिहर उठते हैं 'गुरुदेव की सिगनेचर ट्यून लगाती है सुनते-सुनते विभोर हो जाती है।

जो नई फिल्म तुम बना रहे हो जयन्त उसका संगीत तो एकदम रही है।

'काई गुरुदेव' तो भ्रम में बनाने से रहा। यह और बात है कि 'गुरुदेव' की आठ-दस सान बाद पब्लिक में कुछ पूछ हो रही है, पर बाजार भाव तो दूसरा ही है।

गुरुदेव ने एक स्टैण्डर्ड कायम किया यह तो दुनिया ने माना। बाजार में कसी हवा चल रही है, यह बिलकुल भ्रमलग बात है।

उर्वशी जानती है कि जयन्त भ्रम हॉलीवुड के नुसखों को जोड़ तोड़कर जो फिल्म बनाता है सब बाक्स ऑफिस हिट हो जाती हैं। पर घटिया संगीत ने कभी-कभी उसका मन उब्र जाता है। गुरुदेव की सिगनेचर-ट्यून लगाकर कभी-कभी वह कहता है 'यस इस बात पर मैं गव कर सकता हूँ उर्वशी कि कभी मैंने इतना बढ़िया संगीत दिया था। जमाने की मार है ! जमाने के साथ चलना पड़ता है।'

इन्सान वह है जो जमाने को अपने साथ चलाये।

य बातें भी हम इसलिए कर रहे हैं कि खपया आ रहा है। दोबारा पिट जाय तो सब आदश धरे रह जायें।

उर्वशी उदास है यह बात जयन्त से छिपा नहीं।

मरी हानत उस चिड़िया की-सी है जिसके पास बहुत स गीत थे और वह उन सबको गाना चाहती थी।

तुम्हारे पास घटिया गीत ही ज्यादा हैं जो बाक्स ऑफिस हिट हो जायें !

'जिन्दाबाद गोविन्द ! मेरी चिड़िया तो वही है। जिन्दाबाद राज राज अनुपम जा मेरे लिए गीत लिखता है। जिन्दाबाद प्ले बक सिंगर

जिनका भाषाज का जादू बोलता है सिर घड़कर । पल बक का इन्तजाम  
न रहता तो हमारे बहुत से हीरो बकार हा जात तुम्हारे इरा जसी  
हीरोहन भी चार काम न बत सकती । अब तो इरा भी बुलबुल का  
तरह गाती है ।

तुम इरा को भूत जाघा । उस मनाज क लिए रहन दा ।

ता तुम्हें भी मुझ पर सनेह ह । किसी न टोक ही कहा ह  
वामन दाई नेम इज जलसी [ नारी तेरा नाम ह ईर्ष्या ! ]

उबगी उदास ह । बहुत जिना स उसन इरा की शकल तक नहा  
गयी ।

मनाज इरा का भूल नहीं सकता ।

वह इरा को धायत विद्रिया समझता ह । ग्य उसका धाँखा म  
कसा बदना घोल गया यह वह धाज तक नहा समझ सका । उस  
सगता सय म व्याह करने क बाद भी इरा कुमारा है । वह जया की  
माँ ह—उस सान की जया की माँ वह बात भी उसके सामन नहा  
टिकती । फिल्म म हजार बार दुल्हन बनती है इरा । हर बार वह  
कुमारी ही होती है यह बात मनोज के जिन म सगती है ।

इरा के प्रमिया की कमी नहीं । कई बार मोना-बाजार म यह  
विद्रोरा पिट चुका ह कि इरा फिर स व्याह रवाना जा रहा है और  
गय का वह मक्खी की तरह दूब स निकाल चुकी है ।

मनोज यह बात भूल सकता है कि इरा धाधिर एव तवायफ की  
बनी है । यह वह बात मानता है नारा स प्रेम करने के लिए परम  
धावयफ है कि हम उसन मजोत को भूल जायें ।

जपन्त न घपना दूनरी फ़िल्म म इरा को हीरोहन बना लिया । स्वयं  
हीरो बना । सम्बद्ध को घरम भी नहीं घातो । घर म उबगी जसा  
धम्परा पत्नी है फिर भी इरा क पीछे भागता है । एक-ए घोर प्राइवूवरा

ने भी इरा और जयन्त की जोड़ी पेज की। जयन्त ने अपनी तीसरी फिल्म में इरा को ऐसा हाथ पर चढ़ाया, प्यार-मुहब्बत के ऐस-ऐस हाथ पेश किये जिनमें अभिनय करते-करते इरा उनमें डूब गई।

मनोज अपनी मिश्री में कई बार यह चर्चा ने बढता है, जयन्त और इरा ने मजबूत बन के लिए कुछ ऐसे दृश्य भी फिल्माये जो सबसे अपोना और न्यूट्रिटी [नन्तता] के गरमागरम मास्टरपीस थे। ये सब फिल्म के रसियों को तो न दिखाय जा सकते थे। फिल्म में तो वही सीन रहे जिनकी सेन्सर ने मनाया था।

महकियन में बड़े मित्र मनोज की ओर सहानुभूति से देखते हैं तो यह पाकर मनोज कहता है इरा की विसती ही नग्न मूर्तियाँ और फोटो जयन्त ने बनवाये।

इस घाट से दिलचस्पी भी कह सकते हैं! कोई चुन्की लता है।

पर माई डीयर यह बात भी दुनिया से भूलो नहीं कि घण्टों बन्द कमरों में जयन्त और इरा वह इण्टरेस्टिंग खेन खेलते थे जिसे रिहसल का नाम दिया जाता है!

इस बीच एक फ़िल्म में जिसका प्रोड्यूसर मनाज ही था मनोज ने इरा को हीरोइन बनाकर जयन्त के दाँत खट्ट करने की पूरी कोशिश की थी। पर न तो वह जयन्त वाले दृश्यों के स्तर तक उभर सका, और न इरा ने ही उतनी दिलचस्पी दिखाई। उधर जयन्त ने धीरे मचाया कि इरा पर तो एकमात्र उसी का अधिकार है। इरा को विश्वास हो गया कि फिल्म में उसका भविष्य जयन्त के साथ बँधा है। इरा ने जयन्त के साहस को सराहा। उवही जसी मुन्दरी का पति हाकर भी यह पीछे नहीं हटता। बदनामी का भय जैसे जयन्त को छू तक न गया हो!

मनोज सारी वस्तुस्थिति की खिला उड़ाता है मन ही-मन। कोई बात हुई बना! अब तो वही भेड़ चाल चमक पड़ी है। सभी प्रोड्यूसर जयन्त और इरा की जोड़ी ल रहे हैं। रही-सही कसर जयन्त अपनी बना



मावीटोन' म निवाल नता है । इरा की घन ही जयन्त क साथ काम करने की रहती है । प्रोड्यूसर नजबूर होकर जयन्त को लेता है । जयन्त भी थकड़कर इरा क बराबर कीमत मांगता है । धन्य हो तुब ! पूरे चार सौ बीस ही तो हा जयन्त भाइ ! जा-बजा अपनी कीमत बढ़ा रह हा । यह जमाना नी बूब है ! प्रद्योक कुमार हीरो ता ननिनी जयवन्त

हीरोइन । मतनब यह कि घणाक क साथ ननिनी की कामत बढ़ती गई । सुरया न दवानन्त को बढ़ावा लिया । तिलीप और कानिनी । उन्ही क अनुसार कहानी की काल्पित्य करनी पडती है ।

मनाज सोचता है जयन्त क पास काइ जादू का झूठी ता नती जिसके जोर स उत्तन इरा को मुन्मन हयिया लिया । काइ महजिन हा कही नी फोटा लिया जा रहा हो नाई धार जाकर का-सा चहरा निय जयन्त धाकर इरा के पहलू म लडा हा जाता है ।

मनाज का जयन्त न यह नी शिकायत है कि यह अपनी पिक्चर में इरा को हमगा अपने न कम रोना ता ह सारी कहानी अपने गित

मनोज साबता है धरती गान ह एक तिन इरा पत्रकर मेरा तरफ खगी और जयन्त क चक्कर स निकल भायगी । इरा का ध्यान धान ही उसका रा रग म पु फल बज उल्ल हैं । वह मन-ही-मन कहता है, इरा करोडा दिना पर राज करती है मरे तित पर भी !

इरा का ध्यान धान ही मनोज का चक्कर क एक पत्र क य स स्तरण हो घात हैं स्या का बगन इतना सजीव और जानदार हो कि उम पढ़न ही आप एसा अनुभव करन ताँ जब आपक रूता पर पानिय नही है जब आपकी टाई रा गाँठ टीन नटा बधी है, विनडुल एम ही जन धान वास्तव म किसी स्थी को दनकर अनुभव करत हैं ।

इरा का धान्तर करता ह मनाज । तिन म एरु-धाय बार उत्तम निर विना तो उनका काम नग चलता । धक्कर पा जाय ता घन्नों उनम नाप विता ता है । जयन्त कही उपस्थित भी क्यों न ग यह

सिफ इरा का देखता है ।

सच बात तो यह है इराजो हम एक डाल क पछी हैं । मउं स एक पिक्कर म काम करन के दो-ढाई लाख मिल जाते हैं ।

कभी यह पिक्कर कभी वह पिक्कर । घूटिंग म ही हमारे प्राण छूट जायेंगे । रुपया तो साथ जाने से रहा ।

प्रेम की घूटिंग से ही मत नापो । रुपय से ही मत तोला ।

प्रेम ? वह यही कही ? और रुपया किसके हाथ में टिका है ?

दास का पत्र तो भ्राना होगा ?

क्या नहीं ?

जया को देखने नहीं आया दास ?

इसम में क्या घोल मवती हैं ?

बम्बल्ट को कला की पूरी समझ है । पर इस मीना-वाजार का तो बाबा भादम ही निराभा है । हमारी इरा को खादी के सफ़्त वस्त्र पहनने सिखा गया और फिर लौटकर न आया ।

आ जायगा जब उसका मन चाहेगा ।

उसके सगीत की सबसे बड़ी विशेषता है समय । सन्तुलन म भी उसका जवाब नहीं । पर लाग तो जुलबुनिया चमाचम गाने ही पसन्द करत हैं । जहाँ भूठ निभ सके वहाँ सच कस टिक ? गोबिन्दन का सगात चलता सिक्का है ।

इरा को प्रभावित करन का कोई भी अवसर मनोज हाथ से नहीं जान देता । नापणवाजी से भी नहीं छूकता । प्रेम की रगभूमि पर भी क्या प्रॉम्पटर चाहिए ? प्रमी का घोड़ की तरह हिनटिनाना तो नहीं चाहिए । बम्बई झाई हो गई । एकटरो की आयाज भारी होने का डर नहा रहा । मन क भीतर क संतान को छुट्टी दिय बिना प्रेम पनप नहा सकता । सादगी चाहिए सच्चाई चाहिए । छन नहीं कपट नहीं । तब जलता है प्रेम का लौया !

बानो क बिना ही ! इरा हस पड़ती है ।

प्रेम कोई बनावट नहीं फगन नहीं। प्रेम तो इंसानियत का  
 धरम कहानी ह ! प्रेम तो पूजा है।  
 तो मन्दिर म जाकर मूर्ति पर फूल चढाइए। इरा फिर हैत  
 पडनी है।

इम प्रकार की धनक मुनाकात हाती ही रहती हैं। अभिनय मात्र  
 अभिनय। मनोज को इसका दुख है। इरा को वह अभिनय न कहा  
 नूल्यवान समनता है। एक दिन इग मेरी हाकर रहेगी। वह सोचता  
 है फिर मुझ पर मरी वाता पर हँसेगी नहीं। अपनक आँखा स इरा  
 को थोर दलता है इरा न वात किय बिना ही नगा-गा चढने नगता है।  
 दूसरी कोई सुट्टरी मनाज का मन नहीं मोह सकती व्याह व चक्कर म  
 पढने वा तो प्रपन ही नहा उठता। अपनी कम्पनी फल हा गद। दूसरा  
 की कम्पनिया म नाम करना पडता है—हीरा का काम। पत्न हीरापन  
 होती थी इरा। अब तो नई-नई हीरोइनों आ गद। किसी के साथ मन  
 का मेल नहीं बढता। मन की कचन-कुमरी है इरा। युग-युग जीयो  
 इरा। गायन एक तिन तुम मेरी बनना स्वीकार करो। मरे मन मन्दिर  
 की देवी युग-युग मुस्कराया। गल अब नहीं आया। उमरा खयाल  
 छोड गे। जयन्त अपनी उवगी वा है उसे नी छोडो। अपनी गाडी  
 चल सकती है मजे मे।



सुभितबोध से मिलिए, तो वह अपने अनुभव को पिगरी खोलकर बठ जाता है। वह बलपूर्वक कहता है

एक दौर में म्यूजिक-डाइरेक्टर को सबसे अधिक पारिश्रमिक दिया जाता था। दूसरे दौर में हीरोइन ही इस तराजू में सबसे भारी तुलने लगी। अब हीरो डाई-तीन साइड में तुलना है। एक फ़िल्मी पत्रिका के सम्पादक ने ठीक ही लिखा है— दुनिया की कौनसी एंटी इण्डस्ट्री है जिसमें मुझे रगकर पनीस-चानीस रोज काम करने का मुझा बड़ा आई या तीन नायक स्पया है? छः घाठ या नस नास की नागत की फिल्म का चौथा हिस्सा सिर्फ हीरो का ही दे दिया जाय तो मुनाफा साक आएगा? फिल्म निर्माता भी जानता है कि आज अमुक हीरो लोक प्रिय है। बड़ी रकम इन के बाद भी हीरो जो एक साथ छः छः सात-सात फिल्मा में काम करता है एक फिल्म की शूटिंग के लिए ज्यादा-से-ज्यादा चार या पांच रोज ही दे सकता है। जिन फिल्मों में कास्ट पर पूरी रकम खर्च कर दी जाती है, उन फिल्मों में काम करने वाले दूसरे लोगों को मुभावजा बहुत ही कम मिलता है। फिल्म कौन तयार करता है—मार्टिस्ट या टक्नीगियन? फिल्म के विभिन्न विभागों में काम करने वाले लोग अ मुभावज में इस समय जा लम्बा फासला पाया जाता है यह फिल्म इण्डस्ट्री के नक्षिप्य के लिए बहुत नया तक है।'

राज राज अनुपम और शखर एक साथ चाय पी रहे हैं ।  
 हिसाब लगाकर देखता हूँ शेखर भाई ! मैंने हजारों गीत लिख

ठाल पर मुझे उनका मोल क्या मिला ?  
 आज ये बहकी बहकी बातें क्यों कर रहे हो ? शेखर हँस पड़ता

है भगले जन्म म लडकी का जन्म लेना । फिर तुम्ह भी इरा जितन  
 पसे मिन सकते हैं । लाखों म खेल सकोगे ।

इस जन्म म क्यों नहीं ? जयन्त और मनोज को क्या सुरखाव न  
 पर लगे हैं ?  
 खर छोड़ो । आजकल तो जयन्त और इरा का जोड़ा खूब चल

रहा है ।  
 मनाज पीछे रह गया ।

मनोज ने अब तक शादी नहीं की ।

इरा को हथियाने का सपना देखता है कम्बस्त !

गायद उसका सपना सच हो जाय । गख ता लौटकर घाने स  
 रहा ।  
 जयन्त को मिल इरा चाह मनाज को । हम तो पूरी मजदूरी

मिलनी चाहिए ।

शेखर पहन डटकर गाविन्दन की चटपटी घुना की प्रशंसा करता  
 है । फिर कहता है तुम तो इतने पम मार लत हो कभी हमारे लिए  
 सोचा है !

क्यों तुम्हारा गुजारा ठान नहीं चल रहा ?

मजा भा जायगा जब लाखों म तुलने वाल सफ़्त हार्थी हमारे  
 पग तुनेगे । खर छोड़ो । आजकल फ़िल्मी हनका म इस बात पर गरमा  
 गरम बहस हो रही है कि किसी फ़िल्म न लिए एवाड किस मिलना  
 चाहिए ।

सत्यजीत राय ने अच्युत किया कि फिल्म फेडरेशन ऑफ इण्डिया के जलस में शामिल न हुआ ।

मजा धा गया गोविन्दन जी ! राजकपूर के जागते रहो को चकोस्लोवाकिया के फिल्मो मेले में बेहतरीन फिल्म करार दिया गया और सत्यजीत राय की अपराजिता को चीनस के फिल्मो मेले में दुनिया की सर्वोत्तम फिल्म कहकर इज्जत बख्ती गई । इस पर हमारी फिल्म फेडरेशन ऑफ इण्डिया को नोद टूटी और उन्होंने जलसा किया । हमारे दध की नीड हमेशा पीछे टूटती है । टगोर की गीतांजली पर नोबल प्राइज दिये जाने के बाद ही तो हमन टगोर को पहचाना था ।

बात तो सत्यजीत राय की चल रही थी । राजकपूर ने तो मजे से जाकर अपना सम्मान करा लिया । पर सत्यजीत राय न लिया— मैं फेडरेशन का यह सम्मान सिफ डाइरेक्टर की हैसियत से ही प्राप्त कर सकता हूँ प्रोड्यूसर की हैसियत से नहीं क्योंकि चीनस के फिल्मो मेला में मेरी कलात्मक प्रतिभा को सराहा गया न कि मेरी जब को !

जानते हो इसके पीछे क्या बात काम कर रही थी ?

वही न ! दो साल पहल सत्यजीत राय की 'पथर पांचाली' को भारत सरकार न सर्वोत्तम फिल्म करार दिया था । नेशनल रेकोर्डरी दिल्ली में पथर पांचाली का एवाड सत्यजीत राय न नहीं बगाल सरकार के डाइरेक्टर ऑफ पब्लिसिटी ने प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के हाथों से प्राप्त किया हालांकि सभी मानते थे कि इस फिल्म की सफलता सत्यजीत राय की डाइरेक्शन के कारण हुई, न कि बगाल सरकार की जब के कारण ।

धरे भाई, यह दुनिया है । सब चतता है ।

पहल्ला के मुख पर मेक-अप का नहीं खुशी का रंग खिन रहा है ।  
माँ एक खुशबरी सुनोगी ?

क्या ?

'हमारे पसे बढ़ जायेंगे ।

कम ?

बड़े-बड़े घाटिस्ता क पसे घटो तो हमारे पसे बढ़ो यह ता पक्की बात है ।

लड़क नन ही फूट जाय उसम न तुम्हें तो हिस्ता नितन स रहा ।

यह गलत बात है ना ! यह मजदूर का जमाना है । हम मजदूर ह । यह नहीं बना कि बड़े-बड़े घाटिस्ता तो ब्लक म सत्तर-सत्तर घस्ती घस्ती हजार मीं और हम नफे म भी पांच सौ पूरे न मिलें । य बात बनायागा ता इतने स भी जायोगी जो तुम्ह मिल रहा है । यह ता गोविन्दन क कारण तुम्हें साठ रोल निन जाता है नही तो एक्स्ट्रा म भी काई न पूछ । भावानु का नाम लो । जो मिनता है ठीक है ।

मना की समझ म यह बात नहा घाती कि बड़े घाटिस्ता की बड़ी रकमों क विशुद्ध दामन साहब क्या इतने चित्ता रहे हैं । बड़े घाटिस्ता का ज्यादा-स-ज्यादा मुभावजा मिल तो दामन साहब की जब स कुछ जाता नही और अगर बड़े घाटिस्ता का मुभावजा कम हो जाता है तो इस दामन साहब की जब म कुछ घाता नही । मैं कहती हू बटी एक लिन क्लिन फयर' के एपीटर की पार्टी कर दो । साथ ही दामन साहब को भी जरूर बुलाना । ब ला तुम्हारा गाना सुनने की जि करेगे ना । मैं मुता दूगी नन ही मैंने गाना ब कर रखा है । तुम्हारी पब्लिसिटी तो इन्ही लोग न हाथ में है न बटी ! इन्हें चुग रखा करो ।

इस माँ के पास बैठकर फिल्मों पत्रिका में प्रकाशित नर्तकियों का एक सप्ताह पढ़ रही है बड़े घाटिस्ट बड़ी रकमें ।

रूम में मैं दा वार गई हूँ । रूम अब कुछ एक देशों में घाटिस्ट लेखक या सांस्कृतिक सरगमियाँ में हिस्सा देने वालों को सबसे ज्यादा मुद्रावृद्धि दिया जाता है । ये लोग स्टैज और सिनेमा में काम करते हुए आपको रुबल्ल कमाले है और उन्हें लाखों रुबल्ल दत्त वक्त कभी किसी को मानसिक कष्ट नहीं होता । "

हमारी फिल्म इण्डस्ट्री का दाँचा कुछ प्रजीवन्ता है और हमारे फिल्म घाटिस्ट की जिनगी में तरकीबों का दौर सिर्फ चन्द सान तक रहता है । जिस इण्डस्ट्री में बड़ी उन्नति के घाटिस्टों को नजर मन्दाज किया जाता है और बाज्र भौकाव जिन्हें अपनी फिल्मी जिनगी के आखिरी दौर में एक एकला के तौर पर काम करना पड़ता है उस इण्डस्ट्री में कोई एक्टर या एक्ट्रेस बुरे दिना के खिलाफ अपनी हिफाजत करे तो किस तरह ?

मेक अप रूम कण्टीन स्टूडियो की स्टैज गुप्तखाना—गुर्जे कि स्टूडियो से सम्बन्धित किसी भी हिस्से को देखा जाय हर हिस्से में घण्टों बैठना तो तरकिनार घनी भर के लिए रुकना भी स्वास्थ्य के लिए हानिकार है । जहाँ काम करने में बकायदागी हो जहाँ काम करने के तरीके गैर-यकीनी हा वहाँ एक घाटिस्ट की जिनगी कैसे खतर से चलती रह सकती है ? और अपने प्रापको इस खतरे से बचाने के लिए सिर्फ ज्यादा-संख्यात्मक रुपया ममान की बजाय और कोई तरिका भी सा नहीं ।

बढ़ाये के लिए फोइ पैगन नहा । फिल्म के प्रस्तावा दूसरे बाधा में बड़ी उन्नति के घाटिस्टों की अनात्मक योग्यता से नाभ उठान का वाई प्रबन्ध नहीं ।

मरी राय यह है कि फिल्म में बड़े घाटिस्ट हो या छोटे फिल्म का उनकी खूबियाँ से परगना चाहिए । पयेर पाचानी ननक ननक



पावन वाज' धीर व्यासा आदि फिल्मों की सफलता न यह बात सिद्ध कर दी है कि बड़ी कास्ट का फिल्म बनाना ज्यादा बहतर है ।

हान ही में गायन आपका याद होगा । मदन इण्डिया' में भाग के एक दृश्य में मुझ एक हादसे का शिकार होना पड़ा और मैं वात बान बच गई । मुझ यकीन है कि अगर वहाँ यह हादसा मेरी गलत चूरत या बिस्म क किसी हिस्से पर भी घनर आदाज होता तो फिल्म में काम देना तो दरकिनारा कोई फिल्म निमाता यह जानन क लिए भी मेरे पास न आता कि मेरा क्या हाल है ?

फिल्मों में काम करते हुए नुबसान की तलाशी या बीमा का वाइ ब'दोबस्त नहीं ।

मैंने हर फिल्म में जी लगाकर काम किया है । मुझ अपने पगे पर फज है । फिल्म के मरमाय पर बोझ बन बगर हम फिल्मों गाड़ी को निहायत पग धस्खूवी छ चला सकत हैं ।

मौ रहती है कभी-कभी दलीलें दी हैं जहन वाई की देवी रानी न । मच्छा ही कि इस समस्या पर नू भी एक नेल निखे इरा । हमारे पट पर राव भारत हैं तुम्हारे दामन साहय । बटी कभी कभी उह पान पर युता लिया करो । इन रागा का मुह बन्द रखने का सबसे मच्छा उपाय तो यही है । किमा ने कहा है न—दिमाग का जान वाता रास्ता पट छ हाकर जाता है ।

इरा मुन्बराती है मेरा राय ता तुम जानता हो । मेरा तो गुरू से ही यह राय छी है कि फिल्म में घाटिटा के नाय-नाय टकनाशिवना क साथ श्यादान-श रमाण न्याय किया जाय ।



**दामन साहब** एक फिल्मी पत्रिका के सम्पादक हैं। नरगिस का लख बड़े धाटिस्ट बड़ी रकमें छापकर उन्होंने अपनी पत्रिका का बोल बजा लिया।

सम्पादकीय लेखा में दामन साहब आजकल बड़े धाटिस्टों को दी जाने वाली बड़ी-बड़ी रकमों के विरुद्ध खिल रहे हैं। अपनी विचारधारा के पक्ष में उन्होंने हाल ही में इरा का एक लेख प्रकाशित किया है।

दामन साहब की दलील है— इतनी बड़ी-बड़ी रकमों का मुतानबा करने वाले फ़िल्म धाटिस्ट अपने साथ फिल्म इण्डस्ट्री को भी ल डूवेंगे। सम्पादकीय का शीपक है— नये चहुरों की तलाश'।

इस खिलखिले में दामन साहब ने निर्देशक शान्ताराम सोहराव मोदी और लिखीप कुमार के साथ इण्टरू लिया और उनके विचार पाठकों के सामने पेश कर दिए।

शान्ताराम ने अपने उत्तर में कहा

काइ मुझसे पूछे कि फिल्मी सितारा को ज्यादा मुभावजा दिया जाता है तो मरा जवाब है कि नहीं—क्योंकि कम-स-कम मुझ पर ज्यादा मुभावजा देने का इतजाम नहीं लगाया जा सकता। इसके चर-अक्स मुझ पर तो यह इतजाम लगाया जाता है कि मैं बहुत कम मुभावजा देता हूँ। दरमसल मैं सितारों के नाम पर अपनी फ़िल्म बचने की कोशिश नहीं करता। 'भनक ननक पापस बाज' की फिल्मबन्दी से

पहले मुझसे कहा गया था कि मैं सध्या की बजाय बजबन्तीमाता आदि किसी मजी हुश नतवी को लू । इसी तरह 'तूफान और दीया' के समय भी अनुभवों आदिस्टा को लन का उपदेश दिया गया । पर इन दोनों फ़िल्मों में नय लागे स काम लिया गया और सब जानते हैं कि प्रयोग सफल रहा । इसका मतलब यह है कि हमारे देश में कलात्मक प्रतिभा की कमी नहीं । अगर फिल्म-निमाता मुनासिब तरीके से नय बहरो को हूट निवाले ता बडे सितारों के पाछे दौडने की जरूरत ही नहीं ।

सोहराब मादी न य विचार प्रकट किये :

सितारों को हरगिज ज्यादा मुद्राबजा नहीं दिया जाता । फ़िल्म इण्डस्ट्री में हर प्रतिभावान् व्यक्ति की खुशहाली का दौर काफी लम्बा होता है । मगर फ़िल्मी सितारे ज्यादा-से-ज्यादा दस साठ तक चमकते हैं । अपनी खुशहाली के दौर में उनकी धामदनी का बहुत सा हिस्सा टनसों की मूरत में निकल जाता है और जब वे रिटायर होत हैं तो उनके सामने अपने लम्बे चौड़े परिवार को पालने का सवाल पग होता है । गर यकीनी भविष्य का यही नय उह बडी-बडी रकम माँगने पर नजरूर कर देता है । असल में अभिनय का पग दूसरे पेशा से पर मुन्तलिफ है । दूसरे तमाम पेशा में परिपक्वता इन्सान की खिलगी में ज्यादा धामदनी लाती है । मगर अभिनय में पेशा में ज्योंही अभिनय का परिपक्वता पग होती है वह महसूस करता है कि अब यह पेशा छोड़ने का वक्त आ गया है । इसलिए सितारे अपनी जवानी में "यादा-से-ज्यादा धाखिर क्यों न कमायें ?

शिलीप कुमार न यह वक्तव्य दिया

जब फिल्म निर्माता बड़ी रकम पेश करें ता धाखिर फिल्म धाखिर उन्हें लेने न क्या इन्कार करें ? यही कारण है कि इस समस्या को किसी और पद्दत से देनना चाहिए । फिल्म निर्माता सितारों को बडी रकम इसलिए पेश करते हैं कनाकि सरमायगर से सरमाया लन

और फिल्म की फ़रोख़्त का दारोमदार इस बात पर है कि मास्टर उनकी फिल्म में कौनसे घाटिस्ट काम कर रहे हैं। इसलिए यह कहने की बजाय कि सितारा का ज्यादा मुद्रावज़ा दिया जाता है यह बात ज्यादा कहूँगा कि फिल्म निमाताओं को कम प्रदायगी की जाती है। इस प्रश्न का एक और पहलू भी है कि जब फिल्मी बजट का सबसे बड़ा हिस्सा फिल्म-घाटिस्ट ले जायगा तो ज़ाहिर है प्राइवसन के दूसरे विभागा पर ख़र्च करने के लिए फिल्म निमाता के पास बहुत ही कम रुपया रह जायगा। और चूँकि फिल्म की सफलता में सिर्फ़ फिल्म घाटिस्ट का ही नहीं बल्कि दूसरे विभागों का भी बहुत हाथ होता है इस लिए जो घाटिस्ट ज्यादा मुद्रावज़ा ख़ता है दूसरे माना में वह कुछ धन परा पर कुल्हाड़ी मारना है। इसका बावज़ूद कहा जा सकता है—क्याकि फिल्म घाटिस्टों का भविष्य गर-यकीना है इसलिए वे बड़ी रकमा का मुतासवा करने में हक़-अज़ानव हैं।

अपनी ग़िप्पणी में दामन साहब ने यह सुभाव दिया कि नय चहरों की ख़ता में कोई बसर उठा न रखी जाय। साथ ही दामन साहब ने यह चेतावनी दी— नय चहर पेश करने वालों में घात्मविश्वास तो होना ही चाहिए। पर नय चहरा को लना जहाँ अवनमदी है वहाँ यह काम फिल्म निर्माता की नाव का डुबो भी सकता है क्योंकि यह ख़रौरी नहीं कि नय चहरे फिल्म का सफल बना दें। यह सोभाष्य की बात है कि शायद ही कोई फिल्म हाती हागा जिसमें एक-न एक नया चहरा पेश न किया जाता हो। मशर इण्डिया में निर्देशक महबूब ने अज़रा के नाम से एक सुन्दर चहरा पेश किया है। इस फिल्म में नया अभिनेता साज़ि भी नय अभिनेताओं की पवित में विशेष स्थान रखता है। हीरा की भूमिका के लिए राजकुमार को भी किसी भी फिल्म में स्थान दिया जा सकता है। विनयराय अघराधी कौन' में लीलीन के नाम में एक नया चहरा पेश कर रहे हैं। जी० पी० मिर्ची की फिल्म 'नीनोफर' में प्रीरोज के नाम से एक नया चहरा हारा की

भूमिका में वेग हा रहा है। फिल्म निर्माता गुरुदत्त अपनी फिल्म 'गौरी' में अपनी पत्नी और प्रसिद्ध प्ले-बैक गायिका गीता दत्त का हांगेन की भूमिका में ला रहे हैं। अन्त में गमन नाटक में यह मुख्य त्रिया कि फिल्म निर्माताओं के लिए अधिक-से अधिक नरमामा उपलब्ध करने हेतु किसी कारपोरेट का निर्माण बहुत जरूरी है और यह कारपारान नरकारा महायता के साथ खरी का जा सकती है।

प्रसिद्ध कहानी-लेखिका और फिल्म निर्माता इस्मत चुगताई ने ना 'बट घाटिल' बड़ी रकम के मिलान में मजदूर बाने निर्मा

नरगिस एक महान् घनिनी है और बहुत प्यारी मडकी है परन्तु की घायिक और सामाजिक समस्या पर या उचटवी हुई राय न द तो और ना प्यारी लागी। फिल्म घाटिल लाडों लत हैं क्योंकि प्रोड्यूसर दत्ता है जिस स्पीक्यूर इन है जो सिननावाला स पमा बगोरत है जिनके हाथ में जनता के बहुत का डारी है।

और बचारा प्राड्यूसर का टूटा पूरा दलाल है। बाजार में जिन चीज की माँग हाती है वही यात्र में सजाकर बट जाता है। वह तो व्यापारी भी नहीं सच पर बिल्ला-बिल्लाकर बचन बाता फरा जाता है।

वह सच और चीन की निम्न भ्रमर नरगिस न न दा हावी का मन्दा या। एसी नाश निम्नता से बहुत से तरिड छिन जात है। नरगिस ता वहाँ के बड़े कनाबारा से मिला हागी। काय वह उनन पूछती कि व किन्ता सपना जन की मूरत में लत है। लक न सपना लन का यह मकसद होता है कि नरकार का इन्कन-डक्क न नना पड क्योंकि उस सपनी कनाकार काइ रसा नरी दत। यह प्राड्यूसर की जात पर नही जनता की जब पर डाका है।

प्रापका पायद नातूम नहा कि बट सपना जा स नग्न नलाकार लक की मूरत में लत है प्राड्यूसर बचाय उसका हिस्सा के नर-सप कर करता है। नूवी रवी बनाई जाती है। जिस घा-

आर्टिस्ट को सौ दिये जाते हैं, उससे पाँच सौ की रसीद ली जाती है। कुछ ऐस भी बेकार और मजबूर है जो एक वक्त की राटी खाकर रसीदें न जात है। यह चनकर इतना पचीदा है कि इन्कम-टक्स वाल किसी को पकड़ ही नहीं सकते। आर्टिस्ट ब्लक का रुपया सफ़्त रुपय से पहल बसूल करते हैं। और यह रुपया बड़ी होशियारी से बसूल किया जाता है। हजार के नोट को तो ये हाथ नहीं लगात, न बन ही बबून करते हैं कि शायद कुछ पकड़-घकड़ हो जाय। दो चार हार्यों म से गुजरकर रुपया कलाकार तक पहुँचता है। कोई रिश्तेदार या सफ़्टरी बसूल करता है और फौरन यह रुपया किसी गाल-मोल तरीके से या तो बक के लाकर म पहुँच जाता है या जबर जमीन मोटरो और बँगलों की मूरत भस्तिवार कर लता है। यहाँ भी खरीद-फ़रास्त कला कार के नाम से नहीं काल्पनिक या किसी रिश्तेदार के नाम से होती है।

कुछ आर्टिस्ट और भी-होशियारी करते हैं। अगर एक साल पर मामला तय हुआ तो तीस हजार सफ़्त बानी सत्तर हजार काल। घब नस तास हजार म भी तीन काण्ट्रनट होत हैं—एक किसी बहन या नाइ या एक किसी और काल्पनिक कलाकार का एक घसल कलाकार का। इन्कम-टक्स वाले पकड़ न सकें इसलिए ये दूसरे लोग जिनके नाम से काण्ट्रनट होत हैं एक झलक परदे पर दिखा जात है। एक लाग पर मामला तय हो तो दो कागज लिखे जाते हैं। एक होता है पूरी रकम का यानी एक नाम का और एक होता है सफ़्त रकम का। इन पर एकतरफ़ा दस्तखत होते है सिफ़ प्रोड्यूसर के। जब ब्लक का रुपया पूरा भदा हो जाता है तो यह एक लाख यासा कागज फाड बना जाता है। बाकी सफ़्त रुपये याता कागज दिखाने का रह जाता है।

कुछ प्रोड्यूसर नी पतवाज हैं। भूठ-सच जोड़-ताडकर आर्टिस्ट का रुपया गोल कर जात हैं। पचास हजार का काण्ट्रनट

किया । दस हज़ार देकर दस दिन की गूटिंग में सारा काम चास्ताकी से खत्म कर डाला । बहुत ने क्लोथ घप ले डाने और किसी दूसरे भादमी की पीठ दिखाकर पिक्चर खत्म कर डाली । बाकी चालीस हज़ार ठगम । अब करत फिरें उन पर दावे । और गडबड की तो दीवाला निकाल दिया ।

दुनिया बतन रही है और जिसे जिला रहना है उस बदलना ही पड़ेगा । छोटे-मोटे काम करन वानो में अब यह भ्रमास पदा होता जा रहा है कि सिफ वडे आर्टिस्ट ही नहीं हम भी फिल्म को बनान और विगाडने को ताकत रखते हैं । मुभावज में कोई तो सन्तुषण हो । पूरे स्टाफ को एक फिल्म में बीस हज़ार मिलता है जब कि एक बड़ा आर्टिस्ट ही दो-तान लाख न जाता है । वह दिन भी दूर नहीं कि खुद भपना मुभावजा तय करते वक्त यह भी देखना होगा कि दूसरा का कितना मिन रहा है । उस अन्तर को जो एक अभिनता और लाइमन की आमदनी में है खुद दूर करना होगा नहीं तो वह लाइमन यह काम भपने हाथ में ले सगा ।

हम हिन्दुस्तानी धर्मे पुजारी हैं । पत्यर क देवता को सोने के मन्त्रि में मुताकर खुद सडक पर करवटें बदलत है । दिनीपकुमार और नरगिस क दाना क लिए भपन बच्चों का पेट काटते हैं । धूप और बर्षा में शयू लगाकर खडे हाते हैं । क्या हमारे य फिलमी खुदा कठ-पुतलिया हैं ? क्या यह निरा अभिनय है ? भावना का बिनकुल देखल नहीं ? क्या नया 'टीर' में सांग वाले का रोन भदा करत वक्त लिलीपकुमार ने दग के हज़ारा तांगेवालो क लिए कुछ महमूस नहीं किया ? क्या मदर इण्डिया में हिन्दुस्तान की मां की भूमिका में काम करत समय नरगिस ने ममता की कोई उहर न महमूस की ? क्या लंक मार्नेटिंग और गुण्डार्नी क विरुड लडन वास इन्सान की भूमिका में नेवानन्द ने फिल्मो कास बाजार क बारे में कुछ नहीं सोचा ? क्या य महान् कला कार छोटे मजदूरों की हासत में बतबर हैं ? क्या य एक धरण क लिए

भी सोचत हैं कि कितने स्टूडियो बक्की तौर पर जब बंद कर दिय जात है तो इन लाइव सभालन वाला पर क्या गुजरती है जा इन अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के सुन्दर चहुरा का पमपाया करते है जिनकी महनता न वह मह स्वर्गीय सौंदर्य प्राप्त है ? य अभिनेत्रियों को सिर गाडी पर पहिया किये सट से मक अप हम्म की जमीन नापा करत हैं ये केमरा मन जो धूप और गरमी म घण्टो मौसम क जल्म सहत हैं— उन्हे बतन कितना मिलता है ? मिलता भी है या मांगन पर पत्ता ही बट जाना है ?

आखिर अभिनेताओं और दूसरे मजदूरों म इतना धन्वर नब तक कायम रहेगा ? पब्लिक फिल्म म छम छम करती अभिनेत्रियों को रखना चाहती है । इस परन्त के पाछ कौन याक और पून म मता है किसीको दिलचस्पी नही किसीको परवाह नही ।

मगर यह फिल्मी दुनिया स्त्रीन पर ही नही असलियत म भी बनावट के निधा कुछ नहा । प्रोप्युमर अभिनता की छीक पर भी तडप उठत है तो सिफ मसफा लगान के लिए । यही अभिनता जब उनकी दूकान सजान के काबिन नहा रहेगा तो उसकी शरधी का कथा भी नही देगे ।

अभिनेता का धन क्याति पब्लिसिटी चाहने वाला की थडा और पूजा मिलती है । इतना कुछ तो राजकल किसी का भी नही मिलता । और बाकी के काकारा को बत पर बतन भी नही मिलता । उनकी मेहनत की दाव नहा मिलती पब्लिसिटी नही मिलती और कोई नहा सोचता कि क्या ?

एक दिन जमींदार भी यही नापता था कि वह जमीन का सुदा है । आज उसका क्या ह्मर हुआ ? यही ह्मर उस मुनाफाखार सर मायेदार का होगा जा मजदूरों को भूना मारकर विजारिया भरता है । और वह अभिनेता हो या कसाफार जा कोई भी हो इम मनोवृत्ति क साथ इमानियत का धन-बददार नही हा सवता ।



फिल्मी दुनिया में भी दिन प्रतिदिन जाति पैदा होता जा रही है । नवयुवक शिक्षित वर्ग इस लाइन का मोर बढता आ रहा है । उनमें यह भ्रह्मसास सिद्धत से पदा हो रहा है कि उनका साथ इन्साफ नहा हो रहा है । महत्तत उन्हें ज्यादा करनी पडती है और हिस्सा सिफ कलाकारों को ज्यादा मिलता है ।

और जब यही चेतना म्य और चीन क मजदूरों के दिलों में पना हो गई थी तो इनक्लाव आ गया । वहतारा इखाम है कि दवतागण जायें क्योंकि मन्वा पुजारी मालें खोल रहा है ।



प्रिय शय

रेनिया होइ गई मोर सबतिया पिया को नादि नइ गई हो ! — यह गीत गाकर क्या मैं अपने निर्मोही का वापस नहीं बुना सकती ?

तुम हैरान तो होग। दस बरस बाट तुम्हें यह पत्र लिख रही हू। शबर को तो तुम पत्र लिख सकते हो मुझ नहीं। अपनी जया को प्यार निश्च संकत हो मुझे नहीं। अपनी इरा को कभी भूतकर ही याद कर लेते।

क्या अब तक पचानन को सगीत नहीं सिखा पाए ? जया कहती है नानीसे नहीं मैं तो उड़ीस गाना सीखू गी। जिसे जया ने केवल फोटो म ही देता है उस वह कितना प्यार करती है ! हसते-हसते चोट-चोट हो जाती है तुम्हारी ही तरह। मुझसे सुनी हुई तुम्हारी बातें करती है। आकर सुन लो। स्त्री की निगाह दूर तक नहीं जाती क्या तुम अब भी यही कहते हो ? सपने में भा तुम्हारे सिवा मैंने किसी पुरुष को विश्वास का भ्रम्य नहीं चढ़ाया। तुम रहोगे एक एरट्रस के मुह से इतनी बड़ी बात ! अब तो तुम्हारे विना धम्बई की रगभूमि नीरस लगती है मानो यह सब छनना-भात्र हो। पर अपनी जया तो छनना नहीं। जया में हमारा सगम मुस्कराता है। हमारे प्रेम का वरदान है जया। दो थिपुड़े दिला को फिर से मिता सकती है जया। मरा रूप पाया तुम्हारा स्वभाव एमी है अपनी जया। विश्वास न हो तो आकर देख लो। गायद इसी तरह

मेरा उधार हो सक !

सिरहान पर निर रखे चौक-चौक सठनी हूँ जब सपना टूट जाता है । माँसा स भानू भर रह हूँ । एक विचित्र प्रकार की भास-निरास नखनी स तुम्ह पत्र लिख रही हूँ मरे देवता ! क्या भय तक मुक्त पर क्रोध उतर रहा है ?

मैंने फ़सला किया ह कि जयन्त क साथ कनी हीराइन की भूमिका में काम नहीं करूंगी ।

मन फ़सला किया ह कि काण्ट्रैक्ट करत समय ध्यान रखूंगी कि मेरे कारण कम्पनी के बाका स्टॉक का जवें तो नहीं कट जाता । एक म एक पाई नहीं लूंगी । मेरा रास्ता भव ड़ ज़ाल स तीन लाख का भार नहीं मैंन धारणा कर दी । एक काण्ट्रैक्ट का पचास हजार स ज्यादा नहीं लूंगा । सरकार को पूरा इन्कमटैक्स दूंगी । वह कदम उठा रही हूँ कि दूसरे भाटिस्ट शिक्षा नें । बाकइ हमार हीरा-हीरोइना और दूसरे टक्नीसियना की भाय क बीच भाधी खाइ नहीं हानी चाहिए । यह धर्याय हम अपने भाप ही तो मिटाना हाता ।

मेरे लख का सबसे पहन मनोज ने ही समपन किया । भव वह नी एक काण्ट्रैक्ट क पचास हजार स ज्यादा नहीं लगा ।

कस मनोज भाया पा । उसक साथ काम करन का मैंने वचन द लिया । हम एक साथ तीन पिक्चरो म भा रह हूँ । तुम भा जाया तो तीना पिक्चरो म तुम्हारा संगीत रह । तीना कम्पनियाँ पूरी तरह हमारे हाथ म हूँ । मनोज का सबत ही काफ़ी है ।

दस साल बाद गुरूव ने बम्बइ क सबत बडे सिनेमा हाउस म बनकर तीस सप्ताह का रिकार्ड कायम किया । इसत तुम समन्त सकत हा दुनिया कितनी तेज़ी स बदल रही है । कसे नहीं बत्सगी दुनिया ? पन्थी चीख का कब तक नापसन्द किया जाता रहता ? तुम भा जायो । तुम्हें अपने संगीत की कसम तुन भा जायो । जाना ही हा तो अपनी जया स पूछकर बल जाना ।

मरे प्यार की कसम फ़ौरन चन आमा ।

तुम्हारी  
इरा

इरा का अपने ढडी का सिद्धान्त भुलाये नहीं भूलता । एशिया यूरोप और अमरीका-यात्रा में वह जहाँ भी गई वहाँ उसने डडी की सूक्ति सुनाकर लोगों पर जादू-सा कर दिया—

जब मेह तब घास !  
जब घास तब प्रजा सुखी !  
जब प्रजा सुखी तब एग !  
जब एग तब जुम्म !  
जब जल्म तब कहुर !  
जब कहुर तब तोबा !  
जब तोबा तब मेह !

इस सूक्ति की प्रथम और अन्तिम पक्ति में तो जस गूढ जीवन-दर्शन छिपा है जब मेह तब घास ! जब तोबा तब मेह ! सात का घनकर चरता है ! भदन वाबु कहा करते थे यह सदा से चलता आया है चरता रहेगा ।

यूनाक में जब वह नीचो गायिका नीरा फ़िर से मिनी तो डडा की सात चक्करों वाली बात इरा ने नीरा को भी बताई । उसने पूरी सूक्ति में अपनी नाट-युक्त पर निग ली । अगले दिन जब नीरा ने इरा को खाने पर बुलाया तो इस सूक्ति पर आवारित एक गीत गाकर मुनाया । नीचो जीवन और सस्कृति की भूमिका में भी यह सूक्ति कितनी जोरदार प्रतीत हुई थी । जया तब बच्ची थी । वह तो नीरा के सगात का रण नहीं ब पाई थी । पाँच सात की बच्ची का मैं कैसे समझाती नि नीरा का गीत तुम्हारे नाना की सूक्ति पर आधारित है ।

बुक शल्फ से गेटे के प्रवचना पर आधारित आक्रमान की मूल्यवान पुस्तक खोलकर बठ जाती है इरा । गटे उसका प्रिय लेखक है । गटे की चुटकियाँ उसके तीख व्यंग्य जीवन की गहराइ को छूता उसका जीवन दान उसे पसन्द है । जब भी गेटे की प्रतिभा की कल्पना करती है उसे लगता है कि किसी विशानवाय चट्टान को छीन छीलकर घड़ी गड़ थी गेटे की मूर्ति ! जस वह एक भूति नहीं कोई त्रिमूर्ति थी । गटे की रचना म इरा को ब्रह्मा विष्णु और शिव का भूतपूर्व सतुनन प्रतीत होता था ।

आक्रमान की गटे-सम्बन्धी पुस्तक पढ़ते पढ़ते इरा जमन-यात्रा के सस्मरणों म खो जाती है । कल्पना के कला भवन म जैसे वह गटे से मिल लेती है । गट मरा नहीं वह कभी नहीं मरेगा । उसे याद आता है जब जमनी म वह गट को समाधि पर थढ़ा क फूल चढ़ाने गई थी । जवा के हाथ स भी तो उमन दा फूल समाधि पर रखवाये थे । वहाँ खड़े-खड़े उसे लगा था कि गेटे की आवाज आ रही है तुम आ गइ शकुन्तल ! उसने जस पुरकारकर कहा था मैं किसी कानिदास की शकुन्तला नहीं मैं तो इरा हूँ । पाँच वष की एक बच्ची की माँ ! जैसे गट की आवाज आइ माँ बनने स पहल तुम जरूर किता ऋषि के आश्रम म रही हो । तुम्हारा दुष्यन्त तुम्ह छोड़ गया ! दुष्यन्त की अनुपस्थिति में ही तुम माँ बनी ! क्या मैं कुछ झूठ कह रहा हूँ ? इसक उत्तर म जैसे इरा रो दी थी सिसक-सिमककर वह चीख पड़ी थी तुमने कस यह सब जान लिया ? और उस समय वह अपने दुष्यन्त अपन दास की याद म सा गइ थी । शकुन्तला क लिए गटे का वह मूर्ति इरा को याद थी जिमम गेटे न कहा था कि एक वार शकुन्तला का नाम नकर मानो उसने पृथिवी और स्वर्ग की समस्त सौन्दय-आ भक्ति कर दी । और अब यहाँ बम्बई म आक्रमान की गट क प्रवचना वाली पुस्तक पढ़ते हुए उने लगा कि गटे पूछ रहा <sup>५</sup> तुम्हारा वह दुष्यन्त तुम्हें मिलने नहीं आया शकुन्तल ! और इरा न जस चीखकर कहा मैं

घबुतला नहीं मैं शकुन्तला नहीं बनना चाहती। मैं तो इरा हूँ। बम्बई की एक एकदूस ! गटे न जैसे पुकारकर कहा तुम माँ हो एक लडकी की माँ ! जानती हो बच्चे के मुह से देश दस म जो पहला शब्द निकलता है वह कौनसा शब्द है ! और फिर जैसे किसी न दुग्गी-तरंग पर बैक ग्राउण्ड म्यूजिक देने के लिए बड़ी-सी घाट की—एक ही आवाज गूज उठी माँ ! और इरा ने सँभलकर जमा की तरफ देखा जा सो रही थी। इरा ने उठकर जमा का मुह चूम लिया। और जस फिर दुग्गी-तरंग से बैक ग्राउण्ड म्यूजिक का स्वर गूज उठा माँ !

सौ कण्डल के बल्ब के प्रकार में बठी इरा आक्रामक मान की पुस्तक पढती रहती है। उसे लगता है सख आ गया ! जैसे शख कह रहा है तुम्हारी चिट्ठी मिली और मैं चला आया ! यह सब जैसे किसी स्वप्न की पूवपीठिका हो। शख यहाँ कहाँ ?

भाज इरा ने सख को दूसरा पत्र लिखा। स्टूडियो में बैठकर उसने एक मच्छा-सा पड निकाला और पहल तीन कागज खराब किये। नीले रंग का पड था—सागर के रंग का पड सिल्वर सरफेम वाला पड। मच्छा पत्र मच्छे पड पर ही तो लिखा जा सकता है। खर तीन कागज खराब करने के बाद चौथे कागज पर वह जमकर लिख सकी। पत्र लिख चुकने पर वह कार में बैठकर इसे सटर वॉक्स में डालने गई। उसे क्राध भी आया था। स्टूडियो से काफी दूर था सॅटर वॉक्स।

पत्र सॅटर वॉक्स में डाल चुकने के बाद पहल उस ग्लानि-सी हुई। बल एक पत्र लिखा था भाज दूसरा पत्र लिखकर डाल दिया। सख क्या सोचेगा ? दस साल तक चुप रही अब जैसे धँस का बाँध टूट गया।

पहले जयन्त उममे मपसप करता रहा। जयन्त गया तो मनाज आ गया। इरा को तो धारी-धारी दोनों के लिए मुस्कराना पड़ा।

उसके हाथ में खखव के पत्रों की एक सुन्दर-सी पुस्तक थी। पढ़ते पढ़ते उसके मन प्राण सिंहर उठ। उस ख्यान भाषा रूस की यात्रा में उसने खखव के बारे में वहाँ के लेखकों से कितनी ही बातें पूछी थी। उस बताया गया था कि खखव ने लका-यात्रा ता का था पर हिन्दुस्तान की यात्रा न कर सकने का उह वहुत खेद था। लका की खखव ने स्वर्ग से उपमा दी थी। एक मित्र को उहोंने भ्रमण पत्र में लिखा था जोनम्बो से उतरकर रेन से मैंने वहाँ की सौ मीन धरती देखी थी। सुन्दर दृश्या के लिए मैं शायद भ्रमण-भाषकों राशसों को भाव करता। जब मेरे वचन हो जायेंगे तो मैं सब से उनमें कटूगा—भव गधो भ्रमण जमान में मैंने काली घाँसा वाला एक हिंदू उठकी से भा प्रेम किया है—कहाँ? एक चाँदनी रात में थीर उस जगह जहाँ नारियल के पड भाषण में गुथकर कुञ्ज-भा बना नेत है। समझ? क्या वक्की थी? खखव का पत्र पढ़ते-पढ़ते इरा नतमस्तक हा गई जस वहा वह कानी आँखा वाली उठकी हा जिस नारियल-कुञ्ज में किसी पुरुष ने प्रेम किया था। उस पुरुष का नाम खखव भी हो सकता है शख भा! नाम में क्या रखा है! मैं शकुन्तला कहलाऊँ चाह इरा शख भी दुप्यन्त कहलाए चाह खखव; क्या भ्रमण पढ़ता है? समझकर वह पत्र पढ़ने लगी। इतने में किसी ने भाकर वहा भाषण फोन है इरा जा।

यह मनोत्र का फोन था। उमन उसे तिनर पर बुलाया था। वापस आकर वह फिर पुस्तक खालकर बठ गई। उड़ी की सूक्ति जैसे उसका कल्पना की छू गई—जब ताया तब मेह।



वरकला म शख की अपनी दुनिया है। वरकला कहीं तब शख को समझ पाया है यह तो कौन कह ?

नम्पूतिरिप्पाड का कहना है शख का समझन की वाशिरा आत्म प्रवचना है। बड़ी कोशिश करके उन्होंने गुरुदेव फिल्म वरकला म दस साल बाद फिर स चनाने का प्रवच किया। यहाँ वह दस सप्ताह के लिए आई। बम्बई म गुरुदेव दस साल बाद ही सही तीस सप्ताह तक चनी। बम्बई के सबसे बड़े सिनेमा-हाउस म इसका प्रदर्शन हुआ जना कि नम्पूतिरिप्पाड ने आपबारों म पठा। पर क्या मजान एक दिन भी शख को यह फिल्म देखने के लिए राजी कर सक हो। उन्होंने शख समझाया इतनी भी क्या नाराजगी है ? गुम्ब ता अपन ही व। इसम सगीत भी तुम्हारा है किसी घोर का नहीं। फिर क्या दखन नहीं घनत ? टिकट भी नहा लेना हागा। सिनेमा हाउस का भालिक ता फूला नहा समायगा यह देखकर कि फिल्म का म्यूजिक डाइरेक्टर फिल्म खन आया है।

उम तो चिनाककार की सगीतशास्त्रा स ही चिपका रहता है। पचानन ने भी कहा 'गुरुदेव खन जामान जब सब काइ कह रहे हैं। मैं ता दख आया। मुझ ता बहुत अच्छी लगी।

मुत्तु बाबा भी भूम भूमकर कहत रह दस साल पहल भा आई थी यह फिल्म यहाँ। तब ता तीन ही दिन चन पाई थी। तब हम नी



यह उतना मन्थी नहा तगी धी जितना भव । क्या कहन हा छख ?

गख मन्त तक इन्कार करता रहा । उसन किसीका बताया नहा । इरा का पत्र उभे भक्भोर गया—भरा रूप तुम्हारा स्वभाव एनी है हमारी जया ! विन्वास न हा ता भावर दख ना । गावद इसी तरह भरा उदार हो सके । तुम्ह पत्र लिख रहा हूँ मरे दबता । क्या भव तक मुक्त पर क्रीव उतर रहा है ? इरा के पत्र का य पक्तियाँ उस जाने क्या कुछ कह गइ ।

उसन मन ही-मन कहा—मैं भुक्ू गा नहा । मैं अपना जगह दइ रहूंगा चट्टान क समान । मैं इरा का पत्र नहा लिखूंगा । मैं सब सम भता हूँ । त्त मान तक इरा चुप रहा । भव पत्र लिखन बठ गई । इतन दिन तो ल-कर गकर का पत्र ही भा जाता था महीन म एक बार ।

दूसरे हा तिन इरा का दूसरा पत्र आया । निन्वा था, भरा ध्यान जया पर रहता है या फिर जयजयवन्ती रागिना पर जिसे मर डंडी मुना करत थ ममा से— मोरे मदिर भव ना नहा भाव । भव मैं जित करता हूँ तो ममी गन बठ जाती ह । गात-गात ममी की धाँवा म धाँवू भा जात हैं जब वह गाती है— कौनसी बूल भई हमस को सोनिन विनमाय ? और मुक्त गुरुदेव' म लिया गया वह गीत याद भा जाता है

पुरुब से घाई रेतिया, पछिउ स घाई जहजिया

पिया क लादि लइ गई हो ।

रेतिया होइ गई मोर सवतिया

पिया क लादि लइ गई हो ।

रतिया न बरी जहजिया न बरी

उहे पइसव बरी हो ।

देसवाँ दसवाँ नरमाव,

उहे पइसव बरी हो ।

भुलिया न साग पिउसिया न साग



वरकला म शख की अपनी तुनिया है। वरकला वहाँ तक शख का समझ पाया है यह तो कौन कह ?

नम्रूतिरिप्याड का कहना है शख को समझने की वाशिश आत्म प्रवचना है। बडा काशिश करके उन्होंने 'गुरुदेव' फिल्म वरकला म दस साल बाद फिर न चनाने का प्रबन्ध किया। यही वह था सप्ताह के लिए आई। बम्बई म गुरुदेव दस साल बाद हा सही तीस सप्ताह तक घनी। बम्बई के सबसे बडे सिनेमा-हाउस म इसका प्रदर्शन हुआ जमा कि नम्रूतिरिप्याड न सगवारों म पडा। पर क्या मजान एक दिन भी शख का यह फिल्म देखने के लिए राजी कर सक हों। उन्होंने शख समझाया इतनी भी क्या नाराजगी है ? गुरुदेव तो अपने ही थे। हमम संगीत भी तुम्हारा है किसी और का नहा। फिर क्या देखने नहा चरत ? टिकट भी नहा लेना होगा। सिनेमा-हाउस का मालिक तो पूजा नहा समायगा यह देखकर कि फिल्म का म्यूजिक डाइरेक्टर फिल्म देखन आया है।

गव तो चिनावकार की संगीतशाला से ही चिपका रहता है। पचानन न भी बडा गुरुदेव घन जामान जब सब वाइ कह रहे हैं। मैं तो देख आया। मुझ तो बहुत अच्छी लगी।

मुत्तु बाबा भी भूम भूमकर कहत रहे दस साल पहले भी आई था यह फिल्म यहाँ। तब तो तीन ही दिन चल पाई था। तब हम भी

यह उतनी भ्रष्टी नहा सगी थी जितना अब । क्या कहते हा छत्त ?

गख भ्रन्त तक इन्कार करता रहा । उसने किसानका बताया नहा । इरा का पत्र उसे भकभोर गया— मेरा रूप तुम्हारा स्वभाव ऐसी है हमारी जया । विश्वास न हो ता आकर दख नो ! गायद इसी तरह मेरा उदार हो सके । तुम्ह पत्र लिख रही हू मरे दवता । क्या अब तक मुझ पर क्रोध उतर रहा है ? इरा के पत्र की ब पक्तियाँ उसे जाने क्या कुछ कह गई ।

उसने मन ही मन कहा—मैं झुकू गा नहीं । मैं अपनी जगह दृढ रहूंगा चट्टान के समान । मैं इरा का पत्र नहा लिखू गा । मैं सब सम भ्रता हूँ । दस सात तक इरा चुप रही । अब पत्र लिखने बठ गई । इतन दिन तो ल-केकर गकर का पत्र ही घ्रा जाता था महीन म एक बार ।

दूसरे ही दिन इरा का दूसरा पत्र आया । निचा था मेरा ध्यान जया पर रहता है, या फिर जयजयवन्ती रागिनी पर जिसे मरे ढडी मुना करत थे ममी से— मोर मंदिर अब ली नही आय । अब मैं ज़िद करना हू तो ममी गान बठ जाती है । गान-भात ममी की आँवा म आँभू आ जात हैं जब वह गाती है— कौनसी नून भई हमस को सोतिन विनमाय ? मोर मुझ मुन्देव' म दिया गया वह गीत याद आ जाता है

पुरुबु से आई रेतिया, पछिउ से आई जहजिया

पिया क लादि लेइ गइ हो ।

रेतिया होइ गई मोर सवतिया,

पिया के लादि लेइ गई हो ।

रेतिया न बरी जहजिया न बरी

उहै पइसव बरी हो ।

देसवा दसवां नरमाव

उहै पहसव बरी हो ।

भुखिया न साग पिउसिया न साग

हमको मोहिये साग हो ।  
तोहरी देखि के सुरतिया  
हमको मोहिये लाग हो ।

सेर भर गृह घा बरिस दिन अद्वय  
पिया का जाइ न देख हो ।  
रख्य अक्षिया के हजारवा  
पिया का जाइ न देख हो ।

तुम नही मानोगे । तुम्हारी बातें समझने में दस साल लग गए । जस अमान ने तरक्की की । दस मान बाद बम्बई में 'गुरुदेव' तीस सप्ताह चली । मुझ भी तुम्हारी बातें अब याद आती हैं । उनकी समझ भी अमान सगी है । तुम कहा करते थे—कलाकार भी दूध-गाछ है । उसका ध्यान भी अपनी रचना पर बस ही रहता है जैसे माँ का शिशु पर ! इतनी-सी बात समझने में दस साल लगे

पञ्चानन के आने पर मैंने न यह पत्र एक पुस्तक में रख दिया ।

मैं तो आज फिर 'गुरुदेव' फ़िल्म देख आया । आप नहीं जायेंगे ?

मैंने तो बहुत बार देख रखी है यह फ़िल्म ।

'गुरुदेव' फ़िल्म का प्रसंग आते ही उसकी कल्पना में बम्बई घूम गई—उवशी जयन्त मुक्तिबाध मनोज अहल्या की माँ गोविन्दन और इरा—सबके घरे बारी-बारी घूम गए । साथ ही उसने मन ही मन कहा—कसा होगा मेरी जया का चहरा !

'गुरुदेव' का उदास दत्तकर पञ्चानन अपनी बीणा उठाकर एक तरफ बठ गया ।

शरद फिर इरा का पत्र खोलकर पढ़ने लगा बीस मिनट में तीस फुट फ़िल्म घूम जाती है मरे दबता ! यानी एक मिनट में नब्बे फुट । साठ मिनट का एक घण्टा । चौबीस घण्टे का एक दिन । तीस दिन का एक महीना । दस साल में कितनी जम्बी फ़िल्म घूम गई, साबो सो ! एक फ़िल्म बनाने के लिए बीस-तीस सट चाहिए । सोचो

तो मैं उस साल में कितने सपने बुन कितनी फिल्म बना डाली बिना एक भी सेट के !

विद्यते दिना मैं जया को भी गुरुत्व फिल्म दिखाइ वह बहुत खुश हुई ।

रूस में बच्चों के लिए अलग फिल्म बनाने पर सबसे अधिक जोर दिया गया है । इसके लिए वहाँ अलग स्टूडियो हैं अलग सिनेमाघर । इस दौड़ में ब्रिटेन का दूसरा नम्बर है । मनोज का सवाल है कि हम बच्चों के लिए एक अच्छी फिल्म बनायें जिसकी हीरोइन होगी हमारी जया । अभी अगले ही दिन मैं जया को पकोस्तोवाकिया में तयार की गई एक पुतली फिल्म दिखाने ले गई थी । फिल्म का नाम है 'लोरी' । कामाल का 'ग्राइडिया' है मेरे दबता । एक खिलौना बन्सान का रूप धारण कर नेता है और वह एक बच्चे को कुछ इस तरह खिनाता पिनाता है कुछ इतना प्यार से सुनाता है, जस वह उसीना बच्चा हो । हमारी जया उसे देखती जा रही थी और बार-बार मरी नाद में आ बठती थी । बोला तुम अपना जया को दखन कब आघान ? जल्दी आओ । तुम्हें संगीत की कसम, दूध-गाछ की कसम !

किसकी चिट्ठी है गुरुत्व ?

यह मत पूछो पचानन ! पर एक बात याद रखो बम्बई या मन्गल जाने की मत सोचना । फिल्म में नहीं चलगा तुम्हारा संगीत ।

पर आपन क्या लिया या इतना अच्छा संगीत गुरुत्व में ?

तुम्हें वह अच्छा लगा ? पर उस भूल जाओ । वहीं रहना । अगली पीढ़ी के संगीताचार्य का तयार करना । मैं यही मरुगा आपन पिप्य का पिप्य बनने के लिए ।

पचानन उदास भुँह बनाकर धीरा लिप बंठा रहा । मरकर पिप्य का पिप्य बनने की बात सुनते-सुनते उसके नान पक गए । वह भूलकर भी इस बात पर विश्वास नहीं करता था । भुँहनाकर बोला मैं तो आपना गुरुत्व नहीं हूँ गुरुत्व ! मैं तो पचानन हूँ !



पंचानन ने ज़िद न छोड़ी। जिस दिन बरखना के शशी थियटर' में गुरुदेव का अन्तिम दिन या शख अन्तिम शा म पंचानन के साथ यह फिल्म देखने गया।

फिल्म देखते-देखते शख दस सात पीछे चला गया।

बुद्धिजीवी नोगा ने वो गुरुदेव' को तब भी बहुत पसन्द किया था।

प्रच्छा गुरुदेव !

यूरोप में हुए एन अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म-मेले में गुरुदेव' को पुरस्कार भी दिया गया था।

फिर यह वाक्स आफिस पर कस फल हा गई ?

यही तो दुर्भाग्य था। जयन्त भाई की लागत भी पूरी न हा पाई। सस्ती रुचि वाला न हम सिर फिरे दम्भी अयोग्य और न जान किस-किस नाम से पुकारा जाने बया-बया फतवा द डाला।

दस सात पहल का जमाना भी कितना विचित्र था ! फ़िल्म के परटे पर 'गुरुदेव' चन रही थी। फ़िल्म की सबसे बड़ी विषयता थी इसका बक ग्राउण्ड म्यूजिक। जयन्त दसाई की हिम्मत थी कि उसने बक ग्राउण्ड म्यूजिक को बराबर का महत्त्व देने की बात स्वीकार की, और म्यूजिक डाइरेक्टर को प्रतिभा से काम लन की पूरी छूट दी। यह पहला अवसर था कि हम बक ग्राउण्ड म्यूजिक को बराबरी का भासन देने की बात मूक

गई और इस कायान्वित करने में हमने कसर न उठा रखी। वन ग्राउंड म्यूजिक भी घिसा पिटा नहा। इसमें हम नई-नई बातें लाय। घनक स्वरों पर कठ-संगीत का जोरदार प्रयोग किया। और तो और, दुगा तरंग जम बाघों से काम लेने से भी न चूक। तब तक फ़िल्मी दुनिया में संगीत की हल्बन्दी थी गाने। गोविन्दन ने म्यूजिक दिया हाता तो गाना में ही सारा जोर दिखाता। पर जयन्त साइ मरे साथ सहमत थे। मरे साथ वे भी यह बात मानकर ही मजिन का तरफ कदम उठाते रहे कि फ़िल्म में जहाँ-जहाँ नाटकीय स्थान प्राप्त हैं अथवा वास्तविक और भावुक रखाएँ याकर जुड़ती हैं वहाँ तबसे बड़ी मदद हम वन ग्राउंड म्यूजिक से ही न सकेते हैं। और गायन पचानन का कथा-कथन कर कहा हमारी फ़िल्म इण्डस्ट्री में वन ग्राउंड म्यूजिक का रिनाडिंग आखिरी नम्बर पर रहता है। इस में मूवता नम्बर एक बूंगा। वस यह समझो जब सेंसर बोर्ड का फिल्म दिवाय जान का दिन भूत की तरह तिर पर आता दिखाई देता है या यह समझो कि फ़िल्म रिनीज होने का दिन घुड़दौड़ के घाड़ का तरह तज दौटता दुआ पास आ जाता है तो वनाय वन ग्राउंड म्यूजिक की मुच नी जाती है कहन-कहन गल्ल छुप हो गया। उस घ्यान आ गया यह बात ता उसने पचानन को बालकर बताई थी।

पचानन की दृष्टि फ़िल्म के परदे पर जमी था। वन ग्राउंड म्यूजिक का मारा जादू है गुस्त्व। उनमें माना मृदंग पर थाप लगाई।

घय मोचन मगा घब भी ऐसा ही हाता होगा। वन ग्राउंड म्यूजिक का रिनाडिंग की बारी घब भी सबसे आखिरमें ही आती होगी। कमात है। मूसठा की दू है। सारा रिनाडिंग रात का एक हा पारी में मन्म कर डालने की धुन! म्यूजिक डाइरेक्टर ने फ़िल्म का एक दृश्य देखा स्टाप घड़ी पर उतवा समय नाट किया और जा भी उन्गी-सीधी बात सोपना में जाग उठी उमाक बल पर वन ग्राउंड म्यूजिक दे डाला। इस तो वना नहीं कहन। किमी तरह उगाए वापन वाली बात हुई।

म्यूजिक डाइरेक्टर को नींद आ रही है। समय आधी रात से ऊपर चला गया। बिनाग पूरी तरह काम नहीं कर रहा। सोचने का किसका पास समय है? किस विशेष वाद्य को लिया जाय और उसके सही प्रयोग में कसे सोता जादू जगाया जाय इसकी चिन्ता तो म्यूजिक-डाइरेक्टर के फरिस्तों को भी नहीं रहती! फिल्म डाइरेक्टर को एक ही चिन्ता रहनी है और उसी के संकेत पर म्यूजिक डाइरेक्टर जैसे-तैसे सस्ती रुचि वालों को ममका लगान की सोचता है। पुनबुलिया समाधम नाच गान दे देकर। बक प्राउठ म्यूजिक की महिमा को न पहचाना जाता है और न फ़िल्म के मन्दिर में इस मूर्ति की प्रतिष्ठा ही की जाती है।

फिल्म खन-खते दाख को शकर के पत्रों की याद हो आई। सन् १९५२ में इरा सारे ससार की यात्रा पर गई—आज से पाँच बप पूव जब जया पाँच ही बप की थी। यात्रा में जया को भी उसने साथ रखा। तब वह अमरीका तथा जापान आदि देशों में अनेक फ़िल्म आर्टिस्टों से मिली। पिछले एक पत्र में शकर ने लिखा था—हान ही में दीदी फ़िल्म प्रतिनिधि-मण्डल की सदस्या बनकर रुस भी हो आई। रुस-यात्रा में जया भी गई थी। आप यहाँ हात जीजाजी तो आप भी चलते और हम भी गय होते आपको साथ। दीदी का क्या है! उह तो अपनी जया ही प्रिय है। उम अखे बिना एक दिन भी कहा नहीं रह सकती। कभी कभी जया का गोट में नकर बहने लगती हैं दीदी—मैं दूध-गाछ हूँ! मैं जानता हूँ जया इसका मतलब नहीं समझती। मच पूछो तो जीजाजी इसका मतलब तो मैं भी नहीं समझता। एक दिन मैं दीदी से पूछ ही बठा। बोना—अपन जीजाजी को लिखकर पूछ ना। यह अन्हा के पत्र-बोप में लिखा है। तो वापसी डाक से लिखिए जीजाजी दूध-गाछ का क्या मतलब है?

फिल्म के परदे पर पूरी कहानी चल रही थी। अब वह दृश्य दिखाया जा रहा था जब गुरुत्व की साठवीं बपगाँठ पर उस्ताद फ़याज साँ अफ़न मनीन से रोतामा को मुग्ध कर रहे थे। गुरुत्व की बग़ल में बठा था



गव । त्वत्ते-सते पचानन मुग्य हो गया ।

आप तब बस ही थ गुरुत्व जसे फिल्म म लिखाये गए ? आपन अपना पाट किसी और को क्या करन दिया ?

राज की कल्पना जान क्यों बम्बई की धार खिच गई । इरा का चिट्ठियाँ क्या आई फिर बम्बई का रास्ता खुन गया । शशी थियेटर स निकलकर व मन्ट्रि-बाजार म दुकान पर आ निकन ।

गुरुत्व फिल्म बनात समय मुझ क्या नहा बुना दिया था बम्बई ? मेरा पाट किसा और का क्या करन दिया ? दामादर हंस पडा गुरुत्व ना नला आ नहा सबत थ अपना पाट करले । हम तो जीवित थ तब नी और अब नी सामन बठे हैं ।

राज अब इसका क्या उत्तर ता ?

दामादरन मा बट का मूर्ति भी बिताई करता रहा ।

राज की कल्पना पर आज का अस्वार फल गया । करल में सा तरता आज रात्रों का अपना कहा अधिक है । जननस्या की सघनता म नी यह छाटा-ना प्रश्न प्रसिद्ध है । इसीलिए यहाँ क निवासी बाहर जाकर काम करन पर मजबूर हैं । पट का मामला है । भारत सरकार क बड़े-बड़े विनागा म ननी मन्त्रालया म केरल क निवासी काम करत नबर आयेगे । आज करन की सरकार जनता क जावन-स्तर का जेवा उठान का दिता म दृढ़-सकल्प है । गिगा विन ना सामन है नल हा कुछ लाग इसना विरोध कर रह हैं ।

गुरुत्व फिल्म म ता तुम्हारा ही संगीत है राज ! दामादरन न भुरिया बाव चहरे पर आज खे चनाकर कहा यह फिल्म रखना तो एस ही है अस काइ त्पण म अपना मुह ख त ।



इसके हमारे पत्र ने दास के मन प्राण में एक रागिनी के स्वर घोल लिए। जयजयवन्ती—यही तो जया का पूरा नाम था। हाथ में माला का मन्त्रबार था। केरन में साम्यवादी मन्त्रमण्डल द्वारा प्रस्तुत कुछ योजनाओं की विस्तृत चर्चा की गई थी। तीन कालम की सुर्खी। दास की दृष्टि एक छोटी सी खबर पर जा टिकी—त्रिवेन्द्रम् में संगीत परिषद् द्वारा प्रवृत्त करनीय संगीत उत्सव की योजना।

बूढ़ा दामोदरन माँ-बेटे की मूर्ति की घिसाई कर रहा था। मन्त्रबार में राजा समाचार क्या भाया है दास? उसने हँसकर पूछा। नय शिखा बिन की चर्चा में पूरा पृष्ठ भरा पडा है। और कोई समाचार? माँ-बेटे की मूर्ति के नय खरीदारा की खबर तो इसमें छपने में रूका।

ता मैं इस बनाना छोड़ दूँ? जो तुम्हारी माँ कहती है वही तुम भी कहते हो।

मैं तो वैसे ही हूँ रहा था।

घोर में तुम्हारे संगीत पर हँसने लगूँ तो बताओ!

मन को शय्य घसबार पढ़ रहा था पर उसकी कल्पना बम्बई पहुँच गई थी। बहुत चाहता था बरकला से बाहर न जाय उसका मन। बरकला के साथ मन का मल बठ। नम्रुतिरिप्पाड ठीक कहते हैं ज्या

ज्यों घातभी अघेड उम्र को पार करने लगता है वही जलवायु उसे रास आ सकता है जिसमें उसका जन्म हुआ होता है। इसीलिए तो व समय से पहले ही कॉन्ज में रिटायर होकर यहाँ आ गए थे।

देशमुखा ने पास से गुजरते हुए कहा तयार रहना साखरन ! त्रिवेन्द्रम् के अखिल नैरतीय संगीत उत्सव में तुम्हें ही प्रधान बनाया जायगा।

मुझे यह सम्मान नहीं चाहिए।" गल चुप न रह सका।

देशमुख को साखरन पहुँचाने की जल्दी थी। व रुके नहीं।

दामोदरन ने कहा वे तुम्हें प्रधान चुनेंगे तो तुम इन्कार तो नहीं कर दोगे ?

अब कहीं बाहर जाने को बिनकुल मन नहीं होता।

त्रिवेन्द्रम् कौन दूर है ?

अपना बरकला ही अच्छा है।

आज के रविवारीय संस्करण में एक खल आया था—फिल्मों में मक अण की महिमा।

पचानन भी दूकान पर आ निकला। अखबार उठाकर पढ़ने लगा। दामोदरन बोला त्रिवेन्द्रम् के संगीत-उत्सव के लिए कोई अच्छी-सी रागिनी तयार कर ला पचानन ! आनंद रह यदि तुम सर्वोत्तम संगीतज्ञ की पदवी पाओ।

ऐसा सौभाग्य मेरा कहीं ? पर गुरुजना का आशीर्वाद मिल तो यह कुछ कठिन भी नहीं।

गुरुजनों की आत्मा ने आबारा जन्म लिया तुम्हारे रूप में। तुम्हें तो जितना सम्मान मिल थोड़ा है।

मैं यह नहीं मानता। मैं तो पचानन हूँ। अपना ही माधना से आगे बढ़ सकता हूँ। कोई अंधविश्वास मुझे आगे नहीं ले जा सकता।

तो तुम परम्परा को नहीं मानते दूध-गाछ को नहीं मानते ?

दूध-गाछ अपने स्थान पर है।

हर पीढ़ी में यह नया होता रहता है। बीजता पीछे से आ रहा है न।

राज की कल्पना न बम्बई पहुँचकर दम लिया। किसी स्टूडियो का मेक अप रूम। मेक अप मन जान बघार रहा है— मजी अब वह जमाना नहीं कि मूछों वाली भूमिका के लिए मूछों वाला एक्टर बूढ़ा जाय। जी हाँ मेक अप के बिना तो चन्द्रवदनी कोमलागी पोटरी कन्या भी मधेड़ सिखाई न्ने लग। माइ डियर, मह जो केमरा है न हमारा इस शतान के लैस कितन तब है—मजी हमारी मौखता से भी तेज। लन्स जो ठहरे जरा-जरा-सी वारीकियाँ उभारकर न रखे तो इह लैस कौन कहे? क्या आप गोल चहरे को कुछ नम्बा दिखाना चाहते हैं? इसका आसान तरीका है। चहरे के ज्यादा फले हुए हिस्सा पर गहरा रंग पोत दें और उह कुछ कुछ काना सा कर डालें। काम चन जायगा। युवक के चेहरे पर गुलाबी हलका पीना या हलका नीला रंग पोतना हागा। बालक हो तो और भी हलका रंग लगाइए। और दक्षिण, तन्दुस्त आत्मी और बीमार के लिए भी रंगों में अन्तर करना हागा। उम्र में बीस-तीस बरस का अन्तर दिखा सकना मेक-अप मन के बायें हाथ का खेल है। यकती को और नी छोटी दिखा सकते हैं। चाहें तो उस मधेड़ या बुढ़िया सिखा दें। पर मेक अप से ही यह सब अन्तर पडने से रहा। एक्टिंग करते वक्त मेक अप के अनुसार मंगा की चुस्ती या सुस्ती सिखानी हागी। दाढ़ी-मूछ गोद से चिनाते हैं। चहरा मरड जाता है। एक्टर बठा किस्मत को कोसता है। किसीके दाँत टूटे हुए दिखाने हा तो कुछ नी मुश्किन नहा—उहे काना कर दते हैं। दाँतों में छेद हों तो माम भरकर ठीक कर लेते ह। मजा यह है कि लडकियों या मेक अप उतना मुश्किन नहीं जितना बडका ना। और दक्षिण माइ डियर समझार और तजुबेदार आर्टिस्ट वह है जो अपन चहरे की बनावट को पूरी तरह समझार अपना मेक अप अपन आप कर सक। फिर सन्सार राज न अपने मूर्तिकार पिता की आर दता। माथ की

झुरियाँ अनुभव दर्शा रही हैं। यह बम्बई का मेक अप नहीं बरकला की परम्परा है। यह यथाथ है सत्य है। यहाँ के नारियल-गाछ मेक अप नहीं करते। सागर की लहरें अपना आयु कम या अधिक लिखान की चप्टा में किसी मीना-बाजार के मेक अप रूम में नहा जाता। बरकला की लान माटी ने भी कोई मेक अप नहीं किया। पदचाप मुनती है लाल माटा। हाथी के काना की तरह झूलत हैं नारियल-गाछ।

शख की कल्पना में माँ का झुरिया वाला मुख-मण्डल उभरता है। काइ मक अप नहीं। माँ का प्यार—भीठा जम कच्च नारियल का दूध होता है।

शख का कल्पना में बरकला के मछुव उभरते हैं। नाव में सागर के घाच तक चल जाना यही उनका धंधा है यही उनकी परम्परा है। यह किसी मीना-बाजार का धनिनय तो नहीं। सागर समीप है बरकला का बरदान। सागर-सगीत हमारी विरासत हमारी परम्परा। दा परछाईयाँ नजर ध्यान का नमना गया। धव हमारे सामने एक हा माग है—सत्य का माग जिसमें मेक अप की भाव्यकता नहा। यह इनारा करन कथकलि का दंग है। लान माटी और पसीन का कथकलि के लिए तयार है केरन की राभूमि। पुरान सब मेक अप भइ जायेंगे मुख पत्तों के समान। नद कोपनें फूट रहा है।

और क्या कहता है भउबार बंटा दंग ?

गम्य कुछ उत्तर नया दता।

दामोदरन मूर्ति की घिमाइ करते-करते पचानन की तरफ़ देखकर बोना मान भी लें कि गुरुदेव रद्रपणम् की नहा तुममें अपनी ही आत्मा बोल रही है। फिर भी यह तो माना कि तुम्हारे पाछ है धान और धान के पीछे है गुरुदेव रद्रपणम्। परम्परा ही दूध गाछ है !

और हमारी अपनी भी ता काइ दन होनी चाहिए अपने युग का। पचानन गम्भीर स्वर में बोना जानी परम्परा से तो नहा चलता।



पूज्य पिताजी

जन नाट्य-संघ का आठवाँ राष्ट्रीय सम्मेलन इस बार दिल्ली में होने जा रहा है। आप जरूर आइए और शख का भी अवश्य साथ लाइए।

डॉक्टर भानन्द कुमारस्वामी बहुत पहले कह गए

मैं भारतीय जनता के किसी ऐसे नायाकल्प में विश्वास नहीं करता जिसकी अभिव्यक्ति कला में न हो सके किसी भी प्रकार का पुनर्जागरण यदि वह पुनर्जागरण है तो कला में अभिव्यक्त होना आवश्यक है।

कला के विकास में आज हम पाछ नहीं रहना चाहते।

कुमारस्वामी की विचारधारा से आप भी सहमत होंगे—जब कोई जीवित भारतीय संस्कृति घटीत के धर्म और वर्तमान के उत्थान के बीच उठ खड़ी होती है तो एक नई परम्परा का जन्म होता है—साहित्य संगीत और कला सबमें एक नया स्वप्न मूत होने लगता है। जिन भारतीयों को अपना दाय मिल रहा है उनकी भारतीयता बही गई नहीं है। जैसे ही उनके जीवन में बस आयागा वस ही उनकी कला बीजवती होगी। उनकी राष्ट्रीयता अधिक गहरी संस्कृति अधिक ध्यापक और प्रेम अधिक पूष हो सकता है। फलस्वरूप उनकी कला घनीत की अपना अधिक प्रोजेक्टिवनी होगी। किन्तु यह क्रमिक विकास

घौर विलार स ही हो सकता ह प्रतीत स अपना सम्बन्ध ताड लन स नहा । हम प्रतीत घौर भविष्य दोनों स सम्बद्ध हैं । प्रतीत म हमन वतमान का निर्माण किया घौर भविष्य का निर्माण इसी वतमान म कर रह हैं । यह हमारा कतब्य ह कि हम अपन उस परम्परागत दाय का जा कवन भारत का नहीं समस्त मानवता का ह समृद्ध करें घौर उन नष्ट न होन दें ।

नन्दलाल वसु का कथन भी कम महत्वपूर्ण नहा

परम्परा का कला म वही स्थान ह जा व्यापार म पूजा का

हिन्दू हाने के नाम में हिन्दू धार्मिकों घौर परम्परावादी क बीच पना ह । मैं किसी समय कवन हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र बनाया करता था । अब मैं उन पुराने स्वर्णों का काद महत्व नहीं दता । वरन् प्रत्येक वस्तु म उसी गान्धत क संगीत-स्वरा को दखन की चष्टा करता ह । पहन में नवान्वताओं म ही न्वत्व हूँ दता था । अब उस धाकाउ जन घौर पवता में हूँ दता हूँ ।

भूलिए नहीं । निल्ली भाइए । मैं ना जा रही हूँ । इरा भी मत एसा मरा मत ह । शख भी भा जाय ता कमान हा जाय । जन-नात्य सध की धार न घाप दोना क लिए निमन्त्रण भिजवा रही हूँ ।

कला ही सच्चा माग-गान कर सनती ह । कुमारस्वामी का यह कथन सानह ध्यान सय ह कि राष्ट्र का निर्माण वस्तुतः कवि घौर कलाकार करन हैं । राजनातिक घौर व्यवसायी नहीं ।

बुद्धि घौर विवरण की भाषा एक बात ह कला की भाषा दूसरी वाण । कला की धात्मा को समझ बिना हम कला की भाषा नहा समझ सकन । ध्वनन न ध्वनत को जोडती है कला । मात्र राजनातिक स्वतन्त्रता म भी क्या होता ह ? चहुँमुखा विनास की वरणाधिनी है कला । इमा सवा पाट पर भा लगा है मरी चतना का नाव । मैं दिखी जा रही हूँ । धाप भी जरूर भाइए ।

रवीन्द्रनाथ की कवि-वाणी आज हमें सबस अधिक ढर रखा है

पतन अभ्युदय साधर पंथा युग-युग धावित यात्री ।  
हे चिर सारथि, सब रथ चक्र मुखरित पथ दिन रात्री ॥

हमारा कला-पथ तो चिर-काल से मुखरित रहा है । आज वह कैसे मूक रह सकता है ? एतरेयब्राह्मण का यह संकल्प मात्र आज भी हमारे कानों में गूँज रहा है— जो सोता है वह कनियुग है जो अग्रगण्य होता है वह द्वापर है जो उठ खड़ा होता है वह तृता है और जो चल पड़ता है वह सतयुग है ।

कला ही सच्ची यशोगाथा है । कला के वन पर टिकी हुई है हमारी मानवता । उसकी टक हमारी बहुमुखी धेतना पर है । कला और जीवन के सच्चे मेल के बिना राष्ट्र एक कदम भी नहीं उठा सकता । कला का दवात्मा रूप खोजना होगा । तभी हमारे अधन टटेंगे । जन नाट्य-संघ का आगामी अधिवेशन इसी खोज को रण-भूच पर जाने जा रहा है ।

कला आदमी को ऊपर उठाती है उसे सन्तुलन देती है उस परिपूर्य करती है युग-युग से हमारा परम्परा यही कहती आई है । हम इस आस्था को बनाय रखना चाहते हैं ।

क्या करन जा रहे हैं हम ? हमारे निष्ठावान् कलाकार हमारे विचारवान् गिल्पा एक नय सिद्धि का सू खना चाहते हैं ।

तेजामयी कला भाग बढ़ रही है—सकल लिपि को निहारती-सी मृग पर घायल सगाती सी ।

जन-नाट्य-संघ का अधिवेशन नय पुष्प खिलाएगा । यह हमारे संकल्प को नई धेतना से सजायगा । भविष्य के निर्माण में कला क्या योग-दान कर सकती है इस बात का उत्तर देगा यह अधिवेशन । आप धन्य भाइए ! भूलिए नहीं । गल को न जाए धपने साथ तो मुझ दुःख होगा । उसे दम जस एक युग बीत गया । बम्बई में दूरा और सल का मेल नहीं हो सता तो गिल्ली में ही सही । यह धय सायन जन नाट्य संघ के इस अधिवेशन का ही मिलने जा रहा है ।



भुवनमोहिनी क्या धन्य है । युग-युग की वरदायिनी ! राजदण्ड की मूठ नहीं है कला । सात भाई चम्पा जागा रे ! 'कनो वोन पारुन डाको रे ? पारुन अपने साता भाइया को जगता रहगी और सातों भाई क्या हमी तरह पूछत रहगे—धहन पारुन हम क्या बुझा रही हो ? बगला लोक क्या छमर है जिसमें साता भाई चम्पा और पारुन की नम-अप्या मुड-मुडकर जाग उठती है । सौतली माँ ने पारुन को गड्ढे में फिक्का दिया था और साता भाइयो को भी मरवा डाला था । हिम-पूपी-सी खिल उठी थी महाश्वेता पारुन और साता भाई चम्पा बनकर खिल गए थे । भेरा विश्वास है, हमारा युग सौतेली माँ का तरह कला का पारुन और उसके भाइयो की तरह मरवा नहीं डालगा । जन-नादय-सष का अधिवेधन इस दिना में आवश्यक युग चतना स काम ले जा रहा है । बढ़त करने को रहता है । कना का नूतन सम्भावनाए हमारी चाट जोहती हैं । बाधाए दूर हागा । हम ठहरे कना क उत्तराधिकारी । कना गतिमान है स्रोतस्विना-सी ।

नई चेतना झंगडाई न रही है । वोन था वह युग-पुरुष जिनके पुल के नीचे बहुत जल का ब्रेकर कहा था कि सब-कुछ बदल सकता है !

हमारे य अन्तविराध मिटकर रहग । विचारो का काय-कारण सम्यय हमारी नियतिया की समस्या अवश्य सुलभायगा एक दिन !

हमारे रुद्ध द्वार खाली औरी वरदायिनी कना ' पत्पर बोलेंगे । तरेगा मानन् । हमारा इतिहास कला का इतिहास है । भाषा पावर भा हम अवाक रह यह तो अच्छा नहा गता ।

भाष लिखी भाए मैं गदगता हो जाऊगा । मरे नृत्य क कूल खिलने भी दसिण ।

लिखी दश का राजधानी है । हमारी कला का बजयन्तीमाला । हमारे जन मन की महायान भाषा । बुद्ध-वचन गई सहस्र अक्षर बाद भी शून्य रहे हैं । अंगीर की भावना मरो नहीं । अजन्ता के चित्र बाव रह

हैं। एलोरा की मूर्तियाँ नाच रही हैं। भोग और योग के बीच का मध्य  
 माग ही हम प्रिय है। हमारा देश एक परिवार। हमारी कला घरती  
 की घागा। सुनो सुनो जन-नाट्य-सघ का भाङ्गान सुनो। राग को  
 साय नेकर दिल्ली खनने की तैयारी करो।

—कला की नई खोज क पीछे पागल घापकी पुत्री  
 नीलू



नीलू का पत्र नम्पूतिरिप्पाड का भकभार गया । उसने यह पत्र नीलू की माँ को भी पढ़कर सुनाया ।

भाग धीर याग क बीच का मध्य भाग ही हम प्रिय है । नीलू क सप्ताह बार बार उसके मन पर धाप लगात रह ।

एक बात दली नालू की माँ ! बचारे गोविन्दन का कहा नाम नहा । क्या गोविन्दन इतना बुरा है ?

मैं त्रिखकर पूछूँगा नीलू से । यमुना मुस्कराई ऐसा ना होता है जिसका नाम त्रिम द्विपात है उसी के बारे में सबसे अधिक सोच रहे हाने है ।

महर का नाम दन्नामो वह धीर भी उद्यतता है । धीर यही हाल बिरन का है जो अचकार का धारकर बाहर जाता है । गोविन्दन बुरा नहीं धपन उग का अच्छा धालमी ह ।

गाविन्दन भी तो जा रहा होगा दिल्ली । उस क्या टिकट नहीं मिनगा ?

तब ता ठीक है । त्रिलता म गाविन्दन क सामन मैं नालू से कह दूँगा कि वह उसका ध्यान रखा करे । धालिरे वह गुण्डब रदपदम् का सुपुत्र है । बरवना को गाविन्दन पर भी उतना ही गव है त्रिठना सख पर ।

मैं ठा कई बार सावता हूँ नालू क त्रिण गाविन्दन अच्छा जावन

साथी सिद्ध हो सकता है।

उसम तो हम कुछ नहीं बोलना चाहते। बोलना होता तो पहन ही बोल दते।

नीलू और गोविन्दन के बीच ऐसी कौनसी दीवार है ?

'अह मैं क्या जानू ? नीलू तुम्हारी बटी है। तुम जिसपर पूछ सकती हो। दिल्ली में मैं तो पूछने से रहा। इतने बय हो गए उह एक ही नगर में रहते फिर भी बीच की दूरी वैसे ही कायम है तो मैं क्या कर सकता हू ?

यह नीलू की नासमझी है।

मेरा भी यह विचार हो सकता है। पर नहीं इस पत्र को पढ़कर मैं ऐसा नहीं सोच सकता। नीलू नासमझ तो नहीं। गोविन्दन बहुत बकता झकता रहता होगा और वह सब नीलू को नापसन्द होगा। पसन्द अपनी अपनी।

वह काम तो करना ही नहीं चाहिए जिस पर दुनिया उंगली उठाए। पर जीवन-साथी तो ढूँढना ही पड़ता है। मैं नीलू को कई बार लिख चुकी हूँ। कना कना कला ! हर समय कना की दुहाई भी कहीं तक ठीक है ? ह भगवान् प्राजवन की उड़कियों का क्या हो गया ?

तो तुम भी चरो लिता। गोविन्दन भी माएगा वहाँ। समझ लेंगे दोनों का। प्राखिर नीलू को हम अपनी राय तो द ही सकते हैं।

हड्डा और साहस की कमी तो नहीं नीलू में।

तो कमी किस बात की है ? सब ठीक हो जायगा धीरे धीरे। समय बनवान है। समय धान पर सब फसले हा जात हैं।

कना ने नीलू को बांध रखा है। कना कना कना। मेरी तो समझ में नहीं आती यह बात। चौबीसों घण्टे कोई बसा की रट लगा कर कस जो मकता है ? इस तरह तो जीवन का रस भाग नहीं बन सकता। मैं कहनी हूँ गोविन्दन ने ही अपने से काम लिया जाता।

अब तक तो वह नीलू क मन पर छा सकता था ।'

अबल का दुश्मन तो नहा है गाविन्दन । समय भान दा । नाटक प्रारम्भ हान म गानद घाडी तर है ।

तुम यह नाटक-वाटक की बात मत कहो । भाखिर तुम नीलू क पिता हा । कुछ तो सोचो ।

मरे सोचन म काइ भूल नहीं । नीलू क लिए सोचना मेरा काम नहीं ।

मैं तुम्हें खिल्ली नहीं भान दू गा ।

अरे क्यों ? रुठ गई रानी ?

तुम मले आदमी की तरह बात ही नहा करत ।

अच्छा तो ताता हाखिर है । पढाओ तुम्हारे पाछ-पीछे वालूंगा ।

वचन दो कि नीलू न साऊ-साऊ कहोग ।

क्या ?

यहा कि अब उत जीवन-साथी चुनन म तर नहा करनी चाहिए । गाविन्दन पसन्द नहीं तो कोई दूसरा ढडका दू दू व । वकित उतका आगे किय बिना बन्दइ जन नार म मकरी पडे रहना सऊ स खाला नहीं ।

इतकी समन तुम्हें भाज भाइ ? तुम्ह अपनी बटी क भावरण पर सन्द है ?

दि दि ! मुझे नीलू क भाचरण पर क्या सन्द हागा ?

ना फिर ? कहन म अय ता रहना ही चाहिए ।

मैं यह जरूर चाहती हू कि उतका विवाह हो जाय ।

दिली जाकर मैं नातू म तुम्हारी बात अक्य कट्टा । और बताओ ।

एक बात मरी समन न नहीं आती । नीलू खिल्ला क्यों जा रहो है ? वहां कौनना नया समार बनन जा रहा है ?

अब यह तो तुम्हारी नातू ही जानती हागा ।

तो तुम क्यों जा रहे हो ? मैं कहे देती हूँ दास नहीं जायगा ।

दास जरूर जायगा और मैं भी जाऊँगा । सपने की बात है । बना सपने जगाती है । दास को इरा मिन जाय फिर से तो बौन बुरा है ? उसे पता चलेगा तो वह रुकेगा नहीं । यह चिट्ठी पढ़कर फटक चठगा ।

चिट्ठी न हुई जादू हुआ ।

जादू ही तो है । तुम्हारा खयाल है ऐसी चिट्ठी हर कोई लिख सकता है ?

मैं तो एक ही बात कहती हूँ नासू का भ्रान्त जल्दी दूर हो वह गोबिन्दन को पहचान ।

बस यही बात है न ? मैं उमसे वह दूंगा । वह न मानी तो उसी का दोष होगा मेरा नहीं ।

तुम्हारी दिल्ली-यात्रा शुभ है । अब तो दास का जरूर ल जाओ ।

तुम नहीं चलोगी ?

शुभ तो नीलू ने दिल्ली नहीं बुनाया । मैं नहीं जा सकती । अपने लिए बरकला ही अच्छा है ।

वह बात भी कहूँ नीलू से ?

बौनसी ?

कि तुम्हारा मौ कहती है कला म इतना अधिक नाता तो अच्छा नहीं कला पर ही धन-मन बारना शुभ नहीं ।

मैंने यह तो नहीं कहा था ।

तो फिर ?

कला को रखे सभानकर पर एक जीवन-नाथी प्रथम्य पुन ल ।

कुछ और कहना है ?

'नीलू का पत्र एक बार फिर सुनूगी ।

छोड़ो । तुम पढ़ लेना । यह मत कहो कि मैं ही इस पढ़कर मुनाऊँ ।

तुम्हें मुनाना होगा ।

क्या सब स्त्रियाँ इतनी ही हठी होती है ? बीसने की भा सस्ती है न बानने की भी सस्ती है ? कभी सोचा तुमन नीलू की माँ ! इसी तरह मैंन जीवन के नम्बे थप बिता दिए ! दीवार स सिर पटकन की बान छो नहीं समझा मैंन इन सन्बे जीवन को !

भाग से भाग बुकान की कोशिश तो तुम ही किया करत हो । साधी बात को भी उलटा करके दम्बने की तुम्हारी घादत के मार ताचार हू । बात तो इतनी-सी है कि नीलू का विवाह अवश्य होना चाहिए । सब मुख-सपना एक विवाह क विना व्यथ है । घरी रह जायगी सब कला बना ! खून पसीना महनत हिम्मत सब घर वसान की माया ही तो है । यही है बुद्धि का धरदान !

घरे नीलू की माँ ! समय आने पर वह भी ठीक हा जायगा । नीलू पर मुझ गब है । कानाइन क गंगा स बडभागी है वह जिस अपन जीवन का काम करने को मिल जाय—Blessed is he who has found his work let him ask no other blessedness मैं चलकर राव स मिरता हूँ । उन दिल्ली चलने क लिए तयार करना हागा ।



## ग्यारह

कना मे नीलू का गहरी निष्ठा देखकर दाख पुनर्कित हो उठा । पर दिल्ली जान की बात उसके मन न लगी ।

इरा न दिल्ली जाने की बात न हाती ता वह मान भी जाता ।

भविष्य क कारागार म कद कोई सपना की परी तो नहीं है इरा ! उससे मिलन में दिल्ली नयो जाऊँ ?

जब समम बुनाये तो जाना ही होता है । वेद-वचन कितनी जाग्रत प्ररक्षा सं भरा है—न श्रुत श्रातस्य सख्याप दवा धर्षात् स्वय परिश्रम विये बिना नवो की मित्रता प्राप्त नहीं हाती ।

सभी देवता भाजकन दिल्ली म ही बसते है क्या ? जिस ग्राम नहीं जाना उसका पय क्या पूछना ?

तुम्ह बनना होगा दाख ! नीलू ने बार-बार भाग्रह किया है । यदि आरमा की पूछता का मूत रूप है सगीत तो तुम्ह दिल्ली चलना होगा । दिल्ली म असम की नाट्य मण्डली भी आयगी । असम क बार म महात्मा गांधी ने ठीक ही तो कहा था—सुन्दर असम की स्त्रियाँ ता अपने करघा पर कविता बुनती हैं ।' मरा मन कहता है दिल्ली म असम की नाट्य मण्डली रगमच पर कविता बुनेगी ।

मुझे क्षमा कीजिए, मैं नहीं जा पाऊँगा ।

ममम्हा करो दाख ! किसाने ठीक ही कहा है । सागर की नतहा का चीरकर जब नी कोई प्रवान-नीप सिर निवानता है तो



नहरे उससे टकराने के लिए उदात्त भावना से उठती है। दिल्ली का कला-चतना को तुम एक प्रवाण-द्वीप की सजा द सकत हो।

दिल्ली भी अपनी होगी पस का नाम। बाह्य दिल्ली। वही भी होंगे बम्बई-सी कपूरिया दुकानें जहाँ बूढ़ और गाधी का मूर्तिना एक साथ बिकती हागी।

गाधी की मूर्तियाँ अभी इतनी पुरानी नहीं हुई कि कपूरिया दुकाना म जगह पा सकें ?

बम्बई म एक बार बूढ़ शरण गच्छामि वान बाल का वदनकर इसका ध्यानाप किया था—मय शरण गच्छामि मास शरण गच्छामि काम शरण गच्छामि ! आप शायद यह कहग कि बम्बई म तो मय पान का खुनघाम प्रचार बन्द कर दिया गया और दिल्ली म भी सप्ताह म एक दिन झाँड़े डे' घोषित कर लिया गया है जबकि हाटल और वार' म मरिा नहीं परोसी जाती। द्यालिए, मैं दिल्ली नहीं जाऊँगा।

यह तो ठीक नह। यह तो वही बात हुई कि अफलातून न निख दिया—कवि योग सब भूठ हैं और कवि योग सचमुच भूठ हो गए !

याप बुरा न मानें। दिल्ली जाने का मरा मन नहीं होता।

गल इन्कार-भर इन्कार किय जा रहा था। फिर भी लगता था नमूर्तिरिप्याड पर सख क इन्कार का कोई प्रभाव नह। हुआ। तुम चरोग जरूर चलोगे। मुक्त निराश नहीं कराग। मरे लिए नहीं तो नीन्द के लिए। इरा की बात छोडो। इरा की वान तो शायद नानू न बसे हा निय दी। इरा दिल्ली नह। जायगी। जीवन म तुम्हारा चा विश्वास है और विश्वास म जो शक्ति है उस में जानता हूँ समझता हूँ।

गल प्रब मुँह स न बाना इन्कार म सिर हिनाना रहा।

वागर की लहरा का घोष सुनाई द रहा था मानो यह छालबड घोष भी नमूर्तिरिप्याड क समान हा सख स उत्तर माँग रहा हा।

तुम बम्बई जाकर अपनी जया को ही ल घामो ! नमूर्तिरिप्याड न गड की मनावृत्ति देखते हुए परामग दिया।

यह तो मैंने भी सोचा है कई बार ।

खानी सोचने से ही क्या होता है ? माता दूध-गाछ है या पिता क्यों नहीं ?

मैं कागिध कर सकता हूँ । पर इरा कभी ऐसा नहीं होने दगी । इसीलिए मैं बम्बई नहीं जाता ।

शायद तुम्हारी भाषणा निराधार है । बम्बई नहीं जात तो दिल्ली ही चला । सब ठीक हो जायगा । दस बप का समय कम तो नहा हाता । भाज को इरा वही है जिन तुम छोड़ भाय थ यह नोन कह सकता है ?

यह बात तो ठीक उगती है । बम्बई भी यह नहीं होगा जिस मैं छोड़कर भाया था । वही होती तो यह कस होता कि जिस गुम्ब को सब खास पमन्त नहीं किया गया था वह भाज पसन्त वा जा रही है ।

रात का समय था । भावाग पर तारा भरी कनात तन गई थी । विचार का पछी पर ताल रहा था । भाव का पछी चहक रहा था माना वन वह रहा है—जीवन भावहीन है न लक्ष्यहीन न प्रयहीन ।

शम का बरागी रग दस बप तक कितना गाड़ा रहा । इधर वह धीका पड रहा था । यह बात नम्पूतिरिप्पाड से छिपी हुई तो न थी ।

बराग भी भादमी को प्रम तता है शख ! पोडा साहस बटोरा । दिल्ली चनो । तुम्हारी भाखों म बहुत दिनो से सद्दह घोर विश्वास का मिधरु दग्ता भाया है । इरा क पत्र का तुम उत्तर नहीं दत । फिर कस बात बन ।

गल कुछ न बोला । सहर्षा क प्रहार से दूर हटकर ब भागर नट पर बठ गए ।

मुस की मूर्ति फिर से गडने वाली बात है शख ! पवानन को तुमने बहुत-बुद्ध द डाला । धव धपना मुष ला । धपन प्रति कतम्ब सबन बदा हाता है । दिल्ली म जन-नाम्प-मम क अधिवानन म कवि

जयदेव के गीत गोविन्द पर आधारित नृत्य-नाटिका भी प्रदर्शित की जायगी ऐसा नीलू ने लिखा था पहली चिट्ठी में ।

तो मैं वह नृत्य-नाटिका देखने चलू ?

भास्वर स टेर सुना ता चलो । नहीं तो रस नहीं आयगा । चलो तो मेरा सौभाग्य है न घमना चाहा तो अब मैं मजबूर नहीं करूँगा ।

ता आप मुक्त नहीं न जाना चाहते ?

यही समझ लो ।

क्या उसका समय नहीं आया ?

यह प्रश्न अन्तर की श्रद्धा भक्ति से पूछो ।

क्या इरा को यह स वसी ही सहज कान्ति फूट रही होगा ? क्या वह अब भा यहा उत्तर दगी कि वह भरे लिए बम्बई नहा छोड सकती ? तब तो मरा वहाँ जाना व्यर्थ है ।

मैंने बीज बा दिया फसल अवश्य पकगी । तुम जित्ला कस नहीं चलाग ?

ता चचना ही हागा ?

न चलकर जिवाभा गत रही ।

आपका विश्वास है इरा वहाँ जरूर आयगी ?

नीलू न ऐसा ही लिखा है ।

बात यह है कि मरा दिल इरा को स्मरण को नहीं जया को दम्बने को तडपता है ।

मैं सब जानता हूँ । और यह कोई बुरी बात नहीं ।

आकाश पर तारों भरा गानियाना उसी तरह बना हुआ था । सगर की लहरें उमो तरह घाप लगा रही थीं ।

यह विराम-सा क्या है गल ? यह तुम्हारे मन का सालता है भीतर ही नातर यह मैं जानता हूँ । अनुराग अश्रु है जा उगास नहीं होन दता । जीवन-माथी को कमी न सीत पूष कर सकता है न नल्य न अन्निय । नीलू क विवाह की चिन्ता नी मुझे पहाड-सी लग रही

। गोविन्दन उसके लिए ठीक नहीं रहेगा क्या ?

गोविन्दन म तो बहुत सी सुविधा हैं जा मु-कमें नी न देख सकी इरा । नीलू और गोविन्दन की जाड़ी ठीक रहगी ।

तो दिल्ली चलन की तयारी करो । शायद काह सिनसिना बन जाय । हाथ मिनाओ । बचन दो । बोलो जब चलें ? परसो तक तो हर हानत म चल जेना होगा ।

सख पहल चुप रहा । फिर वह बोना इरा को गटे बहुत पसन्द है । गटे क कयनानुसार कला का अन्तिम और सर्वोच्च ध्यय सौन्दर्य है । एक बात और । नविष्य के बारे म चिन्ता होना स्वभाविक है । चलिए मैं आपके निमंत्रण का स्वागत करता हू ।



## घारह

दिल्लां के रामलोना मंगल म नटराज पुरी का सौरभमय वातावरण इन बात का प्रमाण था कि भापा का सावरे दहृत दर नहीं लगी। नमूनिरिप्पाड प्रसन्न थे। नीलू उनके साथ-साथ घूम रही था। बम्बई से इरा घाई न गीबिल्लन। इनका चाट शत न सह सवा। फिर भी वह क्या कर सकता था ?

नीलू बाला माप र्ण रह हैं। प्रतिभा का धभाव ता नहा हनारे दंग न। जन-नाट्य-संघ का यह एनिटानिक सम्मेलन मा रहगा। प्रतिभाभा का जनता के सामने एक मंच पर नाकर खश करन की जिम्मेदारी बहुत बड़ी है।

समस्या कनावारा न मम्बा घाबी नागा घोर ताला नृप पण निय ता घाघ्र बाला का नपुप्रा नृप उमस हाड ल रहा था।

बाला का फजन नृप कितना बढ़िया रहा। नीलू नानमुद-सी होकर बाला मपइ घोन्ध के डीकवादन न कनाड कर दिया। उत्तर प्रश्न का मात्हा क्या रहा ? मुक्त ता बहुत मन्दा लता।

ननूनिरिप्पाड का ममूर के कनाटका नाबपूण ताक-नृपा न माह लिया था। 'जीका का छरू नृप ना बरत खपूण रहा। व तदाद स्वर म कह रहे थे 'राजस्थान का पगता गीत घोर नया नृप भी नन के तार हिता गण।

पण चुप था माना एक लिए यहाँ कुछ भी न हो।

बगल के कनाकार सुकान्त भट्टाचार्य के एक गीत पर आधारित था युवक कनाकार शम्भू भट्टाचार्य का रजर' नृत्य । उसने रग मंच पर जादू सा कर दिया । डाकिये की यह करण कहानी बगल तक ही तो सीमित नहीं गती नीलू ने बलपूर्वक कहा डाकिये का जीवन ही ऐसा है । उसे य सब मुसीबतें भलनी ही पड़ती हैं ।

असम के कनाकार बननेव शर्मा द्वारा प्रदर्शित अग्नि-नृत्य की तो नटराज पुरी में धूम मच गई । उसका हाथो में आग की लपटें उठती थीं धानियाँ रहती थीं । क्या मजान नृत्य मस्तक भी अंतर पड़ जाय !

पल की मुखमुद्रा से लग रहा था कि बगल के कनाकार शम्भू द्वारा प्रदर्शित बगला नाटक एक पस की बामुरी उस बहुत पसन्द आया । कान इरा भी हमारे साथ यह नाटक देख रही होती नीलू ! उसकी आंखा में अथ दसवो के समान ही अखिरन आँसू बह रहे थे ।

मुझ तो असमिया कनाकार मघई भोभा का डोल बजान का प्रणय अनुपम गगा । हर कोई तो गसा नहा कर समता । इसके पीछे लम्बी साधना बोल रही है । हाथो से कान से पर से गाला से चिर से बदन को तोड़ मरोड़कर एक साथ तीन-तीन डालक बजाना क्या सबक लिए महज ही सकता है ? नम्पूतिरिप्पाड ने गद्गद स्वर में कहा ।

नीलू भी चुप न रह सकी मघई भोभा का सबग बड़ा बमाल यह है कि वह एक जादूगर के समान रेलगाड़ी की आवाज धारों की गड़ गगाहट वर्षा की बौछार की आवाज तथा अथ ध्वनियाँ निकालकर दिग्मान में समथ हो सका ।

गल टस-न-अस न हुआ । इरा को यहाँ न पानर वह बहुत उदास था ।

नीलू बोला शायद इरा आज धा जाय ।

इरा पाद तो गायन गाबिन्दन भी धा जाय ! नम्पूतिरिप्पाड ने नाचू के मुख पर अपनी बात की प्रतिक्रिया रखने की काशिश का ।

अचला सचदेव ने पजाबी कवि मोहनसिंह की प्रसिद्ध कविता अम्बी दा बूटा पूरे अभिनय के साथ गाई और दगाको के सामने वह सारा दृश्य धा गया कि किस प्रकार पजाब की एक ग्राम वधू आम-गाछ के नीचे अपने प्रियतम का स्मृति-चित्र देखती-लेखती आकुन हो चठती है। सुचित्रा मित्र ने एकना चलो रे गान द्वारा दगाको को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

उत्तर प्रदेश का लोकगीत हिरनी की व्यथा लेकर मंच पर आया। राजा हिरन का बलिदान रोकना स्वीकार नहीं करता। हिरनी अपने मृत पति की खान मांगती है और उस वह भी नहीं मिलती। रानी उसकी खजरी बनवा डालती है। इस खजरी के बजन पर हिरनी को अपने हिरन के मधुर स्वर सुनाई दे जाते हैं और वह सब कुछ भूलकर नाचने लगती है। देखते-लेखते नीलू की आँखा में आँसू धा गए।

नम्पूतिरिप्पाड सुअवसर समझकर वीन बेंटी यह बताओ कि तुम अपने लिए कोई जीवन-साथी क्या नहीं ढूँढ पाइ? तुमसे तो एक हिरनी ही अच्छी है।

नीलू ने खीभ भरी दृष्टि से पिता की ओर देखा।

हम तो मौचत हैं गाविन्दन ठीक रहगा।

अच्छा अच्छा! मैं देख लूँगी।

नटराज पुरी के लम्बे कायत्रम में कुछ उच्च काटिक नाटकों का प्रस्थान भी हुआ। पजाब के कलाकारों ने शहीद भगतसिंह खाना और बिहार बाना ने भी स्वतंत्रता के लिए मित्तन वाल एव शहीद की जीवन कथा पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया। बंगाल के कलाकारों द्वारा अभिनीत यात्रा उत्तर भारत की नौटंकी के गल मित्तती मान्यम होती है! बहते-कहते नीलू की आँखें चमक उठा।

बम्बई के कलाकारों ने एव नाटक खेना जिसमें नीलू का नायिका की भूमिका में अभिनय सब पर बाधी ल गया। नम्पूतिरिप्पाड और दास ने सबसे पहले मुना कि बंगाल के कलाकारों द्वारा अभिनीत नील

बगान क कनाकार सुकान्त नट्टाचाय क ।  
 या चुबक मलाकार गम्भू नट्टाचाय का रजर -  
 जादू-सा कर दिया । जाकिय की यह करण ।  
 सीमित नहीं जाता नीलू न बतपूवक कहा  
 गया है । उच्च य सब मुसीबतें नाननी ही पडनी

असम क कनाकार बतपूव कामा द्वारा प्रा  
 नटराज पुरी म धूम मच गद । उच्चक गयो म  
 ता बातिया रहनी था । क्या मजात नुच मर्ता

गस की मुखमुता से नग रहा था कि  
 प्रा प्रगिन बगना नाटक एक पस का द  
 भाया । काग इसा भी हमार माथ यह नाट

उनका भावा न अथ टाका क समान ही भा  
 मुक्त तो अतमिमा कनाकार मधइ ५  
 प्रदान अनुपम गगा । हर काई तो गया न  
 लम्बी नाधना वोन रही है । हाया से कान  
 म बदन की ताड़ मरोडकर एक साथ सीन  
 मवक लिए महज हा सकता है ? नम्पू  
 कहा ।

नीलू भी चुप न रह मवी मधइ घो-  
 है कि यह एक जादूगर क समान रेलगाडी  
 गराहट चपा की बीछार की भावाज तथ  
 न्पान म समय हो सका ।

गन टग-स-मस न हुमा । इसा न  
 उगम था ।

नीलू वाली गायन इसा भाज था जा  
 इसा भाई तो गायद गोबिदन भा ५  
 नीलू क मुख पर अपनी धाठ की प्रतिक्रिया



क्रम चनता रहा ।

एक दिन सबेरे हा गाबिन्दन घा गया ।

गख और गाबिन्दन गत्र भिन तो नीनू ने ताना बजाई ।

चित्र प्रदक्षनी म घूमत समय गाबिन्दन बोना नालू तुम्हारा भनि नय ता श्री एकसौ आठ गाबिन्दन भवतार बन्वइ न दल सगा । गख का सगीत ता यहा सुनन का भिन सकना है ।

शम रेर तक इन्कार म गिर हिलाता रहा और फिर उस बहना पटा— मरी कोई इच्छा नहीं कि सगात क कायक्रम म भाग सू पर गोबिन्दन क धाग्रह को टालना भी तो सहज नहा । मैं गाऊगा ।”

उम नगा उमक कान मे इरा श्री पगध्वनियां घा रही हैं—सार्द शिशु मुस्कान-भी अनबोनी भापा-सी जन उमक कण्ठ म साकर यन्ना और सगीत एक हो गए ।

वह भपन भीतर सिमटकर गा रहा था ।

उस नगा यह नब बकवाम है । जहन्नुन म जाय मरा सगीत और नीनू का नय । नस्म हा जाय नटराजपुरी इनकी वह चित्र प्रदक्षनी भी म्याहा हो जाय । फिर भी वह गा रहा था और यही भाव उसय सगात प्रवाह म उमढ रहे थ ।

नम्युतिरिप्याइ न नीनू का कथा ऋभोटकर करा देल रही हा नीलू । गख क सगात म यही भाव उभर रहा है कि तर क्षण भनादि अनन्त काल वा ही मूत रूप है ।

नीनू क कान गाबिन्दन की तरफ लग थ जो कह जा रहा था “मन इरा को बटुत समझाया वह न मानी । वह यहाँ घा गत्र होतो ता मैं गख स कह नकता हूँ कि गख क साथ उसका बियाा सगात म बल जाना ।”

इरा की बात छाडो, नम्युतिरिप्याइ न गाबिन्दन को सम्बाधित करत हुए यहा तुम धपना बात करो । जो बात मर मन न है वह मैं नीनू से पहले ही बह चुका हूँ ।

रहन भी दो पिताजो ! नीलू न लजाकर गिर बुचा तिया ।

के बगीचों के प्रसिद्ध विद्रोह पर आधारित नील दपण से भी बम्बई वालों का नाटक उन्नीस के मुकाबले में इक्कीस रहा।

जन-नाट्य-संघ के इस सम्मेलन में एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया था।

नाट्य-कला का इतिहास हमारी समझ में आये बिना नहीं रहता। यूनानी रंग-मंच का विकास देखिए। प्राचीन भारतीय रंग-मंच की भावनात्मक और बौद्धिक सम्पन्नता पर भी ध्यान दीजिए। वह रहा दोकसपीयर का यथाथवाद। वह रहा मोलियर का नया तत्व। जब जरा जर्मन-नाटककार बर्थोल्ड ब्रत का प्राधुनिक यथार्थ महाकाव्य का चित्रण देखिए। नम्रूतिरिप्पाड कहते गए, मानो वे कॉलेज की क्लास ल रहें हों।

इस चित्र प्रदर्शनी में अनक पास्टर चाट और बहुविध चित्र लगाए गए थे। एक कक्ष में उन्नीसवीं शताब्दी में मास जर्मनी और ब्रिटेन में हुए जनवाद से सम्बन्धित चित्र-सामग्री से काम लिया गया था। साथ ही इस प्रदर्शनी में यह भी बलपूर्वक दिखाया गया था कि जन-नाट्य संघ ने किस प्रकार नाटकों, गीतों और आपरा आदि माध्यमों से जन जागृति के लिए ठोस काम किया था।

'पूण सज-भज क साथ लोच रजन क विविध कर्नात्मक माध्यम गले भिन रह है। कहत-कहत नीचू न बड़े गव स सख की और दरा भाप मरे साथ बम्बई चलिए। इरा कह रही थी जया क पिता को सकर भाजें। कहो क्या सताठ है? जोर रजन क माध्यमों क गन मिलने की बात पीछे छूट गई।

नम्रूतिरिप्पाड ने गोविन्दन की बात देखी 'हर काम के लिए एक समय होता है नीचू! दर ठा बहुत हो चुकी है पर गोविन्दन से कहा जाय ठा वह मान जायगा। वह यहाँ आया होता ठा मैं पूछ देखता। तुम समझदार हो नीचू! बम्बई जाकर बात कर देखना। मुझ तिलना जब इस काम में और डीन नहीं होनी चाहिए।

नटरात्र पुरी में कई दिन तक नृत्य, अभिनय और संगीत का काय

क्रम चनता रहा ।

एक दिन सुबरे ही गाबिन्दन घा गया ।

गव और गाबिन्दन गन भिन ता नीनू न ताली बजाई ।

चित्र प्रदशनी म धूमत समय गाबिन्दन वाला नालू तुम्हारा घनि नय ता थी एकसौ नाठ गाबिन्दन प्रवतार बन्वई म दल लगा । सख का संगीत ता महा सुनन का निल सवता है ।

गव थेर तक इन्कार म गिर झिलाता रहा घार फिर उस चरना पल— मरी कोई इच्छा नहा कि संगीत क कायक्रम म नाग तू पर गोबिन्दन के घाग्रह को टालना भी तो नरज नी । म गाऊँगा ।’

उस लगा उनके बान में इरा की पगध्वनियाँ घा रही है—सोई गिगु मुस्कान-भी घनबोनी नापा-भी अन उसक कण्ठ म घावर वरना और संगीत एक हो गए ।

वह घपन नीतर तिमटकर गा रहा था ।

उस गता यह सब बकवास है । जहन्नुम म जाय मरा संगीत और नीतू का नत्य । नस्न हा जाय नटराजपुरी इनकी वह चित्र प्रदशनी नी म्वाग हो जाय । फिर नी बह गा रहा था और यही भाव उसक संगीत प्रवाह म उम रहे थ ।

नम्पूतिरिप्पाड न नीनू का कथा कन्नाडकर कग दल री ता नीनू । सन्ध क संगीत म यही भाव उमर रहा है कि हर धरा घना घनन्त काल का ही मूत रूप है ।’

नीनू क बान गाबिन्दन की तरफ लग थ जा कह जा रहा था मन इरा का बहुत समझाया वह न मानी । वह यहाँ घा गई जेता ता म तय स कह मनता हू कि गव क साथ उसका वियोग सयोग म बन जाता ।’

इरा की बात छोडो नम्पूतिरिप्पाड ने गाबिन्दन की सम्वाधित करत श्रे बहा तुम घपनी बात करो । जा बात मर मन म है वह म नीनू स पहले ही वह चुका है ।

रहन नी दो पिताजी ! नीनू न सजाकर तिर भुना पिता ।

ऐसी भी क्या बात है ?" गोविन्दन ने अपने मुख पर भोरपन की मुद्रा गति हुए उसमें एक व्यग-सा उभारकर कहा क्या कोई ऐसी भी बात है जो श्री एवसौ माठ गोविन्दन भवतार के मन को अभी तक नहा छू सकी ? नहीं बाबा हम उस चक्कर म नहा पडेगे जिसमें हमारा ध्यान पड गया ।

"खन कोई भूल नहीं की ।" नम्पूतिरिप्पाड ने याप लगाई ।

तो क्या इरा ने भून की ?" गोविन्दन चुप न रह सका मैं मान जाता हू इरा ने ही भून की । बात साफ है । जा भूल इरा ने की वह नीलू नी क्यों करे ?

नीलू ने गोविन्दन का बायाँ कान प्यार से सहलाते हुए कहा विनकुन ठीक । मैं वह भूल नहीं करूंगी ।

नम्पूतिरिप्पाड को लगा बागडोर हाथ से छूट रही है । बोल यह भूल किय बिना सो गुजारा नही बटी । भगवानु की यही इच्छा है सृष्टि की यही लीला है ।

गुना सुनो ! नीलू ने बतपूर्वक कहा हम यहाँ राख का सगीत सुनन पाय हैं । बातें तो किसी भी समय हा सकती हैं ।

राख का सगीत यही भाव जगा रहा था—सबसे बड़ी यातना है एनाकी होना मित्रकर बिछुड जाना । हम एकाकी नहा रहना चाहते । इस तरह तो हम समाप्त हो जायेंगे हमारी चिनगारी चुक जायगी । इस तरह तो हमारे भीतर की प्रमत्त-सहस्रधारा सूख जायगी । हमारे भीतर जो जीवन है वह बाहर के जीवन से मिलकर एनाकार होना चाहता है ।

नम्पूतिरिप्पाड बोले मैं तो तुम्हारी माँ से भी कहा था दिल्ली चला । वह मानी हा नहा । उस नी यहाँ होना चाहिए था !

गोविन्दन और नानू की माँयें इस पर एक-दूसरे को जान क्या कुछ कह गई । गोविन्दन ने भून घन्तिय गारा नीलू के पिता को ही अपने श्रम्य का निदान बना बाबा—बुद्ध हो गए बाब पक गए, फिर

भी जीवन-सगिनी का यह चारदिन का भ्रभाव भी स्रटक रहा है । और फिर वह दूसरी ही मुग्धा म मानो कह गया—अपने राम हैं कि भभी जीवन-सगिनी मिनी ही नहीं ।

शब्द का सगीत गन्ध याचना का प्रताक था । एक कलाकार की व्यथा-लीला हारकर भी हार न मानने वाल एक प्राणी की गाथा । गायद इसीनिए शब्द का कण्ठ बहुत तेज नहीं चल पा रहा था । यह जीवन की एक विराट् अनुभूति का सगीत था ।

‘शायद यह वह दीपक राग है जिससे दीय जलाये जा सकते हैं !’ पास स कोई बोला ।

नीलू ने भ्रांखा-ही भ्रांखा म इस पर गोविन्दन की राय पूछी । वह बाता दीये जलाने वाली बात तो भूठ है । सास दीपक गाभो कोई दीये-बीये नहा जलत ।”

नम्पूनिरिप्पाड चुपचाप बठे सगीत सुन रहे थ ।

गोविन्दन बोना गस को वापस बम्बई चलना ही हागा दख लेना नासू ! एक दिन ऐसा होकर रहेगा नहीं तो यह भादमी मर जायगा । इरा के बिना भब वह अधिक तिन जी नहीं सनता ।”

यह तो तुमने मर ही मन की बात कही नीलू मुस्कराई ।

मैं भी चाहता हूँ एक जीवन-सगिनी !”

कसी ?’

हे एक । भ्राज मुसीबत तो यह है कि मैं उस पूरी तरह नहा जान पाया ।’

उसम तुमन काई बुराइ दखी ?”

एक बुराइ नहीं बहुत-सी बुराइयाँ । पर सौ बुराइया की एक बुराइ यही है कि वह अपना महम् भुजान को तयार नहीं । महम् को कुकाये बिना विवाह नहीं हो सकता ।”

महम् को सा दिया तो फिर बचा क्या ? फिर तो समनो सारा ब्यस्तित्व ही स्वाहा हो गया ।

ऐसी भी क्या बात है ? गोविन्दन ने अपने मुख पर भोलपन की मुद्रा बनाते हुए उसमें एक व्यग-सा उभारकर कहा 'क्या कोई ऐसी भी बात है जो थो एक्सो भाठ गोविन्दन प्रवतार के मन को अभी तक नहा छू सकी ? नहीं बाबा हम उस चक्कर में नहीं पड़ेंगे जिसमें हमारा ध्यान पड़ गया ।'

यल न कोई भूल नहीं की ।" नम्पूतिरिप्पाड ने थाप लगाई ।

तो क्या इरा ने भूल की ?" गोविन्दन चुप न रह सका मैं मान जाता हूँ इरा ने ही भूल की । बात साफ है । जो भूल इरा ने की वह नीलू की क्यों कर ?

नीलू ने गोविन्दन का बायाँ कान ध्यान से सहनाते हुए कहा विलकुल ठीक । मैं वह भूल नहीं करूँगी ।'

नम्पूतिरिप्पाड को लगा वागबोर हाथ से छूट रही है । बोल यह भूल किये बिना तो गुजारा नहा बटा । भगवान् की यही इच्छा है सृष्टि की यही तीस्ता है ।

मुना मुनो । नीलू ने बलपूर्वक कहा 'हम यहाँ छल का संगीत सुनना चाहते हैं । बातें तो किसी भी समय हो सकती हैं ।

गद्य का संगीत यही भाव जगा रहा था—सबसे बड़ी याचना है एकाकी होना मिलकर विछुड जाना ! हम एकाकी नहीं रहना चाहते । इस तरह तो हम समाप्त हो जायेंगे हमारी चिनगारी चुक जायगी । इस तरह तो हमारे भीतर की अमृत-सहस्रधारा सूख जायगी । हमारे भीतर जो जीवन है वह बाहर के जीवन से मिलकर एकाकार होना चाहता है ।

नम्पूतिरिप्पाड बोल मैं तो तुम्हारी माँ से भी बड़ा था दिल्ली चलो । वह मानी हा नहा । उस भी यहाँ होना चाहिए था ।

गोविन्दन धीरे नानू की धारें इस पर एक-दूसरे को जान क्या कुछ बढ़ गये । गोविन्दन ने मूक अभिनय द्वारा नीलू को पिता की ही अमृत-सहस्रधारा का निगान बना डाला—बुद्ध हो गए बाल दब गए फिर

भी जीवन-सगिनी का यह चार दिन का अभाव भी छटक रहा है । और फिर वह दूसरी ही मुग म मानो कह गया—अपने राम हैं कि अभी जीवन-सगिनी मिली ही नहा ।

गम का संगीत गन्ध यातना का प्रताक था । एक कनाकार की व्यथा-लीला हारकर भी हार न मानने वाल एक प्राणी की गाथा । शायद इसीलिए सख का कण्ठ बहुत तेज नहीं चल पा रहा था । यह जीवन की एक विराट अनुभूति का सगात था ।

‘शायद यह वह दीपक राग है जिससे दीव जलान जा सकत हैं । पास से काई बोला ।

नीलू न आँसों-ही आँखा म इस पर गोबिन्दन की राम पूछी । वह वाता दीव जलान वाला बात तो नूठ है । सात दीपक गाधो काई दीव-धीय नहीं जलत ।’

नम्पूनिरिप्पाड चुपचाप बठ संगीत सुन रह थ ।

गाबिन्दन बोला ‘गख को बापत बम्बई बनना ही हागा देख लना नानू ! एक दिन एसा होकर रहगा नहीं तो यह भादमा नर जायगा । इरा के बिना अब वह अधिक् दिन जी नहीं सक्त ।’

यह ता तुमन मेरे ही मन की बात कहा नालू मुस्कराई ।

मैं ना चाहता हूँ एक जीवन-सगिनी !

कसी ?’

है एक । आज मुसीबत ता यह है कि मैं उस पूरी तरह नहीं जान पाता ।”

उसम तुमने काइ बुराई दती !”

एक बुराई नहीं, बहुत-सी बुराइयाँ । पर सी बुराइया की एक बुराई यही है कि वह घपना महम् कुनान को तयार नहीं । महम् को नुकाय बिना विवाह नहीं हा सकता ।’

महम् का सा दिया तो फिर बचा क्या ? फिर तो सनभ्रा सारा अस्तित्व ही स्वाहा हो गया ।

ऐसी भी क्या बात है ?' गोविन्दन ने अपने मुख पर भालपन की मुग्धा नात हुए उसमें एक ध्यग-सा उभारकर कहा क्या कोई ऐसी भी बात है जो थी एनसी घाठ गोविन्दन अवतार के मन को घभी तक नहीं छू सकी ? नहीं बाबा हम उस चक्कर में नहीं पड़ेंगे जिसमें हमारा पास पड़ गया ।

घस न कोइ भून नहीं का । ' नम्पूतिरिप्पाड न थाप नगई ।

तो क्या इरा ने भून की ?' गोविन्दन चुप न रह सका मैं मान लता हूँ इरा ने ही भून की । बात साफ है । जो भूल इरा ने का वह नीलू भी क्यों कर ?

नीलू ने गोविन्दन का बायाँ कान प्यार से सहलाते हुए कहा विनकुन ठीक । मैं वह भूल नहीं करूंगी ।'

नम्पूतिरिप्पाड को नगा बागडोर हाथ से छूट रही है । बोले यह भूल किये बिना तो गुजारा नहीं बंटी ! भगवानु की यही इच्छा है सृष्टि की मही नीला है ।

गुना सुनो ।" नीलू ने बलपूर्वक कहा हम यहाँ शस्र का सगीत सुनन आये हैं । वारें ता किसी भी समय हो सकती हैं ।

शस्र का मगीत यही भाव जगा रहा था—सबसे बड़ी बातना है एकाकी होना मिलकर बिछुड़ जाना ! हम एकाकी नहीं रहना चाहते । इस तरह तो हम समाप्त हो जायेंगे हमारी चिनगारी चुक जायगी । इस तरह तो हमारे भीतर की प्रमत्त-सहस्रधारा सूख जायगी । हमारे भीतर जो जीवन है वह बाहर के जीवन से मिलकर एकाकार होना चाहता है ।

नम्पूतिरिप्पाड बोले मैं तो तुम्हारी माँ से भी कहा था दिल्ली चला । वह मानी हा नहीं । उस भी यहाँ होना चाहिए था ।

गोविन्दन घोर नानू की घारें इस पर एक-दूसरे को जान क्या कुछ कह गद । गोविन्दन ने भून अभिनय गारा नीलू के पिता को हो अपने ध्यग्य का निघान बना डाका—'बुड़ हो गए बाल पन गए, छिर



नी जीवन-सगिनी का यह चार दिन का अभाव भी खटक रहा है । और फिर वह दूसरी ही मुठ्ठा म मानो कह गया—अपने राम हैं कि अभी जीवन-सगिनी मिनी ही नहीं ।

गाछ का संगीत गहन यातना का प्रतीक था । एक बलाकार की व्यथा-लीला हारकर भी हार न मानने वाला एक प्राणी की गाथा । शायद इसीलिए शख का कण्ठ बहुत तज नहीं चल पा रहा था । यह जीवन की एक विराट् अनुभूति का संगीत था ।

शायद यह वह दीपक राग है जिससे तीव्र जलाव जा सकता है !' पास में कोई बोना ।

नीलू न भ्रांखों ही भ्रांखा म इस पर गोविन्दन का राय पूछा । वह झाना दीये जताने वाली बात तो भूठ है । लाख दीपक गामो कोई दीय-वीय नहीं जलत ।'

नम्पूतिरिष्याड चुपचाप बठ संगीत सुन रहे थे ।

गाविन्दन बोला शख को वापस बम्बई चलना ही होगा दख लेना नीलू ! एक दिन एसा होकर रहेगा नहीं तो यह घादमी मर जायगा । इरा के बिना अब वह अधिक गिन जी नहीं सकता ।'

यह तो तुमन भरे ही मन की बात कही नीलू मुस्कराई ।

मैं भा चाहता हूँ एक जीवन-सगिनी !

कसी ?'

है एक । आज मुसीबत तो यह है कि मैं उस पूरी तरह नहीं जान पाया ।'

उसम तुमन कोई बुराई दखी ?''

एक बुराई नहीं, बहुत-सी बुराइयाँ । पर सी बुराइयाँ की एक बुराई यही है कि वह अपना महम् कुबान का तयार नहा । महम् को कुनाये बिना बिबाह नहीं हो सकता ।'

महम् का सो दिया तो फिर बचा क्या ? फिर तो सनभो सारा बन्धित्व ही स्यादा हो गया ।

घायद यह बात ठीक है ।

नम्पूतिरिप्पाड बोने सगीत सुना । ये बातें तो फिर भी कर सकत हो । रुद्रपदम् से एक सौ एक रुद्रम भागे है 'ख का सगीत ! यह समझा घख म रुद्रपदम् जीवित है ।'

घोर गोविन्दन म नही ? नीलू ने आखें नचाईं गोविन्दन ता गुददेव रुद्रपदम् का सुपुत्र है ।

पर 'ख ही गुददेव का सच्चा मानस-पुत्र है ।

गोविन्दन बोला इरा को धाडकर घख ने सबसे बड़ी भून की । इरा सच्ची है । मैं कह सकता हू उसने घपन मन म बाल बराबर भी घख के लिए दूरी नहीं मान दी ।

नम्पूतिरिप्पाड मानो इसी क्षण के इसजार म बठ ये तुम ना वचन दो कि नीलू व लिए कभी घपन मन म बाल बराबर भी दूरी नहीं मान दोगे ता मैं तुम दोनों की जोड़ी की कामना कर सकता हू ।

छोड़िए पिताजी !' नालू न सीभकर कहा ।

फिर सगीत का दूसरा भोका घावा । सगता या दीपक राग स दीमे जल गए ।

घख गा रहा था ।

वह घपार घग्नि म जन रहा था फिर भी जल वह घग्नि स बच जाना चाहता हो ।

रग-मख पर रख एक सौ एक दीप जन नाटय सघ क घधिकारी की घाग म ठीक समय पर एक साथ जला दिए गए थ ।

दशकों की तालिया से नटराजपुरी का यह मस्वायी मण्डप नू ज उठा ।

घोर फिर नम्पूतिरिप्पाड न दला कि गोविन्दन पाघ की कुरसी स उठकर कही घना गया ।

नीलू बोनी वहीं बाहर गया होना पान खाने ।'

पान की घालत भी कितनी बुरी है ! नम्पूतिरिप्पाड मुस्कराय ।

थोड़ी देर बाद मच से घोषणा की गई कि छय बम्बई के कलाकार मल्हार गायेंगे ।

मल्हार के स्वर उठे ।

थोड़ी देर बाद मच पर बर्षा होने लगी ।

लौक्य बुझते गए एक-एक करके । दाख उस तरफ बठा था । बर्षा होती रही । दाख अपनी जगह से न उठा जैसे दीपक-राग की भांग बुझाने के लिए यह सब आवश्यक है ।

फिर मल्हार गाने वाले न उठकर दीपक गाने वाले को गल स लगाया ।

नम्पूतिरिप्पाड न कहा अरे बाह नीलू ! यह मल्हार गाने वाला तो हमारा गोविन्दन ही निकला !

शायद यह बात ठीक है।  
 नम्पूतिरिप्पाड वान सगीत सुना। य बातें तो फिर भी कर सपन  
 हो। स्तूपदम् से एक सौ एन कदम प्रागे है दाख वा सगीत ! यह समझा  
 गल म स्तूपदम् जीवित है।  
 श्रीर गोविन्दन म नही ? नीलू ने माँतें नचाई गाबिन्दन ता  
 गुरुत्वेव स्तूपदम् का सुपुत्र है।

पर गल ही गुरुदेव का सच्चा मानस पुत्र है।  
 गोबिन्दन वो ग इरा को छाटकर गलन सबसे बड़ी भूत की।  
 इरा सच्ची है। मैं कह सकता हूँ उसने अपने मन म बाल बराबर भी दाख  
 के लिए दूरी नहीं मान दी।

नम्पूतिरिप्पाड मानो इसी क्षण क हतबार म बठ य तुम ना  
 बचन दो कि नीलू क लिए अभी अपने मन म बाल बराबर भी दूरी नहीं  
 माने शोग ता मैं तुम दोनों की जानी की कामना कर सकता हूँ।  
 छोलिए पिताजी ! नीलू न सीमकर कहा।  
 फिर सगीत का दूसरा भाषा प्राया। लगता था दीपक-राग स  
 दीये जल गए।

दाख गा रहा था।  
 वह अपार अग्नि म जन रहा था फिर भी गल वह अग्नि से बच  
 जाना चाहता हा।  
 रग-मच पर रखे एक सौ एक दीप जन नाट्य सघ क अधिवारी की  
 प्राणा न ठीक समय पर एक साथ जला दिए गए थ।  
 दगको की तातियो से नटराजपुरी वा यह अस्थायी मण्डप गूज  
 उठा।

श्रीर फिर नम्पूतिरिप्पाड न दया कि गोबिन्दन पास की कुरसी स  
 उठकर कही चला गया।

नीलू बोनी बही बाहर गया होना पान खाने।  
 पान की प्राण्ट भी कितनी बुरी है ! नम्पूतिरिप्पाड मुस्कराय।

थोड़ी दर बाज मध से घोपणा की गई कि ध्रुव बम्बई क बलाकार मल्हार गायेगे ।

मल्हार के स्वर उर ।

थोड़ी दर बाज मध पर वर्षा होने लगी ।

लौब बुझने गए एक-एक करके । शब्द उस तरफ बटा था । वर्षा हाती रही । शब्द अपनी जगह से न उठा जैसे दीपक राग की प्राग बुझने के लिए यह सब आवश्यक है ।

फिर मल्हार गाने वाल न उठकर शीपक गाने वाले को गले से लगाया ।

नम्पूतिरिण्याड न बहा धरे बाह नीलू ! यह मल्हार गाने वाला ता हमारा गोबिन्द ही निरसा !

'घायद यह बात ठीक है ।

नम्पूतिरिप्पाड बाल सगीत सुनो । य बावें तो फिर भी कर सकत हो । रुप्पम् से एक सौ एर वदम ग्राम है गख का सगीत । यह ममभा दास म रुद्रपदम् जीवित है ।'

और गाबिन्दन म नर्हा ? नीलू ने भावें नचाइ गोबिन्दन ता गुस्तेव रुद्रपदम् का सुपुत्र है ।

पर गख ही गुस्तेव का सच्चा मानस-पुत्र है ।

गोबिन्दन बोला इरा को छोडकर दास न सबसे बढी भूत की । इरा सच्ची है । मैं कह सकता हू उसने अपने मन म बाल बराबर भी दास क लिए दूरी नहीं ग्रान दी ।

नम्पूतिरिप्पाड माना इसी क्षण के इतजार म बढे थे तुम भी वचन दो कि नीलू के लिए अभी अपने मन म बाल बराबर भी दूरी नहीं ग्राने दोगे ता मैं तुम दोनो की जाडी की कामना कर सकता हूँ ।

छाडिए पिताजी !' नालू न सोभकर कहा ।

फिर सगीत का दूसरा भाका ग्राया । सगता था दीपन राग स दीये जल गए ।

दास गा रहा था ।

वह अपार अग्नि म जल रहा था फिर भी जैसे वह अग्नि से बच जाना चाहता हा ।

रग-मच पर रखे एक सौ एक दीय जन नाटय सघ क अधिकारी की आज्ञा म ठीक समय पर एक साथ जला दिए गए थ ।

दाका की तासिमो स नटराजपुरी का यह अस्थायी मण्डप गूज उठा ।

और फिर नम्पूतिरिप्पाड न दस्ता कि गोबिन्दन पास की कुरसी स उठकर कहा चला गया ।

नीलू बोनी कही बाहर गया होगा पान खाने ।

पान की आदत भी कितनी बुरी है ! नम्पूतिरिप्पाड मुस्वराय ।

बोझा टर बाट मच स घोपणा की गद कि घब बम्बइ क कताकार मन्त्रार गायगे ।

मल्हार क स्वर उठ ।

घानी दर बाट मच पर बपा हाने रगी ।

नीय पुन्त गए, एक-एक करक । गल उन तरफ बठा था । बपा हावा रही । गत्र घपना जगह स न उठा जस दीपक-राग का घाम पुन्त के लिए यह सब आवश्यक था ।

फिर मल्हार गाने वाले न उठकर शेषक गाने वाले को गल न लगाया ।

नम्पूतिरिणाड न बहा घरे बाहू नानू । यह मल्हार गाने वाला था हमारा गाबिन्त ही निबन्ता ।



तेरह

**वि**वाह होते देर न लगी । नीलू न हसकर कहा मैंने वह बात नहा मानी—

घर का जोगी जोगना मान गाँव का सिद्ध !'

गोविन्दन बोला लेकिन एक बात जरूर हुई । नरगिस ने तो पद्मश्री की उपाधि पाकर ही भ्रष्टानक सुनीलदत्त के साथ विवाह-सूत्र म बघकर अपने प्रसन्नियों के दिलों में एक विध्वंस-सा भ्रान्दोलन सड़ा कर दिया और तुमने पद्मश्री बनने तक इन्तजार करना या यह कहो कि इसके लिए श्री एकसौ आठ गोविन्दन अवतार का इन्तजार करना जरूरी नहीं समझा ।

नम्युतिरिप्पाड प्रसन्न थे । नीलू और गोविन्दन ने उनकी भाषा का पालन किया । उनका यही विचार था तुम दोनों सुधी रहो ! यही मेरा आशीर्वाद है ।

शर ने भी इस विवाह पर स्वीकृति की छाप लगात हुए कहा विवाह तभी विवाह है जब तुम स्वयं को इसमें डूबे हुए अनुभव करो । तभी जीवन रथ आगे बढ़ सकता है ।'

तुम्हारा जीवन रथ भी तो आगे बढ़ना चाहिए नीलू ने गम्भीर मुद्रा में कहा, मेरी मानी तो बम्बई धरती । इरा तुम्हें पाकर धय हो उठेगी ।

इरा भाव भी शर की ही है ! गोविन्दन ने बलपूर्वक कहा



'बस ता घोरत ही घोरत की बात ज्यादा समझ सकती है पर थोड़ी एकदम घाब गोबिन्दन प्रयत्नार का भी इरासा चाहा परिचय है। मैं जानता हूँ इरासा भी ता किसी घोर की नहा हा सकती। हाँ जया बीच में न होती तो बात दूसरी थी।

तुम बम्बई जाओ गल। मैं प्रकेशा वरकला चना जाऊँगा।' नमूतिरिणाड न कहा तुम्हारी कमभूमि तो प्रय बम्बई ही हा सनती है। वरकला म तुमने पषानन को जा रना भा दे डाला। प्रय जाकर प्रपना इरास मिलो जाकर जया को गल लगाया। घोर फिर यह बात भी तो है कि प्राय वह बम्बई नहा है जिस तुम दन वप पहल छाडकर चल पाव य। वहाँ प्रच्छी फिल्म बनेंगे त्रिनम जावन प्रमर हा सक। घोर प्रच्छी फिल्मा म प्रच्छा संगीत ही रखना होगा। बढी जाओ। घाडा गुन डुको थोडा दूनरो का डुकाया यही जीवन है। विलकुल विवाह वाली बात समझो।

प्राप भी बम्बई चलिए गाबिन्दन न सुन्दाव रमा फिर शल भी चल सकता है! प्रापको भा वरकला म ऐना क्या काम है? क्या बम्बई प्रापक अनुभव स लान नहीं उठा सकती।

'मरा म्यान तो वरकला म ही हो सकता है। मरा प्रभिनय प्रय घोर नहीं चलेगा। परदा गिरन स पहल मुझे बम्बई म नहा वरकला म ही होना चाहिए। नमूतिरिणाड बहते चले गए, सगु तुम बम्बई जकर जाओ। मरा म्यान है कि प्राय ही हमारे दग म जागणक तो यह विचार फिन्न-निमाताओं क त्त घोर त्तमाग तक पट्टेबाकर छोटोने कि समाज म बुरादयी पण करन वाली फिल्मा का निमागु बन् कर दिया जाय।

यह नाम तो सरकार को करना चाहिए। गाबिन्दन न मुक्ति दा "यह बात रहन याता की बम्बई म दमो नहा पर फिम निमाता इस पर कान नहीं धरत।

तुम्हें एक दिन इस पर कान धरना ही होगा। नामू न त्तमार

स्तर में कड़ा वन नाच्य मध का यह मन्मथलन फिल्म निमानाग्रो के लिए एक चुनौती है। वे नहीं मन्मथोंगे तो जाका काम बसे ही चौपट हो जायगा। रग मच का काम ज्या-ज्या आग घट्टगा और वह भी अच्छे स्तर पर ता नाग फिल्मों में हटकर रग-मच की ओर झुकेंगे। मेरा खयाल है कि अन्धे रग-मच की हाजिरा में बुरी फिल्मों का निर्माण अपने आप सूख पता की तरह ऋद्ध जायगा।

गोविन्द बोन

योगा को अच्छे भाग से भटकाने वाली फिल्मों का निर्माण की छूट अभी ही है जैसे हमारे देश में यह टूट दी जाय कि खुल धाम जन्म का व्यापार किया जा सकता है। आज जहर बचने पर साइमेंस है बर्दिग है। वेदिक जहर फैलाने वाली फिल्म जो चाह आजादी से बना सकता है। क्या अभी का नाम आजादी है ?

गन बोन

कहने को तो सभी फिल्म निर्माता गया फाड़ फाड़कर यही कहते हैं— जनता जो कुछ चाहती है वहां तो हम अपनी फिल्मों में धन की कोशिश करते हैं हम बकमूर हैं। पर सही बात यही है कि हर फिल्म निमाना आज पसे वे खबरों में पतना फसा हुआ है कि वह विष बचता है पर अमृत के तबन लगाकर ! एक होड़-सी लगी रहती है कि कौन-सांग में-सांग नर नाच-गाने जाता है। कौन मस्लीन दृश्या की भूल भुलैया में दशका को गुम करके उनको जेरो से अधिक से अधिक पसे निषानता है। सरकार के बन्धन लगाने भर से भी कोई जादू-टाना होने में रहा। हम जागें और फिल्म निर्माताओं को जगाय सभी कुछ काम चल सकेगा।

तो इसके लिए धाप धम्यई चलो। नीलू मुस्कराइ।

मेरे बर्त जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

क्या ?

कोयला की त्तारी में हाथ बान करत रहना मुझ एक आँख

नहीं भाता । बम्बई का नाता बाजार बम्बई का ही गुन हो ।

यह कहिय कि घाप कायर है ।

यही समझ ना ।

जन-नाटय-सभ क सम्मेलन स कुछ ता प्ररणा ताजिए । बम्बई चत्रो । मैं पहल भी क बार बत्ता चुकी हूँ बम्बई म कई बम्बईयाँ हैं । सारा-का-सारी बम्बई ता सीना बाजार नहीं है ।

‘जा नी हो भरे बम्बई जान का ता प्रान ही नहा उठता ।

घाप वी जन-नाटय-सभ म काम कर सकत हैं ।

वरकता ही शब्दा है ।

नातू बोना मन्टर इण्डिया’ फ़िल्म का वह गाना सुनाइए शब्द का ।

गोविन्द न शीर्षे नवाकर कहा यह इत्तम मुक्त दिया जा रहा है—मुक्त याना थी एकमौ घाठ गाविन्दन श्वतार का ।

नातू कहता है ता सुना ना वह गाना ! नमूविरिणाड उन्मुक्ता पूवक बाव गायन उसम काइ नाम बाव हा ।

गाविन्दन गान ता

नगरो-नगरो द्वार द्वार दू दू रे सांवरिया

पिया पिया रट क मे लो हो गई र बावरिया ।

बदरों वालम न मोहे फू का गम की घाय म

दिरह की चिनगारो रस दो दुखिया क सुहाग में

पल पल नयना रोये छसक ननों की गमरिया

नगरो-नगरो द्वारे द्वार

घाई थी घटियों में लेकर सपन बया-बया प्यार क,

जातो हू दो घाँवू लेकर घागाएँ सब हार क ।

दुनिया क मत में सग गई जावन की गठरिया

नगरो-नगरो द्वारे गरे

बगन के दो नूख नना जोवन भर ना सोयेग  
 बिछड़ साजन तुमरे कारन रातो हो हम रोयेग ।  
 घब ना जान रामा कस क्षीतेगी उमरिया  
 नपरी-नपरी द्वारे-द्वारे

नीलू सुनते-सुनते भूम उठी ।

यही भाव इरा क समझो छल । मैं सच कहती हू वह भा घब  
 तुम्हारे बिना नहीं रह सकती ।

यह बात मैं मान नहीं सबता ! छल ने बड़े क्षोभ भरे स्वर भ  
 कहा इरा को मरी जरूरत नहीं । फिल्म म तो वह भी धायन ऐस  
 ऐस गाने गा सकती है किसी प्ले बक गायिका की भावाज का धाखा  
 दकर । पर जीवन म इरा वही है जिसका उसने दस वष मुम्म दूर  
 रहकर सबूत दिया । कोई बात नहीं । उसे उसकी कमभूमि शुभ हो !  
 कहते-कहते छल का गला भर भाया ।

तुम्ह बम्बई जाना चाहिए ! नम्पूतिरिप्पाड ने गल का कथा  
 क्कमोछा 'जागो सवरा हो गया । दस वष की लम्बी रात घब समाप्त  
 हो रही है । तुम्हारे सोत-सोते नीलू और गोबिन्दन का विवाह भी हा  
 गया । आज जन-नाट्य-संघ के सम्मेलन का प्रतिम दिन है । दिल्ली  
 छोठने की घड़ी सिर पर छड़ी है ।



## चौदह

अनपूर्णा का झुरियों वाला चेहरा खिल उठा। घर में बट घोर बहू का दखकर वह फूली न समाना थी।  
गाबिन्दन ने माँ के चरण छुए। माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरा।  
'सन्धारह बप बा' ही सही बग पर प्राया बहू माँ का गद।  
'वह क्या कम सुनी थी? मैं तुम्हारा विवाह अपने हाथ से किया जाता  
तो घोर भी सुनी होती पर सनी सुनियी किन्नक नाम्य में निम्ना है,  
माबिन्दन।

'पर विवाह का ता एक मूत्रव रखा है न माँ! गाबिन्दन हंस  
पडा पूछ ना नीनू स। मैं सुद भी नहीं जानता था कि मूत्र इतना  
पात है। बनाकर नना प्राया पा मूत्र।  
बहुन प्रच्छा हुआ बग! घाम खान स मतसब है, गिनन स  
नहा।

मन्दिर बाजार के पास रहता थी अनपूर्णा पुराने घर में। सगोठ  
विद्यालय बना मकान ता तनी तक रहा जब तक मरणा बही के  
प्रायाय थ।

मात्र ता तुम्हारे पिता का भी होना चाहिए था!" अनपूर्णा की  
धनें भर पाद।

कितन प्रच्छ य नुकाव। नीनू ने पाय उगाद।  
अनपूर्णा की माँओं के धाम पनत हा नहा थ। 'सागर की तरह

नीलू बोली यहाँ कवि का व्यंग्य जरा तीखा हो गया ! और फिर हँसकर कहा ठीक है जब भी काइ सड़की विवाह क' लिए हाँ करेगी य' दोग जरूर वजग ।

अन्नपूर्णा बोली शल्ल कवि भी है यह तो यहाँ किसी को मानूम नहीं । उसने विवाह किया था तो उस थोड़ा बय रखना चाहिए था बटा । छोड़कर घाना तो कायरता हुआ । मैंने उसे सदा यही समझाया बम्बई जाभा ।

नीलू ने भाँपें नचानर कहा उस भी बम्बई न चलंगे । पहल तुम तो तयारी करो माँ !

यमुना हस पड़ी हम तो कोई न'दा न'हता बम्बई चने ।

नीलू बानी तुम भी चना माँ !

अन्नपूर्णा को ही जाना चाहिए । यमुना न गम्भीर स्वर में कहा नीलू बेटी एक बात याद रखना बडो की छत्रछाया मे ही गुल है । सास को ही माँ मानना । मेरे पास शिकायत नहीं भानी चाहिए ।

तुम बम्बई चलने की तयारी करा माँ ! गाँधी का समय हो रहा है । गाबिन्दन ने बलपूर्वक कहा मैं सदा यह सपना देखता रहा हू कि जब भरा घर-घाट होगा सो माँ को भी साथ रखूंगा ।

यहाँ रहने पर भी ता तुम ही सेवा करत भाय हो बटा ! भीतर से बरबला छोड़न को जी नही होता । बचन दो कि बम्बई मे भरा जी न नगा तो मुझ यहाँ छोड़ जाभोग ।

भव यह बात तो गत्रत है माँ ! भव तो तुम्ह बम्बई मे ही रहना होगा हमारे पास । गोबिन्दन ने बलपूर्वक कहा 'बम्बई और बरबला के बीच बरकर काटता रह जाऊँ यह तो नही होगा !

सही बात सो यही है माँ कि अब तुम हमारे पास ही रहोगी । नीलू मुस्कराई ।

शान्ता नीलू ! यमुनाने गर्व-सा अनुभव करत हुए कहा चलो उठो बहन ! सामान बाँधो ! शल्ल और नीलू क पिताजी सीधे स्नान

पहुँचन की बात कह रहे थे ।”

वे स्टेशन पहुँच ता गये मान में अधिक समय नहीं था ।

नम्रुतिरिप्याड बाल में अब भी कहता है शम्भू ! तुम इनके साथ  
घन गाया ।

गल इकार में सिर हिसाना रहा ।

गाड़ी धाई । नालू धन्यपूर्णा और गाविन्दन दिव्य में जा बठ ।  
खिडकी से सिर निकालकर नीसू बोला मान ना जाओ, शम्भू ! चलो  
हमार साथ ! इय तुम्हारी है जया तुम्हारी है बम्बई तुम्हारी है ।

इजन न सोने बजाइ । सख टस-स-मस न हुआ ।

गाड़ी धली गई ।

नम्रुतिरिप्याड बोले गल तुम अब धरकला में नहीं रह सकत ।  
तुम्हें जाना टा हागा बम्बई । समय का बहा पुनार है । तुम अब तक  
मनमुना करत रया ?



“इरा तुम एक बार वरकना जरूर जाओ ! नीलू ने बलपूर्वक कहा नारी मुक्त जाती है इसलिए कहती है तुम मुक्त जाओ। मैं देख चाहूँ शख बहुत उदास है। वह झुटना नहीं चाहता। तुम जाओ एक बार और उस लती जाओ !

नीलू की यह सीख इरा को अच्छी लगी भल ही ऊपर से उसने यही कहा 'दस्ता जायगा।

गोविन्दन ने दावत दी थी। उबशी और जमन्त प्रसन्न थे। मनोज और मुक्तिबोध घसलन गोविन्दन को छेड़ रहे थे। राज राज मनुपम स गोविन्दन ने कहा अब यह बताओ कि तुम्हारा घर घाट कब बसेगा ? जहाँ घादी की बात चली थी वहाँ मामला डीना मालूम होता है क्या ?

इरा नीलू के पास वाली बुर्सी पर बठी थी। वह धारम-सन्ताप की मूर्ति-सी प्रतीत हो रही थी यही बात उसे इस दावत में दूसरों से अलग दरसा रही थी।

गोविन्दन खूब चहक रहा था। थी एक नौ भाठ गोविन्दन भवतार को दूल्हे के रूप में देखकर मैं आज फूली नहीं समाती ! इरा न सुख की सीस लेकर कहा मैं नीलू से कहूँगी कि वह गोविन्दन को कसकर रमे।

मुक्तिबोध न हमकर कहा तब ता गोविन्दन भी वरकता चला



जायगा गल की तरह ।

उबरी घोर जपत न तानी बजाइ ।

मनात्र बोना सप्त वा बनी भी नोट सकता है । क्या अपन उरी  
की बुलाकर छाड़गा ।

इरा मुस्कराइ ।

मैन सय को बनी गुलाम बनाना नहा चाहा या घोर न मैन  
गुलाम बनना ही कनी स्वीकार किया ।

उबरी बोरी गुलाम बनन का ता भाज की नारी क सानन  
सवान ही नहा उठता । क्या नानू ?

नीलू कुछ-कुछ तजा-ची गई जा मवको उचित ही प्रतीत हुआ ।

दावत का प्रबच ताजमूल हाटन म किया गया था जिसकी  
सिद्धिया स मार साफ सिद्धाद दता था ।

इरा न कहा नीलू, पायद मैन बन्तमोजी की, जा सारी दुनिया  
म धूम धाई लेकिन सय की बात नहा पूछी ।

तुमन उव चिटियाँ तो लियो ! नीलू न मानो इरा का पण  
लत हुए कहा मुक गल ने सब यता सिया । उसन किसी चिट्टा का  
उत्तर नहीं सिया । बन्तमोजी तो उसन की यह बात मैन उखस साफ  
कह भी थी ।

खर इसकी तो काई बात नहा कि गल न चिट्टी का जमाब नहा  
दिया । बस वह क्या कह रहा था ?

कहा भी कुछ नहीं । बग बम्बई धान का राजी नहा हुआ ।  
पायद वह भी बात पर धड़ा हुआ है कि जमभूनि हा धात्मा क लिए  
सबमे बडा उरगान है । बस उधरक पान तुम्हारा धनक नघर सन्तियो  
हू ।'

सन्तियो म क्या होता है ? पर यह इन्मान का पुराना धादत ह ।  
बद माहम न काम नहा न पाता तो सन्तियो म उलभकर हा रग नन  
की कागिग करता है ।

घण्य प्रतिधि घपना घपना प्रसंग ल बठे य ।

होटन का भारकेस्ट्रा स्वागत-संगीत बजाए जा रहा था ।

दावत म घनेक तरह क भोजन पदा किय गए ।

भोजन क बाद प्रतिधि कोको पी रह थ और भाँलों-ही-भाँला म यह शिकायत कर रहे थ कि आजादी के बाद बम्बई का सरकार ने 'ड्राई बनाकर रखा दिया ।

इरा बार-बार दोना गयो से घपना जूडा ठीक करन लगती थी ।

स्वागत-संगीत अँथा होता गया ।

इरा बोली एक बात है नीलू ! मुक पता होता कि शख दिल्ली आ रहा है ता मैं भी तुम्हारे साथ जरूर गई होती । वहाँ मैंने तुम्हें दुर्नहिन बनत भी दखा होता । अब ता मैं शख की यादा को ताश क पत्तो भी तरह फँटवर ही खुश हो लेती हू । जया की भजीव बात है । उसन शख को दखा नहीं । उसकी बातें मुन्छे भी ज्यादा वही फगती है । उसकी आदतें भी बिनकुन शख पर गई हैं । भोजन म जो जा थीजें शख का पमद हैं वही तो जया का नी घन्छी नगती हैं । यह सब कसे सम्भव हुआ ? प्रकृति के बनिहारी जाय !

तुम जरूर एक बार बरबन्ना हो आओ इरा ! जया का ना साथ ले जाना !

अभी तो सोचा नहीं ।

मरी बात मानो ।

पूछ दखूगी मन से ! क्या उसके सामन जाकर गिढ़गिड़ाना होगा ?

इसकी ता जरूरत नहा होगी । जाना ही काफी हागा ।

और अगर जया को यहा छोड जाऊँ ?

जया को साथ रखना ।

भारकेस्ट्रा का स्वागत-संगीत भी अब यही कह रहा हा—जया को साथ रखना !

प्रतिधि प्रपना प्रपनी बातों में खो गए । मुझ-मुन्कर उनकी दृष्टि नीलू पर जन जाती । नीलू दुलहिन था । हर किसी को प्रपन विवाह का याद प्रा रही थी यह नाव उनका मूल-मुद्रा पर अंकित था । सब पीछे झूट गया स्मृतिवा क खवा घाट पर । एसा ही उत्सव हुआ था तब भी एसा ही राखत दा गड़ भी एसा ही स्वागत-संगीत बजा था ।

राज राज अनुपम न तब मिया को सम्बोधित करत हुए मानो किसी गायक का बोल गुनगुना दिया

बाँधी क बरफ लग  
सान क बरफ लग  
घाय दिन घटार क  
रग गुलनार क

उपशा बाना, गाँव में नालू का नाम जानना होगा ।

राज राज अनुपम घागु कवि क प्रत्याज में गुनगुनाय माया  
बदलत रह ह बदलत रहेंगे,  
य नीतम-स नीलू क रगोन सपन  
गाँधी की राखत का किस्ता है न्यारा ।  
करो याद यारो ब्याह प्रपन प्रपन ;

मुस्तिबाध बाना अब गाँव क एक बान न हमारा इरा जा की पाड़ा तारीक हा जानी पाहिए, कवि जी ।

घोर अनुपम न नट यह बान गुनगुनाया  
पुहारो गल को इक उग्र हान घाई है  
इरा क कठ में यह गीत घाब लहराए ।

मनाज भी चुप न रह सका जगजी का तारीक में भा हाना पाणिए एक बाल !

अनुपम न मिन बहर स उपगी का ठरक दया । सब तिनतिनाकर हस पड । अनुपम नूनकर मा उगा

सलाम लिखता है गायर तुम्हारी जल्फ के नाम !  
 बनी रुबाई बनी गजल जबकि टुमरी न  
 तुम्हारे प्यार क पोशर में पा लिया सुल घाम  
 तुम्हारे हाथ में है बागडोर फिल्मा की  
 हमारा गीत तुम्हारे हुसन का है जाम  
 सलाम लिखता है गायर तुम्हारी जल्फ के नाम !

होटल का मारकेस्ट्रा भव दूसरी ही घुन बजा रहा था । सभी प्रति  
 यियो ने उवशी को ध्यान स दया जिस पर अनुपम क गीत न जादू-सा  
 कर दिया था ।

होटल से बाहर गायर नीसू ने फिर से इरा को अपनी बात याद  
 दिनाई इरा तुम एन बार वरकता जरूर जाओ ।



## शोलह

‘शम न भिन्न जा रहा हा इरा । भांडिर तुम्ह हा बुझना पमा ।  
नारा का हा बुझना पटना है ।

मैं नहा बुझा जया बुझा है । उनका जया का उनक पास त जा  
खा है । या ता थ माय मा जायो जा इन उनक पास छाड भाळगा ।

घात्र मवर-नवर नानो का कहाना मुन र्हा या जया

एक या राजा । उनका र्ही जान रानियो । पर एक ना रानी क  
सुनान नहा या । एन तिन राजनहन न एक ऋषि मा निवता । सपत  
छोनी रानी न घांता म घांनू नरवर ऋषि की भोर त्ता भोर कहा,  
मगराज । सुनान प्राप्ति ना का त्पाय बताइए ! ऋषि न राना  
का एक सब तिया । राना न यह सब ठाक म रस तिया यह सोचकर  
कि वह स्नान करक हा इस मायोता । पर जब वह स्नान करव वापस  
घां, ता सब ठाक स गायव पा ।

इरा न ना मुना या यह कहाना बपपन म । मां न इहा त्तों म  
मुनाइ या यह कहानी । घात्र मवर-नवर जस फिर कल रिकाड लगा  
तिया गया पा । कहानी का सनस्था यही था कि वह सब कौन त गया ।  
पर जब बुझ धांर्गे व निए उस सनस्था न कुंछारा पाकर इरा न  
गमरा कहा मैं नहा बुझा जया बुझी है ।

मां कदु न बोना ।

जया सो गइ पा ।

माँ खिड़की में सड़ी तरीमान पाइंट की तरफ देख रही थी। सागर का दृश्य माँ को प्रिय था। उलू वाली बात यहाँ कहीं ?  
 'दास इसी बात को या कहता—वरकला वाली बात यहाँ कहीं ?  
 उसका उलाहना तो उसी को देना तुम बरकला जा ही रही

हो।

सीधी बरकला नहीं जाऊँगी माँ ! पहले एलोरा और प्रबन्ता फिर मद्रास महाबलीपुरम् तजोर त्रिची और मदुरा। फिर बन्या कुमारी और वहाँ से लौटकर बरकला।

कोई जगह रह न जाय। कितन दिन क लिए जा रही हो ?  
 अब जितने दिन भी लग जायें। एक बात बताओ माँ ! रानी का वह सब बौन न गया था ? यह कहानी तो तुमन मुझे भी सुनाई थी बचपन में पर भूल गई।

तो दास से पूछ लना। उसकी माँ ने भी तो सुनाई होगी उसे यह कहानी।

इरा का ध्यान गोविन्दन की तरफ चला गया। कल जब मनाग मिलने आया तो ऊपर से गोविन्दन भी घा निकला। मनोज ने हुसकर कहा था 'कबरे' में यूरोपीय थ्यून पर यूरोपीय नाच की छाप दिखात बरकत क्या आप नाच-नाच रे मयूरा ! वाला गीत देना चाहेंगे ? और गोविन्दन ने भट उत्तर दिया था बिलकुल नहीं मनोज साहब ! ठीक कहा था गोविन्दन ने। फ़िल्म के विषय पर ही निभर रहंगी फिल्म की भाषा और नाच-गीत की धुन। इरा न माँ की तरफ देखकर कहा बौन से गया था वह सेव ?

माँ कुछ न बोनी। वह इरा को जाने से रोक तो न सकती थी पर वह प्रपन भायों को छिपाकर रखने की भा चम्पस्त न थी।

इरा ने माँ को यह भी नहीं बताया था कि वह हाल ही में दास को दो चिट्ठियाँ लिख चुकी है। यह बात तो उसने छकर स भी छिपा कर रखी थी।

गकर न बाहर जाते-जात पुराना ब्यम्य चुस्त कर दिया क्या दीग तुम घकती घाई हो ? जीजाजी नहीं घाय ?

घकर हमत-हसत नीच उतर गया । नटखट पहली बात बूलता ही नहा—दस बप पहल की बात । उस समय ता जया का कहा पता न था । इरा का लगा कि जा सेव उत मित्ता या श्रपि स उम उसन फौरन खा लिया था । लाक-क्या की रानी का तरह उसन सब का ठाक म रखने का रिस्क नहीं लिया था । उसन बस सब खाकर हा स्नान किया था ।

इरा हड-सकल्य थी । घाज रात की गाड़ी स वह जा रही थी । त्पिणु भारत की यात्रा करक वह मानून करना चाहता था कि वह चट्टान किम तरह की है बिसस गख को घडा गया । वह गख का गो पत्र निब चुकी था । पहना पत्र लिखने क दूसरे ही त्पिन उसन दूतस पत्र लिख लिया था । विचार ता घाया था गख क्या मोचगा ? दस सान तक चुप रही । लिखन पर घाई, ता उतर की प्रतीगा किम बिना हर रात्र ही पत्र लिखन नाते ।

माँ खिडकी स नागर की तरफ देख रही थी । वह उलग थी । इरा न साधा पत्रनी ल्पान ता माँ तब भा नहा हुइ थी जब मैं पाँच बप पूव घमराका एगिदा घीर नूरान का सर पर निकली था जया का साथ लेकर । इनती उगात्र ता माँ तब भी न हुइ थी जब मैं पिछन त्पिना ल्प गई किन्त उगागान म जया का साथ लेकर । माँ को मानूम हाना चाहिए कि मैंन घपन तब का रिस्क नहीं लिया था मैंन ता श्रपि स मित्ता हुमा सब नहान त पहल ही खा लिया था ।

‘टप गिकाडर साथ रहगा नाँ !

“किम-किनकी घावात्र रिघात्र कराया ?

बिसकी भा घावात्र पमल्य था तइ ।

उपर की नया तू माक घमन्धा ? जितना मतदानम माधा था सब ता बून गई ।

इरा न कुछ उत्तर न दिया। उमन सोचा कहानी का अन्त तो पानी दूर है। कहानी में मस्जिद की ही तो सारी बात है।

सबसे छोटी रानी का वह सेब किसने चुरा लिया था माँ !

माँ न जस सुना ही नहीं। खुप गड़ी मागर भी घोर तपती रही।

एक घट्टान वह भी है माँ जिसमें एमिफेण्टा की त्रिमूर्ति पड़ी गई। इरा कहना चनी गई, एनोरा में तो सुना है पूरा मन्दिर ही पत्थर को छील छीलकर बनाया गया। कलाश वही उस मन्दिर का प्यारा-सा नाम है। मनोज अकेला ही उस तप थाया। वह ता अजता भी देख थाया। अजन्ता की ननवी का ठप्पा तो आज की फग्नेवन घोरन की साडी के बाँडर पर भी नजर आ जाता है। होंटो पर त्रिपस्टिन साडी पर अजन्ता की नतकी। मनोज मरा मजाक उगाता है। कहता था मनोज— अजता गय बिना अजन्ता को समझा ही नहीं जा सकता। वहाँ की गुफाएँ बस बनाई गईँ पहाड को भीतर से काट छीलकर। कस उन गुफाओ की छतें बनाई गईं। वसी ही छतें जमी मान्न विल्डिगो में नीमट-ककरीट की समस्त चौकोर छतें होती हैं। एक गुफा वहाँ अघूरी ही पडी है मनोज कह रहा था। उस अघूरी गुफा से पता चलता है कस छीलन-बाटते थे ये गुफाएँ। ऊपर से काट-बाटकार नीचे को आते थे।

माँ कुछ न बाली।

तुम सुन नहीं रही माँ ! मैं एशिया देख आईं यूरोप देख आईं अमरीका देख आईं। रूस भी हो आईं। अपना ही देश नहीं देखा। दक्षिण भारत नहा देखा वहाँ मनोज के बचनानुसार तुमारी सस्कृति की आत्मा बसती है। मैं दक्षिण भारत की यात्रा पर जरूर जाऊँगी। जया को भी दिखाना कुमारी की आखिरी चट्टान कहत-कहते इरा दूम पड़ी। सातवीं चट्टान क मधुव से बम्बई की एन्स ने ब्याह किया। ऋषि का नव नी रखाया एन्स न। सब खान का प्रसाद ही तो है हमारी जया। बाह बाह ! जया को मानूम



ही नहा कि ममी न सब म्वाया था । वह हमठा चनी गइ । हेंस जेस कर गारा हा गइ ।

तुम पात हा जाभोगा करा । मैं रहता हूँ याज ता तुम हरगिज नहा जा सवता । नीतू और गादिम्न पूना य है । कउन ध सिहगड का किता खरर धायो । व धा जाय ता उनस सलाह कर नना ।

नाय जाय ता तुम्ह धाराम रहगा । माँ की मुम्-मुद्रा वहन तम्हीर थी मैं तो भाज नी जाऊगी । प्रब मैं रुक नहा सनती ।

माँ तानपूरा नकर बर गई और तान नगी

मोरे मन्दिर प्रब लीं नहीं प्राय ।

वह थी जयजयवन्ता इरा क डडी की प्रिय रागिनी । इमक गाने का समय ता न । था तब-सवर । हर रागिनी का प्रपना समय था । जयजयवन्ता ना भी प्रपना समय था । भाज माँ बिना यह साच ही गाने बठ गइ ।

माँ को जन स्वय भा रन था रहा था । भाज उसकी नना चरम मीमा का छू रना थी । 'तनी टिकी हुई है तुम्हारी प्रावाज माँ ।' इरा बाला तुम भाज नी कितना प्रच्छा गा सनती हा ।

माँ गाता रहा । इस रागिनी म जस वह प्रतीत को निहार रहा थी । पर यही प्रतीत रागिनी इरा क लिए वतमान क ताअवस्य प्राकाश पर रोई सिन्दूर की रेखा साच रहा थी जन नारी माँग म सिन्दूर भरती है ।

इरा बठा मुनती रही । धीरे धीरे जया न धाले खाता । इरा ने प्यार न जया का गा म सवर कहा भाज रात की गाता त हम पता ।

डडी क पास । जया का मुचकमज तिन उठा ।

नानी का नी त चलेंगे एकर का नी । जया चुन न रह मकी

नहा इन प्रकृत हा चलेंगे । इरा मुस्कराई, जया प्रपन डडी म निनगा ।

“नारी को ही झुकना पड़ता है !” माँ कहती चली गई। अपने मन्दिर में बठकर वह जयजयवन्ती गाती है। जब मन्दिर का स्वामी लौटा आता है तब भी कहानी खत्म थोड़े ही हो जाती है। सेब की तलाश तो रहती ही है। मुदिकल से तो ऋषि से सब मिलता है पर ताकत से सेब चोरी चला जाता है। याद है न जया !

एक था राजा। उसकी थी सात रानियाँ जया ने नानी से सुनी हुई कहानी शुरू कर दी।



त्रिवेदन पाद छूट गया था। गारो पश्चिमी घाट क साय-साय ऊर जा रही थी।

बम्बई से चलकर इरा सीधी मजन्ता घोर एनोरा गइ, फिर मद्रास पहुँची। फिर उसन मुम्बकोणम् त्रिचा मदुरा रामस्वरम् घोर कन्या कुमारी क मन्दिर दउ। मद्रास में उसन एक सप्ताह बिताया था जहाँ वह सागर क किनार घूमन के लिए हर रात्र ट्रिप्लीकन जाना करती था। मद्रास का मुबिस्तून सागर-तट जया का कितना पसन्द प्राया था। बम्बई म उहु सागर-तट के साय-साय नय जमान क दिजाइनों वाला य नख्य इनारतों कहीं हैं? बम्बई में मयन द्वादश पर लैंची इनारतों ता था पर वहाँ से पानतून-स सागर का दृश्य ही नजर प्राता था। बम्बई म इष्टिया तट क सनाप नी सागर-तट ऊंची इनारतों से घटा हुआ था पर वहाँ ना सागर मगस क ट्रिप्लीकन की तरह ता क्या बम्बई क उहु का तरह ना बिगान नहा था।

सब-सब कहा, जया! तुम्हें मरीन द्वादश मन्दा उगता है या जूह? मद्रास का ट्रिप्लीकन या कन्याकुमारा इरा न जना की ठाड़ी उठाकर पूछा।

उत्तर म जया कवन मुक्करा थी।

यस तुम बरकना का सागर-तट ग्याता। इरा न माना फास्ता की साय सगाइ।

इरा को डिप्रे म बठ-बठे याद घायी मनास स वह महाबलीपुरम् नी गई थी । वहाँ के प्रकाश स्तम्भ पर चढकर उसन जया को पूर्वी घाट क साथ-साथ दूर तक फल हुए पूर्वी मागर का दृश्य दिखाया था । जया तो वहाँ से हिलना ही नहीं चाहती थी ।

नगता था इन दृश्यपट क साथ जया का मन युग युग स जुडा हुआ है । यह कसी घास्या थी ? इरा सोच रही थी यह बही घास्या है जिसने मजन्ता और एलोरा की यत्ना का ज म दिया । मजन्ता की एक गुफा म भवभित्ति-वर वाधिसत्व का चित्र दखा था—हाथ म कमन का फून मुख पर घपार शान्ति ! एक गुफा म भगवान् बुड का विशाल मूर्ति देखी थी जिस पर कई कीणा से प्रकाश डाल डानकर भ्यूडियम के गाइड न दिखाया था कि एक ही मूर्ति पर कम मुखमुग्ग बदन जाती है कते मुख के भाव घनग घलग नजर घात हैं । एलोरा म कलाग का कनामय रूप । पहाड की काट काटकर पूरे मन्दिर की सष्टि । यह किसकी दन थी ? इस पर भी घास्या की छाप थी । महाबलीपुरम् म चट्टानों को सरास-तरागनर बनाय गए, पञ्च पाण्डव रथ ! कुम्भ काणम् त्रिची और मदुरा के मन्दिर य भी तो किसी सत्य के प्रतीक थे । क्या घास्या की कोल से जमा स्वीकाराकित ही महामहिम कला की जननी हो सकती है ? इरा ने जया की ठाडी उठानर उस चूम लिया और प्यार स नहा, भूख तो नहीं लगी जया ?

नहीं ममी !

इरा को याद थी एक दिव्य-मुख मनीषी की बात जिसन कन्या कुमारी क बलुए टीने पर मूर्धास्त दखन की प्रतीमा में बढी मिन मण्डली को सम्बोधित करते हुए कहा था स्वाधीनता के धा हमारी राष्ट्रीय एकता की भावना बहत पतनी हो गई । आज कोई गाधी दोलठा है न रवीन्द्रनाथ ठाकुर ! उस मनीषी न एकाग्र भाव से बोलते हुए यह बात स्पष्ट थी कि हम नई पीढ़ी क लोगों का धार्मिक पृष्ठभूमि से रहित करव घनास्या की सार्ई को जम दे रहे हैं । घनास्या की

वह खाइ एक विशाल तूयता की प्रतीक बनकर रह्या ।

जब एकत्र भाव से खिडका क बाहर का दृश्य रख रहा था । जहाँ दृश्य बहुत ही भद्रता तथा वह दानों हाथों से तानियाँ बजाकर हर्षो द्वेक का परिचय दन लगती । साथ-साथ वह कृती चलता दखा ममा दता ।

इरा का बाद था रहा था कि कन्याकुमार क बचुए टोन पर बज उस मनोयी न कहा था ठीक वसे ही जब हम भपन मन प्राण के विचार भपनी नातुभाषा में व्यक्त करत हैं हमार बच्चों का भपन हा यम क माध्यम से प्रत्यावस्था म हा प्राध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्राप्त कर जता चाहिए । फिर इरा को ध्यान प्राया उस मनोयी न मानो भपन उस महानु विचार को स्वय ही पतला करक कहा था 'मरा मतलब है भपन हा धन क माध्यम से प्रत्यावस्था म ही बातक प्राध्यात्मिक नहीं ता कम-अ-कम नतिक पृष्ठभूमि तो प्रबन्ध प्राप्त कर सक हमारा शिगा म यह व्यवस्था होना चाहिए । हमारा देश प्रब स्वतंत्र है । प्रब तो बल्कि इस प्रा हमारा ध्यान प्रबन्ध जाना चाहिए । धान चलकर उस भनाषा न कहा था एक शिगागस्त्री क नात नरा सकुत उस धन का धार नहीं जो सुकीर्तपुन प्रपता उत्पन्न करता है; नरा प्राबह ठा उम धन क लिए है जो व्यापक सहिष्णुता का प्रताक हा । क्या हम परित्रवातु धीर दृढ़-मकल्प मार्गों का जहरत नहीं रहो ? यदा धीर प्रात्ता को लोकर हम जान नहीं-कहाँ नटक रह हैं ।

खिडकी से बाहर रूप रस-भवनय सुकार क दृश्यपट पर जवा की धीरे बराबर जनी दृइ मी । कितनी प्राम्नावान बन्धी है यह नाबकर इरा मूचनदन उसकी धार रखती रही ।

जब से शुरूकर इरा की दृष्टि नमाचारपत्र पर जन गई । एक प्रमन उजका दृष्टि म मुनकर रह गया । हिस्ट्री काय क सनापति क भाषण का उत्तरा करत हुए किसी न निखा था

हिस्ट्री काय क प्रधान न नूह क जलज्वापन विवहा वगुन

इरा को डिग्न म बढे-बढे याद घाया मद्रास स बह महावलीपुरम् भी गई थी। वहाँ के प्रकाश स्तम्भ पर चढ़कर उसन जया को पूर्वी घाट क साथ-साथ दूर तक फन हुए पूर्वी सागर का हृदय लिखाया था। जया तो वहाँ से हिलना ही नहीं चाहती थी।

जगता था इम हृदयपट के साथ जया का मन युग-युग स जुड़ा हुआ है। यह कमी प्रास्था थी? इरा सोच रही थी यह वही प्रास्था है जिसने भ्रजन्ता और एनारा की कत्ता का जन्म दिया। भ्रजन्ता की एक गुफा म भवलोचित्तर वाविसत्व का चित्र दखा था—हाथ म कमन का फूल मुख पर प्रपार शान्ति! एक गुफा म भगवान् बुद्ध का विमान मूर्ति दखी थी जिस पर बड़ बोलो से प्रकाश झान-झालकर न्यूडियम के गाइड न लिखाया था कि एक ही मूर्ति पर कम मुखमुग बदल जाती है कत्त मुख के भाव स्रग प्रलग नजर घात हैं। एनारा म कलाग का कनामय रूप। पहाड़ को काट-काटकर पूरे मन्दिर की सृष्टि। यह किसकी दन था? इस पर भी प्रास्था की छाप थी। महावलीपुरम् म चट्टानो को तराश-तराशकर बनाय गए पञ्च पाण्डव रथ। कुम्भ कोणुम्, त्रिषी और मदुरा के मन्दिर य भी तो किसी सत्य के प्रतीक थे। क्या प्रास्था की कोत्र म जमी स्वीकाराकित ही महामहिम कला की जननी हो सकती है? इरा ने जया की ठोड़ी उठानर उसे चूम दिया और प्यार से बहा भूस तो नहीं गयी जया? नहीं ममी!

इरा को याद थी एक दिव्य-मुख मनीषी की बात जिसने कन्या कुमारो के बनुण टीलो पर सूर्यास्त दखन की प्रतीता म बठी मित्र मण्डनी को सम्बोधित करते हुए कहा था स्वाधीनता के बाद हमारी राष्ट्रीय एकता की भावना बहुत पतली हो गई। आज कोई गाधी दीखता है न स्वी-द्रनाथ ठाकुर। उस मनीषी ने एकाग्र नाव से बोलते हुए यह बात स्पष्ट की कि हम नई पीढ़ी के लोगो को धार्मिक पृष्ठभूमि स रहित करके भनास्था की सार्ई को जन्म द रहे हैं। भनास्था की

यह चाई एव विज्ञान शून्यता की प्रतीक बनकर रहेगी ।

जया एकाग्र भाव से सिद्धकी के बाहर का दृश्य रस रही थी । जहाँ दृश्य बहुत ही प्रसूना गता वह दोनों हाथों से तालियाँ बजाकर हर्षों द्रोक का परिचय देने गती । साथ साथ वह कहती चलती दसो ममी, दसो !

इरा का याद आ रहा था कि कन्याशुमारी के बसुए टोल पर बठ उस मनीषी ने कहा था ठीक वैसे ही जस हम प्रपन मन प्राण के विचार प्रपनी मातृ-भाषा में व्यक्त करत हैं हमारे बच्चों को प्रपने हा धम व माध्यम से प्रल्पावस्था में ही प्राध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्राप्त कर लेनी चाहिए । फिर इरा को ध्यान आया उस मनीषी ने मानो प्रपन उस महान् विचार को स्वयं ही पतला करके कहा था 'मरा मतलब है प्रपन ही धम के माध्यम से प्रल्पावस्था में ही बालक प्राध्यात्मिक नहीं तो कम से-कम नतिव पुण्ड्रभूमि तो प्रबश्य प्राप्त कर सक हमारी शिक्षा में यह ध्यवस्था होना चाहिए । हमारा देश प्रब स्वतंत्र है । प्रब तो बल्कि इस प्रौर हमारा ध्यान प्रयत्न जाना चाहिए । प्राग चलकर उस मनीषी ने कहा था एक शिक्षाशास्त्री के नाते मेरा सकत उस धम की प्रौर नहीं, जो मकीणतापूण प्रपता उत्पन्न करता है, मरा प्राग्रह तो उस धम में सिण है जो व्यापक सहिष्णुता का प्रतीक हो । क्या हम चरित्रवान् प्रौर दृढ़-मनस्व सागों की जकरत नहीं रही ? प्रदा प्रौर प्रास्था की प्रौर हम जान नहीं-कहाँ नटक रहे हैं ।'

सिद्धकी से बाहर रूप रस-गंधमय संसार के दृश्यपट पर जया की प्राणों बराबर जमी हुई थीं । नितनी प्रास्थावान बच्ची है यह सोचकर इरा मुग्धनयन उसकी प्रार दाती रही ।

जया से हटकर इरा की दृष्टि समाचारपत्र पर जम गई । एक प्रसंग उसकी दृष्टि में गुनकर रह गया । हिस्ट्री काश्रत के सनापति के प्रापर का उत्तेस करत हुए किसी ने निजा था

हिस्ट्री काश्रत के प्रधान ने नूह के जनप्तावन विज्ञान यगुन

द्विष्ट्र और सुभरियन पौराणिक गाथाओं तथा ब्राह्मणों द्वारा वर्णित मनु के जलप्लावन में प्राया है का मनोरंजक विवरण पढ़ किया। वह बाद जिससे भगवान् ने मत्स्य रूप धारण कर हम सबको बचाया, मानव-जाति की बहुमूल्य स्मृतियाँ म स एक है। मैं इस सवाल में दिन चस्पी नहा रखता कि ऐसा हुआ या नहीं और यदि हुआ तो किस प्रकार ? परन्तु मैं तो मनु के स्थान पर होना पसन्द करता जहाँ मरे अतिरिक्त और सभी डूब जाते और मतस्यावतार मेरी नौका उस जल प्रलय से पार पहुँचा दते। फिर वह पवित्र मत्स्य रहती मैं नौका से उतरता और चारा और जल ही-बस होता पर फिर पानी घटता भूमि दिखाई देती और बिड़ियाँ उड़ने लगती पर फिर पानी घटता कोई न होता। फिर मरी यन्त्रणा और वेदना बढ जाती।

कुछ ही नूह तो मनु की यपक्षा सुखी य। उन्होंने अपनी नाव में ही जीवधारियों के नर और मादाओं को जोड़ रखा था इस तरह उनके पास न केवल उनकी पत्नी बल्कि वातचीत करने के लिए साथी भी थे पशुओं को खा जाने वाले सिंह मर्दान्तियों को खाने वाल मगर। पर मनु तो अकेल था। उन्हें पत्नी कस मिनी यह मैं नहीं समझ सकता। पत्नी पान तक तो उन्होंने दुख का ही अनुभव किया होगा।

समाचार पत्र बन्द करके इरा अपने जीवन पर विचार करने लगी। पर नूह और मनु के जलप्लावन का क्या अब उसे ध्यान से प्रोभल ही न हो सकती है। मन तो अकस थे उन्हें पत्नी कस मिली ? वसे ही उस शख की इरा मिनी ! पर शख के जीवन में दोबार जल-प्लावन प्राया जब वह मुझे मेरे हाल पर छाडकर भाग गया। दस वर्ष पहले की यह घटना इरा की आँखा में तैर गई। जया पहले से निवानकर विस्फुट था रही थी। तुम सामागी ममी ? उसन पूछ लिया। पर इरा ने इकार में सिर हिलाकर कहा, 'आओ मरी बन्ची !



इरा को लगा कि गज की बात उस समय न मानकर उसने शूल को धो । शूल उस छोड़कर चला आया क्योंकि उसका कतव्य उसे बुना रहा था । बम्बई उत पसन्द न थी । उसका कहना था कि बम्बई में कला का दूध-नाछ नहीं पनप सकता । मैं लाख समझाया उसने एका न मुना । वह हम छाड़कर चन दिया ।

किसी न कहा पाँच स्टेशन छोड़कर है वरकना ।

ठीक है । इरा न मन ही-मन कहा वरकना ता आज पहुँच कर रहूँगा ।

इरा की कल्पना में अपना गाँव घूम गया—रगुका । प्रागरा से मथुरा की ओर बारह मील दाहिना ओर मुड़ जाओ यमुना के किनारे । बाह-बाह पुराने मुन्दर वृक्ष टूट-फूट घाट एक मन्दिर एक टीला । साठ पीढ़ियों में उनका परिवार रगुका को अपने हाल पर छाड़कर बम्बई चला आया था । वचन में एक बार माँ उस रगुका दिवान ल गइ था बस अब मैं जया का वरकना दिवान ल जा रही हूँ ।

‘हम तुम्हारे पापा को साथ न चलेंगे बम्बई जया ।’ उसने मानों अपने विचार को प्रौढ़ता देते हुए कहा फिर हम रगुका चलेंगे ।

रगुका का क्या ता वह जया का पहल भी कई बार सुना चुकी था । मात्र उसका सुनाना ओर भी आवश्यक हो गया ।

रगुका में ही था अभी जमदग्नि ऋषि का माथम । ऋषिक साध रखी था ऋषि-पत्नी रगुका । रगुका भी दूध-नाछ था जया मुन रहा है न ?

उसने बिस्कुट मात्र हुए मिर हिता दिया । उसका ध्यान बाहर की तरफ था ।

हाँ ता नगवान् परगुराम उठी दूध-नाछ का दूध पीकर बड़ हुए थे । कंध पर फरसा रखकर परगुराम टूट राजाओं की जीवन-नीला गनाए करन निकल थे । रगुका से एक ही मील पर है वह जाह जहाँ परगुराम ने सह्यायु न का नार शता था ।

हियू और सुमेरियन पौराणिक गाथाओं तथा ब्राह्मणों द्वारा वर्णित मनु के जलप्लावन में आया है का मनोरञ्जक विवरण पेश किया। वह बाढ़ जिससे भगवान् न मत्स्य रूप धारण कर हम सबको बचाया मानव-जाति की बहुमूल्य स्मृतियों में से एक है। मैं इस सवाल में दिल चस्पी नहा रखता कि ऐसा हुआ या नहीं और यदि हुआ तो किस प्रकार? परन्तु मैं तो मनु के स्थान पर होना पसन्द करता जहाँ भरे प्रतिरिक्त और सभी डूब जाते और मतस्यायतार मेरी नौका उस जल प्रलय से पार पहुँचा देती। फिर वह पवित्र मत्स्य रक्तों में नौका से उतरता और चारा और जन-ही-जल होता पर फिर पानी पटता नमि दिखाई देती और बिड़िया उड़ने लगती पर मर सिवा वही और फाई न होता। फिर मेरी यत्रणा और वेदना बड़ जाती।

कुछ ही नूह तो मनु की अपथा सुखी न। उन्होंने अपना नाव में ही जीवधारियों के नर और मादाओं को जाड़ रखा था उस तरह उनके पास न केवल उनकी पत्नी बल्कि चातपीत करने के लिए साथी भी थे पशुओं को घा जाने वाले सिंह मछलियों को खाने वाला मगर। पर मनु तो अकल थे। उन्हें पत्नी कसे मिलीं मह मैं नहीं समझ सकता। पत्नी पान तक तो उठोने दुःख का ही अनुभव किया होगा।

समाचार पत्र यन्द वरके द्वारा अपने जीवन पर विचार करने लगे। पर नूह और मनु के जलप्लावन की कथा अब जैसे ध्यान से अभिलक्ष ही न हो सकती है। 'मन तो अकल थे उन्हें पत्नी कसे मिलीं? वसे ही जैसे सख को पुरा मिलीं! 'पर सख न जीवन न दोबारा जन प्लावन आया जब वह मुझे मेरे हाल पर छोड़कर भाग गया। दस वर्ष पहले की वह घटना दूरा की छाँवों में उँर गई।

जया बल से निकालकर बिस्कुट खा रही थी। तुम चाओगी ममी? उसने पूछ लिया। पर दूरा ने इकार में सिर हिलाकर कहा 'गाओ मेरी बच्ची!

दूध-गाछ ।

इरा को लगा कि गव्व की बात उस समय न मानकर उसने भूल का थी। गव्व उम छोड़कर चला आया, क्योंकि उसका कतब्य उसे बुना रहा था। बम्बई उस पसन्द न थी। उसका कहना था कि बम्बई म कना का दूध-गाछ नहीं पनप सकता। मैं तख समझाया उसने एक न मुना। वह हम छोड़कर चल दिया।

किसी न कहा पाँच स्टघन छोडकर है वरकला।

ठीक है ! इरा न मन ही-मन कहा वरकला तो आज पहुँच कर रहेगा।

इरा की कल्पना म अपना गवि घूम गया—रेणुका। प्रागरा से मथुरा की ओर धारह मील दाहिना ओर मुड़ जाओ यमुना के किनारे। बाह-बाह पुरान मुन्दर घुम दूध-भूटे घाट, एक मन्दिर एक टीला। सात पीढ़िया स उनका परिवार रेणुका को अपना हाल पर छोडकर बम्बई चला आया था। बचपन में एक बार माँ उत रेणुका तिसान ले गई था तस भव में जया को वरकला दिगान ल जा रही हैं।

हम तुम्हारे पापा का साथ ल बनेंगे बम्बई जया ! उसने मानों अपना विचार को प्रीकता दत हुए कहा फिर हम रेणुका चलेंगे।

रेणुका का क्या ता वह जया को पहल भी कई बार मुना चुकी था। आज उसका मुनाना ओर भी आवश्यक हो गया।

' रेणुका म ही था कभी जमदग्नि ऋषि का पाश्रम। ऋषिक साथ रखी था ऋषि-पत्नी रेणुका। रेणुका ना दूध-गाछ था जया मुन रही हो न ?

उमन बिस्फुट सात हुए शिर हिना गिया। उसका ध्यान बाहर की तरफ था।

ही ता भगवान् परगुराम उठी दूध-गाछ का दूध पीकर बडे हुए ५। कथ पर करवा रमकर परगुराम दुष्ट राजाभा का जीवन-ताला ममाप्त करन निकल थ। रेणुका स एक हा मील पर है वह जगह जहाँ परगुराम न सह्यायु न का नार जना था ।

पर परशुराम न घपनी माँ को क्यों मार डाला था माँ ? जया ने चंचल आँखों से कहा ।

इरा ने ठण्ठी सास भरकर कहा इस कहानी से यह प्रसंग तो भव कैसे निकाला जा सकता है जया ? जमदग्नि किसी बात से नाराज हो गए थे । उन्होंने परशुराम को घावा दी घपनी माँ को मार डालो । सब भगवान् की लीला है । रेणुका पतिव्रता पत्नी थी । उसने पति की आज्ञा मानते हुए अपने पुत्र परशुराम से हाथों घपनी हत्या कराने से सकोच नहा किया था । पिता का आज्ञाकारी पुत्र था परशुराम । पिता की आज्ञा कस टाँटता ? पिता ही सबसे ऊपर है बेटी ! कहते-कहते इरा रुक गई । शकस्मात् उसने स्वयं को इस कहानी में डाल दिया । यदि पुत्र पान की उसकी इच्छा पूरी हो जाती तो नया वह यही पाठ उस भी \* सकती थी ?

पर पिता को इस बात के लिए राजी करने से घूका तो नहीं था परशुराम कि श्रुति फिर से घपनी पत्नी को जीवित कर दे ।

तो रेणुका फिर जी उठी थी माँ ?

हाँ जया !

जया की आँखों में आस्था और विश्वास की ज्योति धिरक रही थी ।

यह सब भूमि परशुराम क्षेत्र कहलाती है जया ! इरा मुस्कराई वरबला जहाँ हम जा रहे हैं इसी परशुराम क्षेत्र में है ।

भव और कितनी दूर है वरकना ?

भव ज्यादा दूर नहीं ।

इरा ने पूव घसम में ब्रह्मपुत्र के तट पर स्थित परशुराम-कुण्ड की कथा छेड़ दी । वहीं स्नान करके परशुराम ने अपने मन से दूध-भाछ की हत्या का पाप धो डाला था । पश्चिमी घाट के साथ-साथ खम्भात से लेकर ब्याकुमारी तक ऐसे कई स्थान हैं जिनके साथ परशुराम की कथा जुड़ा हुई है । पृथ्वी पर विजय पाकर इस दान में दे डालना परशुराम का ही काम था । फिर वे नौकण में रहे जिसे सागर ने उनके

नाम क लिए लिया था । फिर उन्होंने अपना फरसा बरण देवता के संकत पर सागर में फका और वह कन्याकुमारी के समीप जाकर गिरा । जहाँ वह लड़े था वहाँ से लकर कन्याकुमारी तक बरन की भूमि पर गु-राम के फरसा फेंकन न ही निकल आई था जया !

और जया को उस विवास नही हो रहा था । यह कभी अपनास्या है, यह मानकर इरा चुप बठी रहा ।

गाँव के पहिले दनदनान हुए भाग ही भाग जा रहे थे । इरा न जया की ठाडी प्यार से ऊपर उठाई सब भगता स्थान होगा बरनता ।

जया का भय विवास न हो रहा ही ।

इरा सोच रही थी—दन वप पूज जो ब्यक्ति मुक्त छोडकर चला गया जिनने कभी मेरी मुषि न भी उससे मिलन होगा । क्या यह मगत-मिलन होगा ?

एक घन्टा के साथ गाड़ी बरकता स्थान पर रुक गई ।



मूर्तिकार दामोदरन के हाथ अब मूर्ति बनाते बनने लग ध । पर मा  
की मूर्ति म नूतन नाव नगिमा साने की साथ वसी हा पत्नी  
भा रही थी जब व इस यज्ञ-वगी पर अन्तिम प्राहुति बनकर ही  
विदा श्रेण ।

मूर्तिकार की पत्नी अब बुढ़िया ही तो थी । माथ पर झुरिया का  
जान केशा म द्यामवण घाघे से भी कम—धीन बान फल रह थे ।  
धान्त मन बुढ़िया दुकान पर नी भा जाती । लौक भरी तासता थी तो  
यनी कि वट ने विवाह नहीं किया वत-वल धान नहीं बढ़ी । कह-बहकर  
हार गइ । कोई सुन हां नहा ता क्या करे ?

मूर्तिकार अब नी धीरों ऊपर पढावर बात करता था । दगमुख  
ढाकबाबू उसथा मित्र था । कई बार बदली हुई अब फिर बरकला  
भा गया । अब ता यही स पचन पायगा । हर रोज कोई-न-काइ पुस्तक  
अपवा पत्रिका उठय रहता है । कभी विवाह पर संगीतकार का मत  
मुनाता एक संगीत-गोष्ठी जिसम प्रेम बाँसुरी बजाता है बच्चे बोलक  
पर ताल दत हैं पड़ोसी अपनी अपनी नफीरी पर सुबह धाम एक कर  
दने ह और दू-हा अपनी सहस्र-तार सारंगी पर राग छेड़ने की प्रतिभा  
म जीवन बिना जाता है । कभी विवाह पर अभिनेता का दृष्टिकारण  
उभारता गाक ह्य का नाटक जिस पर दयन बान तालियाँ बजाते  
हैं । कभी वह नेपोलियन की यह मूर्ति हवा म उछानता इतिहास

क्या है ? माय एक नाना की कथा जिस सबने मान रखा है ! कभी वह कथा थिली घा० हनरी का नरत समय वाला बाल मुनाठा 'बत्ती मन बुझाया मुझे प्रधरे म जात हर उगता है । कभी किसी नोकाक्ति पर पटक जाता इप्पा का माया ही ता नारी क प्रेम का भा मात्रा है ! दशमुख म सुनी हुद य सब बातें दामांतरन की विचारवारा का पू-पू जाता जब नी बुझिया पत्नी उस पर व्यग्य कसती ।

भाद्र दोपहर न हा बुझिया तुजान म चली घाइ या । वाली 'दवी दयताया की मूर्तियाँ हा बिजना हैं ता तुम यह माँ-बट का मूर्ति पर क्यों नमय नट किया करत ना ?

जिन नाम की तुम्ह समन्त नहीं उसम क्यों दगल दती हा ? मूर्तिवार न घाँवें ऊपर चढ़ाकर बहा मूर्तिवरा का भा तुनन नानो की कथा समन्त लिया ?

'बूड हो गए पर तुम मेरा सम्मान करना न साथ पाए ।

सम्मान ? घर में ता प्रब तक दू-हा बना सहस्र-तार सारगा पर राग छड रहा है !

जान का घर समीप है । कभी तक दू-हा बन बड है ?

घर मुना । जब मैं जान मू तो बत्ता बुना ना । मुन्त प्रधरे म जाते हर नहीं उगता ।

ह भगवान् ! बूझा हा गया बात करनी न घाइ । मैंन साथ लिया दापहर बाण नहीं रहा करूंगा । फिर दगूगा तुम मूर्ति न घाइ किमा स्त्रा से कम चबा चबाकर बातें करत हा ।

यह तुम्हारी इप्पा कभा मौन तो दान म रहा । बुझिया हाकर नो पन रत की पहरेगारा का इतनी चिन्ता ! ह भगवान् !

तुम नहीं माना ता न इस नहीं मिटगा ।"

कदम ता बुरा है साना ! जिन पर म क्या रह पू-ह उ भागती है घाग घरे स गोडता है पाना ।

उपवास का पधा क्य म धारमन कर गया ।

दामोदरन को हँसी भा गई। प्रम भरी दृष्टि से उसन बुढ़िया नी घोर दखा। बोना परसा देगमुख सुना रहा था निची लखक का वचन—पति-पत्नी सम्बन्ध एसा विषय है जिस पर नारियाँ सभी एकमत हैं और पुरुष अनेक मत।

बुढ़िया बोली तब तो स्पष्ट है स्त्रियाँ समझदार हैं पुरुष बुद्ध।

मूर्तिकार बोना वह बात भी देगमुख ने मुझ बताई थी। बीन जाने यह मेरी अन्तिम मूर्ति हो—यह माँ-बेटे की मूर्ति। आयु भर की यही ता मरी कमाई है। सोचा था खस लोट धाया है तो मेरे काम म सहायक होगा। उसका छोटा भाई था उसे भगवान् ने ल लिया। खस को मरी चिन्ता नहीं। उसक मन प्राण तो मुत्तु बाबा क पाते पचानन म बसत हैं। उस न ग्यान की सुध है न पीन की। बुद्धिमान होता तो गुरुत्व की जगह सगीत विद्यालय वा धाचाय बना होता। उस पन् पर भा विराजा कोइ और। चिसावकोर को सगीतशाला को बना रहा है खस जिसस घेले की कमाइ मही होती। जब तक मैं बठा हूँ घर म चूल्हा जल रहा है। मेरे पीछ क्या होगा ?

बुढ़िया ने दूर से दखा एक नील-बसना स्त्री बच्ची नी घोंगुनी घाम चनी भा रही है। स्त्री दलने म लम्बी थी। इकट्ठा शरीर गीर बण बच्ची की आयु दस बप क उममग। गान चहरा बड़ी बड़ी घाँखें।

माँ-बेटे दुकान के सामने रुक गई। स्त्री ने फहा, मूर्तिकार की दुकान इतनी दूर होगी यह नहीं सोचा था।

बच्ची न मूर्तिकार क हाथ वाली मूर्ति की घोर देखकर कहा मैं बही मूर्ति लूगी मभी।

बुढ़िया ने पति क हाथ स मूर्ति लकर बच्ची को दे दी भव तो प्रसन्न हो घेटी ?

स्त्री ने पूछा 'यही बस एक ही मूर्तिकार है न ?

यही बस मैं ही यह काम करता हू ! मूर्तिकार मुस्कराया।

स्त्री न पहले मूर्तिकार के पर छू तिय फिर बुढ़िया के।



हैं हैं। बुढ़िया पीछे हट गई, यह क्या कर रही हो बटी ?

हमारे गंग में बड़ा का सम्मान करने की यही प्रथा है। स्त्री इस व्यवस्था रही मरी बच्ची माँ-बटे की मूर्ति पर लट्टू है इसके लिए मुझ बम्बई से मना पडा।

मूर्तिकार ने बुढ़िया की ओर खबर कहा प्राण का मुझे माँ-बटे का मूर्ति बनाने से मना न करना। जितनी दूर से—बम्बई से प्राहक प्राउ है इसके लिए। और फिर उसने स्त्री को सम्बाधित करते हुए कहा तुमने एक चिट्ठा लिखना होनी। यह मूर्ति मैं पासल कर दता।

नहीं प्रारक दशन भी ता करन थ।

और फिर बातों-बातों में स्त्री ने पूछा तुम्हारा काइ सन्तान ता होगी ?

बुढ़िया बोला मरा बटा है गंग। वह सागर किनार भूमन गया है।

बुढ़िया के प्राग्रह से स्त्री ने गंगन चौक में स्थित गंगन हाटन से घरना सानान माया लिया। बुढ़िया ने उसे एक-एक दिन घणन घर पर रहने के लिए राजी कर लिया।

बुढ़िया ने गाव कहा कि बटी तुम प्रतिधि हा भाजन में बनाजेंगी पर स्त्री ने एक न सुना।

स्त्री का पाठ घान की प्रार था। यह भाजन बनाने में व्यस्त थी।

बुढ़िया कह जा रहा था तुम क्यों कट करती हा क्या तुम तो प्रतिधि हा

इतने में घणन प्रा गया। माँ का प्रावाच उरक कान में पडा। उसने पात्र प्राकर कहा जोन प्रतिधि प्रा गए, माँ

और उसका दृष्टि दरा पर पडा। यह चौककर बोला दरा तुम



वस्त्र का सागर-तट हस पड़ा। उस वप पूव बम्बई का जुहू-तट  
 मुग्ध-नयन मोह मंदिर मदनोत्सव उपासा मुस्करा दिया था। तब  
 काइ तीसरी आत्मा न थी पति-पत्नी के बीच। अब तो जया थी—प्रति  
 खित इतिहास-भाषा-सी मनियार सजाती घु घरू बाँधती मुड़-मड़ जाती  
 प्रवाहमयी छ्वाद्यक ठुमरी-सी।  
 जया गा री थी

अम्मायम एनि किल्ला

अच्छनुम एनि किल्ला

उम्मानुम उडवकानुम बलिपूमिल्ला

दाव को यह गीत अटपटा-सा गगा। जया तो अनाथ शालिका न  
 थी। गीत म उसकी घोषणा—न माता न पिता न अन्न है न  
 वस्त्र! मानो अथ की नय म ठीक नही बठ रही थी। पर यह थी  
 पाक्ष के सबप्रिय गीत की उठान जिस सागर संगीत की लहरिया घुन म  
 गानर उसने त्रिवाकुर के एक संगीत-सम्मेलन म स्याति प्राप्त का थी।  
 जया एक नई मुरकी के साथ लय म स्वर विरो रही थी। एकाएक शल  
 बोल उठा अरे इरा इस बिटिया न तो मेरे संगीत की आत्मा का पा  
 लिया—इतनी जल्दी पा लिया। पचानन पर तो मैं व्यय ही भाषा-बन्धी  
 करता रहा। ऐसी मुरकी लकर वह कभी न गा सका।  
 इरा का मुख खिल उठा।

सागर नाच रहा था। शरद पूना का चन्दा गिर पर मानने या  
 गात्रा-नाचता नागर। मानन् विभार मन प्राण—वह या दत्त वप क  
 विदुष पति-पत्नी का मान निभन। चुनबुलिया मृगुर-मन बानिका  
 गध-भन्दि भ्रज्जलियों क चौक पूर रही था रा रग की रानी सजा  
 रहा था।

पति-पत्नी म बन्त बाते हुए। जा मानिनी माया न्न वप पाछ छूट  
 गइ थी फिर उनका मुट्टी म था।

गन का मन विचार बन्ना पडा कि भनिनशी इरा महन की  
 मूर्ति बना बम्ब स ही चिपका रहगी। वह फिर स इरा का प्राराध्य  
 देव बन गया था।

जया का पाकर वह भय हा डग। बम्बइ न उन इतना छूट  
 वही गयी हागी। तान गिन हुए उसे बरकला भाव। बरकला  
 का दह चमन्कार। नाच-नाच उठता है जया। काजू-चन उन प्रिय  
 है। गान चौक स वह शिनना नगे चाहती। कभा कहता है नाव  
 म बन्कर नुरा स गुजरती नहर ग्गु गा। एक बार हा भी घा है।  
 मुत्त बाबा उन नाव न बिठाकर बीच सागर म न गण घोर जान म  
 कस्तती मधुनियों गिन ताए। नगीत विद्यालय म गुरनाता न गुरुव क  
 पुरान चित्र दिग्गय। गगत विद्यालय क नय भाचाय ने उमक कच्छ-म्बर  
 का प्रगसा का। प्रिचिपन नम्भूतिरिणाड नोनू की बाते पूछत रह वह  
 मइ स बताता बना ग। गुरुनाता न गाविन्तन का हान पूछा। जया  
 न माना घतबम गानकर गाविन्तन का एक-नाक चित्र गिया गिया।  
 दगमुन डाकानू कर्त है तुम बम्बइ लोट जाया जया को धाड  
 जाया। तीन गिन का चमन्कार। थरकता क साय जठ जया का  
 पहचान मुग-मुग म बना घा रही हा।

न पापा का गान मुनेगे। जया न हीक ताद।

मुनाया बना। गन मुन्कराया।

इरा के मन म नी यी बात था। उम्हा इच्छा ना गन कय।

पर जया पचल म्बर न कह उठी ममी, ममी दीया बरकखो ।

राज की दृष्टि जया के मुख पर पड़ी । शरद पूना न जया का रूप  
बिन उठा । वह वाता धक्का मक्का दीया बरकखो जो मरी जया को  
तकके उसका फूल दोना भवखो । राज ने पूरा अभिनय किया । विसा  
नाल्पनिक शीघ्र पर हाथ न जानर वह जया के मुख पर हाथ करता  
रहा । जया हँस पड़ी । इरा मानो रूप-नाथ-रूप की मूर्ति-मी अपनक  
नमन पति की भार दस्तती रहो । उस को लगा हम धप्परा-सी किन्नरी  
का मुग्ध-श्री वसी-की-वसी बची रह गई है जसी वह दम वप पूव छोड़  
कर आया था । कुछ भी आँस नहा आया । अनन्त-जीवना की भावण्य  
मयी रह-लता पहले से कहा अधिक कमनीय प्रतीत हुई नने हाँ भव  
वह माँ बन गई थी । वह सोच-सोचकर बोना गेटे न जाने किस जादू  
मरी लक्ष्मी स लिखा था ।

इरा समझ गई 'वस बस । रहने दो ।

मरे तुम गमूतना से कम ता नहीं इरा ! और राज ने गेटे के  
साँ दाहरा दिए, यदि तुम युवावस्था के फूल और प्रौढ़ावस्था के फल  
एक जगह खोजना चाहो और यदि तुम स्वर्ग और मत्स्यलोक का एक  
साथ स्थान चाहो तो मैं एक ही शब्द न उत्तर दूँगा—वह है  
शत्रुन्तला और मैं न सब कह दिया ।

वह तो महाकवि की प्रतिभामयी सरलता को प्रणाम है ! इरा  
बात टान गई ।

माता पिता की बातें जया का समझ न नहीं आईं । बोली 'मक्का  
मक्का दीया बरकखो, जो मरी ममी को तक और इरा न उसका  
मुह बन्द कर दिया ।

मुत्तु बाबा शैशुन और प्रित्तिपल नम्पूतिरिष्वाड आ रह थे ।  
प्राग प्राग या पपानन ।

तो वे आ गए ।' राज खुशी से उछल पड़ा 'मम कौमुदी महोत्सव  
की यात्रा उभरेगी ।

मुत्तु बाबा पास आकर हँस पड़े "बड़ी मुदिबल स पकड पाया ।  
 नमून बाबू ता मात ही नहा थ । नमूतिरिप्पाड पहन राजी हुए ।  
 पचानन ता मरा पाता है और घापका शिष्य । वह नस इन्कार करता ?  
 सब जमाइय गाष्ठी । बरकता का गाना ता रोज ही सुनत है, बम्बई  
 का गाना हाना चाहिए ।

जरूर ! इरा मस्तराई ।

गल बाबा क्या दशमुख बाबू घाप नहीं घाना चाहत थ ?

घात कस नहा थ ? नमूतिरिप्पाड कह उठे चिट्टियों पर  
 मोहरें साकर हा चल । इनका मोहर का स्थाही बहुत पक्की है ।  
 इनकी बाता पर भा तो डाकघर का माहर ला रहता है । क्या मजाल  
 यह माहर उतर जाय ! पक्का स्थाही का एक प्रमाण यह भी है ।

इरा का लगा य लाय बने वाचाल ह । जस फिल्लन क डायलॉग  
 निप्त जात है साव-मोचकर वस य लाय कस बातेंगे ?

बाबा को क्या म रखना क्या हर समय सानव है ? हमारा कार्ड  
 न-काइ वाक्य ता सीप का माता बन सक । सीप म कहीं स माता है  
 बनक ? माती को आबदार कौन बनाता है ? उनर छव्याम की यह  
 नूक्ति इरा क मन क टप रिक्काडर पर बज उठी—तुन पहत हा हर  
 मुरह हजारों गुनाब क पुप्पा का नोट ताता है, पर साबी ता कन के  
 गुनाब क्या हुए ? बाबा म नी गुनाब खिलन चाहिएँ यह साबकर  
 दग मन-नी-जन मुन्सरा दी ।

प्रिप्रिपल नी ता प्रिप्रिपती नहा छारत । एस बात करेगे बस  
 हम मय कानब क बिछार्यो हों । एक हा पुप्य काय किया कि मुश्क  
 का घातकथा छाप नी । बाकी रह मुनु बाबा । वह ता बाल-तुनककड़  
 है । प्रिप्रिपल जा रिक्काड भर दत है बचन लपता है ।"

घात ता टप रिक्काडर की बात करो !" प्रिप्रिपल महात्त ने  
 जान बधारा "नयान का मुन है । दस म्बा टर रिक्काडर निय बटी है ।  
 यह इरा बँटरी न चाने बाता टर रिक्काडर है । घानाकान रिक्काड बनान

के लिए तो बड़ी मशीनरी चाहिए। टेप रिकार्डर में टप पर धावाज भरते जाओ। इसीमें मशीन नगी है। टप बजाया भी जा सकता है उस पर। उसी टप को चाहा तो इरेज करके उसी पर दूसरी धावाज भर लो।

मैं इरेज नहीं करूंगी। इरा बोली मैं अपने साथ बहुत में टप लाई हूँ।

‘तब तो और भी ठीक है।’

प्रिंसिपल की बात क्या बाकधर की मोहर से कम पक्की है ?  
देशमुख हस पडा।

शख ने प्रतिवादन के स्वर में कहा यह हमारा महाभाग्य कि भाव लोग पधारे। बठिय स्थान ग्रहण कीजिए।

मुत्तु बाबा बाल बंटा पचानन धाज सबको प्रसन कर दो अपने संगीत से। एक बार तो गुरुत्व म्द्रपन्म का स्वर गूँज उठ। दिप्ता दा कि गुरुत्व की धात्मा का तुम्हारी दह में वास है। मशीन में भरा आयगा तुम्हारा संगीत जिसे सारा ससार सुनेगा। और फिर इरा की ओर देखकर बोन धाज सबर पापनागा पर स्नान करके तुम्हारी दुविधा जाती रही हागी बेटी।

दुविधा पर विजय पाना परम आवश्यक है। इरा ने एक बार एक ज्योतिषी को हाथ लिखाया था। उसे याद आया उसने भी यही बताया था कि दुविधा ही उसका रोग है। दुविधा क्या माँ के दूध से आती है ? हमारे स्वभाव निमाण में माँ के दूध का क्या स्थान है ? माँ जसा प्यार और कहीं मिल सकता है ? जिसे माँ का प्यार नहीं मिला उसका मन को वह रिक्तता कहीं जाकर भरेगी ? उसकी धातों में गुनाव नहीं मिल सकता। इरा सोच रही थी दाख बम्बई चला चले तो मरी रिक्तता दूर हो जाय। फिर दुविधा भी उठना नहीं रहेगी। मुस्मान बनकर माँ का प्यार उमड़ आया। उसने ठोबा दबाकर जया की धारा में मीषकर देखा। वह मुत्तु बाबा की गोले में बठी घठपसिया करती रही।

इरा का ध्यान बम्बई की ओर गया। मन का टेप रिकार्डर बज रहा था—हम इरा की एक्टिंग प्यारी लगती है। इरा फ़िल्म की चाँदनी है! इरा तुम जादू हैं तुम टोना हो! तुम सपना की रानी हो! तुम हँसती हो तो खिल खिल जाते हैं गुलाब के फूल। यह कसा बक्त आया शक्ति इरा! हमारी कड़वी घालाचना का गोघो तुम तक पहुँच नहीं पाती! तुम्हें हम प्यार करते हैं इरा! तुम्हारी फ़िल्म घान पर शहर भर में तुम्हारा नाम जपते हैं। तुम्हारा प्रापेगण्डा करते हम दुग्गी बजाते हैं।

प्रिंसिपल योन जिस जलवायु में मनुष्य का जन्म होता है वही जलवायु उसे रास भी सकता है—विशेष रूप से तब जब बुद्धिपा मिर पर भी पहुँच।

देगमुच न अपनी ही हाँकी, जया का जन्म तो हमारा बम्बई में हुआ। जया वही रहनी जहाँ इरा दबी रहनी। दूध-नाछ को छाँदकर जया बरफला में रह जाय इसकी ताँ में कल्पना ही नहीं कर सकता।

जया से पूछो न! मुत्तु बाबा कह उठें पूछो वह क्या नृत्या है। क्यों जया बिटिया तुम्हें पापा पनन्द हैं या ममा?

ममा! जया न हँसकर कहा। और सब हँस पड। पर प्रिंसिपल गम्भीर मुँह में बोले—एक बात तो सोमह ध्यान सत्य है। मनुष्य का जन्म जिस ममता से होता है आयु भर मनुष्य उसी गाँव के लिए प्यार करता रहा है। नमार का बहुत ना साहित्य इसका साक्षी है। कला में भी इसके प्रमाण मिलेंगे। जिस दूध-नाछ का दूध पीकर मनुष्य फलता फूलता है उसी दूध-नाछ की छाया में फिर से भी बटन के लिए मनुष्य आयु भर नातापित रहता है। उसकी इन छाया में फलक क्याए उपजा। इन कथाओं में से कुछ, जिनमें बोद्ध साहित्य की जातक क्याएँ ना आती हैं मूर्तिकारों की छवियों पर चित्रों पर प्रकृत का गद। उन कथाओं में से एक का धर्मकारणुज चित्र मुक्त सिद्धन जिना दरान का मिला। कुछ न पूछिए। दूध-नाछ की इतना मुँह उपलब्धि

के लिए तो बड़ी मशीनरी चाहिए। टेप रिकार्डर में टेप पर आवाज भरते जाओ। इसीम मशीन नगी है। टेप बजाया भी जा सकता है उस पर। उसी टेप को चाहो तो इरेज करके उसी पर दूसरी आवाज भर लो।

मैं इरेज नहीं करूंगी। इरा बोनी मैं अपने साथ बहुत स टेप लाई हूँ।

तब तो और भी ठीक है।

प्रिसिपल की बात क्या डाकघर को माहर से कम पक्की है ?  
देशमुख हस पड़ा।

सख ने अभिवादन के स्वर म कहा यह हमारा ग्रहाभाष्य कि प्राय नोग पधारे। बठिय स्वान ग्रहण कीजिए।

मुसु बाबा बाल बटा पचानन प्राज सबकी प्रसन्न कर दो अपन सगीत स। एक बार ता गुरुषे रद्रपदम् का स्वर गूज उठ। दिखा दो कि गुरुषे की आत्मा का तुम्हारी देह म वास है। ममान म नरा जायगा तुम्हारासगीत जिसे सारा ससार मुनेगा। और फिर इरा की धार देखकर बोन प्राज सबरे पापनाया पर स्नान करके तुम्हारी दुबिधा जाती रही हागी वटी।

दुबिधा पर विजय पाना परम प्रावश्यक है। इरा ने एक बार एक ज्यातिपी को हाय लिखाया था। उसे याद प्राया उसन नी यही बताया था कि दुबिधा हा उसका राग है। दुबिधा क्या माँ क दूध से प्राती है ? हमारे स्वभाव निर्माण म माँ के दूध का क्या स्थान है ? माँ जँसा प्यार और कहीं मिल सकता है ? जिस माँ का प्यार नहीं मिला उसक मन की वह रिखतठा कहीं जाकर भरगा ? उसकी बाता म गुभाव नहीं मिल सकत। इरा सोच रही थी सख बम्बई घना चले तो मरी रिक्तता दूर हो जाय। फिर दुबिधा भी उतनी नहीं रहगी। मुस्कान बनकर माँ का प्यार उमड प्राया। उसने ठोडी दबाकर जया की प्राया मं भौंककर देखा। वह मुसु बाबा की गोद म बठी प्रथेनिया करती रही।



इरा का ध्यान बम्बई की ओर गया। मन का टेप रिकार्डर बज रहा था—हम इरा की एक्टिंग प्यारी लगती है। इरा फिन्मा का चाँद-चाँदनी है। इरा तुम जादू हो तुम टोना हो। तुम सपनों की रानी हो। तुम हसती हो वो खिल खिल जाते हैं गुलाब के फूल। यह कसा वक्त घाया बालिंग इरा। हमारी कदवी घालोचना की गीची सुन ठक पहुँच नहा पाती। तुम्हें हम प्यार करते हैं इरा। तुम्हारी फिल्म आने पर घहर भर म तुम्हारा नाम जपत हैं। तुम्हारा प्रायण्यहा करते हम दुगो बजाते हैं।

प्रिसिपन वाले जिस जलवानु म मनुष्य का जन्म होता है वही जनवायु उस रास भा सकता है—विधायक रूप से तब जब उड़ापा मिर पर भा पहुँच।

दामुष्य न घपनी ही हाँकी 'जया का जन्म तो हनारा बम्बई म हुआ। जया वही रहगा जहाँ इरा दबी रहगो। दूध-गाछ का छाढ़कर जया बरकला म रह जाय इसकी तः में कल्पना हा नहा कर सकता।

जया से पूछो न। मुत्तु बाबा कह उठ पूछो वह क्या कहता है। क्या जया बिटिया तुम्हें पापा पसन्द हैं या ममा ?

ममा ! जया न हैंकर कहा। ओर मव हम पढ़। पर प्रिसिपन गम्भीर मुत्तु म बोच एक बात तो सोलह घान साथ ह। मनुष्य का जन्म जिस ममता से होता है घायु भर मनुष्य उसी गोद क लिए छत्पटाता रहा है। सकार का बहुत ना साहित्य इसका चाधी है। कना में ना इयन प्रमाण मिलेंगे। जिन दूध-गाछ का दूध पाकर मनुष्य फनता-फूनता है उसी दूध-गाछ की छाया म फिर से भा बटन क लिए मनुष्य घायु भर लानापित रहता है। नमकी दम साथ म मनक क्याए उपजा। इन क्यामा म से मुछ, जिनम बोड साहित्य की जाठक क्याए नी घाती ? मूर्तिकारों की छनियों तारा चिनामा पर घचित की गई। नन क्यामा म से एक का घमघारपूत चित्र मुक्त विद्यन निना दगन को मिया। मुछ न पूछिए। दूध-गाछ की दनना मुत्तर उपत्तिय

अन्यत्र नहीं मिलेगी।

मुत्तु बाबा ने प्रसंग बदलकर कहा, नीलू और गोविन्दन तो हाल ही में यहाँ भी आये थे। उनकी ब्रोंड़ी ठीक रही। इसमें आप क्या कहते हैं?

इरा के मन का टप रिकाड़र बज उठा—हाँ हाँ यही तो चीक है। विवाह करो माँ बना। माँ बतने से बढ़कर कोई पुण्य नहीं नारी छाल करे अभिनय। असल में नारी माँ है। माँ नारी है। माँ ही नारी है यही चीक है। दुर्दिन हो चाहे मुदिन नारी को माँ बनना होगा।

यह सब होगा ठीक ही होगा।' देशमुख ने मानी बानधर की मोहर लगा दी।

जब मुत्तु बाबा की गोद में बठी उनके पुष्पराज बालों में हाथ से कपी कर रही थी। प्रिंसिपल बोले जया का बरकना में जी नग गया यह चमत्कार कम नहा।

इरा अपलक भगिमा में शरद पूनी के चन्ना की घोर खेल रही थी। घांभी भाज को जागरी की रात है। घर घर द्वार गार घाती हैं लग्नी भाज रात। पूछती है—कौन जाग रहा है?—को जागरी?

देशमुख बाबा सश्रुत को आगति? से बिगडकर बना को जागरी?—आश्विन पूणिमा की जागरी व्रत के लिए प्रसिद्ध है। खीर के पतीन का ढकना उठाकर रख देना चाहिए, जिससे शरद पूनी के पौद की किरणों खीर में प्रभुत घोल सकें।

घी का दीप जलाकर इरा ने सदमी-पूजन किया। पछवा ने दीप बुझा दिया। बंदा को खीर का भोग लगाया गया। फिर दिन भर का व्रत खालते हुए इरा सबके साथ प्रीति भोज में सम्मिलित हुई। खीर का स्वाद सवन लिया पर इसका भावे से अधिक भाग बंदा की प्रभुतमयी किण्वण पढने के लिए छोड़ दिया गया। देशमुख देर तक सम भाता रहा कि शरद पूनी के पन्दा की किरणों वाली खीर खाने में बड़े

बड़े रोग कट जान हैं ।

मुत्तु बाबा बोन पचानन बना गुरुदेव न जो जिजाया कह घाज क लिए ही था । तुम्हारा संगीत मयीन में नरा जायगा यह ध्यान रमना ।

घालाप लकर पचानन न गाना पारम्भ कर लिया । टप रिक्काडर लाकर इरा धनमना-ता बढी रही ।

पचानन का संगीत सनाधन हुमा ता इरा बोली पहना टप इरेज भी किया जा सकता है । प्रिमिपल महोत्सव बना ही चुक है पटना संगीत इरेज करके दूमरा मीन -मी टप पर नर सकते हैं । पर मैं टप की यचत नहीं बनूंगी मैं बहुत न टप नाय साइ हू ।

मैं पापा का संगीत सुनूंगी ! जया न टर लगाई ।

प्रिमिपल बोन मैं नहता या न गुरुदेव की घालना पचानन न नहा था पाई ।

कत नहीं था पाइ ? मुत्तु बाबा तुम्हाराकर बात घाप बच का बिजाया न करे । पचानन को भी घाप घपना ही बना नमके ।

पचानन कुछ न बोला । वह सनक गया घाज उनका संगीत जना नहा । प्रिमिपल बात फगला टप लागाया इरा ।

अधनुय न गरद पुनो क चन्दा का घोर अचलक अगत हुए कहा घार न घमून का बात होगा घोर संगीत की निजाउ नी तो उद्यम लो ही चाहिए । घार की लहरों न भी जत अद्युय की बात दोहरा दो । नार की लहरें नाता घरद पुनो क घाज को घू उन का साप निय गब-गब ऊंची उद्यत रही पा । अर-अर-नहर सवार हो रही थी अय मन न एक बातक पाड़ा बनकर डुक जाता है घोर दूनय बाभक बिना पत्तान बात -य पर पड जाता है ।

अरा चाहती थी कि असपरन का नयन पारम्भ हा बिना नवरी अब दूर हो ।

घन बोना घान नय परकना का संगीत मुनन अब गए । घाज

हम बम्बई का सगीत सुनगे । क्या इरा तुम वह टप भी तो लाईं हां न जो हमार विवाह पर भरा गया था ?

भवश्य ! इरा मुस्कराई, और शीघ्र ही उसन यह टप निकार कर चढा दिया ।

इरा ने इसे विवाह स अगली रात बम्बई म जुड़ू क सागर तट पर भरा था । पाश्चिमी म सागर की लहरें आरकेस्ट्रा बजा रही थी ।

यह अल का सबसे प्रिय गीत था यद्यपि वह उसे मुला चुका था ।

शरद पूनो की इस सगीत-गाष्ठी के श्रोता यह न समझ सके कि यह गल का गीत हो सकना है । इरा न वस्तुस्थिति स्पष्ट करत हुए कहा यह है बम्बई का मंगीत । और बम्बई के सगीताचाम हैं घापक शख धरन ।

प्रतिपन ने हाँ-म-हाँ मिनात हुए कहा जोहर की परख और शाभा औहरियों म ही होती है । हमारा शख अनमोल हीरा है !

अशमुख बोना हम शखधरन और उसकी फना की पूजा करत है । बम्बई तो पीछ रह गई—बहुत पीछ । घाप यहाँ बरकता म सागर तट पर बठकर अन्का सगीत सुनिए और देखिए, शखधरन कहां-से-कहाँ जा पहुँचा ।

देशमुख न शरद पूनो के चन्दा की तरफ हाथ उठाकर कहा खीर म तुम्हारे प्रमन के साथ-साथ सगीत की मिठास कस नहीं धुल सकेगी चन्दा मामा ?

राज ने अ्यग्य की हँसी हँसत हुए कहा इरा तुम अपना टप रिवाड लगा ला । मेरे मगीत की मिठास खीर म ता क्या जायगी, टप रिवाड पर जरूर जा सकती है ।

शख गाने उगा । सगता था उसने सागर-सगीत की घाह पा नी । अपनाक नयन इरा यह सगीत सुनती रही । यह सगीत निश्चय ही बम्बई वाल सगीत से भिन्न था । इसका जम भास्था स हुआ था । बला की स्वीकारोक्ति म दूध-गाछ भूम उठा । यह बम्बई वाल शखधरन के सगीत

उ माग या उसी प्रय म त्रिसुन मूर्तिकार दामादरन की नौ-बटे का ज्ञान का बनाइ मूर्ति इस गता का इसी भाव का व्यक्त करने वाला पत्नी बना मूर्तियों उ माग या ।

इरा का बम्बई का स्मरण हा प्राया जहाँ ताग शखधरन का घाँखों पर उठा जेग । उसकी स्थाति सगार भर म फलती । मुद्देव का प्रारन क्या वाली किन्न पर गग-विगग का कितनी हा सत्यामों का धार स भडन घोर प्रनागु-भत्र निन चुक थ भन हा दग न गिशा का स्तर नावा होन क कारण दग क सिनना घरा में वह उतना नाकप्रिय नहा हा पाइ थी । यह हानत बलता बलनकर रहुता । उम ताग वह शख धरन को बम्बई चलन क गिए राजा कर सगा ।

सगात बल हूया ठा प्रिसिपन न कहा गुल तुम बम्बई में ही रह नात ता तुम्हारा सगात इनन ना कहा ऊपर पहुँचता । क्या इरा ग्या मैन क्या ठाक बात नहा कही ?

इरा चुप था ।

गगनुख न रुहा समुद्र बम्बई म ना है पर बरकता क सागर का राग घोर ही है । घोर इनाम वास्तविन सगात सीखा जा सन्ता है । हमारे नागाताबाय बम्बई नगी जायेंगे यह घाप निचय रखिए । व घाप सागा का धान सुनक गए ह ।

ज्या सा गइ थी । गरद पूनो का चला मुम्हरा रहा था । सार हँन राग था । सार का तहरे मुकतहास किन्नरियों-ना छकादक उनरा प्रानन रग था ।

सब चुप थ । इरा न सबका धार ग्या । सग का घाँखों म उस काइ भगिना गिगाइ न दा बा उउ ग्दु घाँवाधन इ सकता हा कि वह बम्बई धनन का राजा हा सकता है ।

मुन बाया बाउ गाबिगन का ना नक नारकर परकना में घना पगा । कब तक बम्बई उम नकभारता रहुता ! नागू ना धायगा । कब तस नानू बम्बई का सर्फियों का रूपकति घोर भरतन-टपनू

हम बम्बई का मगीत सुनेंगे । क्या इरा तुम वह टेप भी ता जाइ हो न जा हमारे विवाह पर भरा गया था ?

भवय ! इरा मुस्कराई, और साध ही उसन वह टेप निकाल कर चढ़ा दिमा ।

इरा ने इस विवाह स श्रमणी रात बम्बई स ऊहू के सागर-तट पर नरा था । पावभूमि स सागर की लहरें आरकस्ट्रा बजा रही थी ।

यह शख का सबसे प्रिय गीत था यद्यपि वह उन भुमा चुका था ।

गरद पूनो की इस सगीत-भाण्डी के धाता यह न समझ सके कि यह शख का गीत हो सकता ह । इरा न बम्बुस्थिति स्पष्ट करते हुए कहा 'यह है बम्बई का सगीत । और बम्बई के मगीताचार्य हैं आपक शख घरन ।

प्रिनिपर ने हाँ-म-हाँ बिलात हुए कहा जोहर की परख और शोभा जोहरियो स ही हातो है । हमारा शख भनमोल हीरा है ।

दामुख बोला हम साधरन और उसकी कला की पूजा करते हैं । बम्बई तो पीछे रह गई—बहुत पीछे । थाप यहाँ बरकला स सागर तट पर बठकर इतना सगीत सुनिए और देखिए, साधरन कहाँ-से-कहाँ जा पहुँचा ।

दामस न गरद पूनो के चढ़ा की लफ हाथ बठाकर कहा खीर स तुम्हारे श्रमूत के साथ-साथ सगीत की मिठास कस नहीं घुल सकेगा, चन्दा मामा ?

साय न ध्यय का हँसी हूषत हुए कहा इरा तुम अपना टप रिगाड लगा ला । मेरे सगीत की मिठास खार स तो क्या जामणी टेप रिगाड पर बहर जा सकती है ।

शख गाने लगा । सगता था उसन सागर-सगीत की थाह पा तो । प्रपलक नयन इरा यह सगीत सुनती रही । यह सगीत निश्चय ही बम्बई वाल सगीत स भिन था । इसका जम भास्था से हुआ था । करा को स्वीकारोबित्तम दूध-भाछ भूम उठा । यह बम्बई वाल साधरन के सगीत

व प्रायः या उवाच भयं न विभ्रम मूर्तिकार दामादरन की ना-वट की हान का वनाइ मूर्ति इत्य गनी का इत्या भाव का ध्यस्त करन वाली पश्या उवाच मूर्तियां से प्रायः या ।

इरा का बन्धुइ का स्वरूप ही प्राया जहाँ ताग गवधरन का प्रांखों पर उवा सौं । उसकी ब्याति उत्तार-नर न फलनी । गुरुव की प्रातन कथा वाला दिन पर ग्य-विद्या का किन्ना हा सत्प्राप्तों का मार स नान प्रौर प्रमार-नत्र निव बुक थ भक्त हा दय न गिया का स्तर नावा ज्ञान क कारण दय क सिनमा घरा में वह उतनी लाकप्रिय नहा ने पाइ था । यह हलत बदलाग बलकर रहुा । उव ताग वह सत् धरन को बन्धुइ चलन क लिए राजा कर लगा ।

समीत बन्धु इया ठा प्रिसिपल न क्या 'गत्त तुन बन्धुइ में ही रह गेठ ता तुम्हारा चाात इत्य भी कहा ऊपर पहुचता । क्यों इरा था नैन क्या ठीक बात नहा कहा ?

इरा पुन या ।

गानुत्त न कहा समुद्र बन्धुइ न भा ह पर वरकला क सागर का साग घोर हा है । घोर इनाम वास्तविक संगीत साखा जा सकता है । हमार चााताचाय बन्धुइ ग्नी जायों यह प्राप निचय रलिए । व प्राप ग्नी की बात सनन् गण है ।

जया सा गद थी । गरद पुनो का क्या मुम्करा रहा था । सार हंड रग था । सार का तहरे नुसहात किन्नरियोन्ना धकाधक पुनरी धमार उहा था ।

उव पुन ५ । इरा न सबका मार दखा । उव का प्रांखों न उव काइ नगिना गिनाइ न दा जा उव यह प्रा-वाचन न सकता हा कि वह बन्धुइ चलन का राजी हा सकता है ।

मन बाबा सोउ गाविन्दन का नी न्ठ नारकर वरकला में घाना पगा । इव तक बन्धु उव न्ठन्यरता रहुा । नानू भी प्रायणी । कउ न्ठ नानू बन्धुइ का सन्धियों का कपकति घोर नरतनाटपन्

सिखाती रहेगी ? हमारी तरफ से शोना को समझाना इराद्वी ! शोना  
मिनकर कोई रास्ता पा लें ! प्रिसिपल बाबू कोई विरोध नहा करेंगे !  
क्यों प्रिसिपल बाबू ?

सब चुप हो गए ।

नहरों के जयघोष पर किसी जन पक्षी का स्वर गूँज उठा ।

शेदमुख बोला नगता है इस जल चिड़िया न भी को जागरी बरत  
रखा है । वह भी जाग रही है नकमी की प्रतीक्षा में जो उसके पास  
घाकर भी घपना प्रश्न दोहरायगी—को जागरी ?

इरा का मन ये बातें सुनते-सुनते एबदम ऊब गया था । उसन शल  
की शोर दला । उसके मुख पर किसी प्रकार के समझौते का आभास  
नहीं हो पाया । उसन टप रिफाडर बन्द कर लिया था ।

टप रिफाडर उठाये वह खडी हो गई ।

जया सो रही थी ।

तो मैं जाती हूँ ! तुम्हारी जया को तुम्हारे पास छोडे जा  
रही हूँ !

इरा काजू-बन की शोर हो ली ।

शसधरन पहले कुछ न बोला । जब इरा लम्बी डग भरन ली तो  
उसन पीछे स हाँक लगाई इरा तुम लौट आओ !

इरा न दोबारा पीछे मुडकर कहा यह लो वह चिट्टी जो तुम्हारे  
मित्रों ने दी थी । इच्छा हो तो बम्बई आ जाना !

शोर वह पन ली । शल को जैसे काठ मार गया ।





## धीम

दूरा का दू-वन स होती बरकला रलव लक्षण की मार जा रहा था ।  
हाथ न था टप रिक्काडर । का ज्वारी की रात । शरद् पूना का बन्दा  
निर पर पौध स नार-सपीठ का थाप ।

सबका मुक्ति हाती है नारी की नी । कम-ब-घन स छुटकारे का  
नाम ता मुक्ति नहा । अनुचित कम-ब-वन स छुटकारा मिल जाय ।  
नचित कम स सलम हा जाय पहा मुक्ति है । धब में मुक्त हैं । मैं हूँ  
प्रभिनयी । व्यय ही मैं माँ बनन की चटा की । मुक्त उन काटि-काटि  
प्रासका का ध्यान रलना हागा जा नरी एक-एक मदा पर मन प्राण  
साधवर करन का उत्सुक रहत हैं । बम्बई स छुट्टी लेकर बरकला म  
मा बटना तो कना का प्रनय होता । मेरा प्रभिनय तो चलना ही  
चाहिए । जया का दापित्व उस पर जितन उस इत ससार म ध्यान का  
कुनावा दिया । धब में जया का चिन्ता स मुक्त हैं । जसो पहन थी  
जया क जन्म स पहन, बसा ही हूँ । न कम न जवाग । मैं प्रभिनयी इरा  
हू—बनव विनासिनी बम्बई की प्रभिनयी, माँ की बटी । माँ मुक्त पा  
कर प्रसन्न होगी । मरी कता छोडने न पाय माँ का इमको चिन्ता  
रहता है ।

'पत्न क विवास बाद क विवासों क लिए जाह छोडने वा बाध्य  
हूँ है । किसी का यह सूक्ति इस समय उसके परा की बटी न  
बन सनती थी । इन विचार को वह प्रपन मन स उसी प्रकार इरज'

कर मकती थी बस टप पर रिक्काड किय हुए स्वर का इरेज करते हुए उम पर दूसरा स्वर भरा जा सक्ता है। इस समय तो यह विचार उमके मन के टप रिक्काडर पर 'रिक्काड हो रहा था कि कोई भी व्यक्ति ममार का ठोक उमी रूप म नहीं दखता जिस रूप म दूसरा व्यक्ति देवता है। जो सिद्धांत सबमा य है, उसका सम्बन्ध म नी हो विभिन्न प्रकति क लाग विभिन्न निष्कर्षों पर पहुचते प्राय हैं पुग पुग से एसा हो होना प्राया है ऐसा ही होता रहगा।

चलने चलते चंदनी रात म उसका दृष्टि मानो अपनी छाया पर टिक जाती। उसे ध्यान प्राया। आज की रात तो वा जागरी की गत है। लक्ष्मी पर घर द्वार द्वार आकर पूछेंगे—वो जागरा ? जो मनागा सो रहा होगा उसका घर म लक्ष्मी का प्रवेश नहीं होगा। उस तीर क पताने का ध्यान प्राया। उसम चन्दा की बिरछों बराबर धमूत घोल रही हंगी। लक्ष्मी-पूजन क बाद प्रीति भोज म वह दर तक नारि मन का दुक्का चवाती रहा थी पत्राहार किया था। श्री का दीप जला कर रगा था। गाय का घी डाला था दीप म।

वा जागरी घट की कथा तो उसे उसका मन के टप रिक्काडर पर बार-बार इरेज हुई थीर बार बार रिक्काड हाती रही। साधारण-सी कथा थी। वलित ब्राह्मण की कथा पत्नी। दुखी होकर ब्राह्मण का घर स बन पन्ना। यह प्रतिगा—जब तक लक्ष्मी का दशन मभ प्राप्त नहा हागा मन-जन ग्रहण नहीं करूंगा। जगल म प्रादिवन पुष्टिमा। एक नाग-कथा का भागमन। लक्ष्मी पूजन क बाद नागकन्या द्वारा वलित को जूमा बलन या निम ग्रण। वलित का इन्कार। घन्त म वलित की स्वाकति। जू म वलित की हार। नदमीनारायण वा लक्ष्मी से कथा—तुम्हारी प्रजा क कारण ही इस बजार ब्राह्मण की यह दशा हुई इस पर अपना बरहस्त उठाओ। लक्ष्मी क धात्रीवाँ स वलित को कामदेव-सदृश सुन्दर रूप की उगलधि। नागकन्या का वलित पर मुघ हो जाना। नागकन्या का दोबारा जूमा घेनत का भाम-ग्रण और

दूध-नाछ ।

बहुत कि तुम जात एता नर प्रति गजना में जीत जाऊँगा वा  
 वा बाबू तुम्हारे साथ करूँगा। वनित का जात। नागकन्या व  
 वनित का अन्वय विवाह। नागकन्या का अपार धन राशि सरकर वनित  
 का नाम सरकर पर परमानन। वनित का बन्धा स्त्रा का प्रयत्नता  
 इन नन स्मिति म इरा पूजा चाहता थी—ककदा पत्नी को

सौत्रिया यह वन नया गजा गया ?  
 पत्न-वत्त वस टा रिहाइ बर ग्या—'एक हा ध्यक्ति मया  
 एक ग विचार पर जना रहा रह सकना। वह जना-जना पन उतन  
 माता। उनका ध्याता उनक मय-साय वन रहा था। कबू क पहाँ  
 पर गद-यूना क वना वा धिरों धनत बन्धा रहा था। इहा पहाँ  
 क बाबू बन्ध, पृथ्व है वनत गाबा वहाँ बाबू बावडा म उदकर  
 ननजीन बनाकर पराम जात है ग्राहका क मानन। धिर वर ग्य  
 म्दिपर बर ग्या—एक धाना वा दुध सावना है धीर कहता है  
 उन मयक परगडा म जनाए जना ग हाग वा दुध धारणक नहीं  
 है—बाबू यह धनत धीर दुनगा क प्रति भा इनतर रह! यह  
 विचार मन्नु बन्धन-नता ग का था। यह ना उम स्तरण था।  
 ग का ना उत मया विर रहा था।

बन्धन-वत्त माना यह वा न पूछ रहा हा मन अनन—कै क्या  
 का पाद ध्या पाव नैव धन्य विमान। धीर वन ग्ट वन  
 —तुम धन प्रति मानता हा ठा। धन प्रति अनतर  
 रत्न क लिए हा ता नैव एन मिया। ननों विचारक प्रर ? बाबा  
 क्या करत हा ?

उन धन पाग बर न वन बना न पूछ था—धर तुम  
 क र क् कि तुम बना क मय रहा वा ग्या क मय ठा तुम  
 किसता तुम ग ? न बाव पा नन क ग पर वन बना का बाव  
 बर वा—नना का। यहा यना का उतर था। जना हा मुन  
 तुना था। नै उ धर धर। नैव का विन दूँत का मान क

मैंने तीन दिन पहले वहाना किया था अब तो जया वसी बेर-की-डर मूर्तियां से खेलेगी—माँ-बूटे की मूर्ति। पर मुझन पावर क्या जया माँ की मूर्ति से तत्पुष्ट हो पायगी ?

पीछे स भ्राते सागर सगीत की हलकी-सी थाप अब भी सुनाई दे रही थी।

बसते बसते उसने सोचा दूध गाछ तो केवल मैं ही नहीं हूँ। कनाकार भी दूध-गाछ है। पर वह तो पचावन मही गुरुदव की भ्रात्मा का पूजन घचन करने म लगा है।

अब वह गगन चौक में पहुँच गई थी। रेस्तराँ अभी बन्द नहा हुआ था। दुकाना तो पीछे छोड़ वह स्टेशन की ओर बढ़ती गई।

टप रिकाडर उसके हाथ म था। वह उम्ब-लम्बे ढग भर रही थी। मन के टेप रिकाड स भावजों भ्राते गी—ऊध्वगामिनी इरा। बम्बई की प्रसिद्ध अभिनत्री। वाकमधुर फिल्म स्टार। फिल्मा की रानी। रूप की अग्निशिखा। क्षिप्र चरण। जाज्वल्यमान रूपती। जगमग-जगमग कल्याणी। पान्ति। मूटी स्टार। भ्रातोकिनी। सुजाता। प्रियम्बदा। स्वनामधन्या। वही इरा अब बम्बई की रूप रस-नाघ स्वप स्वर की मायाभूमि की ओर जा रही थी।



# दूरकीस

प्रिय शत्रु

आपको यह मनुकर तुसी हागे कि हम लोग न मिलकर, सहकारिता क भाग्य को भपनाकर एक फ़िल्म बनान का फसना किया है।

फ़िल्म का नाम होगा—मछली-जान। इसमें बरसीवा के मछुषा का जीवन रहेगा। आज हम यह साचकर भपनास होता है कि 'गुग्गु' जसी फ़िल्म का मगीत-निर्देशक बम्बई थोडवर पर जा बटा है।

जसा गुगु बस फरिस्त वाली बात है। हन क्य तक पसे वारों के हाथा म खेतन रहग ?

बम्बई क भनक नय-पुयन कानार हमारे साथ हैं। बहुत स टक्कीयिन भी हमारे साथ भिन गए हैं। हन सब एक नाय म था बठ हैं। गुगु का महा पुकार है दर भाग्य दग्स्त भाव्य !

यह ती सभी मानत हैं कि सिनेमा आज की दुनिया में सबसे मग्त्वपुल्य मनोरजन है। स्त्री-मुग्ग बच्चे बूड, जवान सभी फ़िल्म म्गन हैं। फ़िल्मा के गीठ आज क नम ताकनीत बना जा रह हैं।

सिनेमा म मगीत नाटक कामटी नाच सभी मछान रहत हैं। व चीजें एक जगह इनन सस्त दानों हमारे म्ग की निपन जनता का भना घोर नहीं नसाब हागा ? कुनकों घोर मुवतियों की भ्रम की त्रुग नो सिनेमा हान म बंठ-बटे बिसा ह्म तर वृत हो जाती ? इनन

भी आज कोई मला भादमी इन्कार नहीं कर सकता। वस्तु स्थिति तो यही है पर हम वय तक हाथ-पर-हाथ धरे बठे रहेंगे ?

कला हमारी सस्कृति की माँ है। हम उन लोग स सहमत हैं, जा यह कहते हैं कि हमारे देश म आज से बीस-चाईस वय पहले अधिक भच्छी फिल्म बनती थी और दूसरा महापुढ मुरू हो जाने स सिनमा की प्रगति ठण्डी पड गई इसस फ़िल्मा का स्तर गिन्ता चला गया और फ़िल्म बनाने वाले पला कमान का ही अपना आदग बना बठ।

मछनी-जाल' का निर्माण हमारे अपने ही पस और मिल जुन परिश्रम स किया जायगा। इसके लिए हम किसी सेठ क घाट हाथ नहा फलायेंगे। हम स्वयं इग फिल्म के निर्माता निर्देशक और कलाकार होंगे। इसका नफा-नुकसान हमारा ही होगा।

हम त्वेदान व सहगन की याद ताजा करेगे। सीता म काम करने वाल शृध्वीराज और दुया रोट व अभिनय का आदग अपनायेंगे। हम अमृत मजन' क चद्रमोहन की मिसाल कायम करेगे। हम फिर से बडी दीदी के पहाडी सामान जमा सफन अभिनय फिल्म व मच पर जिन्दा कर दिखायेंगे। हम फिर से बरघा जैसे अभिनेता लायेंगे।

हमारी फिल्म की कहानी इस युग की महान् कहानी होगी। पिटी हुई लकीर पर नहीं चनेगी हमारी कहानी। हम यह मानकर चलेंगे कि एक सफन फिल्म का निर्माण असम्भव है जब तक एक महान् और सफन कहानी नमार हाथ नहीं लगती। नीलू न रिखी है बरसोबा के मछुमो की कहानी। मछुमा सच्चा सागर पुत्र है। वह नागर क दिल और दिमाग की भाषा समझता है।

कहानी यों प्रारम्भ होती है कि एक ठूठा मछुमा जिसकी पत्नी बहुत वय पहेन पर चुभी है अपना पुराना जाल अपने बटे की देकर कहता है बटा में अनन वर्षों तक वाप बनने क साथ-साथ तुम्हारी माँ भी बना रहा। अब मेरे हाथ म मछनी-जाल फकने की ताकत नहीं

रही। यह जल उनाला। तुम जाना तुम्हारा काम। मरा तो न जान  
 सब मन निकल जाय। प्राय से तुम नागर का ही धरणी नौ समझता  
 उन ही माना बार समझता। प्रब बार हा तुम्हारा गुरु होगा।

क्यानी का प्रगता ह्य है बन्दर का विकारिया टनिम सप्तन।  
 यहाँ एक चाप-स्तन पर गड़ा चाप का रण है वह ब्रूग मनुष्य। वहाँ  
 एक युवक चाप पान बना माता है। वह युवक बताता है कि वह पत्नी

बार बन्दर प्राण है। वह पूजता है 'मद्यता की वू वहाँ से प्रा स्त्री  
 है चाप-स्तन बना हुकर कहता है 'यह ता काइ मनुष्य हा  
 बरा कहता है। ब्रूग मनुष्य चापचाप चाप पाना रहता है अपना परि

चप नहीं पता। चाप बना हुकर कता है बाबू तुम्हारा क्या यह  
 ममान है कि मद्यता की वू चाप की पत्नी से प्रा रहा है? नाइ नाइ  
 यह बन्दर है। प्रा मद्यता का वू ना बन्दा का उठना या हिस्सा

जितना यहाँ का चिन्म-एकदना का रूप-गुहाय प्रौर उनक नर प्रप का  
 मान-पाल। सर छात्रिय। प्राय स्व-नय बन्दर प्राय है 'चन्तिग मानकर  
 बराता है। यह है विकारिया टनिम का नल स्तन। प्रौर यों म

बहुत दूर नही स्तन का सबयन ना जयी तक्यों टाकरिया न मरी  
 मद्यतिया 'तारी गद ह। जानत है यह मद्यतिया कहीं से प्राती है?  
 बरसावा न प्राता है। बरसावा बन्दर जाना। वर्य मनुए नितो। मनुष्य

का प्राता मुनिया 'जा हनारी बन्दा का हा एक हिस्सा है। पर ना  
 प्राण ता उर्र जयों यहाँ नागर हाता मनुष्य नहा हा मद्यतियों का वू  
 नर्य हा। कौ बाबू फिर वह ब्रूग मनुष्य बोच 'जा 'ब

नाता बनना चाप ता नर प्राय चरा। नै ठा दब जन नरा उन  
 मकता। प्राता जात मिन बट कामनात नि। यह जान 'नका काम।  
 यह बाबू उन य मनुष्य क गप हा मता '। यह वगता है

नै कानोर न प्रा रहा है। 'नार गव का ना एक कत्ता '। पर वह  
 रदानी ठा ब्रूग मन्धी है। 'च पूष ठा दन 'य राजा का कहना स  
 नौ मन्धी है 'जाक बार न 'नर लिय म प्रा जात है कि वह चा-

वन गया था और उसे यह साप दिया गया था कि जब तब वह पूरी  
 महाभारत न सुन ले वह साँप स दोबारा भ्रादमी नहीं घन सकता ।  
 बूढ़ा मधुसूता हंसकर कहता है तब तो हम भी किसी का साप ही  
 नगा हुआ है कि हम मधुसूत ही बने रहेंगे जब तक हम मछली खाना  
 छोड़कर निरामिष नहीं बन जाते । अब तुम्हा बताओ बाबू कि बूढ़ा  
 हान के कारण मैं जान नहीं कैसे सकता इसलिए मैंने अपना जाल अपने  
 बेटे को सभान दिया । मैं मछली खाना कैसे छोड़ सकता हूँ ? सागर में  
 तूफान का सामना करने की ताकत नहीं रही । अपनी जान किसे प्यारी  
 नहीं लगती ? अपनी जान तो मछली को भी प्यारी लगती होगी । पर  
 छोड़ा बाबू ! मछली के लिए हम वहाँ से दूध खायेंगे ? मछली का दूध  
 ममनने लगेंगे जिस दिन उस दिन तो हम मधुसूतागिरी छोड़नी पड़े  
 जायगी । उस दिन तो समझो हम सारी महाभारत सुन चुकेंगे और साँप  
 का जून से राजा फिर भ्रादमी की जून में आ जायगा ।

“बाबू बूढ़ा मधुसूता उस बाबू का बरतावा के समीप न जा रहा  
 है मछली की बू तज होता जाती है । बूढ़ा मधुसूता यह नहीं समझ  
 सकता कि मछली की बू इतनी ही बुरी होती है ।

हमारा विचार है कि मछली-जाल की कहानी सफर रहेगी । इस  
 म सागर का गुस्सा भी दिखाया जायगा । मधुसूता का जीवन तो रहेगा  
 ही । पर मधुसूता का जिन लोगो से वास्ता रहता है उनका जीवन म कस  
 बलगाड़ी से मोटर आई और मोटर म रलगाड़ी रलगाड़ी से हवाई  
 जहाज । कस व लोग आज राकेट और एटमी रानेट की बातें करत हैं ।  
 कम य लाग बातों-बाता म इस पर तान तोड़त है कि आज जो भ्रादमी जमान  
 के साथ नहीं चरगा वह पीछे रह जायगा और दुनिया उससे तो मील  
 भाग निरस्त जायगी । पर बरसोवा के मधुसूतो आज भी उसी जाल से  
 मछलियाँ मारत हैं जिस उनक पुरखा उनक हाथा म यमा गए । इसमें  
 युग-बेतना तो रहेगी ही । संगीत भी होगा और नृत्य भी । नृत्यो का  
 निर्देग नोचू करगी । संगीत प्रापना रहेगा । गीत प्रा जायए । हम



भापका इन्तजार कर रहे हैं ।

हम आपने जो मैं ठान चुके हैं कि फ़िल्म इण्डस्ट्री को प्राण स चले । आप दूध-गाछ की बात कहा करते थे । वह बात आज हमारी चेतना को छू चुकी है । आज हम कला की सृजन शक्ति पर मौ की धाप लगाने ही प्राणे बढ़ना चाहते हैं । हमारे कलाकार और टेक्नीशियन भाइ हमारे प्राण को अपनी कला के साथे म गाने पर फ़िल्म जगत् क सामने एक नया स्तर स्थापित करने जा रहे हैं ।

गीत लिखने के लिए राज राज अनुपम की सवाएँ हम मिन चुकी हैं । उन्होंने यह बात रखी है कि मगीत आपका ही रहे ।

हम हैं आपने मिन  
गोबिन्द नौदू, इरा जयन्त  
राज राज अनुपम दामन मनोज मुन्तबोध पूनम”

बन गया था और उस यह शाप दिया गया था कि जब तब वह पूरी महाभारत न सुन ले वह साँप स दोबारा भ्रादमी नहीं बन सकता। बूढ़ा मधुप्रा हसकर कहता है तब तो हम भी किसी का शाप ही लगा हुआ है कि हम मधुप्रा ही बने रहने जब तक हम मछली खाना छोड़कर निरामिष नहीं बन जात। अब तुम्ही बताओ बाबू कि बूढ़ा हान के कारण मैं जान नहीं फेंक सकता इसलिए मैं अपना जान अपने बच्चे को सभाल दिया। मैं मछली खाना कम छोड़ सकता हूँ ? सागर में तूफान का सामना करने की ताकत नहीं रही। अपनी जान किसे प्यारी नहा नगती ? अपनी जान ता मछली का भी प्यारी नगती होगी। पर छोड़ो बाबू ! मछली के लिए हम वहाँ से दूध खायेंगे ? मछली का दूध ममम्ने लगेने जिस दिन उस दिन तो हम मधुप्रागिरी छोड़नी पड़े जायगी। उस दिन तो समझो हम सारी महाभारत सुन चुके और साँप का जून स राजा फिर भ्रादमी की जून म घा जायगा।

“या-यो बूढ़ा मधुप्रा उस बाबू को बरनावा क समीप ले जा रहा है मछली की बू तज होती जाती है। बूढ़ा मधुप्रा यह नहीं समझ सकता कि मछली की बू इतनी ही पुरी होती है।

हमारा विचार है कि मछली-जाल की बहानी सफल रहेगी। इस म नागर का गुस्सा भी दिलाया जायगा। मधुप्रा का जीवन तो रहगा ही। पर मधुप्रा का जिन लोगों स वास्ता रहता है उनके जीवन म कस चलगाड़ी स मोटर घाई और मोटर स रलगाड़ी रेलगाड़ी स हवाई जहाज। कस व नाग भाज राकेट और एटमी राकेट की बात करते हैं। कस व नाग बावो-बाता म इस पर तान तोड़त है कि भाज जो भ्रादमी जमान के नाथ नहीं चलगा वह पीछे रह जायगा और दुनिया उसस सी मील भाग निबल जायगी। पर बरसोवा क मधुप्रा तो भाज भी उसी जाल स मछलियाँ मारत हैं जिस उनके पुरखा उनके हाथो म ममा गए। इसम युग-बदलना तो रहगा ही। संगीत भी होगा और नृत्य भी। नृत्यो का निरन्त नोचू करगी। संगीत घापवा रहेगा। शीघ्र घा जाइए। हम

भापका इन्तजार कर रहे हैं ।

हम अपने जी में ठान चुके हैं कि फ़िल्म इण्डस्ट्री को प्राग ल चलें । भाप दूध-गाछ की बात कहा करते थे । वह बात आज हमारी चतना को छू चुकी है । आज हम कला की सृजन शक्ति पर भी ध्यान लगाकर ही भागे बढ़ना चाहते हैं । हमारे कलाकार और टेक्नोशियन भाइ हमारे प्राय को धरती कना क साँच म ठानकर फ़िल्म-जगत क खानने एक नया स्तर स्थापित करने जा रहे हैं ।

गीत लिखने के लिए राज राज धनुषम की सेवाएँ हम भिन्न चुको हैं । उन्होंने यह शत रत्न है कि सगीत भापका ही रह ।

हम हैं भापक मित्र  
 गोविन्दन तीरू, इरा जयन्त,  
 राज राज धनुषम जयन्त मनोज मुश्तिवाध पूनम"



जया ने जागते ही ममी क लिए रोना गरु कर दिया । गेदघा माटी  
 बाल बरकता क साथ मानो उसबा कोइ नाता न जुड सकता हो ।  
 डडो ममा कहाँ है ? दाख कसे बनाता कि ममी न भूडा सच नहा  
 सच्चा सच बालकर दिवा दिया । कसे बताता कि इरा बम्बई बनी गई ।  
 कैसे बताता इरो कठार दिन रखती ई । एक हाथ ने जया क घाँसू  
 पाछता एक हाथ ने भपन घाँसू पाछता वह सागर-वट पर बँठा रहा ।  
 सागर क जल का तरह ही घाँसू भी खारी थ । घाँसू का ग्वारीपन नहीं  
 बदल सकता था । सृष्टि का नियम ठहरा । घाँसू को नकर कह गए  
 भनक कवि-वचन उसपी स्मृति म घूम गए । जया रो रही थी । उसका  
 क्रन्दन सागर की लहरा के गजन म गुम नहा हो पा रहा था । उसका  
 याद घाया । गरुव बहा करते थे— माँ ही नहीं कलाकार भी दूध  
 गाछ है । अनुभूति क लिए चिरन्तन सत्य का भी प्रसव वेदना ता सहनी  
 हा पडती है । पुरानी सूक्ति है हर समय हर जगह उपस्थित नहा  
 रह सकत थ भगवान् इपीलिए उहोने माताए बनाई । माँ हा महान्  
 है । गिनु हो चाहे कना कृति दोना को ही प्यार दुसार चाहिए । कला  
 कार का माँ बनता ही पडता है— इसी गुरुवाणा का प्ररणा स  
 बरकना को जलधरन मिता पचानन भिना । पचानन इस परम्परा को  
 प्राण बनायेगा इसका उन विन्बाम था ।  
 जया रो रही थी । उस कसे चुप कराव जलधरन को यही समस्या

थी। 'ममी कहाँ है ?' वह तो वही रट लगाय जा रही थी।

जया को तकर वह बाजू-बन में घूमता रहा। उस मुड़-मुटकर गुन्धेव के दाँत दाँत घात रहे—'बरकला का एक-न-एक बालक सागर तट पर रत के परीं बनात समय सागर-सागीत की बुद्ध-न-बुद्ध धाह गाता प्राया है और वण होकर तगीत भाग पर चन पडा है— जया का जन तो बन्द न हुआ उरने सोचा जया तो बरकला की नहा हो सकती। उसन हाप जाडकर प्रणाम क्रिया प्रणाम धन्नपूर्णा। प्रणाम स्नेहमयी ! प्रणाम स्वरु नलता ! प्रणाम बरकला की गभा परती !

गान चौक के सनीपवर्ती एक रेन्तरा म दाग न जया को चाप निनाई। वह उठ मिटाई जिनाकर ममी की सुधि बितारने की प्ररुजा गता रहा। वह उनस पूछता रहा कि अब तक उसन क्या पडा है। वह उसस उसकी दाँत धम्मा की बाते पूछता रहा। पर उसकी ता एक ही रट या डडा ममी कहाँ चली गई ?

गानहर डनी नानि हूद और वह जया का लकर स्त्रान पर चला प्राया।

जया के धाँसू यन गए व। उनका चहरा उतर गया। वह बार बार पूछ रहा थी 'ओ बन्द की गाडा कब प्रायगी ?'

प्रव र नहा बडी। वह गान बघाना हन बन्द परीवर नना म भिनगे। घाँदा गानो दनी अछ्द बन्व रान नहीं है।

उा नावू का बात याद प्राई— एक बन्द के नीतरकद बन्दइगी बसो हुई है। उनन एक बन्द छिन्नीवाता नी है वह है माना बाजार।

साथ बन्द ना माना-बाजार नहीं है। और मर ता यह है कि नीना बाजार के नीतर नी नीना-बाजार ही माना-बाजार नहा है।

उम गग व रन वन वण साफना के दर र। गभा नागे वान बरता का यह मार पुव दद एक नव पाग्मी के रूप म बन्द जन्ता परिस्तिपतिवों म होड जाता। बरकला म गुन्धेव ना परमरा

को घाने चनायेगा पचानन । मुझे भी कमभूमि पर उतरना है । जया का भविष्य मेरे साथ बंधा है, इरा के साथ बंधा है मेरा भविष्य । इरा हम पाकर प्रसन्न होगी । बोलेंगी मोर क भूल साँझ को घर लौटे । मेरा घर वही है जहाँ इरा है जहाँ मेरी जया की ममी है । मैं तो जया का डडी ही बना रहा ममी' तो न बन सका ।

डडी गाड़ी कब घायगी ? जया ने उसना हाथ खींच लिया बम्बई में ट्राम चनती है डडी । बम्बई में अच्छा अच्छा गाना होता है ।

वह बिना बनाय ही चला घाया था । को जागरी की चाँदनी रात उसक लिए बरखायिनी नहा बन सकी पी । उसकी इरा उसे छोडकर चली गई थी मानो वह स्वयं लक्ष्मी की तरह नेवन यही पूछने आई हो— को जागरी ? [ कौन जाग रहा है ? ] पर उसक लिए सो ये स वष भी को जागरी की रात की तरह बीत थ ।

जसे वह एक बहाना चाहता था । इरा भाकर वह बहाना दे गई । बरकला में उसका जीवन रोप हो गया था । वह किसी का गुरुत्व नहा बनना चाहता था । गुरुत्व की छाया के पीछे चलने में कोई रस नहा रह गया था ।

उसने कोई सामान नहीं उठाया था । जया ने फिर पूछा डडी गाड़ी कब घायगी ?

भव गाड़ी में देर नहीं बटी ।

काम-काजी चहल-पहल तो बरकला में भी कम न थी । निजन और उजाड जगहों पर नये मकान बन गए । घात्मा की भूख से भी पहन है पेट की भूख । ऋतु-मगन और त्योहार-उत्सव की बात ता बारोबार की प्रति क रूप में ही घाती है । पहने पट में कुछ पडे फिर सगीत भी अच्छा लगता है । जया को बाँहा पर उदाकर वह बोसा मैं भी तुम्हारी ममी हूँ बटी ।

तुम तो डडी हो तुम ममी नहीं हो । जया हँस पडी ।

झांक इन रही थी। हवा वस्त्र उड़ा रही थी। नारियल-नाछ डाल  
रह थी। बरकला की गरमा माने उड़ रही थी।

प्रणाम जान नाटी बाल बरकला। घुत्तपरल ने घातनविनार  
होकर कहा मैं बम्बई जा रहा हूँ।

जया प्रसन्न थी। सबरे की तरह भयभीत नहीं थी।  
‘डही मनी कन्याकुनारा गद है। हन भी वहाँ जायेंगे। कन्या-

कुनारी बहुत प्राची है डही।’  
नहीं जया। वह बम्बई गद है। बरकला उन प्राधा नहीं लगा।  
भव हम कनी बरकला नहीं प्रायेगे।

तुम पहले बम्बई क्यों नहीं प्राय व डही ?  
उजके हाय म बम्बई क टिकट थे। तेज हवा इन टिकटों को छू-छू  
जाता थी।

हमारे पर म तुम्हारी फोटो भी रखी है डहा और मनी क डही  
को फोटो ना !

बाब की कनना मजा थी। बाब का शिना बरकला का गरमा  
गाने पर नहीं बम्बई क उ पर पर था जहाँ दो घाग रख थी।

जया की मुन्नाल दुनिया भर क बच्चों म नाता जाड़ रहा थी।  
मनी म हन स्थ जायेंगे डही ! हम मनी का पिक्चर नहीं लिखायेंगे

हम तुम्हें बम्बई म नहीं प्रात देते।  
हवा भव घणिकु जार म चल रही थी। जगद की घार म प्रा  
रही थी। इसन ननक का स्वाद था।

हम बम्बई से कना यहाँ नहीं प्रायेंगे डही।  
मुगु बाबा तुम्हें पत्र नहीं  
‘नहीं डही।’

वह तुम्हें मछतियाँ लिखायेंगे।  
मछतियाँ हम बरसोसा न दस लेंगे डही ! मूलतो मछतियों का  
बाबू वो प्राधी नहीं हाती। यह हूउ परी जस उलक मुह म इरा

बोन रही हो ।

तुम बड़ी शरारती हा जया !

हमारी ममी नी शरारती है ।

जया प्लेटफाम पर नट्टू की तरह घूम रही थी । तेज हवा जस उसी क साथ खेनत भाई हो ।

दस बप तक मैं जया क प्यार से वचित रहा ! वह मन ही मन पछता रहा था । मुझसे बड़ा मूल दूतरा न हागा !

सिमनन हो चुका था । उची समय कुछ जान-पहचान बेहर नजर आय । नेामुस नम्पूतिरिप्पाड और मुत बाबा बाह उठा-उठाकर उस रुक जान का आदेश दे रहे थे । पचानन ने पास आकर पुछा आप जा रह हैं गुणदेव ? फिर कब आभोग ?

फिर नहीं आयग । जया बोन उठी ।

ता हम भी क्यों नहा बन्दू ले घनत ? पचानन भासू पाछ रहा था ।

रासखरन क अन्तर की यरूणा पिघल रही थी । मुत बाबा की आखो म नी भासू भा गए । उसन चिल्लाकर कहा जल्दी लौटना राख बटा ।

रासखरन कुछ न बाना । उसन हाथ जोड दिए । उसक अन्तर म का जागरी' का वादक थाप लगा रहा था ।

जया प्रसन्न होकर तानी बजा रही थी ।

राख घटपट से स्वर म जुहू का चाँदनी का गीत गाने लगा

जुहू की चाँदनी मछए का जाल रे

मछए की रागिनी उदासिनी ।

बच-क घतो मछरियो !

मित के घतो मछतियो !



मिल के फसो मछलियो !  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

गीत की गली में ब्राज किसका नाग्य लो गया ?  
साज-लजी बुलहन का स्नह-दीप लो गया !  
जहू की लहरों की याप अभिलाषिनी  
मछुए का रागिनी उदासिनी ।

गीत की गली में ब्राज भाई नत्य-बला  
गीत का है अन्त कहीं ?  
नत्य का है अन्त कहीं ?  
मछुए की रागिनी का अन्त कहीं ?  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

मछुए क जाल में नूपुर की कहानियाँ  
मछुआ भी मछना, मछली भी मछुआ ।  
कोन कहे कोन सुन कोन रोय, कोन हस ?  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

मछुए क पुत्र ठुघा सिर पे धरे जाल रे !  
रो रही मछलियाँ हात-बहात र—  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

मछुआ हो चाहे अभिनता घतचित्र का  
चाह बनजारा सगीत गीत चित्र का  
अभिनय है अभिनय है !  
बद-बेदना की बात चाँद चाँदनी की रात  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

बोन रही हो ।

तुम बड़ी शरारती हो जया !

हमारी ममी' नी शरारती है ।

जया प्लेटफाम पर लट्ठ की तरह घूम रही थी । तेज हवा उस उखी के साथ खेलने आई हो ।

दस बप तक मैं जया क प्यार से वचित रहा । वह मन हा-मन पढ़ता रहा था । मुझसे बड़ा मूय दूसरा न हागा !

सिगनल हो चुका था । उखी समय कुछ जान-बहुधान चेहरे नजर आय । देगमुन नम्पूतिरिप्पाड घोर मुत बाबा वांह उठा उठाकर उस रुक जान का भाण्य द रहे थे । पवानन ने पास भाकर पूछा थाप जा रह हैं गुरुदव ? फिर कव भाभोग ?

फिर न्हा आयेंगे । जया बोल उठी ।

ता हम भी क्या नही बम्बद ले चानते ? पवानन भासू पाछ रहा था ।

ससधरन के अन्तर की करुणा पिपल रही थी । मुत्तु बाबा की प्रांसा म भी भासू भा गए । उसन बिल्लाकर कहा जल्ही नौटना सख बटा ।

पसधरन कुछ न बाला । उसन हाय जोड दिए । उसक अन्तर म को जागरी या वादक थाप लगा रहा था ।

जया प्रसन होकर ठानी बजा रही थी ।

सख घटपट-से स्वर म जुहू की चांदनी का गीत गान लगा

जुहू की चांदनी मछए का जाल रे

मछए की रागिनी उदासिनी ।

बख-क बसो, मछनियो !

मित के सलो मछलियो !

मिल क फसो मछलियो !  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

गीत की गली में घाज दिसका भाग्य खो गया ?  
लाज-सजी दुलहन का स्नेह-दीप सो गया !  
जहू की लहरों की थाप अभिजापिनी  
मछुए का रागिनी उदासिनी ।

गीत की गली में घाज घाई नत्य-बसा  
गीत का है घन्त कहां ?  
नत्य का है घन्त कहां ?  
मछुए की रागिनी का घन्त कहां ?  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

मछुए क जात में भूख की कहानियां  
मछुआ भी मछला, मछली ना मछुआ !  
कौन कहे कौन तुन कौन रोष, कौन हसे ?  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

मछुए क पुत्र हुआ सिर प धरे जात र !  
रो रही मछलियां हाल-बहाल र—  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

मछुआ हो चाह अभिजात चलचित्र का  
चाह यनद्वारा संगीत गीत चित्र का  
अभिनय है अभिनय है !  
बर-बरना की रात चांद चांदनी की रात  
मछुए की रागिनी उदासिनी ।

देशमुख और नम्पूतिरिप्पाड मन्त्रमुग्ध से खड़े थे। जया चाहती थी कि जुहू की चाँदनी वाला गीत बराबर चलता रहे।

देशमुख बोला मछुआ नी मछरी, मछली नी मछुआ। यह तो बहुत मन्धा भाव है।"

गाड़ी आई तो घल जया को लेकर एक दिव म जा बठा।

जया प्रसन्न थी।

घल की भाँखें नीग गई। वह कुछ न बोला।

गाड़ी ने विसल दी और चल पड़ी। घल ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। उसका प्रणाम पीछे छूट गया। गाड़ी बढ़ चली। गाड़ी के पहिया की आवाज भी मानो को जागरी की घाप लगा रही थी।

घल वह चिट्ठी निकालकर पढ़न लगा जो इरा छोड़ गई थी। उसने मन-ही-मन कहा इरा आखिर तुमन मुझे हरा ही लिया। तुम आदि दाबित हा इरा। तुम दूध-गाछ हो। यही सोचकर उसने जया को अपनी छाती से लगा लिया।

